कवि भीम विरचित

सदयवत्स वीर प्रबन्ध

अनेक हस्तलिखित प्रतियों की सहाय से संशोधित अज्ञात कविकृत

"सावलिंगा पाणिग्रहण चउपई"

और

कवि कीर्तिवर्धन रचित 'सदयवत्स सावलिंगा चउपई'

के परिशिष्ट और

प्रस्तावना एवं टिप्पणियाँ सहित



सम्पादक—

डा० मंजुलाल मजमुदार

एम. ए., पी-एच. डी. एल-एल. बी.

'माधवानल कामकंदला प्रबन्ध' के सम्पादक

एवं

'गुजराती साहित्य के स्वरूप-पद्य विभाग: मध्यकालीन और अर्वाचीन' के लेखक

प्रकाशक:—
सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीटयूट
बीकानेर

प्रथम संस्करण : १००० प्रतियाँ
मूल्य—४ रु०

मुद्रक:—
महावीर मुद्रणालय,
अलीगंज (एटा)

डा० कन्हैयालाल मुन्शी 'Gujarat & its Literature' (1935) Page 162:—

"'Sadayavatsa kathā' has charmed Gujarat for about five hundred years. Sadayavatsa and Sāvalingā, husband and wife, are banished from their native city and are separated. Ultimately they meet after undergoing fearful experiences, in all of which the fantastic vies with the miraculous. The story is taken probably from some unknown Prākrit source. Its first available Gujarati version is copied in Samvat 1488."

संकलना

अर्पण

कायस्थ कवि गणपतिकृत 'माधवानल कामकंदला
(१६१४), और भीमकृत 'सदयवत्स वीर प्रबंध' (१
के प्रथम निवेदक ।

अनेक अप्रकट संस्कृत प्राकृत अपभ्रंश और
प्राचीन गुजराती ग्रंथों के आद्य संशोधक ।
(पट्टण ग्रंथ-भण्डारों की सहाय से आधार ले
'गायकवाड़ प्राच्य ग्रंथमाला' के आद्य संप

राजरत्न

पं० चीमनलाल दलाल की स्मृति में

सविनय
अर्पण



मंजुलाल मजमुदार

प्रकाशकीय

श्री सादूल राजस्थानी रिसर्च-इन्स्टीट्यूट बीकानेर की स्थापना सन् १९४४ में बीकानेर राज्य के तत्कालीन प्रधान मन्त्री श्री के० एम० पणिक्कर महोदय की प्रेरणा से, साहित्यानुरागी बीकानेर-नरेश स्वर्गीय महाराजा श्री सादूलसिंहजी बहादुर द्वारा संस्कृत, हिन्दी एवं विशेषतः राजस्थानी साहित्य की सेवा तथा राजस्थानी भाषा के सर्वाङ्गीण विकास के लिये की गई थी।

भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध विद्वानों एवं भाषाशास्त्रियों का सहयोग प्राप्त करने का सौभाग्य हमें प्रारम्भ से ही मिलता रहा है।

संस्था द्वारा विगत १६ वर्षों से बीकानेर में विभिन्न साहित्यिक प्रवृत्तियां चलाई जा रही हैं, जिनमें से निम्न प्रमुख हैं—

१. विशाल राजस्थानी-हिन्दी शब्दकोश

इस सम्बन्ध में विभिन्न स्रोतों से संस्था लगभग दो लाख से अधिक शब्दों का संकलन कर चुकी है। इसका सम्पादन आधुनिक कोशों के ढंग पर, लंबे समय से प्रारम्भ कर दिया गया है और अब तक लगभग तीस हजार शब्द सम्पादित हो चुके हैं। कोश में शब्द, व्याकरण, व्युत्पत्ति, उसके अर्थ और उदाहरण आदि अनेक महत्वपूर्ण सूचनाएं दी गई हैं। यह एक अत्यन्त विशाल योजना है, जिसकी सन्तोषजनक क्रियान्विति के लिये प्रचुर द्रव्य और श्रम की आवश्यकता है। आशा है राजस्थान सरकार की ओर से, प्रार्थित द्रव्य-साहाय्य उपलब्ध होते ही निकट भविष्य में इसका प्रकाशन प्रारम्भ करना सम्भव हो सकेगा।

२. विशाल राजस्थानी मुहावरा कोश

राजस्थानी भाषा अपने विशाल शब्द भंडार के साथ मुहावरों से भी समृद्ध है। अनुमानतः पचास हजार से भी अधिक मुहावरे दैनिक प्रयोग में लाये जाते हैं। हमने लगभग दस हजार मुहावरों का, हिन्दी में अर्थ और राजस्थानी में उदाहरणों सहित प्रयोग देकर सम्पादन करवा लिया है और शीघ्र ही इसे प्रकाशित करने का प्रबन्ध किया जा रहा है। यह भी प्रचुर द्रव्य और श्रम-साध्य कार्य है।

यदि हम यह विशाल संग्रह साहित्य-जगत को दे सके तो यह संस्था के लिये ही नहीं किन्तु राजस्थानी और हिन्दी जगत के लिये भी एक गौरव की बात होगी।

३. आधुनिक राजस्थानी रचनाओं का प्रकाशन

इसके अंतर्गत निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं:—

१. कळायण, ऋतु काव्य। ले० श्री नानूराम संस्कर्ता।
२. आभै पटकी, प्रथम सामाजिक उपन्यास। ले० श्री श्रीलाल जोशी।
३. वरस गांठ, मौलिक कहानी संग्रह। ले० श्री मुरलीधर व्यास।

'राजस्थान-भारती' में भी आधुनिक राजस्थानी रचनाओं का एक अलग स्तम्भ है, जिसमें भी राजस्थानी कवितायें, कहानियां और रेखाचित्र आदि छपते रहते हैं।

४. 'राजस्थान-भारती' का प्रकाशन

इस विख्यात शोधपत्रिका का प्रकाशन संस्था के लिये गौरव की वस्तु है। गत १४ वर्षो से प्रकाशित इस पत्रिका की विद्वानों ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की है। बहुत चाहते हुए भी द्रव्याभाव, प्रेस की एवं अन्य कठिनाइयों के कारण, त्रैमासिक रूप से इसका प्रकाशन संभव नही हो सका है। इसका भाग ५ अंक ३-४ 'डा० लुइजि पिओ तैस्सितोरी विशेषांक' बहुत ही महत्वपूर्ण एवं उपयोगी सामग्री से परिपूर्ण है। यह अंक एक विदेशी विद्वान की राजस्थानी साहित्य सेवा का एक बहुमूल्य सचित्र कोश है। पत्रिका का अगला ७वां भाग शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रहा है। इसका अंक १-२ राजस्थानी के सर्वश्रेष्ठ महाकवि पृथ्वीराज राठोड़ का सचित्र और वृहत् विशेषांक है। अपने ढंग का यह एक ही प्रयत्न है।

पत्रिका की उपयोगिता और महत्व के संबंध मे इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि इसके परिवर्तन में भारत एवं विदेशों से लगभग ८० पत्र-पत्रिकाएं हमें प्राप्त होती हैं। भारत के अतिरिक्त पाश्चात्य देशों में भी इसकी मांग है व इसके ग्राहक हैं। शोधकर्त्ताओ के लिये 'राजस्थान-भारती' अनिवार्यतः संग्रहणीय शोध-पत्रिका है। इसमें राजस्थानी भाषा, साहित्य, पुरातत्व, इतिहास, कला आदि पर लेखो के अतिरिक्त संस्था के तीन विशिष्ट सदस्य डा० दशरथ शर्मा, श्री नरोत्तमदास स्वामी और श्री अगरचंद नाहटा की वृहत् लेख सूची भी प्रकाशित की गई है।

५. राजस्थानी साहित्य के प्राचीन और महत्वपूर्ण ग्रन्थों का अनुसंधान, सम्पादन एवं प्रकाशन

हमारी साहित्य-निधि को प्राचीन, महत्वपूर्ण और श्रेष्ठ साहित्यिक कृतियों को सुरक्षित रखने एवं सर्वसुलभ कराने के लिये सुसम्पादित एवं शुद्ध रूप में मुद्रित करवा कर उचित मूल्य में वितरित करने की हमारी एक विशाल योजना है। संस्कृत, हिंदी और राजस्थानी के महत्वपूर्ण ग्रंथों का अनुसंधान और प्रकाशन संस्था के सदस्यों की ओर से निरंतर होता रहा है, जिसका संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है—

६. पृथ्वीराज रासो

पृथ्वीराज रासो के कई संस्करण प्रकाश में लाये गये हैं और उनमें से लघुतम संस्करण का सम्पादन करवा कर उसका कुछ अंश 'राजस्थान-भारती' में प्रकाशित किया गया है। रासो के विविध संस्करण और उसके ऐतिहासिक महत्व पर कई लेख राजस्थान-भारती में प्रकाशित हुए हैं।

७. राजस्थान के अज्ञात कवि जान (न्यामतखां) की ७५ रचनाओं की खोज की गई। जिसकी सर्वप्रथम जानकारी 'राजस्थान-भारती' के प्रथम अंक में प्रकाशित हुई है। उनका महत्वपूर्ण ऐतिहासिक 'काव्य क्यामरासा' तो प्रकाशित भी करवाया जा चुका है।

८. राजस्थान के जैन संस्कृत साहित्य का परिचय नामक एक निबंध राजस्थान-भारती में प्रकाशित किया जा चुका है।

९. मारवाड़ क्षेत्र के ५०० लोकगीतों का संग्रह किया जा चुका है। बीकानेर एवं जैसलमेर क्षेत्र के सैंकड़ों लोकगीत, घूमर के लोकगीत, बाल लोकगीत, लोरियां, और लगभग ७०० लोक कथाएँ संग्रहीत की गई हैं। राजस्थानी कहावतों के दो भाग प्रकाशित किये जा चुके हैं। जीणमाता के गीत, पाबूजी के पवाड़े और राजा भरथरी आदि लोक काव्य सर्वप्रथम 'राजस्थान-भारती' में प्रकाशित किए गए है।

१०. बीकानेर राज्य के और जैसलमेर के अप्रकाशित अभिलेखों का विशाल संग्रह 'बीकानेर जैन लेख संग्रह' नामक वृहत् पुस्तक के रूप मे प्रकाशित हो चुका है।

११. जसवंत उद्योत, मुंहता नैणसी री ख्यात और अनोखी आन जैसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक ग्रंथों का सम्पादन एवं प्रकाशन हो चुका है।

१२. जोधपुर के महाराजा मानसिंहजी के सचिव कविवर उदयचन्द भंडारी की ४० रचनाओं का अनुसन्धान किया गया है और महाराजा मानसिंहजी की काव्य-साधना के सम्बन्ध में भी सबसे प्रथम 'राजस्थान भारती' मे लेख प्रकाशित हुआ है।

१३. जैसलमेर के अप्रकाशित १०० शिलालेखों और 'भट्टि वंश प्रशस्ति' आदि अनेक अप्राप्य और अप्रकाशित ग्रंथ खोज-यात्रा करके प्राप्त किये गये है।

१४. बीकानेर के मस्तयोगी कवि ज्ञानसारजी के ग्रंथों का अनुसन्धान किया गया और ज्ञानसागर ग्रंथावली के नाम से एक ग्रंथ भी प्रकाशित हो चुका है। इसी प्रकार राजस्थान के महान विद्वान महोपाध्याय समयसुन्दर की ५६३ लघु रचनाओं का संग्रह प्रकाशित किया गया है।

१५. इसके अतिरिक्त संस्था द्वारा—

(१) डा० लुइजि पिओ तैस्सितोरी, समयसुन्दर, पृथ्वीराज और लोकमान्य तिलक आदि साहित्य-सेवियों के निर्वाण-दिवस और जयन्तियां मनाई जाती हैं।

(२) साप्ताहिक साहित्य गोष्ठियों का आयोजन बहुत समय से किया जा रहा है, इसमे अनेको महत्वपूर्ण निबंध, लेख, कविताएं और कहानियां आदि पढी जाती हैं, जिससे अनेक विध नवीन साहित्य का निर्माण होता रहता है। विचार विमर्श के लिये गोष्ठियो तथा भाषणमालाओं आदि के भी समय-समय पर आयोजन किये जाते रहे है।

१६. बाहर से ख्याति प्राप्त विद्वानों को बुलाकर उनके भाषण करवाने का आयोजन भी किया जाता है। डा० वासुदेवशरण अग्रवाल, डा० कैलाशनाथ काटजू, राय श्रीकृष्णदास, डा० जी० रामचन्द्रम्, डा० सत्यप्रकाश, डा० डब्लू० एलेन, डा० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या, डा० तिबेरिओ-तिबेरी आदि अनेक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वानों के इस कार्यक्रम के अन्तर्गत भाषण हो चुके है।

गत दो वर्षों से महाकवि पृथ्वीराज राठौड़ आसन की स्थापना की गई है। दोनों वर्षों के आसन-अधिवेशनो के अभिभापक क्रमशः राजस्थानी भाषा के प्रकाण्ड

विद्वान् श्री मनोहर शर्मा एम० ए०, बिसाऊ और पं० श्रीलालजी मिश्र एम० ए०, हुंडलोद थे।

इस प्रकार संस्था अपने १६ वर्षों के जीवनकाल में, संस्कृत, हिन्दी और राजस्थानी साहित्य की निरंतर सेवा करती रही है। आर्थिक संकट से ग्रस्त इस संस्था के लिये यह सम्भव नहीं हो सका कि यह अपने कार्यक्रम को नियमित रूप से पूरा कर सकती, फिर भी यदा कदा लड़खड़ा कर गिरते पड़ते इसके कार्यकर्त्ताओं ने 'राजस्थान-भारती' का सम्पादन एवं प्रकाशन जारी रखा और यह प्रयास किया कि नाना प्रकार की बाधाओं के बावजूद भी साहित्य सेवा का कार्य निरंतर चलता रहे। यह ठीक है कि संस्था के पास अपना निजी भवन नही है, न अच्छा संदर्भ पुस्तकालय है, और न कार्यालय को सुचारु रूप से सम्पादित करने के समुचित साधन ही हैं; परन्तु साधनों के अभाव में भी संस्था के कार्यकर्त्ताओं ने साहित्य की जो मौन और एकान्त साधना की है वह प्रकाश में आने पर संस्था के गौरव को निश्चित ही बढ़ा सकने वाली होगी।

राजस्थानी-साहित्य-भंडार अत्यन्त विशाल है। अब तक इसका अत्यल्प अंश ही प्रकाश में आया है। प्राचीन भारतीय वाङ्मय के अलभ्य एवं अनर्घ रत्नों को प्रकाशित करके विद्वज्जनों और साहित्यिकों के समक्ष प्रस्तुत करना एवं उन्हें सुगमता से प्राप्त करना संस्था का लक्ष्य रहा है। हम अपनी इस लक्ष्य पूर्ति की ओर धीरे-धीरे किन्तु दृढ़ता के साथ अग्रसर हो रहे हैं।

यद्यपि अब तक पत्रिका तथा कतिपय पुस्तकों के अतिरिक्त अन्वेषण द्वारा प्राप्त अन्य महत्वपूर्ण सामग्री का प्रकाशन करा देना भी अभीष्ट था, परन्तु अर्थाभाव के कारण ऐसा किया जाना सम्भव नही हो सका। हर्ष की बात है कि भारत सरकार के वैज्ञानिक संशोध एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम मन्त्रालय (Ministry of scientific Research and Cultural Affairs) ने अपनी आधुनिक भारतीय भाषाओं के विकास की योजना के अंतर्गत हमारे कार्यक्रम को स्वीकृत कर प्रकाशन के लिये १५,०००) रु० इस मद में राजस्थान सरकार को दिये तथा राजस्थान सरकार द्वारा उतनी ही राशि अपनी ओर से मिलाकर कुल ३००००) तीस हजार की सहायता, राजस्थानी साहित्य के सम्पादन-प्रकाशना

हेतु इस संस्था को इस वित्तीय वर्ष में प्रदान की गई है; जिससे इस वर्ष निम्नोक्त ३१ पुस्तकों का प्रकाशन किया जा रहा है।

१. राजस्थानी व्याकरण—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
२. राजस्थानी गद्य का विकास (शोध प्रबंध)	डा० शिवस्वरूप शर्मा अचल
३. अचलदास खीची री वचनिका—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
४. हमीरायण—	श्री भंवरलाल नाहटा
५. पद्मिनी चरित्र चौपई—	,, ,, ,,
६. दलपत विलास—	श्री रावत सारस्वत
७. डिंगल गीत—	,, ,, ,,
८. पंवार वंश दर्पण—	डा० दशरथ शर्मा
९. पृथ्वीराज राठोड़ ग्रंथावली—	श्री नरोत्तमदास स्वामी और श्री बदरीप्रसाद साकरिया
१०. हरिरस—	श्री बदरीप्रसाद साकरिया
११. पीरदान लालस ग्रंथावली—	श्री अगरचंद नाहटा
१२. महादेव पार्वती वेलि—	श्री रावत सारस्वत
१३. सीताराम चौपई—	श्री अगरचंद नाहटा
१४. जैन रासादि संग्रह—	श्री अगरचंद नाहटा और डा० हरिवल्लभ भायाणी
१५. सदयवत्स वीर प्रबंध—	प्रो० मंजुलाल मजूमदार
१६. जिनराजसूरि कृतिकुसुमांजलि—	श्री भंवरलाल नाहटा
१७. विनयचंद कृतिकुसुमांजलि—	,, ,, ,,
१८. कविवर धर्मवर्द्धन ग्रंथावली—	श्री अगरचंद नाहटा
१९. राजस्थान रा दूहा—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
२०. वीर रस रा दूहा—	,, ,, ,,
२१. राजस्थान के नीति दोहे—	श्री मोहनलाल पुरोहित
२२. राजस्थानी व्रत कथाएँ—	,, ,, ,,
२३. राजस्थानी प्रेम कथाएं—	,, ,, ,,
२४. चंदायन—	श्री रावत सारस्वत

२५. भड्डुली—	श्री अगरचंद नहाटा और म:विनय सागर
२६. जिनहर्ष ग्रंथावली	श्री अगरचंद नाहटा
२७. राजस्थानी हस्त लिखित ग्रंथों का विवरण	,, ,,
२८. दम्पति विनोद	,, ,,
२९. हीयाली–राजस्थान का बुद्धिवर्धक साहित्य	,, ,,
३०. समयसुन्दर रासत्रय	श्री भंवरलाल नाहटा
३१. दुरसा आढा ग्रंथावली	श्री बदरीप्रसाद साकरिया

जैसलमेर ऐतिहासिक साधन संग्रह (संपा० डा० दशरथ शर्मा), ईशरदास ग्रंथावली (संपा० बदरीप्रसाद साकरिया), रामरासो (प्रो० गोवर्द्धन शर्मा), राजस्थानी जैन साहित्य (ले० श्री अगरचंद नाहटा), नागदमण (संपा० बदरीप्रसाद साकरिया) मुहावरा कोश (मुरलीधर व्यास) आदि ग्रंथों का संपादन हो चुका है परन्तु अर्थाभाव के कारण इनका प्रकाशन इस वर्ष नही हो रहा है।

हम आशा करते हैं कि कार्य की महत्ता एवं गुरुता को लक्ष्य में रखते हुए अगले वर्ष इससे भी अधिक सहायता हमें अवश्य प्राप्त हो सकेगी जिससे उपरोक्त संपादित तथा अन्य महत्वपूर्ण ग्रंथों का प्रकाशन संभव हो सकेगा।

इस सहायता के लिये हम भारत सरकार के शिक्षा विकास सचिवालय के आभारी हैं, जिन्होने कृपा करके हमारी योजना को स्वीकृत किया और ग्रान्ट-इन-एड की रकम मंजूर की।

राजस्थान के मुख्य मंत्री माननीय मोहनलालजी सुखाडिया, जो सौभाग्य से शिक्षा मत्री भी है और जो साहित्य की प्रगति एवं पुनरुद्धार के लिये पूर्ण सचेष्ट है, का भी इस सहायता के प्राप्त कराने में पूरा-पूरा योगदान रहा है। अत: हम उनके प्रति अपनी कृतज्ञता सादर प्रगट करते है।

राजस्थान के प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षाध्यक्ष महोदय श्री जगन्नाथसिंहजी मेहता का भी हम आभार प्रगट करते है, जिन्होने अपनी ओर से पूरी-पूरी दिलचस्पी लेकर हमारा उत्साहवर्द्धन किया, जिससे हम इस वृहद् कार्य को सम्पन्न करने में समर्थ हो सके। संस्था उनकी सदैव ऋणी रहेगी।

इन्हीं थोड़े समय में इतने महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का संपादन करके संस्था के प्रकाशन-कार्य में जो सराहनीय सहयोग दिया है, इसके लिये हम सभी ग्रन्थ सम्पादकों व लेखकों के अत्यन्त आभारी हैं।

अनूप संस्कृत लाइब्रेरी और अभय जैन ग्रन्थालय बीकानेर, स्व० पूर्णचन्द्र नाहर संग्रहालय कलकत्ता, जैन भवन संग्रह कलकत्ता, महावीर तीर्थक्षेत्र अनुसंधान समिति जयपुर, ओरियंटल इन्स्टीट्यूट बड़ोदा, भांडारकर रिसर्च इन्स्टीट्यूट पूना, खरतरगच्छ बृहद् ज्ञान भंडार बीकानेर, एशियाटिक सोसाइटी बंबई, आत्माराम जैन ज्ञानभंडार बड़ोदा, मुनि पुण्यविजयजी, मुनि रमणिक विजयजी, श्री सीताराम लालस, श्री रविशंकर देराश्री, पं० हरिदत्तजी गोविंद व्यास जैसलमेर आदि अनेक संस्थाओं और व्यक्तियों से हस्तलिखित प्रतियां प्राप्त होने से ही उपरोक्त ग्रंथों का संपादन सम्भव हो सका है। अतएव हम इन सबके प्रति आभार प्रदर्शन करना अपना परम कर्त्तव्य समझते हैं।

ऐसे प्राचीन ग्रन्थों का सम्पादन श्रमसाध्य है एवं पर्याप्त समय की अपेक्षा रखता है। हमने अल्प समय में ही इतने ग्रन्थ प्रकाशित करने का प्रयत्न किया इसलिये त्रुटियों का रह जाना स्वाभाविक है। गच्छतः स्खलनंक्वपि भवत्येव प्रमादतः, हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति साधवः।

आशा है विद्वद्वृन्द हमारे इन प्रकाशनों का अवलोकन करके साहित्य का रसास्वादन करेंगे और अपने सुझावों द्वारा हमें लाभान्वित करेंगे जिससे हम अपने प्रयास को सफल मानकर कृतार्थ हो सकेंगे और पुनः मां भारती के चरण कमलों में विनम्रतापूर्वक अपनी पुष्पांजलि समर्पित करने के हेतु पुनः उपस्थित होने का साहस बटोर सकेंगे।

निवेदक
लालचन्द कोठारी
प्रधान-मन्त्री
सादूल राजस्थानी-इन्स्टीट्यूट
बीकानेर

बीकानेर,
मार्गशीर्ष शुक्ला १५
संवत् २०१७
दिसम्बर ३, १९६०

उपोद्घात

'सदयवत्स वीरप्रबन्ध' का पहला परिचय- प्रस्तुत प्रवंध के अस्तिस्व का पहला उल्लेख करने वाले श्री चीमनलाल दलाल महोदय थे। ई. स. १९१५ (वि. सं. १९७१) में गुजरातके प्रख्यात शहर सूरत में आयोजित की गई (५) पांचवी गुजराती साहित्य परिपद के समक्ष उन्होंने "पट्टण के ग्रंथ भाँडार और उसमें बहुतायत रहा हुआ अपभ्रंश एवं प्राचीन गुजराती साहित्य" ("पाटणना भंडारो अने खास करीने तेमां-रहेलुं अपभ्रंश तथा प्राचीन गुजराती साहित्य") नाम का एक बढ़िया निवन्ध पढ़कर सुनाया था। उसमें एक अ-जिन कवि 'भीम' की रचना (लिपि वि. सं. १४८८) सदयवत्स कहानी का उन्होंने ही सर्वप्रथम निर्देश किया था।

इसके पहले श्री काँटावाला से संपादित 'साहित्य' मासिक पत्रिका के अगस्त ई.स. १९१४ (वि. सं. १९७०) के अंकमें आम्रपद्र (आमोद) जिला भरुच के कायस्थ कवि गणपति की रचना-कृति "माधवानल कामकंदला प्रवंध" (रचनाकाल वि. सं. १५७४) कि,जो २५०० दोहा छंदका काव्य-ग्रंथ था उसके प्रति सवसे पहले श्री दलाल महोदय ने ही पाठकों एवं विद्वानों का ध्यान आकृष्ट किया था।

श्री चीमनलाल दलाल महोदय ने ही पट्टण के ग्रंथागार में से अपभ्रंश एवं प्राचीन गुजराती साहित्य के ग्रंथों का परिचय एक सूचिके रूपमें पहले एकत्र किया था। क्योंकि उनके पहले पट्टण के ग्रंथागार के साहित्यक ग्रंथोंकी सूचि (नोंध) या संकलित यादी तैयार करने के लिये डा० व्युलर, डा० पीटरसन, एवं प्रा० मणिलाल न. द्विवेदी आदि महानुभावोंने प्रयत्न किया था। उनको यहाँके ग्रंथागारके संरक्षकों-का सहकार प्राप्त नहीं हुआ था। किन्तु श्री दलाल महोदय, स्वयं जिन होने के नाते, उन्होंने उन ग्रंथागार के संरक्षकों का सहकार एवं सद्भाव प्राप्त कर लिया था। और अत्यंत परिश्रम करके यहाँ के (पट्टणके ग्रंथा-

सार के) साहित्यिक-रत्न द्वारा उस साहित्य का साहित्य जगत में परिचय दिया। गुदड़ी के लाल की तरह, साहित्य प्रकाश में लाया गया। साहित्य-जगत मे नई रोशनी आई। फलस्वरूप बड़ौदा रियासतकी श्री गायकवाड़ प्राच्य ग्रन्थमाला (G. O. Series) के पहले संपादक एवं तन्त्री-पद पर उनकी नियुक्ति की गई थी।

सम्पादनका श्रेय- यह एक आनन्दजनक एवं आश्चर्यकारक घटना घटी है ऐसा कहने मे संकोच नही होता है। क्योंकि श्री दलाल महोदय ने जिस अ-जैन काव्यग्रथों की सर्व प्रथम उद्घोषणा की थी, वही दोनों ग्रंथो के संपादन करने का सद्‌भाग्य मुझे प्राप्त हुआ है। कौन जानता था कि यह कार्य मुझसे होगा? किन्तु हो गया है। और अब भी हो रहा है। इसमे ईश्वर का कुछ संकेत होगा ऐसा मैं समझता हूं।

ई. स. १९४२ (वि. स. १९९७) में "माधवानल कामकंदला प्रबंध" मूल-मात्र, एवं परिशिष्ट और उपोद्‌घात सहित प्रथम भाग श्री गायकवाड़ प्राच्य ग्रथमाला मे ९३ पुष्प के रूप मे प्रकाशित हुआ है। विस्तृत प्रस्तावना, टिप्पणियाँ, तथा शब्दकोशका दूसरा भाग तैयार होने जा रहा है।

संपादन का इतिहास- प्रस्तुत "सदयवत्स वीर प्रबंध" नामका ग्रंथ का संपादन कार्य करने का निर्णय ई. स. १९३९ (वि. स० १९९५) में किया गया था। उसके बाद अन्य हस्तलिखित पोथियाँ एवं उपयोगी साहित्य की खोज में कुछ वर्ष निकल गये। प्रस्तुत प्रबन्ध का प्रकाशन-कार्य अहमदाबाद की गुजरात विद्यासभा की ओर से होने वाला था। उससे मैंने वहां एक प्रेस-कापी प्रकाशन के लिये भेज दी। वहां के 'नवजीवन' छापखाने से ई. स. १९५० (वि. सं. २००६) के आसपास के समय में देवनागरी लिपि में प्रकाशित हुई कुछ गलतियां वाली प्रूफ-प्रतियाँ प्राप्त हुई। मैंने इन गलतियो की दुरुस्ती करने की प्रार्थना की। किंतु वहाँ के कार्यवाहकों को गलतियाँ दुरुस्त करने के लिये सुविधा नहीं होने के नाते, कुछ कठिनाई देखकर उस कार्य को आगे

बढ़ाने में अनिच्छा व्यक्त की। छापखानेवालों ने यह सिरपच्ची वाला साहित्य विद्यासभा की ओर वापस भेज दिया। और विद्यासभा ने मुझे वापस लौटा दिया। और इस तरह यह प्रकाशनका कार्य यकायक रुक गया।

श्री नाहटाजीकी प्रेरणा- श्री अगरचन्द नाहटाजी महोदयने उनके "राजस्थान भारती" नामके मासिक-पत्रिका के अंक मे सन् १९५८ में प्रकाशित एक विस्तृत लेख मे 'उस प्रबन्ध का प्रकाशन होने वाला है," ऐसा नोंट के रूप में उल्लेख किया था। बाद में (वि. स. २०१६) ई. सं. १९६० के सितम्बर मास मे श्री नाहटाजी महोदयने, प्रस्तुत प्रबन्धकों श्री सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीटयूट बीकानेर ग्रंथमालामें प्रकट करनेकी, संस्था के सेक्रेटरी (मंत्री) के नाते, मुझे सूचन किया, प्रार्थना की। मैंने धन्यवादके साथ उनकी प्रार्थनाको सहर्ष स्वीकार किया। इस तरह प्रस्तुत प्रबंधके प्रकाशन-कार्य की कहानी या पूर्व इतिहास अब पूर्ण होता है।

आभार दर्शन- इस उपयोगी साहित्य रचनाकृति को प्रकाशमें लाने की सुविधा एवं सहायता देने के लिये, तथा तत्संबंधी अनेक हस्त-लिखित प्रतियां एवं अन्य सामग्री भेजकर रचनाकृतिके संपादन, संशोधन एवं प्रकाशन आदि कार्यों में जो सहायता प्रदान की है, इसके लिये मैं श्री नाहटाजी महोदय को धन्यवाद के साथ उनका हृदय से आभार व्यक्त करता हूं।

उस संपादन की प्रस्तावना लिखने में उपरिनिर्दिष्ट श्री नाहटा जी महोदय का "राजस्थान भारती" में प्रकाशित "सदयवत्स सावलिंगा की प्रेमकथा" नामके अत्यन्त अभ्यासपूर्ण एवं विद्वत्तापूर्ण लेख का काफी उपयोग भी किया है। उसके लिये भी मुझे उनका ऋण-स्वीकार करते हुये अत्यन्त हर्ष होता हैं।

प्रस्तुत ग्रंथमें मैंने संशोधित की हुई एवं अन्य सब गुजराती सामग्री का हिंदी में अनुवाद करने वाले मेरे स्नेही एवं साहित्यक-शिष्य श्री चन्द्रकान्त बापालाल पटेल (साहित्यरत्न-प्रयाग) जी को मैं धन्यवाद देता हूं।

इस प्रबन्ध के सम्पादन में मेरे मित्र पंडित श्री लालचन्द्र भगवान दास गांधीजी ने पाठ निर्णय और टिप्पणी में हृदयपूर्वक सहायता की है इसलिए मैं अत्यन्त उपकृत हूं।

फोटोग्राफ- 'प्रबन्ध' और 'चउपाई' की प्राचीन प्रतियों के आदि एवं अंतभागके फोटोग्राफ (चित्र-पत्री) भी दिये हैं। जो प्रतियां बड़ौदा प्राच्यविद्यामंदिर के नियामक श्री डा० भोगीलाल जी साडेसरा के सौजन्य से प्राप्त हुई हैं। जिनसे लिपियों के प्रकारान्तरका परिचय भी होगा। और सुविधा रहेगी।

टिप्पणीमें कई अपभ्रंश शब्दोंकी व्युत्पत्ति दी गई है जिससे इनका यथार्थ बोध होने में सुविधा रहेगी।

प्रबन्ध में से एक दिलचस्प प्रसङ्ग का चित्र की प्रतिकृति एक सचित्र प्रति में से दी गई है।

"चैतन्यधाम" ३४ प्रतापगंज
बड़ौदा २
(गुजरात राज्य)

मंजुलाल मजमुदार

प्रस्तावना

प्रबन्ध का स्वरूप- वीररस प्रधान एवं ओजपूर्ण शैलीवाला काव्य 'प्रबंध काव्य' कहा जाता है। गद्य या पद्य दोनों में की हुई सार्थक रचना का नाम है 'प्रबंध' (मणिलाल बकोरभाई व्यास का संपादित "विमल प्रबंध", प्रस्तावना पृ० ६२) ई. स. १००० से १५०० तक रचे गये ऐतिहासिक काव्योंके नाम, खास करके 'प्रबंध' रखे गये हैं। जैसेकि कुमारपाल प्रबन्ध, भोजप्रबन्ध, चतुर्विंशति प्रबन्ध, प्रबन्ध चिंतामणि, प्रबंध श्रेणि, जैसे संस्कृत गद्यपद्यात्मक ग्रंथों में एक या अनेक वीरव्यक्तियों के चरित्रों का बयान किया गया है। इन प्रबंधों में संबंधित व्यक्तियों में विमल मंत्री जैसे युद्धवीर तथा धर्मवीर भी हैं, एवं जगड् जैसे दानवीर, और विक्रम जैसे युद्धवीर, और सदयवत्स या पृथ्वीराज जसे शृंगारवीर भी उल्लेखनीय हैं। यों प्रबंध खास करके ऐतिहासिक व्यक्तियोंके चरित्र-निरूपण के ही काव्य है।

वीररस का आलंबन- रसशास्त्रका एक सिद्धांत है कि उत्तम प्रकृति के नायकों का ही वीररसमें बयान करना चाहिये। क्योंकि वीरत्व उत्तम पुरुषों में ही होता है। वीररस का स्थायीभाव उत्साह है। उत्साह का राजस गुण किसी भी कार्य में वीर को प्रवृत्त करता है। क्योंकि उस कार्य में उसको विजय प्राप्त करना है। वीर का उत्साह यूं पाँच प्रकार का हो सकता है। जैसे कि युद्ध करने का उत्साह, धर्म करने का उत्साह, दान करने का उत्साह, दया करने का उत्साह, तथा प्रेम करने का उत्साह।

महाभारत के पात्रों में अर्जुन युद्धवीर, हैं युधिष्ठिर महाराज धर्मवीर हैं। कर्ण दानवीर हैं। शिविराज दयावीर हैं। भगवान कृष्णचंद शृंगारवीर के रूप में विख्यात हैं ही। यदि कोई कहेंगे कि क्षमावीर, सत्यवीर, लज्जावीर, नीतिवीर, धृतिवीर जैसे भेद क्यों न हो सके? वीरके

अनेक भेद और केवल पांच ही भेद क्यों कहे गये ? इसका समाधान इस प्रकार हो सकता है कि इनका अन्तर्भाव इनमें हो जाता है । तथा सत्य आदि का संनिहित धर्म में ।

अंग्रेजी वीरपूजा की भावना- कार्लाइल के 'वीर और वीरपूजा' (Hero & Hero worship) नामक पुस्तक में जीवन के विविध क्षेत्रों में वीरता दिखाने वाले वीरों का पूजन करना उचित है ऐसा प्रतिपादित किया गया है। इसमें वीरता को व्यापक अर्थ मे सूचित किया गया है ।

कवि, धर्मगुरु, वैद, व्यापारी, सैनिक प्रत्येक के क्षेत्र मे हरेक को वीरता दिखलानेका पूर्ण अवकाश रहता है । और वीरता दिखलानेवाले सच्चे वीर कहलाने के योग्य है । उपर्युक्त दिखाये गये पांच प्रकार के भेद मे इसका भी अंर्तभाव हो जाता है ।

वीररस के अन्य पद्यस्वरूप- वीरोके चरित्र 'प्रबन्ध' रूपमें 'पवाडा' रूप में, श्लोक (सलोका) रूप मे, या 'रासा'के रूपमें वीररसके लिये उचित ऐसे 'छद' मे रचे जाते है। और रचे भी गये है । जिसके दृष्टांत ऊपर दिये गये है । सामान्य मनुष्यों के चरित्र कभी काव्य द्वारा बिरदाने के योग्य होते नहीं है, या ऐसे साधारण मनुष्यो के चरित्र काव्य में वर्णित किये नहीं जाते है, या योग्य भी नही होते । इसलिये गुजराती एवं राजस्थानी पद्य-साहित्य में खास तौर पर चरित्र, प्रबन्ध, पवाडो, रासो तथा छंद, एवं शलोका, ये सर्व शब्द करीब पर्याय रूप में प्रयुक्त किये गये शब्द न हों, ऐसा समझने का मन होता है ।*

---

* कान्हडदे प्रबंध की कुछ प्रतियों में उसका शीर्षक कान्हड चरिय, कान्हडदेनी चुपइ, कान्हड देनउ पवाडउ, और श्री कान्हडदे रास-ऐसा भी उल्लेख मिलता है-देखिये प्रा० कान्तिलाल व्यास, श्री सिंघी ग्रंथमाला अंग्रेजी प्रास्तावना, पृ० २० की पादनोंट ।

वीरगाथा काल- वीरगाथा काल के राजाश्रित कवियों एवं भाट चारणोंने अपने आश्रयदाता राजाओं के शौर्य पराक्रम एवं प्रभाव आदि के वर्णन अपनी ओजपूर्ण सनकदार वानी में काव्यों में किये है। ये लोग कभी कभी रणक्षेत्र में जाते थे, तलवार भी चलाते थे। और अपनी वीर वानी से सैन्य में शौर्य का संचार करते थे। खुद भी युद्ध में प्राणार्पण कर देते थे। ऐसी रचनाओं की पीढ़ीगत रक्षा भी की जाती थी एवं वृद्धि भी।

हमे वीरगाथायें दो रूप में मिलतीं हैं। (१) मुक्तक रूप में, और (२) प्रबंध में। जिस तरह युरुप में वीरगाथाओं के विषय (Age of Chivalry) युद्ध एवं प्रेम थे, वैसे भारत के साहित्य में भी हुआ है। किसी राज्य की स्वरूपवती राजकन्या का समाचार सुनकर अपने लश्कर के साथ उस राज्य पर धावा करके उसकी राजकन्या छीन ली जाती या अपहृत की जाती थी। इसमें वीरों का वीरत्व,गौरव, शौर्य,अभिमान, वल, प्रभाव, आदि माना जाता था। इस तरह प्रवन्ध काव्यों में वीररस के साथ शृंगार रस का भी मिश्रण होता था, हुआ है।

वीररस के मुक्तक- वीररस के प्राचीन मुक्तकों का संग्रह मुनि श्री हेमचन्द्राचार्य के 'प्राकृत व्याकरण' ग्रंथ में दृष्टान्त के रूप में प्राप्त होता है। इसके सिवा भी प्रबंध काव्य एवं वीरगीतों के स्वरूप में रचना हुई है।

रासा साहित्य- गुजराती के रासा युग के समसामायिक काल को हिंदी साहित्य में "वीरगाथा काल" नाम दिया गया है। इस काल में 'खुमान रासो' 'विशालदेव रासो' 'पृथ्वीराज रासो' 'हम्मीर रासो' 'जगनिक का आल्हाखंड' आदि रचना हुई है।

गुजराती म वि. सं. १३७१ के आसपास श्री अंवदेव सूरि रचित "समरारासु" में पट्टण के समरसिह नामक एक ओसवाल वणिक वनिया ने संघ (यात्रा) निकाल के शत्रुंजय पहाड़ पर श्री ऋषभदेव के मन्दिर का जीर्णोद्धार किया। और घर लौट आया उसकी प्रावस या तीर्थ-

यात्रा आदि का वर्णन आता है । इसमें समरसिंह स्वयं दानवीर एवं धर्मवीर भी दिखाई देता है ।

श्री कक्कसूरि के वि. सं १३९३ में संस्कृतमें रचित ग्रंथ 'नाभि-नंदन जिनोद्धार प्रबन्ध' में भी इसका वर्णन है । श्री आम्रदेवसूरि इस यात्रा में सम्मिलित थे । ऐसा उसमें उल्लेख है ।

गुजराती प्रबन्ध साहित्य- 'विसलनगरना नागरज्ञाति' पद्मनाभने वि. सं १५१२ मे 'कान्हडदे प्रबंध'की रचना की है। यह कृति सुपरिचित तथा सुविदित हो गई है। वि. सं १५६८ में श्री लावण्यसमयने 'विमल प्रबन्ध' की रचना की है यह भी प्रसिद्ध है। कायस्थ कवि गणपति ने 'माधवानल कामकंदला प्रबन्ध' की रचना वि. सं १५७४ मे आम्रपद्र, आमोद जिला भडोच में की है।

शील से शोभित नायक नायिका का शृंगार इसका वर्ण्य विषय है। इसमें माधव चारित्र्य-शुद्ध शृंगारवीर है। कामकदला अभिजात गणिका-पुत्री है। और वह मृच्छकटिक की पात्र वसंतसेना का स्मरण कराती है। इसीलिये उनका मिलन साहसवीर तथा परदुःखभंजन ऐसे राजन विक्रम द्वारा होता है। इस प्रबन्ध में विप्रलंभ तथा रतिक्रीडा यों दोनों प्रकार के शृंगार रसप्रद वाणी मे वर्णित किया गया है। फिर भी इसमें कविने शीलका, चारित्र्यका, माहात्म्य अधिक भावपूर्वक स्थापित किया है।

वैष्णव कवि श्री गोपालदासने "श्री वल्लभाख्यान" श्री वल्लभाचार्य (जीवनकाल वि. सं. १५२९-१५८७) तथा श्री विट्ठलनाथजी (जीवन-काल वि. सं. १५७२ से १६४२ में) धर्मवीर ऐसे गोस्वामी श्री विट्ठल नाथजी की प्रशस्ति की, प्रबन्ध-रूप में नौ गेय पद्यों में रचना की है।

संस्कृत गद्य कथा- श्री रत्नशेखर के शिष्य श्री हर्षवर्धन-गणिने वि. सं. १५२७ मे "सदयवत्स कथा" संस्कृत गद्य में रची है। वह शायद एक जैनेत्तर कवि भीम ने रचित "सदयवत्स वीर प्रबंध" की वि. सं १४८८ में श्री पट्टन में लिखी गयी प्राचीनतम प्रतिकृति प्राप्त हुई है। इस विनासे इस कृतिकी रचना के संभव में

सकता है कि भीम की रचना अनुमानतः वि. सं. १४६६ में हुई होगी, ऐसा कुछ लोगों ने अनुमान किया है। दूसरी प्रति वि. सं. १५९० में एवं तीसरी प्रति वि. सं. १६६२ की प्राप्त है। इस परसे कहा जा सकता है कि सदयवत्स और सावलिंगा की प्रेम कथा का यह सबसे प्राचीन एवं उपलब्ध संस्करण है।

श्री चीमनलाल दलाल महोदय ने जिस प्रति की जांच की थी उसमें पद्य-संख्या ६७२ थी। दूसरी प्रति में ६८९ पद्य-संख्या है। किंतु सर्व प्रतियां का मिलान करनेके वाद,प्रवन्ध की ७३० जितनी कड़िया प्राप्त हुई हैं।

संस्कृत कथानक भीम के प्रवन्ध का मुख्यतः अनुसरण करता है। किंतु उसमें जिनधर्म की महिमा का गुथन करलेनेकी तक श्री हर्षवर्धन-ने छोड़ दी नहीं है। इन प्रसंगों का उल्लेख कथा-सार देते समय कौंस या कोष्टक में सूचित किया जायेगा। खरतर गच्छ के यति श्री कीर्ति-वर्धन ने इस कथानक में जिनमत का कुछ भी प्रचार नही किया है।

कथानक का मूल- 'कथा सरित् सागर' जो कि लोककथाओंके महासागर स्वरूप गिना जाता है। उसमें भी 'सदयवत्स कथा' का पता चलता नही है। फिर भी उज्जयिनी, हरसिद्धिमाना, प्रतिष्ठान नगर, शालिवाहन, वावनवीर, और खापरा चोर इत्यादि उल्लेखों से और सदयवत्स के अद्भुत वीरता-भरे वर्णनों से या गाथाओंसे इस लोक-कथा की उत्पत्ति का सम्वन्ध 'विक्रम कथा-चक्र' के साथ होना अनुमान किया जा सकता है।

---

* संस्कृत में 'सदयवत्स', प्राकृत में 'सुदयवच्छ' 'सुद्धवच्छ' एवं सुद्द, गुजरातीमें 'सदयवच्छ' और 'सदेवंत' इस तरह राजस्थानी-मारवाडी में 'सूदों', एवं 'सदेवछ' शब्द हैं। इससे ज्ञात होता है कि ये सर्व शब्द कथानक से सम्बन्ध रखने वाले है। कथानक के निकटवर्ती शब्द हैं।

सावलिंगा का निर्देश कही कहीं सावलिंगी के रूप में भी प्राप्त है।

प्राचीन उल्लेख पद्मावतमें- सदयवत्स कथा के विषय में दो प्राचीन उल्लेख प्राप्त होते है। (१) मलिक मुहम्मद जायसीकृत रचना पद्मावत मे इस कथानक का उल्लेख उसने किया है। और श्री सुधाकर द्विवेदी वाला जो संस्करण है उसमे यही पाठ है।

(२) शिरफ ने जायसीकृत 'पद्मावत' के अपने अंग्रेजी अनुवाद में पृ० १४४ की पादटिप्पणी मे भी 'सदयवत्स' पाठ का उल्लेख किया है।

अपभ्रंशमें उल्लेख- एक दूसरा उल्लेख भी प्राचीन समय का प्राप्त होता है, जो अब्दुल रहेमानके अपभ्रंश काव्य 'संदेश रासक'में है। जिसका रचनाकाल वि. सं. १४०० के आसपास है। उसने मुलताननगर का वर्णन किया है। उसमे वहां के विचक्षण नागरिकों की साहित्यक विनोद की चर्चा के प्रसंग मे उन्होने लिखा है कि मुलताननगर के सर्व नागरिक पंडित थे। ये विचक्षणो के साथ नगर मे परिभ्रमण करते समय कही कही प्राकृत के मनोरम्य छंद के आलाप सुनने मे आते थे। तो कही भेप परिवर्तन करने वाले लोग (वहुरूपी) 'रासक' करते देखने को मिलते थे; तो कही वेद, सदयवत्स कथा, नल चरित्र, महाभारत एवं रामायण (रामचरित) सुनने में आते थे।*

---

*देखिये, मूल अपभ्रंश रचना की संस्कृत टिप्पणी--

"यदि विचक्षणैः सह पुरान्तः परिभ्रम्यते तदा मनोहरं छंदसा मधुरं प्राकृतं श्रूयते।

कुत्रापि चतुर्वेदिभिः वेदः प्रकाश्यते।

कुत्रापि वहुरूपिभिर्निवचा रासको भाष्यते ॥४५॥

कुत्रापि सुदयवच्छ कथा, कुत्रापि नलचरितम्।

कुत्रापि विविध विनोदैः भारतं उच्चरितं श्रूयते ॥

अन्यच्च कुत्रापि कुत्रापि आशिष त्यागिभिर्द्विजवरैः

रामायणमभिनूयते ॥४४॥

यहां नलचरित्र, महाभारत एवं रामायण के साथ 'सदयवत्सकथा' का उल्लेख प्राप्त होने से ज्ञात होता है कि उस समय यह कथा उन ग्रंथों की तरह ही लोकप्रिय एवं प्रसिद्ध होगी ।

प्रान्त प्रान्तमें प्रचार- जायसी के पद्मावत में इस कथा का उल्लेख है इससे ज्ञात होता है कि उस कथानक की प्रसिद्धि उत्तर प्रदेश में भी इसी रूप में होगी । यह बात स्पष्ट नजर में आ जाती है ।

अब्दुल रहेमान के इस का इस रूप में उल्लेख, वास्तव में पंजाबकी ओर इस कथा के प्रचार का द्योतक है । राजपुतानी (राजस्थान) एवं गुजरात मे भी इस कथानक का बहुत प्रचार रहा है । यह बात भी उस सपादित संशोधित एवं प्रकाशित ग्रंथ से ज्ञात होगी ।

विक्रम कथाचक्र से सम्बन्ध- जिन कवि के संस्कृत कथानक में जिनाचार्य कालक के साथ उसका सम्बन्ध जुटाया है । एव कथा में उज्जयिनी, हरसिद्धिमाता (देवी), प्रतिष्ठाननगर एवं शालिवाहन राजा बावन वीर, और खापरा चोर आदि के उल्लेख किये है। और इस प्रकार से विक्रमकथाओं के वार्ताचक्र (कथा चक्र) के साथ उसका सम्बन्ध व्यंजित किया है ।

प्रबन्धके रचयिता कविका परिचय- कवि ने प्रबन्ध में अपने निर्देश के अतिरिक्त अन्य कोई भी परिचय नहीं दिया है । नामका निर्देश निम्नलिखित काव्य-पंक्ति में मिल जाता है, जो यहां उद्धृत किया गया हैं ।

"इम भणइ भीम तस गुण थुणिसु,
जो हरिसिद्धि-वर-लवध ।"

नाम का निर्देश प्राप्त होता हैं । किंतु कवि ने अपनी जाति ज्ञाति एवं जन्मस्थल या निवासस्थान के बारे में कुछ भी उल्लेख नहीं किया है । साथ साथ प्रबन्धके रचना-कालका भी किंतु उनके प्रबन्धकी प्राचीन-

तम प्रतिहारी भी पाटन में वि. सं. १४८८ की लिखी हुई प्राप्त हुई है। (निरुद्ध्रान मन: प्रमोदाय) इससे काफी अनुमान किया जा सकता है कि यह रचना विक्रम की १५ वी सदी के उत्तरार्ध से अर्वाचीन नहीं है।

कविका निवास स्थान कविने अपने निवास स्थानके बारेमें कुछ भी संकेत नहीं किया है। किन्तु कविका निवास स्थान गुर्जर भूमि हो ऐसा प्रतीत होता है। क्योंकि जब रानी सेना के स्वामिकी चिकित्सा केवल गुर्जर वैद्यराज से ही हो सकती थी। और इसने गुर्जर वैद्यकी कवि भीम ने काफी प्रशंसा भी की है।

प्राचीन काल की गुर्जर भूमि का विस्तार भी गूर्जर प्रतिहार राजाओं के साम्राज्य विस्तार के साथ साथ हुआ है। जिस राज्य में सौराष्ट्र, आनर्त, एव समस्त राजस्थान का भी सन्निवेश होता था ; और इसकी व्यापक लोक भाषायें भी समान थी।

कवि की ज्ञाति- कवि का ब्राह्मण होना सम्भव है। क्योंकि उसने गणेश, शंकर, एवं हरसिद्धि माता परमेश्वरीका उल्लेख किया है। साथ साथ कैलाशपति भगवान शंकर के प्रासाद का सुन्दर बयान दिया है। (दे०कडी २१७,१८,१९)। प्रतिष्ठान नगर वर्णनके प्रसङ्गमें विक्रम, त्रिविक्रम, विष्णु एवं सूर्य का भी उल्लेख है। सावलिगा के अग्निप्रवेश की पूर्व तैयारी के रूप में जो प्रार्थना दी है इससे भी पता चलता है। जैसे कि 'करउ साखि त्रिकम ने तरणी' कडी (५९९)।

कवि रामायण एवं महाभारत से भी विशिष्ट रीति से परिचित थे ऐसा जान पड़ता है। कुछ छंद एवं काव्य पद्धतियां के द्वारा इसका पता चलता हैं। सदयवत्स के गुण एवं कार्यों की प्रशंसावली के अनुसंधान मे नल, कंदर्प, युधिष्ठिर, गांगेय भीष्म पितामह, भीमसेन, कर्ण एवं दुर्योधन जैसोके उपमान भी कविने दिये है।(दे० छप्पय कडी २८७)कविके जमाने मे जिनधर्म एवं जीवदया अहिंसाका भी काफी प्रचार था। इसके द्योतक निम्नलिखित काव्य-पंक्तियां हैं। इससे पता चलता है। जैसे कि 'जिन शासन गाढउ गहगहइ। जीवदया देखी मन रहइ ॥'(दे कडी ४५१,४५२)

प्रबंध की भाषा- प्रस्तुत प्रबन्ध की भाषा किसी भी जिनेत्तर गुजराती ग्रंथ की भाषा से प्राचीन जान पड़ती है। प्राकृत एवं अपभ्रंश के शब्द और प्रयोगों के रूप में उसमें इतनी सामग्रियां भरी पड़ी हैं कि न पूछो बात। यदि प्रारम्भ के मंगलाचरण में कवि ने गणपति का नाम-स्मरण न किया होता तो इसकी गणना किसी जिन कवि की कृति के रूप में गिना जाने का सम्भव था। डा० टेसिटोरीने जूनी पश्चिम राज-स्थानी का नामाभिधान जिस भाषा-स्वरूप को दिया है। और गुजराती विद्वान महाशयोंने 'अंतीम अपभ्रंश' और 'जूनी गुजराती', ऐसे शब्दों से उसका व्यवहार किया है। उसी समयकी भाषा 'सदयवत्स वीर प्रबन्ध'में प्रतीत होती है। वास्तव में वि. सं. १४८८ की प्रति की उपलब्धि से भाषा के प्राचीन स्वरूप की रक्षा हुई है। और इसमें कुछ परिवर्तन एवं आधुनिकरण नहीं हुआ है।

सरस या सुन्दर रचना -कवि इस प्रबन्धके प्रारम्भ में 'सरस' 'सुअर्थ' एवं सुच्छंद प्रबन्ध के रचयिता सर्व कोई प्रौढ़ एवं लघु छोटे बड़े ऐसे कविजनों को नमस्कार करते हैं। इससे अनुमान किया जा सकता है कि कवि ने किसी प्राकृत किंवा प्राकृत अपभ्रंश ग्रन्थों में से इस प्रबंध के विषय में प्रेरणा प्राप्त की होगी जिसका निर्देश हमें निम्नलिखित काव्य पंक्तियों से मिलता है। जैसे कि "गुरु लहुय जि कवि कवियण, सरस सुअत्थ सुछंद बंधयरा।" कवि के पुरोगामी काल में ऐसी प्रबन्ध रचना होना भी शायद सम्भव हो। फिर भी अद्य-यावत्प्राप्त जिनेत्तर रचनाओं में कवि भीम की रचना सबसे प्राचीन है-ऐसा कहने में संकोच नहीं है।

भीम कवि की रचना एवं काल-समय- सदयवत्स चरित्र कथानक के सम्बन्ध में उपलब्ध साहित्य से निर्णय किया जाता है कि उन रचनाओं का प्रारम्भ वि. की १५ वीं शती से होता है। प्राचीन गुजराती भाषा में रचित भीम कवि की रचना 'सदयवत्स वीर प्रबन्ध' ग्रंथ उपलब्ध रचनाओं में सबसे प्राचीन है। इसकी प्राचीनतम प्रतिकृति

वि. सं. १४८८ की प्राप्त हुई है। इससे अनुमान किया गया है कि यह रचना विक्रम २० वीं [illegible] पहले की होना स्पष्ट है। क्योंकि इसकी रचना वि. सं. १४६६ की है। ऐसा निर्देश कई विद्वानों ने किया होगा। [illegible] में कवि का व्यक्ति बारे में कहीं भी स्पष्ट उल्लेख प्राप्त नहीं होता।

प्रबन्ध के छंद- कवि ने सम्पूर्ण प्रबन्ध में दूहा, दूहा-सोरठा, पद्धडी, चउपई, अडयल्ल, वस्तु, छप्पय, कुंडलिया, चामर एवं मौक्तिकदाम इन मात्रामेल छंद एवं एकतारी केदारराग, और राउल धनाश्री, जैसे गेय काव्य-छंद प्रयुक्त किये हैं। अतएव ७३० कड़ियों में वह कृति प्रसादयुक्त एवं वैविध्यपूर्ण और सुन्दर बन पाई है।

वस्तुछंद 'पिंगलसारोद्धार' के नियमानुसार, १२५ मात्राओंका नवपदी छंद है। पहले तीसरे और पांचवें पदमें १५ मात्रायें, दूसरे एवं चौथे पद में ११ मात्रायें. और अंत्यके चार पदों से दूहा बनता है।

पद्धडी पद्धडिका और पाधडी छंद कडवक के अंत में अपभ्रंश काव्यों में प्रयुक्त होता है।

आचार्य हेमचंद्र जी ने 'छंदानुशासन' में 'चौः पद्धटिका' चार चगणों से पद्धडिका छंद बनता है ऐसा लक्षण दिया है। चार मात्रा के गणकी चगण संज्ञा है। एवं १६ मात्रा का एक पाद, इस तरह के चार पाद पद्धडिका छंद में रहते हैं। इसमें उसका नाम चतुष्पदी भी है।

प्रबन्ध में रस- कवि ने इसमें नौ ९ रस होने का उल्लेख किया है, किंतु प्रधानतया वीर एवं अद्‌भुत रसका संचार अधिक है। शृंगार रस उसमें गौण रूप में पाया जाता है। 'सदयवत्स वीर प्रबन्ध' नाम की गुजराती कवि की रचना प्रायः वीर रस से ही प्रेरित हैं।

गुजराती रूपान्तर-उज्जयिनी के राजा प्रभुवत्स के महालक्ष्मी रानी से सदयवत्स नामक पुत्र हुआ। उसे द्यूत का कुव्यसन लगा हुआ था। प्रतिष्ठानपुर के राजा शालिवाहन के सावलिंगा नामक पुत्री थी। उसके स्वयंवर में जाने के लिये आमंत्रण मिलने पर राजा प्रभुवत्स ने मंत्री के साथ सदयवत्स को प्रतिष्ठानपुर भेजा। मंत्री कृपण होने से कुमार को खर्च के लिये आवश्यक द्रव्य नहीं देता था। स्वयंवर में सदयवत्स ने अपने गुण एवं कला से आकर्षित कर सावलिंगा से विवाह कर लिया।

उज्जयिनी में महादेव नामक एक दरिद्र ज्योतिषी रहता था। स्त्री की प्रेरणा से एक दिन वह राजा प्रभुवत्स की सभा में उपस्थित हुआ। राजा ने उसका परिचय पूछा उसने कहा कि मैं ज्योतिष के बल से भूत, भविष्यत् और वर्तमान के शुभाशुभ को जानता हूं। राजा ने उसके इस अभिमान से क्रुद्ध हो परीक्षार्थ अपने निकटवर्ती जयमंगल हाथी का आयुष्य पूछा। ज्योतिषी ने कहा यह कल दोपहरको मर जायगा। राजा ने क्रोधित होकर उसे कैद कर लिया और नौकरों को जयमंगल हाथी की विशेष रक्षा करने की आज्ञा दे दी। लोक ज्योतिषी की अवज्ञा करते हुये कहने लगे, देखो इस ज्योतिषी ने हाथी का मरण तो जान लिया पर अपने बंदीखाने में पड़ने की बात को नहीं जानी।

इधर वैद्यों की देखरेख में जयमंगल की विशेष सुरक्षा की व्यवस्था हो चुकी थी। पर भवितव्यतावश दूसरे दिन दोपहर के समय हाथी मदोन्मत्त हो भाग निकला और बाजार में उपद्रव मचाने लगा। इसी समय एक सगर्भा ब्राह्मणी के अधरणी उत्सव का वरघोडा उसके पीहर से ससुराल जा रहा था, वहाँ वह हस्ति आ पहुंचा। उत्सव में सम्मिलित लोग भाग खड़े हुये, पर ब्राह्मणी गर्भभार के कारण भाग न सकी। अतः हाथी ने उसे पकड़ ली। यह देखकर उसके पति ने चिल्लाते हुये उसकी रक्षा करनेवाले को हार आदि देने की उद्घोषणा की। सदयवत्स की दृष्टि भी उस ओर पड़ी और उसने हाथी को मारकर ब्राह्मणी की रक्षा की। इससे प्रसन्न हो प्रभुवत्स राजा ने कुमार को युवराज-पद देने का

निश्चय किया। स्वयंवर में साथ जाने वाले मंत्री ने कुमार को युवराज-पद मिलता देख विचार किया कि मैंने इसे आवश्यक द्रव्य व्यय के लिये नही दिया था संभव है वह उस वैर का बदला मुझ से ले। अतः इसे युवराज-पद नहीं मिले ऐसा सोच राजा को उल्टी मंत्रणा दी कि कुमार ने एक साधारण स्त्री की रक्षा करने के लिये "जयमंगल"-जैसे राजमान्य हाथी को मार डाला यह उचित नहीं किया। राजा को मंत्री की बात जँच गई उसने कुमार के कार्य को अनुचित समझ कर उसे राज्य छोड़कर चले जाने की आज्ञा दे दी।

कुमार ने भी अपमान होने से अब वहाँ रहना उचित नही समझा और जाने की तैयारी कर ली। माता ने समझाया पर उसने नही माना। सावलिंगा भी उसके साथ हो गई। चलते चलते वे एक वन में आ पहुंचे वहां सावलिगा को जोरों से प्यास लगी। कुमार पानी की खोज में इधर उधर घूमते हुए एक प्रपा पर नजर आई। पानी लेनेके लिये पास पहुंचने प्रपालिका वृद्धा ने कहा यह हरसिद्धि माता की प्रपा है। जितना पानी लोगे उतना ही खून देने की शर्त से ही जल ले सकते हो। कुमार ने सावलिंगा के प्रेमवश यह शर्त स्वीकार कर, पानी ले जा कर, सावलिंगा को पिलाया। वृद्धा भी साथ गई और खून माँगा। कुमार शिरच्छेद करने को उद्यत हुआ। इससे देवी ने प्रसन्न हो वर माँगने को कहते हुए कहा- कि मैंने ही तुम्हारी परीक्षा लेने के लिये जंगल की रचना की है। और मैं उज्जैन एवं प्रतिष्ठान नगर की कुलदेवी हूं। कुमार ने संग्राम एवं युद्ध में जय होने का वरदान माँगा।

देवी ने सारियों के द्यूत में जय होने के लिये दो पासे, कपर्दक द्यूत में जय होने के लिये कपर्दिकायें, और संग्राम में जय होने के लिये लोहछुरिका दी। आगे चलते हुए स्त्रियों के समूह के बीच में एक कुमारिका को ध्यान करते हुए देखकर सावलिंगा ने उसके पास जाकर वृत्तान्त पूछा। कुमारिका ने कहा यहाँ से ५ कोस पर स्थित धारावती-नगरीके राजा धारवीरकी स्त्री धारिणीकी मै लीलावती नामक पुत्री हूं।

वन्दीजनों के मुख से सदयवत्स का गुण श्रवण कर उसे पाने के लिये इस कामितप्रद तीर्थ में ६ महीने से ध्यान कर रही हूं। सदयवत्स के न मिलने पर कल चिता में जल मरूंगी। सार्वलिगा ने यह वृतांत सदयवत्स को कहा। कुमार सबके साथ नगरी में आया और लीलावती से विवाह कर उसकी इच्छा पूर्ण की।

[इसी समय धर्मघोष नामक जैनाचार्य वहां पधारे और "थोड़ा बहुत भी धर्म जरूर ही करना चाहिये" ऐसा उपदेश देते हुये मृगांक की कथा कह सुनाई। सदयवत्स ने उसे सुनकर श्रावक धर्म स्वीकार किया।]

लीलावती को पितृगृह में रखकर सार्वलिगा के साथ कुमार आगे चला। रास्ते में एक पर्वत पर शिला से ढकी हुई गुफा देखी, दोनों ने कौतूहलवश भीतर प्रवेश किया तो उसमें ५ चोर बैठे देखे। चोरो ने सदयवत्स को अकेला देख उसे मारकर सार्वलिगा को ग्रहण कर लेने का विचार किया। उन्होंने द्यूत रमने के लिये सदयवत्स का आव्हान किया और जो हारे उसे मस्तक देना पड़े यह शर्त रखी गई। देवीके वरदानसे सदयवत्स जीता पर सज्जनतासे उसका शिर छेदन नही किया। इससे चोर प्रभावित हुए। और अदृष्टांजन, संजीवनी, रससिद्धि आदि विद्यायें देने को कहा पर कुमारने उन्हें नहीं लिया। फिर भी एक चोर ने गुप्तरूप से कुमार के उत्तरीय वस्त्र के छोर से पद्मिनिपत्र वेष्टित लक्ष मूल्य का कंचुक बांध दिया। चोरों ने यह भी कहा कि कभी आप संकट में पड़ जायें तो हमें स्मरण करते ही हम आकर आपकी सहाय करेंगे।

कुमार आगे चलते हुए एक निर्जन नगर में पहुंचा। राजभवन के समीप आने पर एक स्त्री का रोना सुन कर उसके पास जाके रोने का कारण पूछा। उसने कहा मै नंद राजा की लक्ष्मी हूं, अनाथ होने से रो रही हूं, तुम मेरे स्वामी बन जाओ।

[नगर का निर्जन होने का कारण पूछने पर लक्ष्मी ने कहा कि इस

श्रीपुर नगर में एक तापस आया था। वह अज्ञानी था। लोगों पर प्रभाव जमाने के लिये उसी तापस ने [illegible] पर [illegible] झूठा [illegible] का ढोंग रच्खा था। एक बार नगरी की रक्षा में उसका [illegible] किया, इससे उसने राजा के [illegible] परिचय की। [illegible] वह ढोंगी बन गया राजा ने उसकी परीक्षा के लिये उसे महल में आकर रानी के संबंध में अधिक [illegible] आंख [illegible] थी। रानी को देख कर वह कामातुर हो उठा और भोग के लिये प्रार्थना की। रानी [illegible] पर राजा ने आकर तापस को मार डाला। वह तापस मरकर राक्षस हुआ और पूर्व भव के वैर से नगरी की यह स्थिति कर दी।

राक्षसी ने कुमार को धन का ढेर पता बतलाया। कुमार सावलिंगा से कहा कि धन हम अपने फिर कभी विधि विधानपूर्वक ग्रहण करेंगे। अभी तो प्रतिष्ठानपुर चलें। चलते चलते वे प्रतिष्ठान के समीप आ पहुँचे और पास के गांव में एक ब्रह्मभट्ट के यहां जा कर ठहरे। ससुराल होने के कारण नगर-प्रवेश के लिये योग्य वस्त्राभूषण लाने एवं रथनादि की व्यवस्था करने के लिये कुमार अकेला नगर में जाने लगा तब सावलिंगा ने कहा कि यदि आप ५ दिन में वापिस नहीं लौटे तो मैं चिता-प्रवेश कर लूंगी।

कुमार को नगर में प्रवेश करते हुए एक टूंटक मिला। कुमार उसे अपशकुन समझ कर वापिस जाने लगा। टूंटक को यह बात अखरी और वह पुष्प एवं खाद्यादि मांगलिक वस्तुओं को लेकर पास में आकर कहने लगा कि मैं सिंहल के राजा का सुरसुंदर नामक पुत्र हूं। कौतुकवश ५०० हाथी एवं करोड़ मोहर लेकर नगर देखने के लिये यहाँ आया था पर मैं उसको जूए में हार गया। जुवारियों ने मेरे हाथ कान भी काट डाले। दैव रूठता है वही जूआ खेलता है।

टूंटक के साथ कुमार ने नगर में प्रवेश किया। रास्ते में सूर्य-प्रासाद में विवाद हो रहा था। विवाद का विषय यह था कि राज्यमान्य कामसेना वेश्या ने स्वप्न में देखा कि श्रेष्ठि दत्तक के पुत्र सोमदत्तने उसके

घर आकर उससे भोग किया। अतः सोमदत्त से अपनी द्रव्य मुद्रा रूप में गर्हित कार्यों की शुल्क लेनें के लिये वेश्या नें अक्का भेजी। श्रेष्ठि ने-धन देने से इनकार किया। इसी कारण ३ दिन से विवाद चल रहा था कुमार को देख उसे इसका न्यायाधीश चुना गया। उसने श्रेष्ठि से कहा कि राजमान्य से विरोध करना उचित नही। अतः तुम इसे धन दे दो। कुमार नें श्रेष्ठि से धन मंगा कर उसका आधा भाग लेनें के लिये अक्का को कहा पर उसने आधा लेने को स्वीकार नहीं किया। तब कुमार ने एक दर्पण भांग कर उसके सामने धन रख दिया और प्रतिबिम्बित धन लेने के लिये अक्का से कहा। क्योंकि स्वप्न एवं प्रतिबिम्बित अवस्था समान ही होती है। इस न्याय से अक्का लज्जित हो बिलखती हुई लौट गई।

कामसेना यह वृत्ताँत जानकर नृत्य करने के बहाने सूर्यप्रासाद में आई और कुमार को देख कर मोहित हो गई। उसने कुमार को अपने घर चलने को कहा। टूंटक ने जाने का विरोध किया कि वेश्या किसी की नही होती। पर कुमार निर्भीकता से चला गया और ५ दिन उसके यहां रहा। कुमार नगर मे जूआ खेलने गया और बहुत सा धन कमा लाया। उसमें से कुछ धन सार्वालगा के लिये आभूषणादि खरीद करने के लिये टूटक को दे दिया बाकी वेश्या को दे दिया।

५ वें दिन कुमार ने वेश्या से जाने की आज्ञा मागी। वेश्या ने रहने का बहुत आग्रह किया पर कुमार को सार्वालगा से वचनवद्ध होने के कारण जाना जरूरी था अतः रवाने हुआ। जाते समय वेश्या-ने कुमार का उत्तरीय वस्त्र खेंचा तो उससे चोर का बाधा हुआ पद्मिनीवेष्टित कंचुक खुल पड़ा। वेश्या ने वेष्टन खोलने पर रत्नमय कंचुक देख कर कुमार से मागा और उसने वह उदारतापूर्वक दे दिया।

वेश्या उसे पहिन कर राजसभा में जा रही थी, इसी समय एक सेठ नें कंचुक को देख, वह अपना चोरी गया था वही है यह निश्चय

कर राजा से इसकी फरियाद की। राजा द्वारा वेश्या को पूछने पर उसने कहा हमारे यहां अनेक सोमादि आते हैं मैं उनका नाम नहीं बतला सकती। तब राजा ने वेश्या को शूली की सजा का हुक्म दे डाला। कुमार ने जब यह बात सुनी तो वह शूली के स्थान पर पहुंचा और कोतवाल को जाकर कहा 'चोर मैं हूं, वेश्या को छोड़ दो'' पर उसके नहीं छोड़ने पर जबरदस्ती उसे छुड़ा लिया, राजाने कुमार को पकड़ने के लिये अपनी सेना भेजी पर कुमार ने उसे भी हरा दिया।

उधर ५ दिन तक कुमार के न आने के कारण सावलिगा ने चिता-प्रवेश की तैयारी कर ली। कुमार ने यह सुनते ही अपने बदले सोमदेव को वहां छोड़ वापिस आने की प्रतिज्ञा कर वहां पहुंचा। और सावलिगा को जलने से बचाया। प्रतिज्ञानुसार कुमार शूलीस्थान पर वापिस आया राजा ने ५२ वीरो को कुमार से युद्ध करने के लिये भेजा। नारद ने सूचना पाकर कुमार के पूर्व परिचित ५ चोर वहा सहायतार्थ आ पहुंचे अतः ५२ वीर भी हार गये।

राजा ने बल से काम निकलता न देख नम्रता से कुमार का नाम पूछा और उसके न बतलाने पर वेश्या से पूछा। तो वेश्या ने उसका नामाङ्कित खड्ग लाकर राजा को दिखलाया। राजा को छलने के लिये कुमार ने कहा इस तलवार को तो मै सदयवत्स से जूए मे जीता था। राजा ने उसे वश मे करने को गजघटा बुलाई। उसे भी सिहनाद द्वारा कुमार ने भगा दिया। अंत मे राजा के अनुरोध से कुमार ने अपना वास्तविक स्वरूप प्रगट किया। तो राजा को उसे अपना जामाता ही जानकर वड़ी प्रसन्नता हुई और अपने पुत्र शक्तिसिंह को भेज कर सावलिगा को भी बुला ली।

अवान्तर कथा। कुछ समय तक दोनों वहां आनंदपूर्वक रहे। इसी समय सदयवत्स की मित्रता १ वनिक, १ क्षत्रिय एवं ब्राह्मण जाति के तीन व्यक्तियों से हो गई। इतने मे ही एक विदेशी के मिलने पर कुमार ने पूछा कि कही कुछ कौतुक देखा हो तो कहो। उसने कहा तुम्बन नगर मे धनपति सेठ के मृत पिता वहुत

समय हुए जला दिये गये थे, पर वे रात के समय जीवित अवस्था में घर पर आ जाते है। यह वड़ा आश्चर्य है। कुमार कौतूहलवश तीनों मित्रों के साथ वहां गया। तुम्वन में प्रवेश करते हुए एक व्राह्मणकन्या को सीकोतरी पीड़ा दे रही थी,उसे छुड़ाकर उसका विवाह व्राह्मण मित्र के साथ कर दिया।

आगे चल कर मित्रों सहित कुमार सेठ के घर पहुंचा। और अमुक धन लेने का तय कर वे उसके पिता का शव जलादेने के लिये स्मशान ले गये। उसे प्रातःकाल जलाने का निश्चय कर रात को १-१ प्रहर वारी वारी पहरा देने की कर ली गई।

पहली वारी वणिक की थी। पहरा देते हुए उसे एक स्त्री के रोने की आवाज मुनाई दी। वणिक शव को अपनी पीठ पर बाँध स्त्री के पास गया। और रोने का कारण पूछा। स्त्री ने कहा मेरा पति शूली पर लटका हुआ है मै उसके लिये थाली मे भोजन लाई हूं पर शूली के ऊंची होने के कारण उस तक पहुंच नही सकती। इसी दुःखसे रो रही हू। वणिक ने करुणावश उसे पीठ पर चड़ा कर ऊंची कर दी। स्त्री ने ऊंची चढ़ कर शूली पर लटके हुए पुरुष का मॉस खाना शुरू कर दिया। जव एक मांसखंड वणिकके ऊपर पड़ा तब उसने उसको नीचे डाल दिया। पड़ते ही वह स्त्री भागने लगी पर वणिक ने उसका पीछा कर एक हाथ काट डाला और उस हाथ को वालुका मे डाल दिया।

दूसरे पहर मे एक व्राह्मण ने एक राक्षस द्वारा एक राजकुमारी को ले जाते हुए देखा। राक्षस को राजकुमारी से भोग की प्रार्थना करते देख पीछे से व्राह्मण ने उसे मार डाला।

तीसरे पहर क्षत्रियकी वारी थी। शव को जलाने के लिये वह अग्नि लेने की खोज में निकला तो उसने भूतों को खीर पकाते देखा। उनके पास ७ पुरुष खिचड़ी के साथ साग की जगह खाने के लिये वंधे हुए थे।

क्षत्रिय-पुत्र ने भूतों को डरा कर भगा दिया। और पत्थर मारकर खिचड़ी की हाडी को फोड़ डाला। बंधे ७ पुरुष राजकुमार थे।

चौथे प्रहर सदयवत्स उठा तो शव में उसे जूआ खेलने को आह्वान किया। शव में रहे हुए बैतालने अपने दाव प्रसारित कर एक राजमहल में से जूआ खेलने की सामग्री उठाकर ले ली। जो हारे उसका मस्तक छेदन कर दिया जाय। इस प्रतिज्ञा पूर्वक साथ बैतालको जीतकर कुमार ने शव को जला दिया।

प्रभात में श्रेष्ठि के पास जाकर पूर्व निश्चित धन मांगा। श्रेष्ठि ने कहा कल खातरी करके दूंगा। कुमार ने राजा के पास फरियाद की और रात का सारा वृतांत कह सुनाया। राजा के प्रमाण मांगने पर बालू में गड़ा हुआ हाथ उपस्थित किया और वह हाथ रानी का होने से रानी सीकोतरी साबित हुई। राजकुमारी राजकुमारों को भी उपस्थित किया गया। श्रेष्ठि ने कुमार को अपनी कन्या व्याह दी।

सदयवत्स वहां से वापिस लौटते हुए निर्जन नगर को जिसे देख आया था वहाँ गया। वहां राक्षस की आराधना कर वीर कोट नामक नगर बसाया। सदयवत्स के लीलावती रानी से वनवीर और सावलिंगा से वीरभानु नामक पुत्र हुए।

[सदयवत्स ने चतुर्थी को संवत्सरी करने वाले जैनाचार्य कालकसूरि के हाथ से अपने बसाये नगर के जैनमंदिर की प्रतिष्ठा करवाई।]

इसी समय उज्जयिनी, जो कि अपनी मूल राजधानी थी, पर शत्रुओं के ६ महीने से घेरा डालने की बात सुन कर कुमार ने ससैन्य वहां जाकर शत्रुओं को परास्त किया। प्रभुवत्स राजा ने सदयवत्स को उज्जयिनी का राज्य दिया। वीरकोट का नवीन स्थापित राज्य राजकुमार को सौंप दिया गया।

[अन्यदा कालकाचार्य उज्जयिनीमे पधारे और पूछने पर सदयवत्स का पूर्वभव कह सुनाया कि तू विंध्याचल की पल्ली के गोत्रक नगर में व्याघ्र राजा की धारलदेवी रानी के गुण सुंदर नामक सरलस्वभावी

एवं दयावान पुत्र था। श्यामाचार्य के पास जीवदया व अभयदान का उपदेश श्रवण कर उसने सम्यक्त्व सहित श्रावकोचित १२ व्रत ग्रहण किये। गुणसुन्दर मुनियों को अन्नादि का दान और प्राणियोंको अभयदान देने मे सदा तत्पर रहता था। एक बार उद्यान में क्रीडा करते हुए उसे ४ पुरुष मिले। उन्होंने कहा कि वैताल नगर में देवी के वलिदान के लिये हमें पकड़ा गया था पर हम वहां से भाग कर यहां आ गये हैं। वहाँ के लोग वड़े निर्दयी हैं और मनौती मानकर थोड़े से स्वार्थके लिये भैंसे और विशेष कार्य से मनुष्य तक की वलि दे देते हैं। गुण-सुन्दर का हृदय करुणार्द्र हो गया। अतः वहाँ जाकर वलि देनेवाले लोगों को भगाकर मनुष्यों को वचाया। और अपनी वलि देने के लिए कंठ पर तलवार का प्रहार करने लगा। देवी ने उसके धैर्य एवं साहस से प्रसन्न हो उसका हाथ पकड़ा। तव उसने देवी को प्रतिवोध देकर सदा के लिये वलिप्रथा वंद करवा दी। मृत्यु समय में आराधन करने से तुम इस जन्म में सदयवत्स हुए। जीव दया व अभयदान के पुण्यसे प्रवल पराक्रम और मुनि दान के फल से सव प्रकार के भोग प्राप्त किये। अपना पूर्व वृत्तान्त सुन सदयवत्स को पूर्व-भव स्मरण हो आया।

राजस्थानी रूपांतर-राजस्थान में प्रचलित सदयवत्स कथा में केशव की प्रति सवसे प्राचीन है। अतः तुलनात्मक विचार करने के लिये यहाँ उसका सार दे दिया जाता है।

पूर्व दिशा के कोंकण देशस्थ विजयपुर में महाराजा महीपाल राज्य करते थे। उनका पुत्र सदयवच्छ था। राजा के मंत्री सोम के सावलिंगा नामक पुत्री थी। योग्य वय होने पर महाराजा ने पंडित को वुला विद्या-ध्ययनार्थ कुमार को उसके सुपुर्द कर दिया। इसी प्रकार मन्त्री सोम ने सावलिंगा को भी पढ़ाने के लिए उन्हीं की पाठशाला में भेज दिया। और उसे पाठशाला के छात्रों से अलग रखकर पढ़ाने का निर्देश कर दिया।

सावलिंगा की पढ़ाई परदे में होने लगी। राजकुमार के पूछने पर

पंडितजीने उसके पर्दे में पढ़ने का कारण उसका अन्धी होना बतलाया । और कुमारी को कुमार का कोढ़ी होना कह दिया जिससे परस्पर कोई सम्बन्ध न हो सके । एक दिन किसी कारण से पंडितजी नगरमें गये थे और सबको पढ़ाने का काम कुमार को सौंप गये । पढ़ते हुए पर्दे में स्थित कुमारी ने कोई पाठ अशुद्ध बोला । तब कुमार ने कहा 'अन्धी ! अशुद्ध क्यों बोल रही हो?' प्रत्युत्तरमें कुमारीने कहा--कोढ़ी ! जैसा पाटी में लिखा है वैसा ही पढ़ रही हू ।' कुमार का भ्रम इस उत्तर से दूर हो गया । उसने सोचा गुरुजी के कथनानुसार कुमारी यदि अन्धी है तो पाटी पर लिखा वह पढ़ने की बात कह नहीं सकती, और मुझे कोढ़ी कहने का कारण भी क्या ? अतः हम दोनों एक दूसरे को देख न सकें इसीलिये गुरुजी ने भ्रम फैला रखा है । भ्रम दूर होते ही कुमार को कुमारी के देखने की उत्कंठा बढ़ी । और एक दूसरे को देख करके प्रेमसूत्र में बंध गये । फिर परस्पर दूहा-गूढ़ादि लिखते व कहते रहने के द्वारा प्रीति दृढ़ होती गई ।

गुरुजी के बाग मे खेत थे । उसकी रखवाली के लिये बारी २ से शिष्य वहां जाते थे । नियमानुसार सदयवच्छ अपनी बारी पर खेत पहुंचा और सावलिगा उसे भाता (भोजन) देने खेत गई । वहाँ एकान्त होने से प्रीति विशेष रूप से दृढ हो गई । सावलिगा ने किसीके भी साथ विवाह होने पर पहली रात उसके साथ रमण का वादा किया ।

शिक्षा समाप्त होने पर यौवनावस्था देख, राजा ने सदयवच्छ का विवाह किसी राजकन्या से कर दिया । और सावलिगा के पिता ने भी कुमारी की अवस्था विवाहयोग्य जानकर, ब्राह्मण को भेजकर पुष्पावती के सेंठ धनदत्त से उसका सम्बन्ध निश्चत कर दिया । सदयवच्छ यह जानकर वेश्या के कथनानुसार स्त्रीवेष में कुमारी सें उसके घर जाकर मिला । तब उसें देवी मन्दिर में मिलने का कुमारी ने संकेत किया ।

निश्चित समय पर पुष्पावती सें धनदत्त आया और उसके साथ सावलिगा का विवाह हो गया । सदयवच्छ के साथ अपनी पुरानी प्रीति

एवं वचन निवाहने के लिये देवी मन्दिर मे अपनी पूर्व मनौती पूर्ण करने को पति से आज्ञा लेकर वहां पहुंची ।

सदयवच्छ ने उस दिन दूना नशा कर लिया और देवी के मन्दिरमें जाके सो गया । नशे की अधिकता से उसको इतनी प्रगाढ़ निंद्रा आगई कि सार्वलिगा ने उसे जगाने के लाख प्रयत्न किये पर सब निष्फल गये । तब निराश होकर वह अपने घर लौटते समय अपने आने के सूचक चिन्ह एवं फिर मिलने का संकेत-सूचक दूहा कुमार के हाथ पर लिख दिया ।

निद्राभंग होनें पर कुमार नें सार्वलिगा के न आने का बड़ा अफसोस किया । दतौन के समय हाथ की ओर देखने पर कुमार ने हाथ पर उसका लिखा हुआ दूहा पढ़ा । और अपनी गलती महसूस कर,योगी होकर दोहे की सूचनानुसार पोहपावती नगर पहुंचा । रास्ते मे हाथ का लेख नष्ट न हो जाय अतः बावड़ी में पशु की भांति मुंह से पानी पिया । इस प्रसंग में पनिहारियों से बातचीत करते हुए कुंभारिन से पता लगा कर वह धनदत्त सेठ के घर पहुंचा और सार्वलिगा से चार आँख होने पर दोनों अधीर हो उठे ।

उस समय सार्वलिगा ने अपने पति को कहकर नया महल या मंदिर बनानेका काम शुरू कर रखा था । सदयवच्छ उसीके निर्माण-कार्यमें मजदूरी करने लगा । एक बार जोगीका वेप धारण कर भिक्षा लेने सार्वलिगा के घर गया, जब उसने अन्य किसीके हाथ से भिक्षा न ली, तब सार्वलिगा देने आई और पुनः चार आँखें होंने पर स्तम्भित से हो गये ।

राजगवाक्षमें बैठी हुई राजकन्या नें यह स्वरूप देख उपालंभ सूचक दोहे कहे । इन दोहों को सुनकर कुमार नाराज होकर चला गया । राजकन्या ने सार्वलिगा से मिलकर दोनों का प्रेम-सम्बन्ध ज्ञात किया ।

इधर सदयवच्छ ने सैन्य संग्रह कर पुहुपावती के राजा भोज को राजकन्या देनेका कहलाया । और उसके न मानने पर युद्ध कर,उसे हरा दिया । तब भोज ने अपनी कन्या का विवाह उससे कर दिया । कर-

मोचन के समय कुमार ने अन्य वस्तुयें न लेकर धनदत्त सेठ को बांधकर मगवाया और उससे सावलिगा देने का स्वीकार कराके छोड़ दिया।

सावलिगा और सदयवच्छका युगल जोड़ा मिलकर बडा प्रसन्न हुआ। कुछ दिन वहां रहने के पश्चात् सपरिवार अपनी नगरी लौट राज्यपालन करता हुआ विलास करता रहा। सावलिगा आदि रानियोंके साथ विषय-सुख भोगते हुए उसके ४ पुत्र हुए। यही कथा की समाप्ति होती है।

कथा के विविध रूपांतर-उपर्युक्त कथा मे प्रेम और विरह प्रधानतः है, अर्थात शृंगाररस प्रधान है। सावलिगा ने भी अपनी प्रीति व वचन निभाया। इसके परवर्ती रूपांतरों मे सदयवच्छ की नगरी का नाम किसी मे मुंगीपुर किसी मे आनन्दपुर और किसी में पुहुपावती मिलता है। उसके पिता का नाम सालिवाहन व महीपाल, माता का नाम कही चपकमाला कही सौभाग्यसुन्दरी, एवं गुरु का नाम सगुण महात्मा लिखा है। सावलिगा के पिता का नाम पदमसन, कही पदमसेठ, और माता का नाम लीलावती लिखा है विद्याध्ययन के लिये गुरु के पास कही सावलिगा पहले गई और कही पीछे, ससुराल का स्थान धारानगर ससुर का नाम हीरा, पति का नाम रतनपाल एवं वहां राजा का नाम विजयपाल लिखा है। पुहुपावती मे सदयवच्छ के पहुंचने पर कई कथा-नको में घर में आग लगा कर सावलिगा का बगीचे में उससे जाके मिलना, कही वहाँ भी सदयवत्स का नही पहुंच सकना लिखा है। वहाँ के राजा का नाम कहीं भिन्न ही लिखा है और उसकी कन्या के विवाह का कारण कन्या का सावलिगा से अनुराग हो जाना बतलाया है। कही स्वयंर विधि से उसके साथ विवाह होने का उल्लेख है। कई रूपांतरों में सदवच्छका अपने नगर लौटने का कारण पिता अन्वेषण कर बुलवा भेजना लिखा है। और भी कई घटनाओं में अंतर व कमीवेशी पाई जाती है। अर्थात अनेक व्यक्तियों की सूझबूझ से इस कथा में बहुत कुछ समय समय पर जोड़ा एवं रूपांतरित किया गया है।

कई कथानकों के प्रारंभिक भाग में उसके पूर्वभव का प्रसंग देकर

प्रीति का प्राचीन सम्बन्ध होना व्यक्त किया है। एक रूपांतर में अन्य अनेक कथानकों की भाँति शिव पार्वती का प्रसंग भी जोड़ दिया गया है।

कथारूपों में भिन्नता-अब गुजरात और राजस्थानी संस्करण में मुख्य रूप से जो अन्तर है उस पर प्रकाश डालता हूं।

(१) गुजराती संस्करण वीर एवं अद्भुतरस प्रधान है राजस्थानी शृंगार प्रधान है।

(२) गुजराती संस्करण में कई घटनायें हैं। तब राजस्थानी कथा में घटनाओं का प्राधान्य व अधिकता नहीं है, पर प्रेम सम्बन्धी कथन ज्यादा है।

(३) गुजराती संस्करणानुसार सावलिंगा सदयवत्स की विवाहिता पत्नी है, तब राजस्थानी संस्करणानुसार वह रत्नपालकी विवाहिता पत्नी और सदयवत्स की प्रेमिका है।

(४) गुजराती संस्करणानुसार सदयवत्स उज्जैनी के राजा प्रभुवत्स का पुत्र है तब राजस्थानीके अनुसार विजयपुर, आणन्दपुर, मुंगीपुर, या पुहपावती के राजा महिपाल या सालिवाहन का पुत्र है।

(५) गुजरात एवं राजस्थान में प्रचलित आधुनिक कथानक मिलता जुलता हैं अर्थात-गुजरात में भी प्राचीन कथानक को अब भुला दिया गया प्रतीत होता है। इनमें पूर्वभवों के प्रेम सम्बन्धों की कथा ७।८ भवों तक बढ़ चुकी है।

शृंगारप्रधान कथानक-कीर्तिवर्धन की 'सदयवत्स चउपई' और मारवाड़ राजस्थान के अन्यान्य गद्य पद्यात्मक 'सदेवंत सावलिंगा' नाम के कथानकों में प्रधान रूप में शृंगार रस पाया जाता है।

सदयवत्स कथा एवं दो परिपाटी-राजस्थान की अनेक प्रसिद्ध लोककथाओं में "सदयवत्स सावलिंगा" की प्रेमकथा का कई शताब्दियों तक राजस्थान में सर्वाधिक प्रचार अधिक लम्बे समय तक

रहा है। इस कथा की अनेक प्रतियों पर [illegible] चित्रित [illegible] इस कथन का समर्थन करती है।

सदयवत्स कथा के विविध रूपांतरों के [illegible] से [illegible] है, कि उस लोककथा का गुम्फन दो प्रकारों में विभक्त हुआ है। भीम कवि का गुजराती 'सदयवत्स वीर प्रबन्ध,' एवं [illegible] 'सदय-वत्स चरित्र' के गद्य कथानक की परिपाटी और रूप में [illegible] आ रही है। तो राजस्थानी पद्यात्मक एवं गद्य पद्यात्मक दोनों प्रकार के कथानक शृंगार-रस-मूलक होने के नाते उनसे [illegible] हैं।

पंजाब एवं उत्तर प्रदेशमें उल्लिखित 'सदावृज्ज कथानक' का केवल नामोल्लेख के अलावा विशेष कुछ भी ज्ञान अभी तक प्राप्त हुआ नही है।

सदयवत्स चउपई-राजस्थानी रूपांतरों में सबसे प्राचीन रचना खरतरगच्छीय जैनकवि केशव, अपर (दीक्षित) नाम कीर्ति-वर्धन रचित "सदयवत्स सावलिगा चउपई" है। इसकी रचना वि. सं. १६९७ के विजयादशमी को प्रथमाभ्यास के रूप में की गई है। किन्तु जान लेना पड़ता है कि वास्तव में यह चउपई भी कवि की स्वतंत्र रचना न होकर जनता में प्रसिद्ध दोहे आदि पद्यों को अपने धागेसे माला बनाने के रूप मे पिरोये हों ऐसे, संकलन सा दिखाई देता है। राजस्थानी भाषा के पिछले सभी रूपांतर प्रायः गद्य पद्यात्मक रूप में ही है। जिनमें से कुछ रचनाओमें दोहे है, गद्यांश कम है। तो कुछ में गद्यांश बहुत विस्तृत है। कीर्तिवर्धन ने अपनी रचनाकृति में बीच बीच में अपने पद्यो के साथ २ प्रचलित पद्यो को भो यथास्थान जुटा दिये है।

गद्यपद्यात्मक रूपांतर-राजस्थान की गद्यपद्यात्मक 'सदयवत्स कथा' सचित्र रूप में भी मिलती है। अतएव वह विशेष रूप से उल्लेख-नीय है। 'सदयवत्स सावलिगा री कहा' गुजरात मे आबाल वृद्धो में ज्ञात है। उनके आठ भव के प्रेम एवं वियोग की कथायें स्त्रियां भी बड़े चावसे

पड़तीं हैं। उपलब्धि प्राचीन राजस्थानी काव्य ग्रंथों में पूर्ववर्ती केवल १-२ एक या दो भव की कथा का वर्णन पाया जाता है। आठ भव की कथा का सम्बन्ध पीछे से जोड़ा जुटाया गया प्रतीत होता है।

कथा द्वारा जैन मतका प्रचार एवं प्रसार सदयवत्स कथा का संस्कृत गद्य रूप कि जो गुजराती कथानक से प्रेरित होना प्रतीत होता है, उसके रचयिता हर्षवर्धन ने इस लोक-कथा को अन्य जैन विद्वानों की भांति ही जैन स्वांग या चोला पहना दिया जान पड़ता है। जैसे कि सदयवत्स ने अपने वसाये हुए नगर में वीर जिनेश्वर के मन्दिर की प्रतिष्ठा चतुर्थी की संवत्सरी मनाने वाले कालकाचार्य के हाथों से करवाई है। जैन कवि ने जैनाचार्य कालक के साथ उसका सम्बन्ध जोड़ा जुटाया है। जिसने सदयवत्स को इसके पूर्वभव की कथा सुनाई उससे सदयवत्स को जाति-स्मरण तब हुआ। हर्षवर्धन के उल्लेख के अनुसार सदयवत्स ने श्रावक-धर्म स्वीकार किया था। किन्तु केशव (कीर्तिवर्धन) ने उसे राजस्थान में प्रचलित लोककथा के रूप में ही रहने दिया है।

परिशिष्ट १-में-प्रकाशित 'सदयवत्स सावलिंगा पाणिग्रहण चउपई' की रचना किस कवि ने की है उसका उल्लेख अप्राप्य है। प्रायः उसका रचयिता जैन होना सम्भव है। कवि ने किसी प्राचीन चरित्र के आधार पर यह रचना की है। पाणिग्रहण अधिकार के प्रथम अधिकार होने का उस चउपई मे उल्लेख है। जैसे कि 'ए पहिलु हुउ अधिकार, कवि जोई चरित्र आधार'। इसकी भाषा १६ वी शती के अंत भाग की अथवा १७ वीं के प्रारम्भ के होना सम्भव है।

कवि केशव की रचना-केशव कवि की 'सदयवत्स सावलिंगा चउपई' की रचना (परिशिष्ट २) विप्रलंभ शृंगार रस में ही भरपूर है। इसमें जो छंद हैं दूहा (दोहे), चंद्रायणा, एवं कवित्त, मनोवेधक है। एवं सुभाषित, अन्योक्ति, अर्थान्तरन्यास. कहावतें, और मुहावरों के द्वारा काव्य रसपूर्ण बनाया है। कवि ने कडी ४५४, ४५५, ४५८, में वस्तु-निर्देशात्मक मंगलाचरण किया है। (पृ० १३५) और अंत में फल

स्तुति की है।

पूर्वभव का कथानक–अंकुश कथानक में पूर्वभव की कहानी दी गई है। यह [illegible] की नज़ारे में नहीं है। सत्यवन्त एवं सार्वलिंगा के प्रेमी युगल का सम्बन्ध नायक एवं नायिका के रूप में है। इसमें पराक्रम की कोई भी बात नहीं है। केवल [illegible] के राजा को पद-दलित करके, सार्वलिंगा को सत्यवन्त प्राप्त करता है, इसमें पराक्रम का ही उल्लेख है। परन्तु इसमें कुछ अद्भुतता नहीं दिखाई देती। सत्यवन्त शौर्यवीर के रूप नहीं दिखाई देता, किन्तु प्रेमवीर के रूप में दृश्य-मान होता है।

सदेवन्त सावलिगा के आठ भव की कहानी कवि या लेखक-इस कहानी के रचयिता का पता नहीं चलता।

कथानक का प्रारम्भ जगन्माता पारवती जी ने वनलीला देखने का हठाग्रह किया। इसलिए भगवान शंकर उनको साथ में लेकर वनमें चल आये। रास्तेमें एक नारियल नामक प्राचीन वाव देखने में आयी। तृषा लगी हुई थी जिससे पार्वती जी ने भगवान शंकर से पानी लाने के लिये प्रार्थना की। शिवजी ने प्रार्थना सुनकर पानी लाकर दिया। सती उमा पानी पीने की तैयारी करती है कि वहां शिर उठाने पर एक नर एवं मादा वंदर की जोड़ी देखी। पार्वती ने भगवान शंकरसे पूछा कि ये वन्दर कौन से विचार में इतने मग्न हो गये है। शिवजी ने उत्तर दिया कि यह वात वहुत लम्बी चौड़ी है, छोड़ दो इसे। उत्तर सुनकर यह रूठ गयी, और मारे क्रोध के जव भगवान शंकर के शिर के वालों में छुप गई। तव आखिर में शिवजी वह वात सुनाने के लिये तैयार हो गये।

अष्ट भव के नाम-(१) ब्राह्मण–ब्राह्मणी (२) चकवा-चकवी (३) हिरन-हिरनी (४) मयूर-ढेलणी (५) हंस-हंसी (६) राजा-रानी (७) वंदर-वंदरी, और वाद मे (८) नर-नारी

पहले भव की कहानी ब्राह्मण-ब्राह्मणी-धारापुर नामका एक देहात था। उस गांव में दो ब्राह्मण रहते थे। दोनों निःसन्तान थे। जिससे उन्होने वनमें जाकर तपश्चर्या की। ब्रह्माजी प्रसन्न हुए दोनों को वर दिये। एक को पुत्र-रत्न प्राप्त हुआ दूसरे को पुत्री-रत्न की प्राप्ति हुई। योग्य उम्र होते ही इन दोनों की शादी हो गई। युवक शादी के बाद विध्याध्ययन करके घर वापस आ रहा था। रस्ते के बीच में ससुरसे भेंट हुई वह जामाता को अपने घर ले आया। कुछ दिनों तक वह ससुराल में रहा। और बाद में ये दोनों पति पत्नी (युवक-युवती) अपने घर जाने के लिये निकल पड़े।

किंतु रास्ते में ऐसी घटना घटी कि इन दोनों की तृषातुर अवस्थामें मृत्यु हुई। पार्वतीजी ने भगवान शंकर से प्रार्थना की कि प्रभु इस जोडी को जिन्दा कीजिये। तो शंकर भगवान ने कहा कि अब ये लोग कृपा करने के योग्य नहीं हैं। फिर भी पार्वतीजी ने हठाग्रह धारण किया और उन्हें जिन्दा करवाया।

यौवन के मद में मस्त बने हुए ये भट-भटाणी एक शिवालय में आये। विषयवासना बढ़ गई, इसकी तृप्ति करने के लिये देवल में जो शिवजी का लिंग (मूर्ति) था उसको उखाड़कर कहीं बाहर फेंक दिया और अपनी मनोवांच्छा पूर्ण की। इस अयोग्य और नराधम कृत्यसे भगवान शंकर क्रोधित हो गये और श्राप दिया कि तुम्हें सात भव (अवतार) तक वियोग सहना पड़ेगा।

शंकर भगवान का श्राप सुनकर ये दोनों काशी में करवट लेने के लिये निकल पड़ें। रास्ते में एक गांव आया भट। (युवक) खुराक की तलाश में गया। जब वापस आया तब देखा तो पत्नी का पता नही था। अब क्या करें। इसलिये उसने काशी (वाराणसी) जाकर गले पर कर-वट लगवा दिया और मौत के शरण हो गया।

जब भट्ट खुराक की तलाश में गया था, उस समय वहां एक राजा आया और भट्टाणी का अपहरण कर गया। वह स्त्री रात्रि के समय

[illegible] ने [illegible] में से छूटकर निकल पड़ी । और उसने भी [illegible] (ललाट) की [illegible] । और माथे पर कलंक लगा दिया । उस [illegible] को छोड़कर चली गई ।

कहानी दूसरी, चकवा-चकवी-किसी एक जंगल में एक पेड़ पर एक चकवा और चकवी रहते थे । उसी जंगल में एक बार अचानक अग्नि प्रचार हो गया । दावाग्नि का भीषण कार्य शुरू हो गया । और जिस वृक्ष पर ये दोनों पक्षी रहते थे वह वृक्ष भी जलने लगा । किन्तु दोनों को ऐसा लगा कि हमें आश्रय देने वाला वृक्ष जल जाय और हम यहां से भाग छूटें । यह बात ठीक नही है । ऐसा विचार करके ये दोनों पंछी भी दावाग्नि में आग के शोलों में जलकर भस्म हो गये-मर गये ।

कहानी तीसरी, हिरन और हिरनी की-एक जंगल था । वहां एक हिरन एवं हिरनी रहते थे । ये वन में घूमते थे और अपना गुजर-बसर करते हुये आनन्द में जीवन व्यतीत करते थे । उस जंगल में एक बार एक पारधी आया उसने हिरनी को फँसा दिया, हिरनी ने बहुत आक्रंदन किया । हिरनी का आक्रंदन सुनकर उस शिकारी के मन में दया उमड़ पड़ी । उसने हिरनी को मुक्त कर दी । अब तो हिरनी अपने पति हिरण की खोज में निकल पड़ी । किंतु रास्ते में एक पहाड़ के पास हिरन को मृत अवस्थामें पाया । हिरनकी मृत्यु देखकर उसने भी अपना शिर पटककर मृत्यु से भेंट की । वह भी चल बसी ।

कहानी चौथी, मयूर ढेलणी-इस कहानी के बारे में कुछ लिखा गया प्राप्त नही होता ।

कहानी पाँचवी, हंस और हंसी की-हंस एवं हंसी की एक जोड़ी जंगल में रहती थी । उसकी रहने की जगह पर एक बार एक साँप आया । और उनको निगल जाने लगा । किंतु दैवसंजोग से उनके कर्णपट पर भगवान का नाम सुनाई पड़ा । दोनों की मृत्युन्हुई । किंतु इस पुण्य के प्रभाव से अगले जन्म में (भव में) ये दोनों राजा एवं रानी के रूप में अवतरित हुये ।

कहानी छटवीं राजा और रानी-एक नगर था उसका नाम देयपुर। वहाँ के राजा का नाम था सालवाहन और रानी का था दुर्मति उनके पुत्र का नाम था वल्लभ।

एक दूसरा रायपुर नाम का नगर था। वहां सुव्रत नाम का राजा था। उसकी गुणवन्ती नाम की एक कन्या थी। उसके पिताने उसका विवाह संबंध किया था वल्लभ के साथ। किन्तु उसकी मां भाई और चाचाजी ने अलग २ स्थान एवं अलग २ व्यक्तियों के साथ सगाई कर दी थी। खूबी यह थी कि इन सब रिश्तेदारों ने शादी की तिथि जो निश्चित की थी वह एक ही थी।

शादी के दिन चारों वर बरात लेकर सजधज के साथ आ गये। राजकुमारी आश्चर्य में पड़ गई। शादी किसके साथ की जाय। क्योंकि यहां तो एक के स्थान पर चार चार वर आये हैं। इससे उसके मनमें बहुत दुःख हुआ। अपनी जिंदगी पर नफरत आयी और वह अग्नि में जल गई। दुनियां से विदा ली।

शादी करने के लिये जो यहा चार वर आये थे। उनमें से एक वर ने कुंवरी की मृत्यु से अपनी बलि देदी। दूसरा कहीं भाग गया। तीसरे ने उसकी हड्डियों की राख गंगाजी में बहा दी। चौथा वल्लभ था उसने उसका पिंडदान दिया और पिंड भक्ष्य करने लगा।

जो व्यक्ति भागकर दूर देश चला गया था। उसके हाथमें अकस्मात एक अमृत का घट आ गया। उसको लेकर वह जिस जगह पर राजकुमारी जल गई थी, वहां आया। और राख के ढेर पर अमृत का सींचन किया। फलस्वरूप वह राजकुमारी एवं उसके साथ जलजानेवाला राजकुमार दोनों जीवित हो गये। बाद में चारों के बीच में लड़ाई शुरू हो गई।

इन लोगों ने इस लड़ाई का फैसला करने के लिये एक पंच चुना। और पंच से न्याय करने की प्रार्थना की। क्योंकि पंच में परमेश्वर का निवास है। पंच ने सारा हाल सुन लिया। बाद में फैसला दिया कि

राजकुमारी को जिसने जिन्दा किया है वही उसका पति हुआ। नदी में राग बजानेवाला पुत्र हुआ। कुंवरी के भाव जगानेवाला गया उसके भाई फिर जन्म देनेवाला उसका बाप होगा। और कलश तो उसका हकदार पति ठहराया गया। सो आखिर में राजकुमारी की शादी कलश के साथ हुई।

विवाह के बाद कुछ समय पश्चात् ये दोनो एक बार एक जंगल में सैर करने निकले। वहां एक वाघ (शेर) आया। वह राजकुमार को भक्षण कर गया। राजकुमारी उसकी गोद में झूलती थी। इतने में वहां एक चोर आया उसने इस कुमारी को लूट लिया। उससे सब कुछ ले लिया। इससे दुखित होकर उस स्त्री ने एक कुए में गिरकर आत्म-हत्या कर ली। दूसरे भव में ये दोनो वंदर एव वंदरी के रूप में अवतरित हुये।

कहानी सातवी वंदर और वंदरी- एक जगल में वंदर और वंदरी रहते थे। वहाँ से एक दिन शिव जी और पार्वती जी गुजरे। उस समय पार्वती ने वंदर-वदरी की जोड़ी देखकर भगवान शंकर से पूछा कि उनके सम्बन्ध मे क्या बात है। तो शिवजी ने उनके गत जन्मों की (भवों की) बातें कह सुनाईं। बात सुनकर सती पार्वती जी ने उनको फिरसे मनुष्यावतार देने के लिये अनुरोध किया। प्रार्थना की। तो भगवान शंकर ने कहा कि "इस मुहूर्त में यदि यह वंदर एवं वदरी इस वाव मे गिर जाय तो मनुष्य रूप प्राप्त होगा।"

वंदरी ने यह बात सुन ली। और पतिदेव वदर को भी अपने साथ इस वाव में गिर जाने को कहा। किंतु वंदर ने न माना, वंदरी की बात को स्वीकार न किया। वंदरी अकेली वाव में गिर पड़ी। तो शिवजी के वरसे (कथनानुसार) यह वंदरी एक सुंदर स्त्रीके रूप में पलट गई। वंदर अब पछताने लगा किंतु अब पछताने से क्या होवे, "जब चिड़िया चुग गई खेत।" यह पुण्य क्षण तो अब व्यतीत हो चुकी थी।

इसी समय हीरासेन नाम का एक राजा अपने प्रधान के साथ वहां

आ पहुंचा वहाँ उसने इस रूपसुंदरी को देखा। वह प्रसन्न हुआ। और उस सुंदरी को रथ में बैठाकर अपने साथ ले चला। वंदर वन में फल लेने गया था। वह वापस आ गया। स्त्री को न देखकर वह रथ के पीछे हो गया। रानी राजा से प्रार्थना की कि इस वंदर को भी साथ में ले चलिये। राजा ने स्वीकार किया। वंदर को भी साथ में ले लिया गया। स्त्री ने छः महीने के वाद राजा के साथ शादी करने का वादा किया।

राजा नगर में आ गया। राजा ने इसे वंदर को सुवर्ण की शृंखला से वाँध रखने की व्यवस्था की। राजा की जो एक सम्मानित रानी थी। उससे मिलने के लिये राजा जाता था। किंतु उस रानी से मिलने में वंदर रुकावट डालता था, रानी से नही मिलने देता था। इसलिये उसने रानी के वंदर का घाट घड़ने को युक्ति सोच ली। किसी भी तरह से उसका इलाज खोलना चाहिये। तरकीव की गई।

उस रानी ने इस वंदर को एक मदारी के हवाले किया। इस कृत्य से रूपसुंदरी एवं वंदर दोनों अप्रसन्न हुए, आखिर में रूपसुंदरी ने इस मदारी को फिर एक वार आकर अपना तमाशा दिखा जाने के लिये कहा।

छः महा की अवधि वीतने के पहले मदारी वहाँ फिर से आया उसने अपना खेल शुरू कर दिया। इसी वीच में रूपसुंदरी ने अपना अमूल्य हार तोड़ दिया। मदारी ने उस हार के मोती (मोक्तिक) वीनकर इकट्ठे कर देने के लिये वंदर को मुक्त कर दिया। उस वंदर ने राजा की माननीया रानी से वैर लेने के लिये फलांग लगाई, किंतु वह निशाना चूक गया और मृत्यु के शरण हो गया। वंदर की मृत्यु होते ही रूप-सुंदरी ने भी अपने प्राण त्याग दिये और मर गई।

वंदर दूसरे भव में सदेवंत हुआ। सुंदरी सावलिंगा हुई। शादी की अभिलाषा रखनेवाला राजा हीरासेन धारानगरी के पदमशा सेठ के पुत्र रुपाशा के रूप में अवतरित हुआ। और प्रधान, लाल ब्रह्मभट हुआ मदारी गोरख साधु हो गया।

कहानी ८ वीं सदयवत्स और सावलिगा- शालिवाहन नामक एक राजा था उसके पुत्र का नाम सदयवत्स था। उस नगर के नगरसेठ पदमशाह के सावलिगा नाम की लड़की थी। वह रूप का शंवार थी। मानो रूपराशि यहाँ खड़ी हुई हो। उसके रूप लावण्य या सौंदर्य को देखनेवाले मोहित हो जाते, फीके भी पड़ जाते। अधिक सुंदरता के कारण उसका नाम रोशन हुआ। उसके अनुपम सौंदर्य की बातें सदयवत्स ने भी सुनीं, इससे वह उसको देखने के लिये आकुल-व्याकुल हो गया था। मन भी अधीर हो गया था।

एक बार एक गोरख नाम का साधु भिक्षा के लिये उस नगर के नगरसेठ पदमशाह के घर पर आया। उसने लड़की सावलिगा को देखा, और देखकर वह मोह के कारण मूर्छित हो गया। इतने में उसका गुरु भी वहां आ पहुंचा। और उसको वहां से ले गया, इस गड़बड़ी मे सदयवत्स भी वहाँ आ गया। और उसने अपने मित्र लाल वारोट (ब्रह्मभट) से पूछा कि यहां सावलिंगा कौन है और कहां है?

ब्रह्मभट लाल ने उत्तर दिया कि अगर सावलिंगा के दर्शन करने हैं तो यह कार्य यहाँ नही बनेगा। किंतु एक रास्ता है कि आप उस स्थान पर चले जाइये कि इस नव डेरी पर सावलिंगा गीत गरबी गाने के लिये जाती है, वहां आप जावेंगे तो दर्शन होगे। सदयवत्स वहां पहुंच गया। वह स्त्रीमंडल के बीचमें जाकर खड़ा हो गया। और सावलिगा से कहा कि "अरी तूं तेरे घूंघटका ओजल दूर कर दें और तेरा मुखचंद्र दिखा दें।" तब सावलिगा ने उत्तर दिया "कि मैं जिस शालामें पढ़ती हूं उस शाला में आना।"

यद्यपि सदयवत्स सदेवंतकी पढ़ाई खत्म हो गई थी। फिर भी पिताजी से आज्ञा पाकर वह शाला में गया। किंतु वहाँ मेहत्ताजी के भय से सावलिगा ने उसको समझाया कि अगले दिन चंपावाग में प्रीतिभोज का प्रबन्ध करो। उसमें मेहत्ताजी को भी आमंत्रण भेज दो

इससे हम मिलेंगे और शाँति से बातें करनें का मौका भी मिल जायगा।

दूसरे दिन गुरुजी को आमंत्रण भेजा गया। इससे वह चंपाबाग में भोजन करने गये और सभी बच्चों को निकाल दिया और बाद में इन दोनों ने एकान्त पाकर प्रेम से अनेक बाते की। दृष्टि से दृष्टि मिली और बातें करके तृप्त हुए।

किंतु यह सब प्रेम-विषयक बातें गुप्त न रह सकी, प्रकट हो गईं। गुरुजी को भी जानकारी प्राप्त हुई तो वे दौड़ते वहां आ गये। तब दोनों शर्मिंदे होकर वहां से चल दिये और जाते समय निश्चय किया कि दूसरे दिन सदयवत्स गुरुजी के बगीचे की रखवाली करने को जाय, और सावलिंगा गुरुजी की आज्ञा से उसको भोजन देने जाय। निर्णय के अनुसार सदेवंत ने गुरू जी से कहा कि आप सावलिंगा को भोजन देने के लिये आज्ञा देने की कृपा कीजिए ताकि आपके बगीचे की रखवाली करनेवाला भूखों न मरे। गुरुजी ने स्वीकृति देदी। और सावलिंगा को आज्ञा दी गयी। तो सावलिंगा भोजन में बत्तीस प्रकार की सामग्री लेकर वहा गयी बात कही गयी थी भात चावल देने की किंतु वह तो भाँति भांतिके उत्तम खाद्य पदार्थों की सामग्रियां लेकर गयी। अधिक प्रणयकलह के बाद सदेवंत एव सावलिंगा ने भोजन किया। दोनों ने आपस में या परस्पर प्रेम टिकाने का निभाने का वादा किया।

प्रतिदिन दोनों एक तोते के द्वारा प्रेमपत्र लिखकर परस्पर भेजते हैं। सावलिगा के पिता पदमशाह सेठ ने लड़की की शादी फौरन करने के लिए निश्चय कर दिया। और रूपशाह एक बड़ी बरात लेकर बड़े सजधजके साथ शादी करनेके लिये यहां आ भी गया।

सावलिंगा ने सदेवंत से संदेश भेजा कि आप स्त्री का भेष लेकर मेरे महल में आ जाना। सदेवंत भेष बदल कर वहां महलमें आया किंतु वहाँ उसकी लीलावती नाम की ननद आ धमकी। जिससे इन दोनों में बातें न हुईं। इससे सावलिंगा ने सदेवंत से कहा कि रात को भगवान शिवजी के मंदिर में आ जाना। भला यह बात याद रखना। भूल

मत जाना ।

सदेवंत की पाटमदे नामक एक रानी थी । उसने पति को पर-स्त्री से दूर रहने के लिए समझाया किंतु वह न माना । और उसने रानी को धमकी दी । भली बुरी सुनाई, रानी चुप हो गई ।

शादी का समय हुआ तो सावलिंगा ने एक युक्ति की । ब्राह्मण देव को फोड लिया गया, प्रबंध किया गया । और सावलिंगा ने अपनी लवि-गिया नाम की चेरी को अपने वस्त्राभूषण पहिना दिये और लग्नमंडप मे शादी के स्थान चोरी (शादी की वेदी) के सन्मुख बिठा दी । इस तरह रूपशाह सेठ की शादी उस दासी के साथ हो गई ।

रात को सावलिंगा रूपशाह सेठ के पास आयी । और घूंघट के पट खोल दिया । उसका रूप सौंदर्य देखकर मोहित हो गया, और उसने सावलिंगा का हाथ पकड लिया किंतु सावलिंगा ने वहाना दिखाया कि मैंने एक शरत की है । प्रण किया है कि यदि मुझे रूपशाह, पति के रूप मे प्राप्त होगा तो मैं अकेली आकर 'हे भगवान शिवजी तेरा पूजन करूंगी । बाद में पति से मिलूंगी ।'

सावलिंगा की बात सुनकर रूपशाह सेठ ने कहा कि रात का समय है और अकेली जाना चाहती है, यह बात अच्छी और ठीक नहीं है । बहुत समझायी किंतु उसने सावलिंगा ने नही माना । पूजन का थाल लेकर वह अकेली पैदल चलकर भगवान शंकर के मंदिर में आ पहुंची । सदेवंत भीतर से द्वार बंद करके नशे की खुमारी मे नीद ले रहा था । बहुत कोशिश कीं, किंतु वह किसी प्रकार से जाग्रत नही हुआ । इससे सावलिंगा ने मंदिर पर चढ़कर ऊपर के शिखर को उतारकर मंदिर में प्रवेश किया । और मोह-निंद्रा में पड़े हुए उस सदेवंत को जाग्रत करने के लिए अनेक प्रयत्न किये । किंतु ये सब प्रयत्न बेकार साबित हुए, निष्फल हुए । बाद में हताश होकर उसने सदेवंत की हथेली में समस्या (निम्न-लिखित काव्य पंक्तियां) लिखी । जैसे कि

"कोरे घड़ें कुंवारि का, जेने खोले आंखाणुनी जार ।
एवा शुकने तमो आपशो, तो मलशे सावलिंगा नार ।
× × ×
सुणो सदेवंतराय, अमल कर्या आकरे ।
हुं छुं वालकुमार, जाउंछुं सासरे ।।"

देह-दर्द और हृदय के दर्द से पीड़ित होकर उसने हयेली में घाव के रूप में काव्य-पक्तियां लिखी। हतोत्साह हुई, और अपने घर पर वापस आ गई। तुरत वह पति के साथ पति के देश सिधार गई।

इधर सदेवंत नींद से जाग उठा और सावलिंगा का मिलन न होने से क्रोधित होकर अपने महल में वापस लौट आया। फिर उसकी रानी पाटमदे ने उसको एक वनियेकी कन्यासे प्रेम करनेके कारण कई अयोग्य वातें सुनाईं, वहुत कुछ कोसा। महेणे टाणे लगाये। इससे क्रोधित होकर सदयवत्स ने कड़ी प्रतिज्ञा की कि सावलिंगा से शादी करके उसको मुखिया रानी महाराणी या पटरानी वनाकर छोड़ूंगा। ऐसा कहकर वह अश्वशालामे पहुंचा। एक अच्छा अश्व लेकर उस पर आरूढ़ होकर अकेला चल दिया।

सदयवत्स सावलिंगा के नगर के वाहर पहुंचा। उसको तृषा लगी हुई थी। हाथ में काव्य रूपी समस्या लिखी हुई थी उसकी रक्षा करने के हेतु, वह हाथ से पानी न पीकर पशु की तरह मुंह से पानी पीने लगा। यह देखकर वहाँ की पनिहारियाँ उसकी दिल्लगी करने लगीं कि यह कोई गंवार हैं क्या ?। किंतु वहाँ सावलिंगा की चेरी तथा उस नगर की राजकुमारी कनकावती उस समय नदी-तट पर आयी हुई थी। इन दोनों ने ताढ़ लिया कि यह तो कोई चतुर बुद्धिशाली आदमी है। राजकुमारी कनकावती तो उसके दर्शन करके इतनी मोहित हो गई कि उसके मनसे निश्चय भी कर लिया कि मैं इस व्यक्ति के साथ शादी करूंगी, अन्य से नहीं।

ससुराल में आकर भी सावलिंगा ने अपने पति के साथ वहाने वाजी

करा दी। और माँ ने कह दिया कि पीहर आते समय मैंने एक प्रन किया है निश्चय किया है कि यदि मैं ससुराल से क्षेमकुशल पहुंच जाऊंगी तो मैं सात दिनों तक अपनी शयनगृह में नींद लूंगी।

पति रूपकार ने उस बात को सत्य मान लिया। इस घटना से हमारे देश में उस समय समाज में व्रत भावना के विषय में कितनी दिल-चस्पी थी इसका पता चलता है। कितना था आदर व्रतों के विषय में इसके हमें दर्शन होते हैं।

अब तो सदयवत्स ने एक मालन को साथ लिया और उसकी सहायता से सावलिंगा से मिलने का निश्चय किया। सावलिंगा ने मालन से कहा कि तुम सदयवत्स को साधु का भेष पहनवा कर मेरे महल में जरूर भेज देना।

अब मालन उस नगर की राजकुमारी के यहां चल दी। और पहुंची कुमारी के महल में। राजकुमारी कनकावती ने भी मालन को कुछ लालच दिया। और कहा कि यदि तूं मेरी शादी सदयवत्स के साथ कराने के काम में सहायता प्रदान करेगी तो मैं जिन्दगी भरके लिये तेरी ऋणी रहूंगी तेरे उपकार को न भूलूंगी।

मालन दोनोंके संदेश लेकर सदेवंतके पास आयी और राजा सदयवत्स से कहा कि मैं सावलिंगा के साथ आपका मिलाप करा दूंगी। किंतु साथ ही मैं भी आपसे एक वर चाहती हू, सदयवत्स ने कहा क्या कह दो। मालन ने कहा कि यदि आप मेरी बात के साथ सहमत होते हैं तो मेरी शरत यह है कि यहां के राजा वीरमदे की राजकुमारी कनकावती है उसके साथ भी शादी करनी पड़ेगी। है यह शरत मंजूर? राजा ने शरत को स्वीकार कर लिया। हाँ भर ली। क्योंकि उसका मन सावलिंगा से मिलने के लिये अधीर हो रहा था। जिसके फलस्वरूप उसने यह शरत स्वीकार ली।

अब राजकुमारी कनकावती ने दूती मालन के द्वारा सदयवत्स के मनोभावों की सारी जानकारी प्राप्त कर ली। और अपना निश्चय

सदयवत्स के साथ शादी करनेका यह उसने अपने पिता वीरमदेसे सुना। इस बात को राजा ने स्वीकार भी कर ली। साथ ही पितासे सावलिंगा की सब बातें कह सुनाई। और उनका निश्चय भी बतला दिया। राजा ने इस कार्य में सहायता देने के लिए हां भर ली।

अब राजा ने सावलिंगा की शादी के विषयमें निर्णय करने के लिए रूपशाह सेठ को अपने पास बुलाया और सारीं बातें बतला दीं। रूपशाह को भी अब पता चला कि सही रीतिसे उसकी शादी भी सावलिंगा के साथ नहीं हुई है एक चेरी के साथ हुई है। दूसरा पता यह चला कि सदयवत्स एवं सावलिंगा इन दोनों की परस्पर अत्यंत एवं हृदय से भी चाह है। ये सारी बातें जानकर उसने सावलिंगा को सुपुर्द कर देने की सम्मति देदी। सदेवंत को दे देने की भी रूपशाह ने हां भरी। अब राजा वीरमदे ने एक बड़ा लग्न-महोत्सव निश्चित किया और सदेवंत के साथ ये दोनों स्त्रियों सावलिंगा एवं कनकावती की शादी कर दी।

कुछ समय यहां बिताकर राजा सदेवंत दोनों रानियों को साथ में लेकर बड़े सजधज के साथ अपने देश वापस लौट आया।

राजा शालिवाहन को पता चला कि पुत्र आ रहा है। यह जानकर वह बड़ा प्रसन्न हुआ और बड़ी धूमधाम से लेने के लिए सामने गया।

सदयवत्स की मां भी उमंग में आ गई। उसने भी अपने बेटे को कि जो दो रानियों से शादी करके आया है, पोंख (शादी की विधिके अनुसार) लिये। सदयवत्सने निर्णयानुसार इन तीनों रानियोंमेंसे सावलिंगा को पटरानी के पद पर स्थापित करके प्रण पूर्ण किया। सदयवत्स ने कई वर्षों तक सुख से राजकाज किया। खाया पिया और मौज-मजा तथा शान्ति एवं आनन्द में जीवन व्यतीत किया।

प्रबन्ध में सामाजिक जीवन-नृपति एवं प्रजाजनोंके बीचका संबंध बहुतायत से नगरों में एवं राजधानी में भी सदवर्ताव एवं प्रेम-भावना से युक्त रहता था। फिर भी राजा की अमाप सत्ता के सामने प्रजाजनों का कुछ बस नहीं चलता था "राजा किसी का मित्र नहीं"

प्राचीन सुभाषित के अनुसार, सदयवत्स के पिता प्रभुवत्स का आचरन या वर्ताव कथानक को नया मोड़ देता है। एक दिन पुत्र के पराक्रम पर संतुष्ट होने वाले पिता दूसरे दिन प्रधान मंत्री के षड्यंत्र-शिकार बनता है। स्वयं युवराज-पद पर स्थापित किये गये पुत्र को (राज कुमार को) राज्य की हद छोड़कर चले जाने की आज्ञा देते है। यदि राजा किसी पर संतुष्ट (प्रसन्न) होता है सब उसे 'पसाय' (सं. प्रसाद) देते थे।

राज्य की कार्यवाही में-अनेक प्रकारके प्रपंच एवं षड्यंत्र की कार्यवाही चलती थी, यह बात हमें प्रधान के षड्यत्र (पृ० १४) की कार्यविधि से ज्ञात होती है। बहुतायत से राजा लोग निष्क्रिय रहते है।

क्षणंतुष्टः एव क्षणं रुष्टः ऐसी राजा की उदात्त भावनाये भी गणना-पात्र है ही। प्रभुवत्स राजा को प्रजाजनों ने जो चीजें प्रदान की थी उनका राजा ने स्वीकार भी नही किया था। किंतु वापस लौटा दी थी। (कड़ी ३९१)

न्याय देने की पद्धति का दर्शन-सदयवत्स राजा एक प्रसंग देता है (पृ. ६४) वहाँ होता है। खास करके कानून के चक्कर मे पड़ने के बजाय सरल समजदारी एवं व्यावहारिक बुद्धि का प्रयोग करके ही न्याय का फैसला या निर्णय लिया जाता था।

त्यौहार या उत्सव-प्रसंगऊपर नगर जनों द्वारा नगर-की जोसजावट या शृंगार बंदनवार होता था इसका भी कवि ने सुंदर बयान दिया है। (पृ. १२-१३)

नगर में एक ओर जैसे **गणिकागृहों की** अनिवार्यता देखने में आती है, वैसे दूसरा ऐसा अनिवार्य स्थान **द्यूतस्थान** (जू-ठाण) प्रख्यात गिना जाता था ऐसा हमें पता चलता है (कड़ी ४०१) द्यूतस्थान द्यूत के क्षेत्रीय अखाड़े) राज्य-सम्मत गिने जाते होंगे ऐसा प्रतीत होता है। प्रसिद्ध जुआरियोके नाम भी कविने अंकित किये है। (कड़ी ५०९-५१०)

वैसे ही प्रसिद्ध वारांगनाओं के नाम भी (कड़ी ५४२, ५५२) क्रमवद्ध एव ब्यौरेवार गिनाये हैं। आधुनिक युग के जिसकी गणना समाजमें होती है और इस समाजमें जितना महत्व का गिना जाता है, उतना प्राचीन समय में गणिका एवं द्यूतका स्थान होगा, ऐसा अनुमान किया जा सकता है।

महाजन श्रेष्ठियोंकीसत्ता-नगरों में उनके व्यापार के क्षेत्र में अबाधित रूप में रहती थी। उस समय के प्रचलित श्रेष्ठियों के नामों की जानकारी भी हमे प्राप्त होती है। (कड़ी ५३२, ५३५)

वारहट्ट और ब्रह्मभट-या चारन का स्थान राजा एवं प्रजा के बीच में संयोग जोड़ने वाली शृंखला के समान था। किसी भी व्यक्ति के लिये वह 'प्रतिभू' यानी Surety किंवा प्रतिनिधि बन सकता था और वह राजमान्य भी गिना जाता था। (पृ० १२) सावलिंगा को बहिन (भगिनी) समझकर एक गांव का वारहट्ट कि जिसको राजा ने पसाव (ग्रास) प्रदान किया था और वह उसका उपभोग भी करता था। उसने पांच दिनके लिए आश्रय दिया था। यह उसका उदात्त चरित्र उदाहरण-नीय जान पड़ता है।

राजा की आज्ञा का पालन करने वाले-'तलार' औलग (सेवक) उपस्थित रहते थे। (पृ० ८८-८९) दंड के भेदों में शूलि, अंग-च्छेद एवं कारागृहवास जेलखाना इतने भेद जानने समझने के लिए प्राप्त होते हैं।

आत्महत्या इसके उपरांत स्वेच्छा से लोग संसार असार जानते ही जीवन से तंग आकर काशी में जाते थे, और वहां करवट लगवाकर जीवन समाप्त करते थे। इसके द्वारा समाज की पूर्वजन्मके प्रति कितनी अड़ग श्रद्धा रहती थी इसका हमें दर्शन होता है। मालवा प्रदेश में शिक्षा के रूप में किसी धातु या सिक्का तारम करके निशानी कर दी जाती थी ऐसा भी उल्लेख मिलता है।

ज्योतिष- ज्ञाता ब्राह्मण देवकी भविष्य वाणी यदि बेकार असत्य साबित होगी तो उसको शिक्षा देने की चेतावनी के उद्गार प्रभुवत्स राजा ने निकाले है। (कड़ी २४)

कुनबा एवं गृह जीवन- हिंदू संसारके ब्राह्म विवाह विधिका रसिक एवं यथारूपा (सादृश्य) वर्णन कवि ने दिया है। (कड़ी ६३६ ३७-३८) साथ साथ हिंदू संसार में सउकी (वपत्नी) या सौत को भी एक अनिवार्य परिस्थिति के रूप मे गिनी गई है। (कड़ी २७२-७५) अतिथि या मेहमान का आदर सत्कार भावपूर्ण रीति से होता था। इसके वैभवद्योतक स्वरूपका वर्णन भी प्राप्त होता है। (कड़ी ३९७-९८) सावलिगा ने आत्महत्या के पूर्व जो प्रार्थना की है उसमें सती साध्वी सन्नारी के पति के प्रति भावात्मक ऐक्य व्यक्त किया गया है। (कड़ी-६००-६०८)

विरहाग्नि की जलन से आकुल व्याकुल सदयवत्स अपने दोनो हाथ दूर रखकर चौपाये की तरह पानी पीता है। क्योंकि उसके हाथके भीतर हथेलियों में उसकी प्रेयसी सावलिगा ने समस्या के रूप में काव्य पंक्तिया लिखीं थीं। वे पंक्तियाँ नष्ट न होने पावे, इसलिये उसको ऐसा करना पड़ा है। इस दृश्य को देखकर जन-सुभाव से परिचित ऐसी पानी भरने आयी हुई पनिहारियों ने भी कैसे अनुमान किये हैं। वह प्रसंग बहुत ही हृदयंगम है। एक सचित्र पोथी में एक चित्रकार ने उस प्रसंग को रंग एवं रेखाओं के द्वारा जीवंत बना दिया है।

उस समय समाज मे **गणिका का स्थान** अनिवार्य एथं आवश्यक माना जाता था जान पड़ता है। क्योंकि चातुर्य प्राप्त करने के जो पाच स्थान मुख्य हैं। उसमें गणिका को स्थान दिया गया है। फिर भी उस गणिका का द्रव्य हरण एवं पुण्य आदि बातें सुभावजन्य हैं। अभिजात गणिकाका आदर्श व कामकंदला में भी प्राप्त होता है। गणिका की सूची कवि ने दी है। उस परसे अनुमानतः विक्रम की १५ वीं शताब्दी

में स्त्रियों के कैसे नाम प्रचलित होंगे, उसका हमें ख़याल आता है। वैसा ही दूसरा नाम का वर्णन व्यापारी एवं सेठ शाहूकार का भी मिलता है।

वहुनायत से सामाजिक एवं धार्मिक प्रसंगों के वर्णन में कवि ने अपने जमाने का सुंदर चित्र अंकित किया है। सीमन्तिनी-यात्रा-वर्णन में उसका लाक्षणिक दृष्टांत प्राप्त होता है। लीलावतीके साथका विवाह विधि या शादी का वर्णन 'धउल' (धोल) में किया है। इस तरह कवि ने वर्णनमें स्वाभाविकता ला रक्खी है।

जीवनमें रूढ़ मान्यतायें ज्योतिप शास्त्र के विषय में लोक मानस में वहुतायत से उसके फलादेश के प्रति वहुत आदर रहता था—जान पड़ता है। कथानक के प्रारम्भ मे एक चतुर्वेदी ज्योतिप ज्ञाता-विप्र के ऊपर तथा उसके कहे हुए भविष्य कथानक के ऊपर कथानक में रस केन्द्रित होता है। और भविष्य वाणी को नष्ट करने के लिये राजा अनेक प्रयत्न करते है, किंतु उसको सफलता प्राप्त नहीं होती है। फलस्वरूप पहले कुंवरके ऊपर प्रसन्न होनेवाला राजा दूसरे ही दिन प्रधान-मंत्रीके षड्यंत्र के कारण तुरंत राजकुमार को देश छोड़कर चले जाने की आज्ञा देता है। देश से बाहर कर देता है।

यहां से कथानक में साहस एवं अद्भुत रस का संचार होता है। किन्तु उसके मूल में वही ज्योतिप-ज्ञाता विप्र का फलादेश ही निमित्त होता है।

शकुन अपशकुन की मान्यतायें-भी अनेक स्त्रियों एवं पुरुषों के हृदय में जड़ जमाये वैठीं हुई मालूम होती है। अपशकुन की परम्परा का वर्णन (दे. पृ० ८) एवं शकुन की मीमांसा (दे. कडी १६७-१७५) वाला वर्णन-विभाग उसका समर्थन करता है। श्याम (कृष्ण) रंग के शृंगार श्याम रंग के वस्त्र आदि अपशकुनके द्योतक अंग हैं। (पृ० १४-१५) प्रतिदिन के व्यवहार में इस मान्यता का गहरा असर रहता था। दे. सउण भणी सीरामणी कडी १४३ और जोगिणी जिमणी जाय कडी १६६)।

वर्णन शक्ति के दर्शन-ग्रंथ में प्रसंग के अनुसार कवि ने अपनी वर्णन शक्ति का सुन्दर परिचय दिया है । कथानक का प्रवाह अस्खलित (बिना रुके) चलता ही रहता है । फिर फिर भी कथानक में जब कौतूहल उत्पन्न होता है, वहां कविगण क्षणभर के लिये विराम पाते हैं । और कदाचित ऐसी करते हैं कि तीन या चार कड़ियों या पंक्तियों में सारे प्रसंग-चित्र को तथा उसके अनुरूप हृदय वातावरण खड़ा कर देते हैं । यहां केवल उसका निर्देश किया गया है । जैसे कि नगरी-पथ का वर्णन (कड़ी ४१२-४२२) पंसारी बाजार एवं वहां की चीजों का वर्णन (कड़ी ३४-८०) व्यापारियों का वर्णन (कड़ी २१२-२१६), स्त्रीसौंदर्य का वर्णन (कड़ी १५९-१६३) नगरश्री का वर्णन (कड़ी २०६-२२६) कैलाशपति के मंदिर का वर्णन (कड़ी २१७-२१९), दूल्हा-अश्व-प्रशस्ति (धवलकड़ी २१७-२१८) सदय-वत्स का गुन-वर्णन (कड़ी २८), सावलिंगा का रूप वर्णन (कड़ी ३१२-३३२), वरयात्रा या बरात का वर्णन (कड़ी ३२२-३२४), गहरे अरण्य का वर्णन (कड़ी ३६०-३६४), नगर वर्णन (कड़ी ४२३-४२२), सदाशिव वन वर्णन (कड़ी २१७-२१९), युद्ध वर्णन (कड़ी ६२९-६३५), शूर या वीर जनों की प्रशस्ति (कड़ी ५९६, ५९७) एवं पुण्य की महिमा (कड़ी ७३०) ये सब उल्लेखनीय वर्णन रोचक एवं प्रासादिक भी है । और कवि की प्रतिभा एवं बहुश्रुतता के द्योतक है ।

प्रबंध में अलंकृत एवं सुभाषित वानी का प्रयोग:-

कविकी रचना मनोगम्य एवं प्रसादिक भी है । उसके दृष्टांत कविने कथानक में अनेक जगह पर विविध रूप में अंकित किये है । जैसेकि अर्थान्तरन्यास (कडी २२६,२१८ २९०,८२) सुभाषित(कडी १०३६२२) और अन्योक्ति (चकवाकीके प्रति कडी ३६५-३६६) एवं इसमें सामली वचन जैसे सुभाषित भी है । जैसे कि बिना पतिकी प्रेमदा (पति विनानी प्रेमदा) ऐसे संवंधित सुंदर भाव-चित्र कवि ने खड़े किये है ।

कुकर्म से मनुष्य के पुण्य कार्यों की वृद्धि नही होती है । किसी सत्पुरुष के समागम से ही भाग्योदय होता है । या भाग्य फल देता है । इस मान्यता में कर्म का सिद्धांत ध्वनित होता है । (कड़ी १३)

इस तरह कवि "भीम" की रचना सदयवत्स वीर प्रबन्ध विक्रमी १५ वीं शती का अनेक दृष्टि से एक अमूल्य रत्न जैसा है ।

आदि पृष्ठ । सदयवत्स वीरप्रबन्ध । लिपि संवत नहीं है । प्राच्य विद्या मंदिर, बड़ोदा ।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

कवि भीम-विरचित

श्री सदयवत्सवीर प्रबंध[1]

ॐ नमः । श्री शारदायै[2] नमः । श्री सद्गुरुभ्यो नमः ।

[मंगलाचरण]

(गाहा)

माई महामाई-मज्झे, बावन्न वन्न जो सारो ।
सो विंदु ओंकारो, स ओंकारो नमस्कारो ॥ १ ॥

जिण रचीय आगम निगम, पुराण सर-अक्खराण वित्थारो ।
सा ब्रह्माणी वाणी, पय[3] पणमवि सुपय मग्गेसु ॥ २ ॥

गयवयण गवरीनंदण, सेवइ सुहकरण असुह-अवहरणो ।
बहु-बुद्धि[4]-सिद्धिदायक, गणनायक पढम पणमेसु ॥ ३ ॥

गुरु लहुय जि केवि कवियण, सरस-सुअत्थ सुच्छंद-बंधयरा ।
एकत्थ[5] ताण सव्वे, करजुअलं जोडि पणमामि ॥ ४ ॥

[नव रसात्मक सदयवत्स प्रबंध]

सिंगार हास करुणा, रुद्दो वीरो भयाण बीभच्छो ।
अद्‌भुत संत नवइ रसि, जसु जंपिसु[6] सदयवच्छस्स ॥५॥

---

१. 'सुदयवत्सवीर चरित्र' अ.; 'सुदयवच्छचुपइप्रबंध' आ. २. 'वीतरागाय नमः' आ. ३. 'पय पूजवि हूँय मग्गेसु' आ. ४. 'तणिष', 'बंध' आ. ५. 'एकंत वाणि सव्वे', अ. ६. 'बणिस', आ.

एत्तारउ[1] संवच्छरह, नट्ठ जन्म नांनि निसि अगाढ ॥
जं सुरपुरि जं नरभुवणि, जं पं हुइ पायालि[2] ।
नरवर ! निज मंदिर-थिऊं, तं जाणूं तिणि कालि" ॥१५॥

(दूहा)

विप्प-तणइ ग्रति वड वयणि, खणिउ राउ-मनि रोस ।

[प्रभुदास दपन]

"जं बंभण ! तूं[3] बरलिउ, तं[4] जाणिनु तूं ग्र जोस" ॥१६॥

तिणि[5] अवसरि अग्गलि रहिउ, गलि गज्जइ गजराउ ।

[ज्योतिष ज्ञान परीक्षा । गजराज जयमंगल आयु प्रश्न]

"जयवंतु[6] जयमंगलह, एह कहि, केतूं[7] आउ ?" ॥१७॥
लगन लेई[8] तब तत्तखिणि, कहिय गणी करि भल्लि ।

[अमंगल फलादेश कथन]

"जइ पूछिसि पहुवच्छ पहु, मरइ ति कुंजर कल्लि !"॥१८॥

बंभण-केरइ बोलडइ, राउ चमक्किउ चित्ति ।
"जउ कुंजर कल्लि नवि मरइ,तउ तूं ग्र कहि,कुण गत्ति?॥१९

आगइ एक अणजाणतां, तइं घड़ बोलिउ बोल ।
आ तिहूं-पाहिइं अधिक, जाणइ निरस निटोल" ॥२०॥

विप्प भणइः "नरवर ! निसुणि, देव मदु छि अनंत ।
जे जयमंगल हत्थीउ, तेग्रं थिइ दिणि ग्रंत ॥२१॥

---

१. 'वरतक' ग्रा. २.'पैयाल' ग्र. ३. 'तइं' ग्र. ४. 'सिउ जाणिस तूं जोस' ग्रा. ५. 'तीणि' ग्रा. ६. 'जइवंतु' ग्रा. ७. 'किपूं' ग्रा. ८. 'सिहुंत वहंत तीणई' ग्र., 'स' ग्रा. ।

चिहुँ दिसि चिहुँ थम्भे सरिस, जइ बहु बंधरिण बद्ध।
तोइं वि प्रुहरे [वंभरण भरणइः] "चल्लइ मत्त मदंव ॥२२॥

गरूअ गुफा भल भुंहिरइ, चिहुँ पक्खे पुंतार।
इम रक्खंतइ राय! सुरिण, वि-पुहरि मंडइ मार" ॥२३॥

[प्रभुवत्स नृप कोप-कथन]

(वस्तु)

राउ जंपइ, राउ जंपइः "वयरण निसुरिण[1] विप्प।
मुझ परतन्या पुव्व लग्गइ, अधिक उच्छ बोलइ स वारू।
अलीअ न चल्लइ अम्ह-तरणइ, सच्च होइ तुह कज्ज सारू।
जउ वंभरण! वि-पुहर-समइ, मत्त न मोडइ खंभ।
तउ तूं[2] आगा तिलयनइ ठामि दिवारिसु[3] डंभ ॥२४॥

(चउपई)

"जउ जोसी! तूं ज्योतिष साच, तउ थिर थापउं माहरी वाच।"
[फलादेश मिथ्या करणोपाय]
इम बोली तुरी पाठविउ, राइं गज-राखरण आठविउ ॥२५॥

एकि भरणइः "ए वांभरण[4] बूड", एकि भरणइः "ए[5] काचउ कूड"
एकि भरणइः "ए पडिउ अपाइ,किम छूटेसिइ राखिउ राइं?"॥२६॥

गज-पाखलि पायक सइं पंच, ते[6] पुंतारि मुरणइ प्रपंच।
तीह आपी आंकुस नइ आर, राइं[7] मेल्हया राखरणहार ॥२७॥

मत्ता-पाखलि पुहरा पडइ, एकि आंकुस लेई ऊपरि चडइ।
इरणइ[8] परि राखिउ सघली राति,पुहतउ तिहां पहुवच्छ प्रभाति॥२८॥

१.'निसुणि वर विप्प' आ. २.'तल तणइ' अ. ३.'दिवारिसु' अ. ४.'बूड' अ. ५.'कीचउ' आ., ६.'जे' अ.'कुणइ प्रपंच' अ. ७.'वूणी वरा पाडया पुंतार' आ. ८. 'इम रप्यु गज' आ.

[विशेष गज-रक्षण-प्रबंध]

घणी अधिकि बंधाविउ बंधि, सवा-भार लोह-संकल कंधि ।
नवि सलसली रहइ थिउ ठामि, किरि[1] चित्र कि लिखिउ
चित्रामि ! ॥२९॥

थाईं तइ तेडया पुंतार, "रे ! रखि-परि करिज्यो सार ।
गाढा थई राखउ[2] गजराज, वांकग्यु वि पुहुर लहिस्या आज" ॥३०

[उच्छृंखल गज-गमन]

इम करतां सिरि आविउ सूर, गज चालिउ पावरिमनूं पूर ।
धाइ धसइ अनइ धडहडइ, किरि आसाढि अंबर गडगडइ ॥३१॥

मोडी संकल मोडया खंभ, चुहुटइ चालिउ गहआरंभ ।
नवि लेखइ[3] आंकुस नइ आर, धूणी धरा[4] पाडया पुंतार ॥३२॥

[उन्मत्त गज पथ-विहार-परिणाम]

गजि चउहटइ जई मंडिउं गाह, पान-तणां सवि लाख्यां लाह ।
फूल-तणा तिहां पूर्या पगर, मइगलि माथइ कीधउं नगर ॥३३॥

पुहुतउ श्रेणि सुगंधी-तणी, राज-वस्त मेली रेवणी ।
लांखइ केसर अनइ कपूर, वास्यां तेल वहाव्यां पूर ॥३४॥

[लोक-संभ्रम]

छीणइ दीठइ दोसी दडवडइं, पारिखिने पगि पींडी चडइं ।
फडीआ फोफलीआ सोनार,[5] नाठा लोक : न जाणइं सार ॥३५॥

हाट-मांहि थिउ हालकलोल, किरि कमलापति करइ कलोल ।
पोतां लांख्यां पारिखि-तणां, कापडि सरिस किरिआणां घणां॥३६॥

---

१. 'जाणे गज लखीउ चित्रामि' आ. २. 'राख्यो' अ. ३. 'मानइ' आ. ४. 'धरि' आ. ५. 'सूनार' आ.

एकि अटालि मालि गढि चडइ, एकि पाधरि दह दिसि दडवडइ।
एकि[1] छावड़ां अछइ छडछोक, ते सीकिइं[2] -थ्यां लूसइं लोक॥३७॥

गिउ गयंद सुर-हटनी वाट, तिहां[3] मदिरानां दीठां माट।
मधु महुअडां द्रवणि जस द्राख, ते गजवरि आरोग्यां लाख[4]॥३८॥

आगइ पंचायण पाखरिउ, आगइ पन्नग पंखावरिउ।
आगइ गज अंगि जमदूत, वली वारुणी भावि थिउ भूत॥३९॥

सुंडाहल पूरइ परचंड, दंतूसल जाणे जमदंड।
पाडइ विसमा पोलि प्रासाद, नर नारिनूं[5] ऊतारइ नाद॥४०॥

[गजनियंत्रणे नृपागमन]

राउ असवार थई थिउ[6] केडिः "जे भड भला ते वहिला तेडि।
जे आणी वंधइ[7] गज ठामि, तेहनइं आपूं गाम अनामि॥४१॥

आपउं अंग-तणउ शृंगार, आपूं एकाउलिनउ हार।
आपूं अधिक वली पसाउ, जे वलीउ वंधइ गजराउ"॥४२॥

एकि भणइः 'आघो थाईइ', एकि भणइः 'जमपुरि जाईइ'।
एकि भणइः 'वरि रूसइ राउ, सरसिइ[8] एहना-पखइ पसाउ'॥४३॥

[ब्राह्मण सीमन्तिनी-गृहागमन प्रसंग]

नव[9] बारहि नयर ऊजेणि, नितु नव नवा महोत्सव तेणि।
बंभण एक-तणइ तिणिवार, आघरणि अवसरि जयकार॥४४॥

गयगामिणी धवल-धुणि करइ, वारु विप्प वेअ उच्चरइ।
मस्तकि मेघाडंबर छत्र, वाजइं पञ्च शबद वाजित्र॥४५॥

भरीय सेसि सइंहथिइं माई, पीहरि—थी पस पूरइं जाई।

१. 'जे छां छडा असइ छड छोक' आ. २. 'पाछलि' आ. ३. 'मदिरा-पूर्यां' आ. ४. 'राष' अ. ५. 'नरनरिंद' अ. ६. 'त्रिउ' पा. ७. 'वंधइ बलीउ' आ. ८. 'हडिसिइ' आ. ९. 'नव वाहरि' आ.

[अपशकुन परम्परा]

जां[1] घडि चालइ पहिलइ पाइ, तां आडी ऊतरइ बिलाइ ॥४६॥

खडकी फूली चाली वाट, जातां वाटि विनागूं घाट।
जां[2] घाटडू विच्छोडी वाडि, तां तरु-मडंनी छीकी त्रिलाडि ॥४७॥

पग संचीनइ पाछी वलीउ, मूकइ काठि काग किलगिलइ।
अनइ अनेरां हूई असुगा, तिह्नां कारगा जागाइ कुगा ? ॥४८॥

एकि भगाइ: 'एह् पडिसि आभ',[3] एकि भगाइ 'एह् गलिसिइ गाभ'।
एकि भगाइ : 'एह ह्वडां ङागि,एह् असुगा-तगाइ परमागि'॥४९॥

[गजराज कृत सीमन्तिनी-ग्राह]

गजंर सुणी गज तिहां-थउ वलिउ, पेखणहार लोक सहु पलिउ।
सगूं सणीजूं गिउ सहू वही, विप्र-घरणि[4] गयवरि ग्रही ! ॥५०॥

इम साही सुंडिहि कडि यंत्रि, जाणे लाठि[5] लगाडी यंत्रि।
नवि मेहल्हइ नवि मारइ मत्त, पेखइं राइ राणा राउत्त[6] ॥५१॥

[सीमन्तिनी-पतिकृत मोक्षस्थापना]

(छन्द पद्धडी)

धव आविउ धाइउ[7] ति नारी-भरतार,
बुंबारव वंभण करइ अपार।
"को सुभट शूर साहसिक शुद्ध[8]
को धीर वीर वंसह विशुद्ध ? ॥५२॥
कोइ जाइउ चउदिसि चपल अंग ?
को अकल अटल आहवि अहंग ? ।

---

१. 'छेडि वीलइ' आ. 'आगलि' आ. २. 'जां घाटक कुंच डीको बाडि,तां न रमइक्का छीक निलाडि' आ०। ३. 'पडिसि' अ. ४. 'नारि भराहरि' अ. ५.'लाटि' अ. ६.'सामंत' आ. ७. तिहिं' आ ८.'सिद्ध' आ.

काइ खित्तीअ खल-खंडण समत्थ ?
को अछइ छयल्ल खिति खग्गहत्थ ?" ॥५३॥

[मार्गे कुमार सदयवत्सागमन]

इम करतउ जउ जुवटइ जाइ,
पूछिउ[1] ताम पहुवच्छ-जाइ ।

[सदयवत्स वचन]

"देव ![2] दया कर, कुण दूहवइ तुज्झ ?
थिर थइ भिड-कारण कहिन मुज्झ ॥५४॥'

कुणि मारिउ ? डारिउ ? हरिउ रिद्धि[3] ?
कुणि लूसिउ ? लीधउ ? तू कहिन सिद्धि ?"

[विप्र रक्षण-याचना]

तीणि वयणि विप्प गीअ[4] विहलमुच्छ,
"करि वाहर, स्वामी सदयवच्छ ! ॥५५॥

(दूहा)

आघरणि अवसरि घरणि, आवंती आवासि ।
मारगि अवला एकली, पडी महागज-पासि ॥५६॥

जम-मुहि किस्यू[5] जीवीइ ?, चतुर ! विमासिन चित्ति ।
सदयवच्छ ! सा वंभिणी, मारीय हुसिइ मत्ति !" ॥५७॥

[वीर सदयवच्छ मत्तगजाक्रमण]

(छंद पद्धडी)

तव धायो धूंवड धसमसंत,
किरि आवइ केसरि करि[6] कसंत ।

---

१. 'तिहां पूछीय' आ. २. 'दैव दैव म करि' आ. ३. 'अरथि' आ. ४. 'वयु बुहम पुछ' आ. ५. 'केतू' आ. ६. 'कमकसंत' आ.

वर्वरीय भंटि भलकंति[1] भालि,
फलकिल्यु[2] वीर पषु भृकुटि भालि ! ॥५८॥

मयमत्त[3] रत्तू जब दिट्ठु दिट्ठि,
तव असिगर कड्ढवि किद्ध मुट्ठि ।
मुहि मंडवि हक्किउ सवल हत्थि,
साहसीय[4] सुभट्ट सुंदर समत्थि ॥५९॥

नवि मेल्हइ नारिय सूंडि-अग्गि,
दंतूसल तोलवि चलिउ वेग्गि ।
इम हणिउ करडि करिमालि कंधि,
जिन त्रूटि[5] रोसि गिउं श्रवण-संधि ॥६०॥

[6](राग केदार एकतालो)

राइं वोलाव्या वहू, जे भड गय-घड खंडंति ।
तेहू पाखलि परिभमइ, नवि धारण मुहि मंडंति ॥६१॥

मेगल मत्तालउ ए, नवि जाणइ पवरिस-पार ।
अंकुसि सरिसा अवगणी घूणी, वर पाडया पुंतार ॥६२॥

[सदयवत्स कृत हस्ति-निग्रह]

सदयवच्छ सूर सही, जीणइ वलीइं वंभण-नारि ।
मेल्हावी. हणी हाथीउः, जग पेखइं जइ जयत जूआरि ॥६३॥

(छंद पद्धडी)

गडअडिउ गयंद कि पडयउ पुहव्व,
सुर अंतरिक्खि पेक्खिइं अपूव्व ।

१.'भलकइ कवालि' आ. २.'कलकलिउ वटाणु, थिउ भृगुटि भालि' आ. ३. 'मयमत्तउ जव नयणि दिट्ठ' आ. ४. 'साहसीक सूर' आ. ५. 'त्रूटिवि' आ. ६. टूंक ६१ थी ६३ आ. प्रति मां नथी ।

'जय जय' शबद जंपइ जगत्त,

पहुवच्छ-पुत्त[1] पेखइ चरित्त ॥६४॥

[सीमन्तिनी त्राणजन्य आनंद]

(चउपई)

ते बंभण तेडिउ[2] तिणिवार, युवति समोपी किद्ध जुहार[3] ।
बंभण-घरि विमणउ[4] उच्छाह, 'मुद्द! सुद्द !' करइ[5] नरनाह ॥६५॥

[प्रभुवत्स-दत्त धन्यवाद]

जाजंतइ जई किद्ध जुहार, राइं आलिंगण दिद्ध अपार ।
वापिइं वेटउ बाँहि धरिउ, राउ राजभवनि संचरिउ ॥६६॥

बारहट्ट बोलइ तिणि वार, सदयवत्स न सहइ कईवार ।
भाटइं भेद परीठिउ[6] इसिउः "पशु मारइं पुरषारथ किसिउ?॥६७॥

(छंद तोटक)

मइमत्त कि मारिय लज्ज रयउ,
शर-टंकीय सुंदर शल्ल विगयउ ।
गयगंजण ! लज्जजइ रि किमइ ?
किम किज्जय सद्द सुसमर तिमइ ? [7]" ॥ ६८ ॥

(गाहा)

पोढा करोय पहारो, मेल्लावइ मुच्छ मोडए मूढो ।
साहसीअ सदयवच्छो, लज्जरिउ मारि मयमत्तो ॥६९॥

---

१. 'पवरिउ पेखइ पुत्त' अ. २. 'तेडाव्यु ताम' आ. ३. 'प्रणाम' आ. ४. 'मनिईं' आ ५. 'सूदा साद' आ. ६. 'रीछयउ' आ. ७. टूक ६८ आ. प्रति० मां नथी.

[[illegible]]

([illegible])

ते [illegible] , [illegible] ।
[illegible] ॥७१॥

[illegible] , [illegible] ।
[illegible] ॥७०॥

[[illegible]]

“तुम्हि जगि अवतर्या[२] [illegible] देव ! [illegible]
नयणि[३] निरंतर रहूं निशिदीस, [illegible] ॥७२॥

रहूं भमुं जाऊं [illegible], चरि[४] [illegible] ।
[illegible] फिरउं, [illegible] न अंगी करउं ॥७३॥

जिहां जिहां गामनि हाना होइ, जिहां जिहा पान्या कुतूहल कोइ ।
जोवा जाऊं तीणिइं ठामि, ऊणइ संकटि पाडि" म स्वामि ॥७४॥

राज-काजि एक वंचव बाप, मानइ पुरुष न वीहइं पाप ।
लीलावंत-तणइ मनि लाज, [मूढउ भणइः] न गाजिइं काज"॥७५

[प्रभुयत्स-प्रसाद]

आपिउ एकाउलिनउ हार, आपिउ अंग-तणउ शृंगार ।
आपिउ आसण-तणउ तुरंग, राजा-अंगि[६] न माइ रंग ॥७६॥

ते वंभण तेडाविउ ताम, प्रति ऊठीनइ[७] किद्ध प्रणाम ।
आपिउं वासि वसंतूं गाम, वहु[८] अरथ नइ अंवर द्राम ॥ ७७ ॥

---

१. 'मंगलवार' आ. २. 'जइजइवंता देव' आ. ३. 'निरंतर' या. ४. 'चरि' आ.; 'निग्र' अ.५.'पाउ काइं' आ. ६. 'रिदइ' अ. ७. 'राजा ऊठी' अ. ८.'अरथ सरीसु अंवर द्राम' आ.

वंभणनइ घरि भागी भूख, नाठूं दुरीय-सरीसूं दूख।
महाराजि जउ दीधउं मान, लोक-मांहि तीणइ[1] वाधिउ[2] वान ॥७८॥

(दूहा)

वंधी[2] तलीया तोरणह, गूडीय वन्नरवालि।
दीसइ दीवाली-तणा,[3] उच्छव हुई[4] अगालि ॥७९॥

पंच शब्द निनाद[5] रसि, वद्धावी वाजंति।
पड-सद्द[6] पूरी भुंवण, गयणंगण गज्जंति ॥८०॥

विप्प वेअ-धुणि उच्चरइं, करइं सुकवि कइवार।
रायंगणि राजा-तणइ, मिलिया मग्गणहार ॥८१॥

वर-मंडपि मंडीय गजर, वज्जइ मधुर मृदंग।
[7]रागरंग गायण गमक, नच्चइं नाचिणि चंग ॥८२॥

किहिं कप्पड़ किहिं दिइं कणय, किहिं केकाण कच्छाहि।
धन देयंतो[8] किलकिलइ, पहुवच्छ मन-मांहि ॥८३॥

[9]आसीस दिइं वहिनर वहू, मा मनि रंग-रसाल।
भरीय सेसि सइं हथि-सिउं, वद्धावइ वर वाल ॥८४॥

(चउपई)

मणि माणिक मुत्ताहल-हार, [10]कापड-कणय कपूर अपार।
विवहारीए वधावूं किद्ध, राजा किहिनूं कांईअ न लिद्ध ॥८५॥

---

१. 'तु' आ. २. 'लागउ' अ. ३. 'घरिघरि' अ. ४. 'दीपाछव' आ. ५.'मयरि' अ. ६.'निरंदह घरि' आ. ७.'पडिछंदे' 'रागरंगि आलतिकरइ, नाचइ पात्र सुरंग' आ. ८ 'वेचंतु' आ. ९. 'वहिन करइ ऊआरणां, मा मनि' आ. १०. 'हीर-चीर सोवन शृंगार' आ.

[[illegible]]

सदगवन्त्युं सुणी सुणीत, [illegible]नागरू[1] पहिं [illegible] भंग ।
''राउ आपता न [illegible] रानं,'' सुण-अमगाउ [illegible] युवराज ॥८६॥

[illegible] भिकउ [illegible] [illegible] भाग, राजा नागोगिरि[illegible] प्रगार ।
नहु [illegible] लगइ लहाणु नार, [illegible] कुठउ [illegible] सूनार ॥८७॥

जे मागान एहनइ किउ नमइ, ते मागान एहनइ मनि गमइ ।
जे सागान आवइ एहना, नरगिउ काज नवि [illegible] ॥८८॥

आज [illegible][3] हिव एहनी पाग, आज-थिकउ एहनउ वीणाग ।
आज-थिकउ राजा मनि एह, आज-थिकउ हिव[4] [illegible] छेह ॥८९॥

आगउ 'एह-सिउ' नदि सुख रंग, जे मइं जीव[6] विणासिउ रंग[7]
अरथ-[illegible] अति कीधु लोभ, सगे-सगोजे[8] न रही शोभ ॥९०॥

[प्रधानकृत युवराज-विरुद्ध षड्यन्त्र]

हिव ते कांई करउ उपाउ, जीणइ[9] एहनइ रनइ राउ ।
इणिउ अपूरव पाडउ रेस, कइ मारइ कइ काढइ देस ॥९१॥

कुटंब तणूं[10] सांभलिउ कहिउं, मुहुतइ सोइ जि कथन[11] संग्रहिउ ।
मंति-पयह पणूं तउ आज, जउ हूं कालि कढावूं राज ॥९२॥

[प्रधानकृत भेद-प्रपंचारंभ]

तउ परधानि मांडिउ परपच, उडद अणाव्या पाली पंच ।
सांभइ अरक[12] आथमणी दार,[13] वीर वधावूं लेई[14] तीणि वार ॥९३

१. 'महितानइ' आ. २. 'तु हू जमलि' अ. ३. 'पंछो' आ. ४. 'राज-मनि' आ. ५. 'एहनइ नहीं मूं ग' आ. ६. 'जान' आ ७. 'रंग' अ. ८. 'माहि' अ. ९. 'जिम हिव' आ. १०. 'कुटुम्बि इस्यूं विमासी' आ. ११. 'जयण' आ. १२. 'सूर' आ. १३. 'वार' आ. १४. 'करइ' आ.

(दूहा)

अम्बुलिक तिला-रागणु, गउ करि नाउइ सूरह ।
तां घरि फिरतउ ते रहइ ?, गिलतउ बोग-सर्वंग" ॥१०३॥

[आशंकित राजा-पिता]

(चउपई)

मुहूतइं मंत्र-भार जउ भणिउ, तीणि राजा-मन धारिउ घूणिउ ॥
न सहि कोई नीसाणा-फूंक, जाणे पूरब पूरिउ ढंक ॥१०४॥

जे बहु नेह धरंतउ बाप, ते पाछु लीणउं कोपु माप ।
रोस चडाविउ सघली राति,[1] फूकुतु निद्रौ पहुचवउ प्रभाति॥१०५॥

[रोषपूर्ण अभ्युत्स]

फूंकी धमी धमाविउ एम,[2] जिम ते तत्तक्षणि अटूई[3] प्रेम ।
बूड[4] बोलंतां आविउ बंधि, सूदा-सरसी पाडी संधि ॥१०६॥

[सदस्यवत्स माता-वचन]

थिउ अवसर ऊलगनु जाम, माइं बेटउ बोलाव्यउ ताम ।
"सूदा ! सुप्रभातनी वार, जई राजा-प्रति[5] करु जुहार" ॥१०७॥

[क्रुद्ध पिता मुख-दर्शन]

माता-वयणि सभागिउ मुद्द, तां राजा-मुखि[6] दीठुउ रउद्द ।
सिर नामंतां बोलिउ राउ[7], हासा-मिसिइं भागां[8] हाउ ! ॥१०८॥

नीचु नइं न-पाणीउ कूउ, तिह ऊपरि ढालइ[9] ढींकूउ ।
वार वार पय[10] करइ प्रणाम, नीर-तणूं नीठाडइ[11] ठाम ॥१०९॥

---

१. 'पाछइ बोलाविउ परभाति' अ. २. 'इम' अ. ३. 'त्रोडइ तीम' अ. ४. 'बूड' अ. ५. 'राजानइ कहइ' अ. ६. 'मनि' आ. ७. 'साउ' आ. ८.'भजइ' आ. ९. 'मोडिउ' आ. १०.'सिरि' आ. ११.'नीवाउइ' आ.,अ.

आपणि कीधउ कालउ शृंगार, कालउ अंग-तणउ आकार।
काला कापड कीधां भेटि, तउ राजा घण पइठउ पेटि ॥९४॥

रा एकंति मंति लेई गउ, "कांइ प्रधान, काल-मूंहुअ थिउ ?।
एतां सघलूं ताहरूं राज, नवूं ति काँई कारण आज ?" ॥९५॥

जाणइ कामण मोहण कूड, जाणइ बुद्धि बोलतउ बूड।
जाणइ अंग-तणउ [1]अनुराग, [2]वातइ ततक्षिणि लेई ताग ॥९६॥

[मंत्री वचन]

"नही उच्छव तम्ह घरि तेतलउ, वइरी-घरि होसिइ जेतलउ।
'जयमंगल[3] मारिउ' महाराज!,इसिउ वधामणु छाजइ आज ?॥९७॥

मदि[4] आव्या छूटइ मयमत्त, रोसि चड्या ते हींडइ रत्त।
आइ उपायि, वली धराइ, इम अजुगतिइ[5]न आलि मराइ। ९८॥

जास पसाइं दमिया देस, जास पसाइं नमइ नरेस।
जास पसाइं दोहिलउ दुग्ग, लीधी पोलि त्रिभोगल[6] भग्ग ॥९९॥

जीणइ तात ! तम्हे[7] लिउ दंड, दमिय देस लीजइ[8] सवि खंड।
ते उलग आवइ अहिठाणि[9], जे जीता जयमंगल प्राणि ॥१००॥

मदि आविउ करि सारइ काज, वइरी-तणां विध्वंसइ राज।
पाडइ विसमा पोलि पगार,प्राण-तणउ नवि जाणइ[10]सार॥१०१॥

ऐरावण सुणीइ इन्द्र-नइ, जयमंगल हूँतउ तुम्ह-तणइ।
बीजउ कोइ न त्रिभुवनि कन्हइ,प्रापति पाखइ[11]न रहिवा लहइ॥१०२॥

---

१. 'आकार' अ. २. 'वात करंतु बोलइ नारि' अ.। ३. 'मइ मइगल' अ. ४.'मन्दिर'अ. ५.'अजुगतउ' अ. ६. 'ति' आ. ७.'तु महारउ दंड' अ. ८. 'लीजंता दंड' अ. ९. 'अप्पाणि' आ. १०. 'लाभइ पार'अ. ११. 'विण किम लहिवा लहइ ?' आ.

भणा-भणाहि जे नीलिउ थाट, ते मूकउ कामीनउ घाट ।
एउ मुणुस्मिनह मंत्र नार, एक दिन नह नीलउ नाम ॥११८॥

[मदनभ्रम मातृ-रंगा]

वसीग वीर भणि वणिउ विनाक, आणउ जगाणी कन्ह कुमार ।
जस ऊपरि वणिउ कर मास, पाव प्रणामु जगणी नाम ॥११९॥

(गाहा)

जस ऊवरि वसीश बाणं, नव मास दिवस अट्ठ अणगलिया ।
पय पणमवि जणणी, नाम करिसु निवारणं विद्दनम्मि ॥१२०॥

(षट्पद)

जई लागु जणणी-तणा पाय,
आसीस-वयण उच्चरइ माइ ।
"कहि पुत्त ! अज्ञु चलचित्त कांइ ?"
'अम्ह ऊपरि कीस' कुदिट्ठी राइ ॥१२१॥

[पिता रोष कथन]

"मइं" मारिउ आरास-तणउ मत्त,
तीणि कज्जि कोप वहु छरइ तत्त ।
जे पामिउ कल्लि दीउ पसाउ,
ते सयल अजूता जुत्त आउ ॥१२२॥

(दूहा)

आयस राउ-तणा पखइ, जे मइं कीधू आल ।
बाल-स्त्री ऊगारिवा, कुंजर सिरि करवाल ॥१२३॥

एक अबला नइ बंभणी, गब्भिणि गजि आरोडि ।
जु देखी ऊवेखीइ, तु क्षित्ती-कुलि [2] खोडि ॥१२४॥

---

१. 'कुदिट्ठ' अ. २. 'खित्ततण अ. 'आ' मां १ लीटी वधारे: 'तत्त जे पामिउ कालि पसाउ दाउ, ते आज सयल हऊ जिवाउ'.

(गाहा)

ना जाणिसि खल नमीयं, जीहां जंपेइ अमीय-सा वयणं ।
डींकू[1] कूप-विलग्गो, पय लग्गवि, सोसए जीयं ॥११०॥

(चउपई)

जे आकारइ ऊलखइ अंग, भमहि-तणउ जे वूझइ भंग ।
[2]ते नर बोलिउ [3]वूझइ इसिउं, एह वातनूं [4]अचरिज किसिउं ॥१११

वीर विचारी जोइउं सरूप, भमहि-भावि ऊलखिउ भूप ।
कुमर ततक्षणि विमासइ चिंति, किसी कहीइ ज उत्तम रीति? ॥११२

(अडयल्ल)*

जिम जिम केसरि पइ ऊहटइ, जिम जिम विसहर नूली वटइ ।
दीन वयण जिम जंपइ सूरु, देसि देसि कीधह वहु पूरु ॥११३॥

[सदयवत्स पिता-वदन]

मणवोलिइं ऊठिउ कूंआर, जातइं [5]नरवर किद्ध जुहार ।
वारू लोक विमासण भरिउ, शिर नामी आवउ संचरिउ ॥११४॥

जे आपी अधिकारी हाथ, ते तिवार मुहि[6] लई नरनाथि ।
ते रणि रहइ जे हुइ लाजणउ, तेजी तुरय[7] न सहइ ताजणउ॥११५

[उत्तम-जन लक्षण]

संपदि हरिख न विपदि विषाउ, ए आगइ सतपुरिस सभाउ ।
जोउ करमनूं कारण आम, त्यजी[8] राज वनि जाई राम ॥११६॥

एक दिवस प्रभि किउ पसाउ, वीजइ सूदा रूठउ राउ ।
एकि राउल नइ वीजूं रान, सूदानइ मनि सहू समान ॥११७॥

---

१. 'जे' आ. २. 'प्रींछइ' आ. ३. 'कारण' आ. * टूंक ११३ म. प्रति० मां नथी. । ४. 'जातउ' आ. ५. 'लीधी' आ. ६. 'किम साहइ' आ. ७. 'राजवार मनि' ८. 'प्रति' आ. ।

श्रवणि मूं ताने[1] पाडिउं,[2] कडुगां जमा कुमारि ।
पूजी भव-संचित पदी, जागी[3] तांम धमारि ॥१३३॥

[माता-दुःख-मूर्छा]

बेटा-केरे बोलडे, मा-मनि वगिउ विखाद ।
उत्तर चापेवा[4] भणी, नवि नीसरिउ नाद ॥१३४॥

चित्ति चटकउ नीसरिउ, गद्गद गलउ न माइ ।
[5]ऊसाने नीरासडे, जाणे जीवी जाइ । ॥१३५॥

बाला-केरे बींजणे, वारिणि-[6] छंटइ वाउ ।
मइं-हत्थिइं सूदउ करइ, जणणी जीवेवाउ ॥१३६॥

[7]महूरति एक जि माउली-मनि मूरछा जि भग्ग ।
"जावा दि जणणी ! भलूं :" [बेटउ बोल्लण लग्ग] ॥१ ७॥

[सदयवत्स वचन]

"जाऊं तउ जीवी ऊगरूं, रहूं तउ[8] रूसइ राउ ।
कहि,[9] जणणी ! किम सांसहइ, ए एवडउ अन्याउ ? ॥१३८॥

[10]मंत्र मइलउ मंती-अण, जे पइसिउ पहु-कन्नि ।
तीणि माडी ! मूं मारिवा, राउ सोधिसिइ रन्नि ॥१३९॥

(गाहा)

तं तं जंपंति कहा, दूअणा होइ सव्व सारिच्छा ।
जम्मंतरे न होइ, जं नवि होइ जम्म'-[11]जम्मेहिं ॥१४०॥

---

१. 'सांभल्यु' आ. २. 'करूउ' अ. ३.'जीवी जइ' अ. ४. 'आपेवा तणउ'अ. ५.'तं संभलि सूदासही,जाण जणुणीअ मारी'अ. ६.'बीजी'आ. ७. 'अमूरति जणणी जवा दिइ नही' अ. ८. 'इअइ' आ. ९ 'कहइ माडी' १०. 'मंत्री मयल्लु-मह-मलिण' आ ११. 'लकुवेहिं' इ. ।

वन्धेवा नइ कारणि, बहु माणस मेल्यां राइ।
जउ मनि मारण चींतवइ, तउ करि केत्यउ जाइ ? ॥१२५॥

[अन्यायी राजाज्ञापालन अशक्यता]

राउ-अन्याय जिसां सहइ, वेटा वधव वाप।
प्रहि ऊगमि तीह पहु-तणइ, मुहि दीठइ बहु[2] पाप ॥१२६॥

एकि अस्या छइ इह-तणइ[3], साहसवन्त सुभट्ट।
जे रणि संगमि अंगमइ, गुडीय महागज घट्ट ॥१२७॥

'रूठइं[4] जीवन जोखिम-ह, त्रूठइं पयड़ पसाउ।
[सदय भणइ.] स्वामीपणा, तीह जूठउ जस-वाउ ॥१२८॥

जस असंख सीआल-सिउं, इक्क सरोवरि सीह।
पीइ जल जमलां[5]-रहीय, लोपी न सकइ लीह ॥१२९॥

एक भलेरूं भोगवइ, राजा-पाहिइं रज्ज।
अधिपति-पणूं एतइं अधिक, जे सहू मानइ मज्झ ॥१३०॥

राय-धम्मु तिहि[6] रायनइ, रूडूं[7] दीसइ रज्जि।
जे अन्याई[8] अप्प-पर, लेखइ समउ सहज्जि" ॥१३१॥

[माता वचन]

"देसाउरि दिन केतला, जाइस रूठइ राइ ?।"

[सदयवत्स वचन]

" देवि ! म [9]चिंतिसि दोहिलउ, वलिसु वहिल्लउ माई !" ॥१३२॥

---

१. 'वे वांधवा' आ. २. 'हुई' आ. ३. 'प्रभु-तणइ' आ. ४. 'रूठइ भेपिम नारि, तूडइं नही य' आ. ५. 'जमला रहिया' आ. ६. 'तेडराउ नउ' आ. ७. 'रूडइ-रापइ' आ. ८. 'अन्याय' ९. 'धरिसि' आ.

हू गय-गामिणि ! भामिणु[1] गिरी-कंदरि,
रहि रामा ! [2]अमिय-लोयणि ! मंदिरि" ॥१४८॥

[सामली-वचन]

"जे सूर नर साथि नारी, वाणिज करिवा जेह ।
सुणि सूदा ! [सामलि भणइ:] ते किम छूटइ छेह ? ॥१४९॥

[नर-विहीन नारी-प्रतिष्ठा]

नर [3]विण नारी [4]एकली, लगइ कोडि कलंक ।
अगइ एक मइं संसहिऊं, मुख-उपम जि मयंक ॥१५०॥

नर-पाखइ नारी-[5]तणइ, राउल [6]जाणइ रन्न ।
रन्नि जि प्रीय-सरिसी [7]भुलइ, राउल मानइ मन्न ॥१५१॥

शशि-विण निशि, दिशि दिवस-विणु, जिम नदी विणु-वारि ।
[8]तिम सूदा ! [सामली भणई:] नर विणु न सोहइ नारि ॥१५२॥

माइ बाप बंधव [9]बहिनि, पोढी पीहर वेडि ।
[10]मइं मेल्ही जस- कज्जिहि, कंत ! न छंडूं केडि ॥१५३॥

जे [11]सोहिलइ 'स्वामी' भणइ, दोहिलइ छंडइ पूट्ठि ।
नारी रूपी निशाचरी, जाणे [12]देव ति दुट्ठि ॥१५४॥

स्वामी ! सुहिल्ले दीहडे, सहुको वलगइ सत्थि ।
भाई [13]भी छति भामिनी, जे आदरइ [14]अणत्थि ॥१५५॥

---

१. 'भामिसु' २. 'मृग लोयणि' आ. ३. 'पापई' आ. ४. 'तणइ' आ. ५. 'सनइ' आ. ६. 'मानइ' आ. ७, 'भलूं' आ. ८. 'सुणि' आ. ९. 'बहू' आ. १०. 'तह्म करणि मइ परहरी' आ. ११. 'सुहिलइ दीहडे दिइ' दुहिल्लिइ' अ. १२. 'देवविध्ध' आ. १३. 'भीछह' अ १४. 'अत्थि' आ.

नह मास भेय जिणाणो,[1] दोगुहलो हट्टि–खंडण समत्छो ।
तह विहि मज्झ वलयउ, नमो खलो नहि रण-सरिच्छो ॥१४१॥

(दूहा)

भद्दा भूप भूयंगमह, ए मुह[2] दुहिलां हुंति ।
जे नवि जाणइ जालवी, ते वहिलां विणसंति ॥१४२॥

[माता-दत्त शकुन-भोजन]

कारण जाणी कुमरनूं, वईसण मंडिउ मंड ।
सउण-भणी सीरामणी, प्रीस्यूं[3] दहीं अखंड ॥१४३॥

सद्द[4] सुणवि धणि धवलहर, अंतरि[5] जोयुं जाम ।
कंत करइ सीरामणी, सासू-मुह थिऊं स्याम ॥१४४॥

जणणी जिमाडीय[6] अप्पिऊं, वीडूं विहु करि लिद्ध ।
सदयवच्छ सामलि-तणी, भली भलामण दिद्ध ॥१४५॥

[सहयात्रा-गमनोत्सुका पत्नी सामली]

मा मोकलावी चल्लिउ,[7] असिमर[8] लेई हत्थि ।
पाछलि[9] नेउर सर सुणी, सामलि आवइ सत्थि ॥१४६॥

पय खंचवि[10] प्रमदा कहिउ,[11] "देवि ! म धरिसि दुहिल्ल ।"

[सूदा-वचन]

"सुणि सामलि!" [सूदउ भणइः] "आविसु वली वहिल्ल ॥१४७॥

(अडयल्ल)[12]

मनि अप्पणइ मुणिन मनि माणिणि ! ।
किय पाय पंथि पुलिसि ? ओ माणिणि ! ।

---

१. 'जणपोदों मुद्ध लोहटि' इ. २. 'चुहु' अ. ३. 'दीधूं' आ. ४. 'सूर' आ. ५. 'उतरि जऊं' अ. ६. 'यमाडी' ७. 'साचयुं' आ. ८.'असिउवण' ९. 'रिण झिणइ' आ. १०. 'पांची'आ. ११. 'कहई' अ. १२. 'चाल'अ.

इस भगति [illegible] ।
[illegible] ॥
उनि हार [illegible] समान ।
[2]थण-[illegible] ॥[illegible]॥
मंजार नीरि [illegible] ।
[illegible] ॥१६३॥

(दूहा)

सुखासण आसण-पल्हट, चरण न धरणिहिं दिद्ध ।
रा सामलि पाली पुलट, प्रीग-गुण-बंधणि बद्ध ॥१६४॥

[सावलिंगा वचन]

"सुणजि [3]सदय कुमार ! हूंग्र, नयरी-तणइ नोसारि ।"
वागंगी पूछइ विगति, सावलिंगि सु-विचारि ! ॥१६५॥
भरि खप्पर भणती 'उदउ', जोगिणि जिमणी जाइ" ।

[सदयवत्स वचन]

"सुणि सामली ! [सूदउ भणइ.] तूसइ त्रिभुवन-माइ" ॥१६६॥

[शकुन मीमांसा]

अबला अंगि अलंकरी, कोरइं वस्त्रि कुमारि ।
सुणि सामलि ! [सूदउ भणइः] निश्चइं लाभइ नारि ॥१६७॥
हय सुपल्हाणु समुहुउ, [4]गलि गज्जंतु गज्ज ।
सुणि सामलि ! [सूदउ भणइः] रानि [5]भमंतां रज्ज ॥१६८॥

१. 'ढलति लंब' आ. २. 'तन मंडन उरवर-सिउ' आ. ३. 'सदय कुमार नइ' आ. ४. 'गज्जइ गज्जराज' आ. ५. 'वसंती' आ. ।

[सदयवत्स-सामली प्रयाण]

अणबोलिउ चालिउ चतुर, नारी-[1]निश्चउ जाणि।
सामलि सासू-पय नमी, साथिइं थई सुजाणि ॥१५६॥

पय लगंतां प्रीय जणणि, "होयो अविचल आयु"।
एहि विवछिनू वयण सुणि, अमृत आरोगु माई[2] ॥१५७॥

(छंद पद्धडी)

गय-गमणी रमणी तुर गति गमंति,
[3]झड अनिल लग्ग अंगिहि नमंति।
पय-पंकजि लंक [4]तलि वडवडंति,
पति-भत्ति चित्ति [5]धरि चडवडंति ॥१५८॥

[सार्वलिगी सामली रूप-वर्णन]

जस जंघ-जूअल वर रंभ-थंभ ।
[6]पिथल कि उरथल करिण-कुंभ ॥
कर-पल्लव नव-शाखा अशोक ।
सोवन्न वन्न साम-शरीर रोक ॥१५९॥

मुख-कमल अमल ससिहर-सरिच्छ ।
निलवटि तिलय ताडीक मच्छ ॥
कुंडल कि कन्नि पायार मार ।
कोसीस निकर परिगर अपार ॥१६०॥

तिल-फुल्ल[7] नास-संजुत्त मत्त ।
[8]त्रुटि दाडिम दंत, अहर राग-रत्त ॥
अंजन सह खंजन सरिस नेत्त ।
सीमंत-कुंत किरि [9]मयर-केत्त ॥१६१॥

---

१. 'निश्चल मन' अ. २. 'हुंउ' अ. ३. 'कल अनल' आ. ४.'तिचत्त वडंति' आ. ५.'करि पउवडंति' अ. ६. 'प्रच्छल' आ. ७.'कुसुम नासिका' आ. ८. 'तुडि' आ. ९. 'मधरि' आ.

[सहगमन सामली]

[1]सामलि चालंती मन रंगि, भूली [2]भमी नीन आगा[3]पनि ।
सारसि नई-झींझरणा-निनाद, मधुर मोर सुहावा नाद ॥१७७॥

तरुवर-तणइ [4]नीलि नीली छांह, पाद-पाद विनगइ नर-बांह ।
कंद [4]मूल फल श्रीव [5]अपार, तांगु परि सम्पा विचल इगवाग॥१७८

[निर्जन वन-प्रयाण]

पुहुता परवत पल्ली तीर, आगलि साम्हि[6] रण, नहीं नीर ।
सीसि सुर, तलइ वेलू-ताप, सामलिनि [7]त्रिशा त्रिशा प्रलाप ॥१७९॥

[सामली-प्रश्न]

(दूहा)

"नाह! कुरंगा [8]रंगा-थलि, जल विरण किम जीवंति ?" ।

[सूदा उत्तर]

"नयरण-सरोवर प्रीति-जल, नेह-नीर पीयंति" ॥१८०॥

[सामली-प्रश्न]

"रत्ति न दीठु पारधि, अगि न [8]लागु बाण ।
सुरिण सूदा ! [सामलि भणइः] इह किम गया पराण ?" ॥१८१॥

[सूदा उत्तर]

"[9]जल थोड्डं सनेह घरण, तरस्यां बेऊ जणांह ।
'पीय' 'पीय' करतां सूकी गउ, मूआं दोय जणांह !" ॥१८२॥

---

१. 'चालती रनि वनि मन रंगि' अ. २. 'भंगि' अ. ३. 'तीरि' अ. ४. 'फूल' आ ५. 'अपार' अ. ६. 'तव' आ. ७. आ. ८. 'रत्नि न देखूं' आ. ९. 'जणि' आ.

बायस जिमणउ ऊतरइ, [1]डाउ ऊतरइ स्वान ।
सुणि सामलि ! [सूदउ भणइः] पगि पगि [2]पुरिस निधान ॥१६९॥

खर [3]डावउ सस्वर करी, जउ किरि जिमणउ जाइ ।
सुणि सामलि ! [सूदउ भणइः] सगपणि कलहु कराइ ॥ १७० ॥

तरु ऊपरि तेतर लवइ, [4]धूडि सर शिवा करंति ।
सावंलिगि ! [सूदउ भणइः] एक्क अणेक वरंति ॥१७१॥

अधूरां पहिलइ पुहुरि, जगलि जिमणां जाइ ।
सुणि सामलि ! [सूदउ भणइः] मिलीइ [5]सुअण-समाहि ॥१७२॥

छींक डावी धाह जिमणी, [6]भुंडनइ मुखि मांस ।
सुणि सामलि ! [सूदउ भणइः] सफल मनोरथ तास ॥१७३॥

संडसु सारसु खर तुरीय, डावी लाली हुँति ।
सुणि सामलि ! [सूदउ भणइः] अफल्यां [7]तांह फलंति ॥१७४॥

वामा देवा वामा वायसी, वामी मीज भुकंति ।
मंमुंअ उरभय पुनह, विहू नाजि पामंति[8] ॥१७५॥

[गुणवान प्रशंसा]

(चउपई)

राजा-गुणि राउत रणि रहइ, प्रीय-गुणि प्रमदा दोहिलउं सहइ ।
गुण-विण कोइ न किहनइ गमइ, जे गुणवंत ते [9]सविहूंगमइ॥१७६

१. 'हुइ सावद्द स्वान' आ. २. 'परख' आ. ३. 'डावी दिसि उतरइ सुर करि'. आ. ४. 'घुडिइ मूडि सरि सेव' आ. ५. 'सजन मुथाइ' आ. ६. 'वारणो आलू' आ. ७. 'वृक्ष' आ. ८. 'आ' प्रति०मे नहीं ९. 'सवि करइ' आ.

[illegible] ।
[illegible] ॥१६०

[[illegible]]

[illegible] ।
[illegible] ॥१६१

[illegible] ।
[illegible] ॥१६२

[[illegible]]

कहि [illegible] कारण कहीः "नाहलीक तूं गूढउ नहीं ।
[illegible] मइं जोयउ ताहरुं साह, तूं [illegible] ऊजेणी-नाह ॥१६३॥

ऊजेणी माहइ अहिठाण, वांकुं पाटणपुर पहिठाण ।
हूं वउलावा आवी वीर !, जोवा ताहरुं साहस धीर ॥१६४॥

हूं जोगिणि तूठी हरसिद्धि, मागि मागि मनवंछित [8]रिद्धि ।
ताहरा [9]पवरिस नही कोइ पार तूं नरा सविहूं-शृंगार" ॥१६५

[सदयवत्स देवी-वर-याचना]

"जूअ-संग्रामि ठामि [10]वहू जइत्त, [11]परमेसर-सूं पामे पहित्त ।
प्रभु ऊठीनइ लागउ पाइ,मया किह्लारइं म[12]टालिसि माई !" ॥१६६

[वर-प्रदान]

काली कंक लोहनी छुरी, [13]सायिइ काली कउडी खरी ।
ए वि आप्यां 'बेटा' भणी, 'जय' जंपवि चाली जोगिणी ॥१६७॥

१ 'तिति अपानु भागु ताप.' २.'नीसकपण नइ नव रंग, अणी आसी गुहि उरइ.' अ. ३.'वाम करिइं करि' आ. ४, 'छेदइ मनसिद्धि' आ. ५. 'साहिउ'आ. ६.'सारी नइ' आ. ७.'अभंग' अ. ८ 'सिद्धि' आ. ९.'साहस न लहूं' आ. १०. 'वहु' आ. ११. 'परमेसर तूं पामे' आ. १२. 'मेल्हसि' आ. १३. 'बीजी आपी' आ. ।

[तृषातुर-सामली]

(चउपई)

जिम हीमइं [1]कमलिरिण कुरमाइ, जिम वसंति परजालइ जाई ।
तिम जल विरण सामलि-सरीर, [2]देखी करइ विमासरण वीर ॥१८३

[अद्भुत प्रपा-दर्शन]

दह दिसि [3]निरखइ नयरणे जाम, पाधरि परब भरइ स्त्री ताम ।
ते देखी नर हरखिउ हीइ, इसी [4]वाट विसमी न रहीय ॥१८४॥

वहिलउ थई पुहुतउ तीरिण ठाहि-'जस भय-भंग नहीं मन मांहि ।
ऊभी अबला दीठी द्रेठि, मांडया गोला [5]मांडव-हेठि ॥१८५॥

शीतल जल सरवइं सवि ठामि, जीरिण दीठइ मनि [6]भाजइ श्राम।

[सूदा-वचन]

[7]"माई"भरणवि शिर नामइ वीर,वहिलउ थई[8]नइ मागइ नीर१८६

"बाई ! वार म लाइ,स्त्री त्रीसी," तीरिणइं बोलइं ते बईग्नर हसी ।
श्राऊं [9]अन-जारण पहुतउ श्राघ,जारणे किरि वउलावइ बाघ ॥१८७

[माता हरसिद्धि-प्रपा]

इरणइ परबिइं कीजय पाप, श्राई [10]बाई म बोलसि बाप ।
पारणी पलीथ न पाइ कोइ, एह परब हरसिद्धिनी होइ" ॥१८८॥

'लीजइ लोही दीजइ नीर', तिरिण वातिइं [11]विलकिलिउ वीर ।
"देस्युं लोही, वार म लाइ,प्रमदा त्रिसीय पारणी पाइ" ॥१८९॥

---

१. 'पोइणि' अ. २. 'पेखी वयल विमासइ' आ. ३. 'नयणि निहालइ' आ. ४. 'वात विमासी' आ. ५. 'मंडप' आ. ६. 'हुउ विश्राम' आ. ७. 'शरमनी नइ साहसवीर' आ. ८. 'नर' अ. ९. 'आपन जाणइं आघ' आ. १०. 'माई म बोलसि' आ. ११. 'व्याकुलीउ' आ.

[[illegible]]

करइ बाग [illegible] नामइ बाद, आविउ [illegible] ।
आगलि उगटिउ [illegible], जिहां [illegible] ॥२०६॥

जिणि वनि [1]चान्द मास बसन, दीसइ कोइ न [2]पामइ अन्त ।
नदी पाणीयां-जीव प्रवेश, तुरी [3]गाढ [illegible] महेस ॥२०७॥

मोर मधुर-गति करइ निनाद, कोइलि-[4]गाणा गीहाला नाद ।
सुगर गयद गुंज मानहीं, भमर भमर [5]मान्हइ मानहीं ॥२०८॥

[6]सुरहा सीत गुं आला वाउ, जे नागा तनि [illegible] ।
सावे सादा-फल [illegible], [7]जेहनइ दरसणि भाजइ भूख ॥२०९॥

जिणि वनि योगी-[8]गति विश्राम, जिणि दीठइ [9]मनि भाजइ श्राम
[10]पुहुतउ वीर तेह वन-मांहि, हूउ हरखित बिहु मन-मांहि ॥२१०॥

[वन-श्री वर्णन]

(छंद पद्धडी)

तिहां दिट्ठ तरुअर अति [11]कमाल ।
जावित्तीय जाईफल तज तमाल ॥
वनि अगर तगर चदन [12]किवार ।
कंकोल कलव घनसार सार ॥२११॥

कदली दल कोमल फल [13]अलंब ।
सहकार फणस फोफलि [14]वुलव ॥
तरुअर सिरि गुण गहगही गेल्लि ।
नवरंग निरूपम [15]नाय-वेल्लि ॥२१२॥

१.'बारइ' आ. २. 'चांरवीइ' आ. ३.'मायादी छइ' आ. ४.'नादि' आ. ५.'मालइ ते मही' आ. ६.'सरही' आ. ७.'जिणि दीठइ मनि' आ.८.'तणा' आ. ९. 'मुनि' आ. १०. 'पुहुता ते वेहु.' अ. ११. 'अति झमाल' आ. १२.'तिवार' अ.१३. 'गलंब' आ. १४.'कुलंब' आ. १५.'नाग वेलि' आ. ।

[1]जोगिणी वली, टली ते परब, हुई वीर-मनि विमणी वरब]
जे भव भगति न लाभइ सिद्धि, ते हेलां [2]तूठी हरसिद्धि ॥१९८॥

रलीयाइत थिउ चालिउ राउ, वनिता-चित्ति वसिउ विषवाउ।

[पति-दु:ख कारण सामली-क्षमावाचना]

"करूं अ वीनती वे कर जोडि, प्री ! माहरी पग-बंधण छोडि॥१९९॥

तइं [3]मूं पाणी पीवा काजि, मस्तक ऊडविउं महाराजि।
मइं आविइं गुण होसिइं एह,आगइ दूख,नइ सूकिसि देह!॥२००॥

[पीहरमां मूकवा विनति]

[4]पसाउ करी मूं [5]पीहरि आवि,मूं मेल्ही नइ स्वामि ! सिधावि।
जातां कोइ न करइ [6]पचार, वली सम्हारइं करयो सार ॥२०१॥

[अवलाए चींतविउ उपाउ], तिहां [7]आव्यां तउ राखिसिइ राउ।
दाखिन पाडी देसइ देस, [8]रहिसिइ तिम राखिसिइ नरेस" ॥२०२॥

वनिता-तणां वयण [9]नय-वाच, सदयवच्छि ते मान्यो साच।
"[10]मेल्हिसु लेई पाद्रि पहिठाणि,जई[11]ऊलगि सु अवरि अहिठाणि२०३

ऊलग लेई नइ आणूं करूं, तां लग स्त्रीइ-स्यूं केतथउ फिरूं ?।
जिहाँ उलगस्यिूं लहिसिउं तिहाँ लाख,
प्रमदा-पीहरि न[12]मेल्हउ पाख" ॥२०४॥

प्रमदा-मनि पीहरनूं राज, [13]चिंतइ कंत अनेरूं काज।
'मनि बिहु जणां बोल जूजूउ', ए ऊखाणउ साचउ हूउ ॥२०५॥

१.'योगिणि तणी वुत्ती जु' अ. २.'तूठी' आ. ३.'मूं' अ. ४.'मया' अ. ५.'मझ' आ. ६.'ऊचार, वली वहिली' अ. ७. 'गयां' आ. ८.'जिम पण' अ. ९. 'मनि' आ. १०. 'लेई मूंकिस पाटण' आ. ११. 'उलग्यो७' अ' १२.'मूकिम' अ. १३. 'कंतह मनि' अ.।

निर पग[illegible] मंडित [illegible] अंग ।
[illegible] निरुपम [illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥२१८॥

[illegible] ।
[illegible] ॥
[3]आरासनउ आगलि गोहइ [illegible] ।
पडिआर [4]नदी [illegible] प्रचंड ॥२१९॥

[सूदा-सामली मन्दिर-प्रवेश]

(चउपई)

निर्मल नीरि पखाल्या पाउ, [5]मानिनी स्यूं मन-रंगिइं [6]राउ ।
जा जाइ जगदीसर भणी, [7]देखी मंडपि महिमा घणी ॥२२०॥

[हरगौरी-प्रणाम]

बाहरि-थिकां बे जोडइ हाथ, प्रणमिउ प्रभु जडधर जगनाथ ।
गरूउ गजर गभारा-मांहि, अबला एक तिहां ईस आराहि ॥२२१॥

वारू वन ते पेखी मनि, आणादिउ ऊजेणी-धणी ।
पहिरी धोती सवल सांचरिउ, राणी-सरसु रा नीसरिउ ॥२२२॥

सामली पूछिउ [8]सूदा-पाहि, वनिता-वृंद [9]महावन मांहि ।
प्रीय ! प्रासाद-तणइ जालीइ, [10]ए कारण निरतिइ निहालीइ॥२२३

१.'अनोपम अमति' आ. २.'कनक मचिइ कलस दंड' आ. ३.'आवास' आ. ४.'तन सोहइ' आ. ५.'प्रीय मानिनिस्यू' आ. ६.'जाई' अ. ७.'पेखइ' आ. ८.'प्री पासि' आ. ९.'हदवासी' अ १०. 'कुतिग नितलिइ' आ. ।

[1]महमहइ मलय मालय महुल्ल ।
सेवंत्ती जत्ती वकुल वेल्ल ॥
कणवीर कुसुम श्रीखंड सार ।
रयचंपु [2]पाडल जूहीय अपार ॥२१३॥

केतकी अट्ठदल कमल-वृंद ।
कृष्णागर वालु करल कंद ॥
वंकडीय कुन्नीय पयडीय पलास ।
[3]चिहु पखि वन पाखलि ति वांस ॥२१४॥

तिहि-मज्झि सजल सरवर [4]सुरंग ।
उत्तुंग पालि पूरीय तरंग ॥
तिहां त्रिविध कमल कैरव कमोद ।
रस-[5]रुद्ध हंस पामइ प्रमोद ॥२१५॥

तरवरइं तीरि वहु वतक कक्क ।
चिहुँ पखे [6]कुरलइ चक्कवक्क ॥
नवकुंड अमीय उप्पम ति नीर ।
शीतल सुअच्छ गहिरूं गंभीर ॥२१६॥

[कैलासपति-मंदिर वर्णन]

[7]तस अग्गलि उमयापति-अवास ।
कैलास छंडि जिणि कीधु वास ॥
भड निवीड तुंग तोरण पयार ।
अपुव्व पुप्प दीसइ दूआर ॥२१७॥

---

१. 'महमहन्ति अति मलया अमाल, फूल सेवंत्री जाती विकल वाल' अ. २. 'पाउलनु नही' आ. ३. 'वन पाखलि विहुपखि शव-निवास' आ. ४. 'अङ्ग' आ. ५, 'लीद्ध' आ. ६. 'करलइ' आ. ७. 'तिहि' आ. ।

[illegible] ॥२३२॥

[illegible] ॥२३३॥

[illegible] ॥२३४॥

[सूडा-प्रति सावलिंगी-प्रश्न]

सावलिंगि पूछइ [illegible], सुण पुत्री प्रासाद-प्रवेशि ।
जइ प्रभु कारणि करइ प्रणाम, अथवा [illegible] आवइजी नाम ॥२३५

स्त्री एकली अनोपम रूप, ए कांइ शिव-नमू [illegible] ? ।
दीसइ नही सखीय[4] न साथ, ते कारण जाणइ जगनाथ ! ॥२३६॥

कइ को नागलोकनी नारि ?, कइ को रूडी राजकुयारि ? ।
कइ वलि अमरलोकनी एह ?, सवे सुहामणि पडिउ संदेह ॥२३७॥

[सावलिगी-प्रति लीलावती-सखी-प्रश्न]

तीह-मांहि "साथिड थई एक, जे [5]बूझइ बोलिवा विवेक ।
पूछी वात विनय-सिउं तेणि, "कहु बहिनि ! दिसि आव्या केणि ?" ॥२३८

[सावलिंगी-उत्तर]

"आव्यां दिसि ऊजेणी-तणी": राजकुमरि सा वाणी सुणी ।

[लीलावती-ध्यानभंग]

संखेपइ शिव करी प्रणाम, लीलावई लय छांडिउ ताम ॥२३९॥

---

१. 'फरिडि' आ. २. 'प्रगटवइ' आ. ३. 'आशृजी' आ. ४. 'तम' आ. ५. 'ऊभी' आ. ६. 'ऊरसि' आ.

[राजकन्या लीलावती दर्शन]

(गाहा)

शिव जोय समे उपवासत्त, ये मज्भि रयणि सर-मज्भे ।
जल-केलि-करणं मुक्कं, नीरस तरुइं नील [1]पंगुरणं ॥२२४॥

तह पंगुरण-प्रभावे, पल्लवियउ सुक्क तरुग्ररो तिवारो ।
तिरिण पल्लवेण पुज्जीय शिव, वंच्छंति सदय भत्तारो ॥२२५॥

अवत्थयाय बालावत्थं, गहिऊण सुक्क वृक्षाणं ।
पिक्खेवि रूवराई, पणमिसु सुपल्लवा गौरी ॥२२६॥

[सदय-पति-प्राप्त्यर्थ षोडशोपचार पूजन]

(चउपई)

गलते [2]कृतिका किद्ध सनान, धवली धोति-तणू परिधान ।
निर्मल नीरिइं भरवि भृंगार, ढालइ ईश अखंडित धार ॥२२७॥

कापडि-स्यूं आलूंछइ अंग, बावनि चंदनि चरचइ चंग ।
बहु बिल-पत्र कुसुम करि लेउ, रचइं विविध-परि [3]पूजा देउ ॥२२८

कस्तूरी-[4]सिउं चंदन घनसार, धूप अगर-तणाउ उपचार ।
नव नैवेद्य [5]अनइं आरती, करइ कंत-कारणि आरती ॥२२९॥

सवे समी रूडी रुद्राख, जपमाली-स्यूं जपइ सु लाख ।
नीम न चूकइ निश्चउ घणाउ, [6]लय अखंड लीलावई-तणउ ॥२३०

[लीलावती-सखीमंडल-कृत गीत-नृत्य]

आपी वापिइं [7]सोहली सही, सवे समाणी वय सोलही ।
तीणि अवसरि ते मांडइ [8]रंग, वाजइं गुहिरां मधुर मृदंग ॥२३१॥

---

१. ट्रंक २२४ थी २२६ 'आ'. मा नथी. २. 'करते' आ. ३. 'तेउ' आ. ४. 'घरल्ले' आ. ५. 'करइ' आ. ६. 'लिग्र खंड' आ. ७. 'साथिइ सोलसो वइं समाणी सवे॰' आ. ८. 'जंग' आ.

[illegible]

[illegible]
"[illegible] ॥२४७॥"

[लीलावती-वचन]

"[illegible] ।
[illegible] ॥२४८॥

वीर [illegible] वीर ।
वीर भणी [illegible] शरीर ! ॥२४९॥

जिम जिम पाणि-ग्रहण-नउ, अवसर जाइ अजुत्त ।
तिम तिम माय-ताय-नउ, चिंता चित्त बहुत्त ॥२५०॥

माय बाप सज्जन सविहुं, वात विमासी एह ।
चाह माणस मोकली, बईठां वेटी देइ ॥२५१॥

कुमर किह्वारइं न आविसिइ, परणेवा परदेसि ।
तउ हासारथ होइसिइ, इम चीतवइ नरेसि ॥२५२॥

राय राणा भूमी भला, मागी रह्या महीस ।
माय बाप सहू बूझवी, सही ए सही न रीस" ॥२५३॥

सीणि कारणि तप आदरिउ, मइं महेसर-पासि ।
पूरी ईस आसि अनेकनी, "परतु छट्ठइ मासि ॥२५४॥

पुरुष न को पईसी सकइ, ए वनमांहि अजुत्त ।
आवइ कोइ किह्वार ते, जे हुइ [7]पुण्य-पवित्त ॥२५५॥"

---

१. 'वली' आ. २. 'सांभलयु' आ ३. 'अह्वारु' आ. ४. 'तनि' आ.
५. 'अ' मां टूंक २४३ नथी. ६. 'परता छठइ' आ. ७. 'पुनि' आ.

सावलिंगि-सिउ सांई लिद्ध, वहु-मान मन-शुद्धिइ दिद्ध ।

[लीलावती-प्रश्न]

'वहिन' भणीनइ माही वांहिः "किम एकला पधार्यां आंहि ?"॥२४०

[सावलिंगी-वचन]

"नही एकलां, अछइ भल साथ, हूं जुहारण आवी जगनाथ ।
तुम्हे तुम्हारु कारण कहु, पाखलि अवला ऊवर सिं रहु ? ॥२४१॥

राजकुंअरि कूंआरी अजी, आवी रानि राउलनइ तजी ।
कुण तम्ह माय वाप ? कुण ठाहि ?
कइ कारणि तू ईश आराहि ?" ॥२४२॥

सावलिंगि जउ [1]पूछइ मही, लीलावती तइं कारण कहइ ।

[लीलावती-वचन]

"पुहुर पंथ मुझ पीहर वेडि, हूआ छः मास वमंनां वेडि ॥२४३॥

(गाहा)

वरवीर-[2]राउ धूआ, मुहुमाले मुज्झ राउ नरवीरो ।
वर वीर सदयवच्छो, वछूं शिव-पुज्जिय अयि सहीए ! ॥२४४॥

कलिजुगि [3]कामुक-तित्थो, पत्थंतह [4]अत्थसारए सयलो ।
खट मास अवहि [5]अगइ, मण-वछिय दिइ माहेसो ॥२४५॥

(दूहा)

ते मूं आज अवद्धडी, पूगी [6]शिव पूजति ।
सांझ [7]समइ सूदउ मिलइ, कि [8]मूं मिलइ कियंति" ॥२४६॥

---

१. 'राउ लगनि' प्रा. २. 'वीमा' प्रा. ३. 'कामिक' प्रा. ४. 'सारद सयल लोयस्मा' प्रा. ५. 'गमए' प्रा. ६. 'सवि' प्रा. ७. 'उरउ' प्र. ८. 'मूं मिल्लइ उयंत' प्र.

[सावलिंगी-वचन]

“अकला के नहीं मारसिइ इम, ते जाणी तुम्ह जगदीश ॥२६४॥

हजी म करई पुण्य पसाउ, साहिब ! साहिब ते करइ पसाउ” ।
¹सावलिंगि-सुवचन सांभली, धारीउ मनि मनमांहि ॥२६५॥

[लीलावती-मदनदहन-दर्शन]

लोली-नई लीलावई नारि, जाणी जसी देव-कुमारि ।
निज नयणइ नर निरखइ जाम, ²जिणि सुरनिमित्त उपाउ काम ॥२६६

(गाहा)

³लीलावय सारिच्छा, समवडि लीलम्मि रायहंसस्स ।
उअरि वेणी-दंडो, पुट्ठिमि सोहइ ए हारो ॥२६७॥

⁴(दूहा)

“लज्जा संकटि दिट्ठ, प्रीय चोल नवगु न जाइ ।
लिउ रे नयणा दिट्ठ, अउ, जा नवि अन्तरि थाइ” ॥२६८॥

(चउपई)

चलिउ सूदउ सहू सांभली, सावलिंगि ⁵साथि जई मिली ।

[सूदा प्रति सावलिंगी-वचन]

भलउ भावि वीनविउ भूपः “स्वामी ! तुम्हि ⁶सांभलउ स्वरूप ॥२६९॥

ईश-सूत्र अवधारिउ आम, किहां ऊजेणी ? किहां आराम ? ।
कोधी वाड हूउ कूपसाउ, ते जाणि जगदीश-पसाउ ॥२७०॥

इम जावा जुगतूं नही कंत !, आ वनितानउ सुणी वृत्तंत ।
एक हत्या, वीजउ हर-लोप, कहितां वात म करिसिउ कोप ॥२७१॥

---

१. ‘लीला वतीइ’ आ. २. ‘जाण मूरित वंतुकाम’ आ. ३. ‘अहिली-अयण समरि सा, समवइ लीलंमि राय हंसस्स’ आ. ४. टुंक २६८ ‘अ’ मां नथी. ५. ‘सीकिइ’ अ. ६. ‘सांभलु’ आ.

[सार्वलिगीं विमासण]

सार्वलिगि ते संभली, चित्ति चमक्कइ लग्ग ।
[1]सूदि जि सउण-विचार कीय, ते मूं परतखि पुग्ग ॥२५६॥

(चउपई)

लीलावतीइ कारण कहीय, सार्वलिगि ते संभलि रहीय ।
भ्रम चींतवइ अदीठइ भूप, सूदइं सहू संभलिउ सरूप ॥२५७॥

जाणी मूत्र तणूं जगदीस, सार्वलिगि तउ धूणिउं सीस ।
हर साहमूं जोईनइ हसी, लीलावती-नइं विमासण वसी ॥२५८॥

[लीलावती-प्रश्न]

"गोरी ! गुज्झ कहंतां कांइ, माथूं धूणी मरक्यां कांइ ? ।
साचउं कहउं, सदाशिव आण, नहीतरि आहां आव्यां अप्रमाण" २५९

सूदइं सपथ दीजतउ सुणिउ, राजा-हृदइं बोल रणझुणिउ ।

[सामली-विमासण]

सामली वली विमासण पडी, वहितां वाट सउकि सांपडी ! ॥२६०

एक अण-कहइं तउ एहनूं पाप, बीजउ वली सदाशिव शाप ।
रवि [2]ऊगइ जु विहाइ राति, तउ ए प्राण तजइ परभाति ॥२६१॥

आगइ एक माहरइ काजि, मस्तक ऊडविउं महाराजि ।
आ बीजी पग-बंधण मानि, राजकुमरि प्रीउ पामिउ रानि ॥२६२॥

सार्वलिगि अति ऊतावली, अण-बोलतां हुई आकुली ।
लीलावतीइ [3]मांडिउ लाग, ए मइं कांइ पाडिउ पाग ? ॥२६३॥

[लीलावती-वचन]

"बाई ! कां [4]अण-बोल्यां रहउ, कांई जाणउ तउ कारण कहउ ।"

---

१. 'सूदइं सकन विचारियां', अ. २. 'ऊगमणि विहाणी' अ.
३. 'पाम्यु' आ. ४. 'म म रहउ ? जु जाणइ', आ.

ऊजेणी [1]अमरापुरी, पगार मढो मंदिर ।
ऊजेणी पहुचन्द [2]राउ, पामणाञ्जीउ इंद ॥ २८१॥

इन्द्र-नगरा आगरा जिसिउ, मगधराज मनद्दगान ।
[3]सूदउ मोद हत्थी हसिउ, [4]कन्तिहि संभगि-बाल ॥२८२॥

ते पेखवि [5]हरखु हुईउ, कीसउ पुन-पसाउ ।
सुहृताद मंत जि [6]उद्विगिउ, तिणि रोगाविउ राउ ॥२८३॥

सुइ ति न रहिउ मांराही, राजा रोस बहुन्त ।
ऊजेणी [7]ऊजउ करी, वीर विदेसि पहुत्त ॥२८४

चउकि चुहट्टइ जूवटउ, हूंनु वीर जूआर ।
नित नित मग्गणि मग्गीइ, [8]जिहि मुहि नही नवकार ॥२८५॥

अम्ह सरीखा [9]अनेकि नर,-पाखलि पंखी बहुत्त ।
[10]ते सीदाता सदय-विण, ऊडी गया अनंत ! ॥२८६॥

[सदयवत्स-गुणप्रशंसा]

[11](छप्पय)

राय [12]कलां नल भूप, रूपि कंदप्प-सरिच्छो ।
[13]वाचि जुधिष्ठिर राउ, साचि गांगेय परिच्छो ॥

प्राणि जिसिउ भड भीम, माणि वीजु दुज्जोहण ।
दानि कन्न अवतर्यउ, बाणि अज्जुण [14]वइरोहण ॥

---

१. 'अमरावती' अ. २. 'छइ' आ. ३. 'सूद्दि य् जि' अ. ४. 'वंभणि-केरी बाल' अ. ५. 'पुहुवच्छ पहु' अ. ६. 'आठविउ' आ. ७. 'उज्जेअ' अ. ८. 'नहु जपइ' अ. ९. 'तीणइ नयरि' आ. १०. 'सीदाइ' आ. ११. 'सटपद' अ. १२. 'कुलागम भूप' आ. १३ 'वचनि' आ. १४. 'रिड वीरत्ति' अ.

[सउकि (सपत्नी) विवरण]

आदि-[1]मकति कीधउ आग्रहउ, स्वामी ! सउकि किसी हुइ? कहउ । माखण-तणी महेसरि घडी, तीणइ तउ उमया वीर [2]वीगटी ॥२७२

खेडि मांहि अधिपति अधभाग, बेटा बंधव लखमीं लाग । [3]सविहू-पाहिइ सपराणी सउकि, [4]वर वहिंचवा चाली चउकि॥२७३

स्वामी ! कहिउं महारुं मानि, सिरजी सउकि "मिली मूं रानि । माहरी [6]कांई म करउ लाज, अण-परणइ अनरथ हुइ आज ॥२७४

दिनि एकइं आगमि छः मासि, राणी राउ वीनविउ विमासि । कुमरि-तणू कारण जाणीइ, [7]अति आग्रहु मांडी आणीइ" ॥२७५॥

[धारापति(लीलावती-पिता)-चिंता]

राणी-वयण विमासइ राउ, पुत्रि-तणी प्रीछवण-उपाउ । सदयवच्छ नवि [8]जाणइ शुद्धि, कालि कुमरिनइ तपनी अवधि॥२७६॥

धारानयरि-राउ धरवीर, सभां वईठउ साहसधीर । सुधि पूछइ कुमरि-नइ काजि: "कोई ऊजेणी आव्यउ आजि ? ॥२७७

लीलावतीइं लीधइ नीम, छमासि छइ थोडी सीम । "आणइ भवि अनेरउ 'वरुं', कइ सूदउ कइ [10]जमहर करुं ॥२७८

"आणइ भवि अनेरउ 'वरुं', कइ सूदउ कइ [10]जमहर करुं । फूल धतूरा धरणि पडइ, कइ महेसर-मस्तकि चडइ । त्रीजी गति नवि तीह लहीइ": तिम कुमरीइं हठ लीधउ हईइ ॥२७९

[बंदीजन-कथित सदयवत्स-समाचार]

राजा-वयण सुणी तिणि वार, बंदिण एक करइ [11]जइकार । "हूं ऊजेणी आविउ आज, सूदा-सुधि सांभलि महाराज !॥ ८०॥

१. 'शकति लीधु' आ. २. 'चीवटी' अ. ३. 'सिवहु' आ. ४. 'वर विहंचावइ ताडीउकि' अ. ५. 'वली' आ. ६. 'काई करसि' ? आ. ७. 'आग्रह करीनइ आंहां' आ. ८. 'संधि' आ. ९. 'वरुइं' अ. १०. 'साहस करुं' अ. ११.'कइवार' अ.

धण [1]कामिनि ना नयण कटाक्ष, ते फल नागरि [2]पूगी आस ।
"[3]स्वामी ! दिन आव्युं अवसानि, [4]आ सूदउ बहु गामनि नारि"॥२९२

[धारापति आगमन]

साहमा प्रति करी प्रणाम, ता नागनि न ॥ पमकलाइउ ताम ।
पूठउ-थिकउ [5]नारि-मिउ राहू पूलिउ, "सूदानइ जई सीकिइ मिलवउ"॥२९३

[बारहट्ट-वचन]

बारहट्ट बोलाविउ बीर : "सांभलि सूदा ! साहसधीर ! ।
ऊभउ रहउ, अवधारि स्वरूप, तूं भेटेवा आवइ छइ भूप" ॥२९४॥

बंदिण तउ बोलाविउ जाम, पय खचीनउ [8]रहिउ ताम ।
ता राजा छांडी रेवंत, सांई [9]दीधु सामन्ति-कंत ॥२९५॥

[लीलावती-पिता स्नेह-वचन]

सावलिगि नइ नामइ सीस, 'पुत्रि'-भणी [8]बोलावइ पहवीस ।
"माई महासति जे आगिली, ते तूं अ भगतिइं दीसइ भली" ॥२९६॥

बारू वृक्ष एकनी छांह, [10]राउ सूदु बे बईठा तांह ।
ऊजेणी- अधिपतिनइं आधि, सदय-[11]भेटिइं हुई समाधि ॥२९७

[सदयवत्स विचित्र प्रश्न]

"ऊजेणी वसुधा विख्यात, सूदा नामि [12]अछइं सइं सात ।
अण-ओलखिइं म आदर करउ, वात विमासी वांहइ धरउ ॥२९८॥

ते किम [13]इम एकलउ भमइ ?, ते किम पालउ पंथि अवगमइ ? ।
तूं धारा-नयरी-नायक, हुं पाधरउ अछउं पायक ! " ॥२९९॥

---

१. 'कामिनी जि तप नप्पु' आ. २. 'पूगी' आ. ३. 'आ' आ. ४. 'बहु परि ध्यु पछइ' आ. ५. 'सूदा-कैडि जइनइ मिलइ' ६. 'जोइ' अ. ७. 'लीधु' अ. ८. 'ते दिइ आसीस' आ. ९. 'तइं सीठइं भावइ' आ. १०. 'राजा बेहू०' अ. ११. 'दीठइ'' आ. १२. 'बसइ'' आ. १३. 'एकला वनमाहि' अ.

[1]खित्ति साहसि सुयसि, लीला अंगि अणुपमो।
क्षत्तिय गुणि पहुवच्छ-[2]सूनु, [3]न कोइ सुभट सूदा समो" ॥२८७

[धारापति-प्रश्न]

(दूहा)

[4]रा पूछइ : "सुणि वंदीयण ! कुण दिसि कुमर पहुत्त ?"।

[वंदीजन वचन]

[5]"उत्तर ऊजेणी- थिको, गिउ सामलि-संजुत्त" ॥२८८॥

(वस्तु)

भूप चिंतइ, भूप चिंतइ, निय मन-मांहि :।
"ए [6]कांई कारण गिच-तणू, सूदा प्रति जे राउ रूठउ।
[7]कामुककुल जगि जाणीइ, लीलावई[8] जि तूठउ ॥
वयणि विमासी चालीउ, राजा लोक-सिउं राउ।
उच्छव ईसर-अंगणइ, संपत्तउ समवाउ ॥२८९॥

(चउपई)

[9]लीला सूदउ सामलि संचरइ, वनितर सवे विमासण करइ।
[10]कां जाई ? आठवइं उपाउ, तां राणी-सिउं [11]पुहुतउ राउ॥२९०

कोलाहल कीधउ कामिणी, बिइ वड़ वाहगि वधामणीः।

[सदयवत्स-वधामणी]

"अवसरि भलइं पधार्यां आज, कूंअरि-तणां हिव सरियां काज२९१

---

१. 'कीरति साहस सिद्धि, जस लीला वयण' आ. २. 'तणु' अ. ३. 'कोइतेहं सुभट सूदा समउ' आ. ४. 'पहु पूछइ; कहि' अ. ५. 'का चालिउ ऊजेणी ! कय जु' आ. ६. 'काईअ परम लणउ सत्त, पुत्त पुहवच्छ रूसइ' अ. ७. 'कामिक लिंगजु' अ. ८. 'लावइ तुठो' अ. ९. 'तां' अ. १०. 'जां काई' आ. ११.'आविउ' आ.

[illegible] ।
वे [illegible] ॥३०७॥

[illegible] नो ।
लागो पाणिग्रहण [illegible] ॥३०८॥

[[illegible]]

([illegible])

राउ [illegible], गाउ [illegible], [illegible] ।
[2][illegible] आणंदिउ, नंदीजण सुयण मण [illegible] ।
विप्र वेद-ध्वनि उच्चरइ, [illegible] ।
ताडीय [illegible] निहि, [illegible] राजा नहि आवासि ।
अव-[illegible]-सिउ अधिकारीउ, [illegible] पाणि ॥३१०॥

ताम [7]चलिउ, नाम चलिउ, मिलवि मनरंगि ।
[8]'राजासिउं' गणी सवे, कुमरि-गाई घरवीर-घनगि ।
लीलावई-वर जोइवा, सावलिगि-सिउं भेट-करणि ॥
सदयवच्छि प्रमदा राविहू, कीधउ एक प्रणाम ।
साई देई सामलि-तणा, [9]बोलइ वहु गुण-ग्राम ॥३११॥

[सामली रूप-वर्णन]

(षट्पद)

आगइ अहर रस-रत्त, अनइ अहर विलासीय ।
आगइ लोयण लोइ, अनइ कज्जलिहि कलासीय ॥

१. 'मडा घा' आ. २. 'अवणीय आगप नथी' आ. ३. 'आ मां आ शब्द नथी. ४. 'एठउ सिद्धि सह' आ. ५. 'दिइ महेससि मग्गिउ, कंत जि लीलावतीय लघु ततखि तीण दिणि तुरित लगन लेउ दिल करण किद्धउ' अ. ६. 'मेल्हिउ' ७. 'वलीय' आ. ८. 'राजा एसिइ' अ. ९. 'ते बोलइ गुणग्राम' अ.

[बारहट्ट-प्रवेश । परिचय-निवेदन]

(दूहा)

बारहट्टि [1]इणिइं अवसरि, वंदियण बोलिउ इम्म : ।
"सूद! [2]ति सहू अम्हि संभलिउ, तूं अ राउ रुठउ जिम्म ॥३००

ऊजेणी-अधिपत्ति तूं, आ धारा-[3]धरवीर ।
मेलउ माहेसरि कीउ, छंडि विमासण वीर !" ॥३०१॥

वंदिणि-केरइ बोलडे, वसिउ सूद संकेत ।
परण्या पाखइ न छूटीइ, ए सहूइ हर-हेत ! ॥३०२॥

[4]सिउण समत्थि म अवगणइ, सूदइ सा महिलाउ ।
सावलिगि साथिइं सती, [5]तेह मुहु रखइ राउ ॥३०३॥

[लीलावती गुण-वर्णन]

(गाथा)

नर नारि मार परिवारे, पक्खलि [6]मिलिय नरिंद नर खंते ।
लीलावई लावण्य-वयणि, न कुली बोलीय बलिहार मज्झम्मि ॥३०४॥

अह लीलावई नामं, लीला-गई रायहंसस्स ।
उयरि वेणी पडिबिंबं, पुट्ठीय पडिबिंबिउ हारो ॥३०५॥

[7]गिव जोअ समे उपवासत्त, ये मज्झि-रयणि सर-मज्झे ।
जल-केलि-करणं मुक्कं, [8]नीरस तरूइं नील पंगुरणं ॥३०६॥

तह पंगुरण-प्रभावे पल्लवियउ, सुक्क तरूअर तिवारो ।
तिणि [9]पल्लवेण पुज्जियं शिव, वंच्छंति सदय भत्तारो ॥३०७॥

---

१. 'तेणइ' आ. २. 'तुम्हे सहू साभलिउ' आ. ३. 'नयरी धरि' अ.
४. 'सूअण सवे मइं अवगण्या, सूदु अछइ सामइ' आ. ५. 'तेणइ' अ.
६. 'तेह मरां जेहिमि' अ. ७. 'शिव-योग उपवास समइ, पय-मझि' आ.
८. 'नी सस्य तरवि' आ. ९. तिणि पूजिसि, शिव-कठिनू' आ.

(छंद चामर, त्रिताल)

नचंति गोरि के अनेक, के सुरंग [illegible] ।
के [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] ॥
[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] ।
सोहंति [illegible] [illegible], [illegible] आगलु ॥३१८॥

[2](धवल)

चिहुं दिसि च्यारि चामर ढलइ ए-आ-आ ।
सिरवरि ए सोहइ छत्र, जिम मेघ-धुनि उच्चरइ ए-आ आ ॥
आगलि ए, नाचइ नाचाविध पात्र ।
बहु बंदिग कलरव करइ ए ॥३१९॥

(छंद चामर, त्रिताल)

करंति बंदिणा अणेक, मंगलिक मालयं ।
विचित्त चित्ति, पत्त पाउ, राग रंग तालयं ॥
चडी तुरंगि, चंगी अंगि, [4]सार सुंदरी रसे ।
ति चालवंति, नारि च्यारि, चामरं चिहु [5]दिसे ॥३२०॥

[वर-यात्रा धवलगीत-वर्णन]

[6](धवल)

वर आगलि-थिउ संचरइ ए-आ आ ।
राण ले ए सरिसउ राउ, पायदल पार न पामीइ ए-आ आ ॥

---

१. 'सिद्धि खित्ति' आ. २. 'पयाकिउ' आ. ३. 'मदीइ सासणे' आ. ४. 'संखिर सोहइ छत्र अलंब कि चिहुं दिसिच्य।रि चमर ढ़लइ ए। बंदियण कलिरव करइ' बहूत, कि अगलि यात्रा नाटक करइ' ॥ ५. 'त्रियारि सारि सुंदरी,' आ. ६. 'दिसि किनिरी' ॥ ७. 'वर आगलि थिउ चालइ ए राउ कि पयदल पार न पामीइ, ए। ततखिण वल्धु नीसाण जे धाउ, कि हिंइ हीसइ गज सारसी ए ॥' अ.

आगइ थणहर थोर, अनइ हाराउलि भारीय ।
आगइ काम गायम धारि, अनइ झंझरि झमकारीय ॥
आगइ काम कीय कामिनी, अनइ वंस तन सि ऊजली ।
पहुवच्छ-तणउ भमर रंगि रसि, इसी नारि सूदा मिली[1] ॥३१२॥

[सार्वलिगा-सत्कार]

(चउपई)

आसणि बईसणि आदर वहू, [2]सार्वलिगि संतोसिउ सहू ।
बीडां आपइ आपण हाथि, जे धणि आवी धारणि साथि ॥३१३॥
सार्विलिंगि सनमानी राइं, राणी सवि रलीयाइति थाई ।
ऊठी अबला आयस मागि, संतोषी सामलि सोहागि ॥३१४॥
चाली चंद्रवदनि चमकंत, [3]किरि कंदर्प लीलावई कंत ।
राजकुमारि रूपिइं रति-जिसी, सार्वलिगि सविहूं-मनि वसी ॥३१५॥

[लग्न-निमित्त मिष्टान्न भोजन]

चडी कडाहि गमि वहु वहु, आदर-सिउं आरोगिउं सहू ।
लगनवार लीलावई-रेसि, सदयवत्स वर भरीइ सेसि ॥३१६॥

[वर-तुरग प्रशस्ति]

(राग : धउल धनासी)

आसण-तणउ अणाविउ ए ।
नरवरिइं तरल तुरंग, ए सखी ! ।
साहण-पति पल्लाणविउ ए, [4]पलाणि पवंग ।
तीणइ वरराउ चडाविउ ए ॥३१७॥

---

१. 'टूंक ३१२ अमां' नथी. २. 'लीलवइ' आ. ३. 'काम-जिस्यु' आ.
४. 'अति मानहर' आ.

[1](मौक्तिकदाम छंद ततः कुंडलिउ)

पउमिणि हस्तिनि, चित्रिणि दारा, संखिणि सारइ किद्ध सिंगारा।
रति-पति रंगि, मिलवि सहि रामा, पेखिवि सदयवत्स वरकामा ३२६

जे काम-नरिंद-तणइ दलि सारा, गमइ मत्त पयोहर-भारा।
जे हेलि सा गिहिलिल[2]चलइ चमकंति, ते सुद्द नरिंद स्यूं रंगि रमंति ३२७

जे नेय भय-दिट्ठ कि तद्द कुरंगि, [3]यत्त सरेह मुनेह गुरंगी।
जे चंपकि चंदनि अंगि गमंति, ते [4]सुद्द नरिंद-स्यूं रंगि रमंती ३२८

करइं नित मानिनी आणणि सोह, जे जाणि जुवाण तणइ मनि मोह।
जे पत्ति उरत्थलि नारि नमंति, ते सुद्द नरिंद स्यूं रंगि रमंति।३२९

[5]ठवइ उरि हार कि तारय-श्रेणि, ढलति नितंव प्रलंवित श्रोणि।
जे ताउणि आउणि नित्त घुमंति, ते सुद्द नरिंद-स्यूं रंगि रमंति ३३०

[लीलावती सखी-विनोद]

(षट्पद)

"हे सही ! कहि कुण कज्जि, अज्ज उल्हास अंगि वहु ?।
[6]कुंकुमि कज्जलि कणय-कुसुमि, सिगार किद्ध सहु॥
भरीय सेसि सीमंत, [7]कंत कंदर्प रायवरि।
गुडीउ साहण मयमत्त, नित्त सरि सज्ज कि [8]उपरि॥
माणिसि मयंक मधु-रति मधुप, [9]पहुवच्छ-तनय मुज्झ मनि वसिउ।
उल्हवण अनल[10]न कित्तउ रयणि, सदयवच्छ सुखनिहि जिसिउ ३३१

अग्गइ [11]अहरा रत्त, अनइ वलि विलासीय,
अग्गइ लोयण लोइ, अनइ कज्जलिहिं कलासीय,

---

१. 'मौक्तिक कुंडलिउ' आ. २. 'वलइ' आ. ३. 'जेउप्प' आ. ४. 'ते सुदव वत्स सिउ रंगि रमंति' आ. ५. 'दिइ' आ. ६. जे तुरणी निच्छइ हरमंति' आ. ७. 'कुमरिति' आ. ८. 'कंत ठंक परिय' आ. ९. 'सपरि' आ. १०. 'पुहर मनि सनूक्कसु ११. 'न कितु रणभरि' आ.

वालीय जउ ए नीसाग्ण जे घाउ ।
हय दीसइं गयराय सारसी ए-आ आ ॥३२१॥

(छंद चामर, त्रिताल)

[1]करंति सारसी गइंद, सूंडि-दंडि डंबरं ।
नीसाग्ण [2]घाउ, ढक्क घाउ, ढोल वज्जइं अंबरं ॥
पवित्त वाउ, [3]दिन्न राउ, वेगि वावरइ करो ।
[4]प्रेमि सदयवच्छ वीर, संपत्त तोरणइ वरो ॥३२२॥

(धवल)

गय-गामिणि गुण वन्नवइ ए-आ आ ।
ससिमुखीय सुकोमल महमहइ ए ॥
करइ सिणगार, हार एकाउलि उरि ठवइ ए ।
कंकण कुंडल झलहलइ ए ॥३२३॥

(छंद चामर)

नरिन्द इंद मत्त लोय, लोय-मज्झि सोहिइ ।
अदिट्ठ दिट्ठ माणिणी, [5]मणंत रंगि मोहिइ ॥
भवानि-पत्ति-पाय-भत्ति, कंत लद्ध कामिनी ।
ति [6]सूद वीर, वन्नवंति, [7]गेलि गयंद-गामिणी ॥३२४॥

(धवल)

कंद्रप ए समउ कुमार, अहिणवउ इंद नरिंदवरो ए ।
सेसि भरंति कुमार, सदयवच्छो शृंगार करंति ॥
हरसिद्धि-भत्ति विप्र, वेदधुनि उच्चरइ ए ॥३२५॥

---

१. 'हय गय हीसइ सारमी कहि,' आ. २. 'ढोल ढक्का धाउ हुअ लाव अंबरं' अ. ३. 'दितिराउ' अ. ४. 'इणि परि सदयवछ वीर, संपत्त परिसी-तणो वरो' आ. ५. 'मन्न रंगि' अ. ६. 'ते सूद वीर' आ. ७. गेलिइ गायवर गामिनी' आ.

(वस्तु)

नारि नरी, नारि नरी, नाहू नग रंग ।
नारी लही नयन. अमर वेगि [1]आ हुनि पामीत ।
अब [2]संपत्ति अम रजअस्यु, दिउ उदक नरहंमि म्यामीत ।।
[3]वीर वली चिता बहु, जिमांजिम [illegible] रानि ।
हेम घणु हरसिद्धि भणइ, पुरिस [4]पुत्र प्रभाति ।।३३८।।

[विवाह-कुलाचार]

(चउपई)

[5]जउ मनरंगि विहाणी राति, दांतण करइ कुंअर परभाति ।
तां [6]साला सवि आव्या सार, पुण्यवंतना पुत्र अपार ।।३३९।।

[7]तीणइं ते ऊजेणी-धणी, बोला बिउ 'बहिनेवी'-भणी ।
शिर नामी बईठा सुविचार, ऊगम लगइ[8] जिके जूआर ।।३४०।।

[द्यूत क्रीडा]

सदयवच्छ सविहूं दिइ मान, प्रीति-सरिसां आपइ पान ।
[9]तीणइ मेल्ही पूंजी पड मांहि, जूअ मागइं सवि सूदा-पाहिं ।।४४१।।

ते बोलइं : "सूदा ! सुणि वात, करी सूथ अम्हस्यूं रमि रात ।
भूइं आपणी भलउ सहु कोइ, [10] पडि पियारी दुहिली होइ ।।३४२।।

सदयवच्छ लहुडपण सीम, जू आव्या [11] तां भणिवा नीम ।
रमिवा-[12]मसि असिवर ऊडवइ, हस्या [13]वीर कलकलिया सवइ ।३४३

---

१. 'आहुत्ति' आ. २. 'संपतिसु तस जुगत्त उदक दिउ' आ. ३. 'वीरवर' अ. ४. 'पत्र' आ. ५. 'भलइ भावि जागीउ जूआर, दातण करबा काजि कुंआर' आ. ६.'साला स्यु' अ. ७'.उत्त हे ऊजेणीनु धणी' आ. ८. 'खेलुउ' अ. ९. 'जण मेली वईठउ' आ. १० 'पडह' आ. ११. 'तइं कहिवा' आ. १२. 'रसि' अ. १३. 'चीतिवउ खलीया' अ.

अग्गइ [1]थणहर थोर, अनइ हाराउलि भारीय,
अग्गइ गय मंथारि, अनइ [2]नेउर झंकारीय,
अग्गइ कामुकीय कामिनी, अनइ [3]वसंत निसि उज्जली ।
पहुवच्छ-तणउ भमर रंगि रसि, [4]इसी नारि सूदा मिली॥३३२॥

[लीलावती वरप्राप्ति-धन्यता]

[दूहा]

लीलावई मनि चींतवइः "ईसरि किउ पसाउ ।
ऊजेणी-थिउ आणिउ, सदयवत्स पहु-जाउ ॥ ३३३[5]॥

जस कारणि मइं एकली, तप कियउ छः मासि ।
ते आशा [6]मुझ पूरवो, सामी लील-विलासि ॥३३४॥

हारि दोरि कंकणि-हिं, सयल शृंगार किद्ध ।
लीलावई मन रंगि [7]रसि, सदयवच्छ कर लिद्ध ॥३३५

[चतुर मंगल]

राय पखालइ पाय वर, सासू सेसि भरंति ।
विप्प अनइ वनिता सवे, मंगल चार करंति ॥३३६

(छंद पद्धडी)

मंगल चार करंति, हत्थ लेई [8]हत्थे लावउ,
अंतरपट उद्धरीय, किद्ध विहु कर-मेलावउ ।
संझ सूर स जोई, नारि वर नयणि निहालइ,
करइ सुकवि कइवार, राय वर-पाय पखालइ ॥३३७॥

---

१. 'सिहण सुथोर' अ. २. 'झंझरि' आ. ३. 'वसंत-निसि' अ. ४. 'अनइ सवर सुदा मिली' अ ५ दूंक ३३३ 'आ' मां नथी. ६. 'पूरी हुई' आ. ७. 'पुहती वरमंडपि तिहि' अ. ८ 'अथवालउ' आ. ।

[लीलावती पिता-धारापति वचन]

"ऊजेणी-अधिपति ! अवधारि, [1]पसाउ करी अम्ह नयरि पधारि ।
भोगवि अध-संपति अध राज, [2]मागि जि कांई जोईइं काज ॥३५३

दे उर वहु कीधु-देव !, तुम्ह जावा जुगतूं नहीं हेव ।
आगइ एक नारिनउ साथ, वीजो- सिउं हिव वाध्यु हाथ" ॥३५४॥

[सूदा-वचन]

सूदु ससरा आगलि साच, वोलइ वोल ते ब्रह्मा-वाच : ।
"लीलावती नइ साथिइं लेमु, सामलि पोहरि पुहुचाडिसु ॥३५५॥

करीय रहण पहिलूं परदेसि, तउ [3]आणिसु अवला विहु रेसि ।
जउ सासरइ रहूं सुख-भणी, तउ [4]लाजइ ऊजेणी-धणी ॥३५६॥"

[कवि-वचन]

जिणइ-तात तणइ अधवोल, छांडीउ राज करी तृण तोल ।
ते किम सूदउ सासरइ रहइ ?, सामलि-सरिसउ मारंगि वहइ॥३५७

[प्रयाण]

वूल्या परवत विसमा घाट, आगलि इंद्र-वाहण-नउ थाट ।
वाघ सिंघ वानर वनि मिलइ, देखी वीर सुभट खलभलइ ॥३५८॥

सुपुरिस नसीह नामइ सयर, ते-प्रति दीध हरसिद्धिनु वर ।
मधुरइ सादिइं मोर कीगांइं, वावन-ना वध ढीला थाइं ॥३५९॥

[गाढ़ अरण्य-प्रवेश]

आगलि अनोपम अति कांतार, काठ-समुद्र न लाभइ पार ।
नवि जाणीय सवार असूर, वनमांहि पइसी न सकइ सूर ॥ ३६०॥

---

१. 'गया' आ. २. 'मागिन देव' आ. ३. 'आविहु अवला' आ.
४. 'जस जाइ' आ.

लिउ हथीग्रार हरावी सही, सूथ पाखइ [1]न रमाडइ सही।
गांठइ गरथ न हाटि निखेव, सूदउ वीर [2]मनावउ सेव ॥३४४॥

[हरसिद्धि दत्त-वर द्यूत-जय]

सदयवच्छि समरी हरसिद्धि, रामति-मिसि लूसी लिइ रिद्धि।
पाडिउं [3]पइत [4]पहिलइ दाणि, साला हासारथ नइ हाणि ॥३४५॥

लीधा लाख हरावी हेम, ए ऊखाणउ साचउ एम।
[5]ग्या ग्रन्य काजि, ग्रनेरू थाइ, ते घाठी कहि कहिवा जाइ? ॥३४६॥

सालाने वानइं ते वांठि, [6]वहिनेवी ते बांधीउ गांठि।
[7]ऊठ्या सवे ऊतारा भणी, ग्रड पसरावी सूदा-तणी ॥३४७॥

[सदयवत्सकृत द्यूतद्रव्य-दान]

राजा-नइ घरि जाणि जंग, मागणहार-तणइ मनि रंग।
सदयवच्छि वरि मांडिउ करण, हाथ ग्रोडावी ग्रढारइ वरण॥३४८॥

बारहट्ट पुरोहित पढीग्रार, [8]सूदा सामलि ? [9]भलाव्या सार।
तिंह मन-शुद्धिइं दीधूं मान, जुगता-जुगति दिवारउ दान ॥३४९॥

छः दरसण पाखंड छन्नवइ, [10]दानि मानि मागण रंजवइ।
ग्रापइ सविहूं काजि सुवर्ण, किरि ग्रहिणवउ ग्रवतरिउ कर्ण ॥३५०

[11]राज मानि माणस ग्रति बहू, ग्रापी ग्ररथ संतोसिउ सहू।
सूदउ वीर पडावइ साद, [12]ग्रढार वरण दिइं ग्रासिर्वाद ॥३५१॥
पहिलूं [13]मोकलावी महेस, तउ ससरा प्रति-[14]गिउ नरेस।
ग्रायस मागी ऊभउ रहइ, ससरउ सदयवच्छ-प्रति कहइ : ॥३५२॥

---

१. 'रमांडु नहीं' ग्रा. २. 'मनायु' ग्रा. ३. 'जइत' ग्र. ४. 'चिहुं' ग्रा. ५. 'गणि कांउ नइ' ग्रा. ६. 'तु पूजी पूंजी बांधिउ गाँठि' ग्रा. ७. 'लेई राजा' ग्रा. ८. 'सूद्द वाल' ग्र. ९. 'तोडाव्या सुविचार' ग्र. १०. 'मानिइं मागण-मन' ग्र. ११. 'राज माहि' ग्र. १२ छः दरसण घरि ग्रासि वदि' ग्रा. १३. 'जई मोकलावइ ईस' ग्रा. १४. 'नामइ सीस' ग्रा.

[पर्वत-प्राकार प्रवेश]

परवत-गिरि पोढउ प्राकार, जस कमाड कोसीगां पार।
दीसइं हट्ट, धवलगृह श्रेणि, रा मंदिरि जई [1]रहिमु तेणि ॥३८६॥

[अनाथ स्त्री रुदन-श्रवण]

(दूहा)

राती रोअंती सांभली, नीधणीआई नारि ।
सूदइ सा पूछी विगति, धणि [2]धावल-हर मझारि ॥३८७॥

पूछी तां प्रमदा कहइः "[3]सांभलि साहसधीर ! ।
हूँ निधि नंद नरिंदनी, सूद ! विलमजे वीर" ॥३८८॥

[नंद नरेन्द्र-निधि दर्शन]

सार्वलिगि नवि संभलइ, नारी निद्रा लिद्ध ।
सदयवच्छ [4]रवि ऊगमणि, पेखीय सयल [5]समृद्धि ॥३८९॥

घण मणि मुत्ताहल रयण, हीरा हेम अपार।
अवलोई सूदु सहू, उरी दिद्ध [6]दूआर ॥३९०॥

[निर्लोभी सदयवत्स]

बलि वाकल पूजा पखइ, लच्छि न लीधी हत्थि ।
दीठी अण-दीठि करी, [7]संपय मूकी समत्थि ॥३९१॥

[पुण्य-प्रशंसा]

(वस्तु)

पुण्य तूसइ, पुण्य तूसइ, सकति सुर सच्छि ।
पुण्य आणि वनिता वरी, [8]पुण्य पुव्व पयरहण लब्भइ ।

---

१. 'रहीआ' आ. २. 'धवल' आ. ३. 'सूणि हो' आ. ४. 'सूरि' आ.
५. 'संपद्धि' आ. ६. 'बार' अ. ७. 'मूंकी सूदइ' आ. ८. 'पवर-पुण्य' आ.

पुहुतु वीर ते वन-मझारि, गाढइ करि करि साही नारि।
"स्वामी! घोर अंधार अवधारि", विण वावी तिहां पाँचइ सालि ३६१

संपत्त धान खडधान अपार, पंखि जाति नवि लाभइ पार।
सूडा नइ सालीही गहिगहइं, अढार भार वन देखो मन रहइं ।।३६२

सजलि सरोवरि झीलइ हंस, परवत पाखिलि अति बहु वंस।
धंस घसाघस परवत जलइ, नई नीझरण गिरि-हिं ऊतरइ ।।३६३।।

निगि नीरि उन्हाइ आगि, गज वे मंडलि जई लागी धागि।
केलि करमदा दाडिम द्राख, नालिकेरि लींबूइ-न्हा लाख ।।३६४।।

[चक्रवाकी प्रति-सार्वलिंगा-अन्योक्ति]

वासु वीर नीर-तटि रहिउ, सामलि सूदु बोलावीउ:।
"स्वामी! आ साविज अवधारि, कांठइ बईठां करइ पोकार ।।३६५

च्यारि पुहर चक्रवाक इम रडइ, जाणे पाटणि पुहरा पडइ।
विहस्यां कमल, विहाणी राति, प्रीति प्रीय पामिउ परभाति ।।३६६।।

सांसइ पडयाँ ते साहमूं जोइ, सार्वलिंगि मुख दीठउ रोइ।

(उपजाति)

विलोक्य बाला मुख चन्द्र-बिंबं। कंठे च मुक्ता-मणि-हार तारं।
पुर्नर्निशा विभ्रम-भीति हेति। सूर्योदये रोदिति चक्रवाकी ।।३६७।।

(चउपइ)

मूंकिउ नयर सहीं निटोल, मूकिउ वन ते बोलइ बोल ।।३६८।।

[द्यूतकार-स्वरश्रवण]

जां अवगमइ पंथ अति घणउ, तां सुर सुणिउ जूआरी-तणउ।
हाथ-मांहिल्या हीरा सोइ, एक भणइः "ए जीता जोईइ" ।।३६९।।

[प्रतिष्ठान पुर-प्रवेश]

पामिउ पुर पइठाण-प्रवेसह, नयणि निहालइ नगर-निवेसह ।
तां सरोवरि जल भरइं सुवेसह, चतुरि चतुर्विध नारि निवेसह ॥४३१

[विरह-विलक्षित पुरुष प्रसंग]

आगइ विरहि [1]विलक्खो प्राणी, लागी अंगि [2]तरुण सपराणी ।
कज्जल लग्ग दिट्ठ हुउ पाणि, पीयउं पुरिस पसू जिम पाणी ॥४३२

'नर नवरंग सही सवे जन्न, किणि कारणि पसू जिम पीइ जल?' ।
नारि-[3]नयणि करि लग्गउ कज्जल, तिणि [4]दीठइं नर भरइ न अंजल ॥४३३

(दूहा)

ईणि नयरि जे [5]निद्धणह, तेह-तणी घर नारि ।
वारू माणस जे [6]वसइ, तेह [7]नहु पाणीहारि ॥४३४॥

पाणीहारिइं परखीउ, नर पीयंतउ नीर ।
सदयवच्छ तं संभलि, चित्ति चमकयउ वीर ॥४३५॥

[अमंगल कबंध दर्शन]

पढमं पेखइ नयणि, पोलि प्रवेसि प्रवीण ।
पुरुष एक पय-पाणि-विण, सरडु श्रवण-विहीण ॥४३६॥

[गणपति मन्दिर प्रवेश]

तं पेखवि पाछउ वलिउ, गिउ गणपति-प्रासादि ।
आणि असुउणि ज ईणि नयरि, पडीइ वडइ विवादि ॥४३७॥

तिणि ठूंठइ ते ऊलखिउ, ए अम्ह पेखि वलंति ।
आणि भलेरूं भेटणूं, देउल-[8]मज्झि मिलंति ॥४३८॥

---

१. 'थल्यरबइ' आ. २. 'तिहा सप्पाणी' अ. ३. 'नर-करि' अ. ४. 'भीज्जय-भय' अ. ५. 'निअच्छ' अ. ६. 'अछूइ' अ० ७. 'तनहु' अ. ८. 'माहि' आ.

दान दिइ ते धन्य नर, [1]अदयवंत वीहइ न खब्भइ ।
पुण्य ज पुव्वय भव पखइ, [2]वंछित सुख न होइ ।
[3]पुण्यवंत पुण्य ज करउ, सुख संतोष सवि होइ ॥३६२॥

[नगरी-अवलोकन]

(चउपई)

[4]सविह परि गढ जोयउ फिरी, चालिउ [5]वीर मनि चिंता करी ।
परमेसर जउ करइ पसाउ, तउ ए रूडउ रहिवानउ ठाउ ॥३६३॥

दिवस च्यारि वनि [6]वहिउ नरेस, आगलि दीठउ वसतउ देस ।
[7]पुर प्रासाद नइ घट्ट निव्वाण, गामि गामि गिरूआं अहिठाण ।३६४

वारू लोक-तणा तिहां वास, [8]पेखी पथिक करइ उल्हास ।

[मार्गे भाट-मिलाप]

जां वि जाइं [9]वहतां वाट, तां सर-पालिइं भेटिउ भाट ॥३६५॥

[10]नर एकलउ अवारउ जाइ, पूठिइं प्रमदा पाली [11]पाइ ॥
भाटि बोलाविउः"सुणि हो शूर!,रहि राउत! [12]अति थिउ असूर"५६६

भाट भोगवइ [13]गाम ति ग्रास, आदर-सिउं आणिउ आवासि ।
पेखी अंग-तणउ [14]आकार, ते आवर्जन करइ अपार ॥३६७॥

तेडाविउ वालंद तिवार, मर्दन देवा काजि कुमार ।
ऊतावली हुईय अंघोलि, भोजनि शालि दालि घृत घोलि ॥३६८॥

---

१. 'अइवडंत पण पुण्य थुब्भइ' अ. २. 'जि सुख शरीरि' आ. ३. 'पुण्यइं ए पामीय सहु संपड सूदइ वीरि' अ. ४.'गाढां ग्रहीर' अ. ५.'चींत चीतवणी' अ. ६. 'वमिउ' आ. ७. 'पूरव' अ. ८. 'पेखीय हृदय' आ. ९. 'वसतो' आ. १०. 'दीसइ नर एकलु जि' आ. ११.'काइं ? आ. १२. 'वड' आ. १३. गामनु आ. १४. 'अविकार' अ.



(१) देखिये पृष्ठ ६२ कड़ी ४३२-३३
'पीयउ पुरुसि पशु जिम पाणी।'
और (२) पृष्ठ १७०-१७१ कड़ी ३२९
'पसूआं जिम पाणी पीयइ ।'

[1]गणिकानी मा अतिहि रढील, विवहारीउ मनाविउ मिन।
डोकरी मंडिउ गाढउ डोह, अर्ध आपतउ न छूटइ छोह" ॥४४६॥

[सदयवत्स-वचन]

[2]सदयवच्छ बोलइ : सुणि मित्र !, ए खोटू अति करइ अखत्र ।"

[ठूंठा-वचन]

"देव ! अनेरउ नथी अन्याउ, माती रांडइ वीटिउ वाउ ॥४४७॥
एक भांडणिया ऊठी भाड, वीजउ महि मूकिउ साडी ।

त्रीजी राउल-वाई रांड, [3]इणि कारण टलीइ मांड " ॥४४८॥

ते जोवा पुहुतु प्रासादि, डोकरि दीठी वढ़ती वादि ।
"नर नवयोवन छइ नवरंगि, ए वोलिस्यइ अम्हारइ [4]अंगि" ॥४४९
एकदंति बोलइः "सुणि साह !, अम्हि परठ्या छइ राउत आह ।"
सेठि-कुमर ऊचरइ सुजाण, "आपण विहु जण एह प्रमाण" ॥४५०

तव तीणइं विहु कारण कही, राउति वात विमासी सही ।
सदयवच्छि विचि लीधा साद, तेह-नउ निरवाल्यु वाद ॥४५१॥

[सदयवत्स-कृत चतुर न्याय]

एक सेठि हकारिउ ताम, "आणि विच्छे दिइ दर्पण द्राम" ।
सेठिइ जे जण बोलाविउ, अरथ आरीसउ लेई आवीउ ॥४५२॥

धन रेडी ओडिउ आरीस, एकदंति तव दिइ आसीस ।
आघी थई लेवानइ अर्थ, "दरपणमांहि गिणी लिउ गर्थ ॥४५३॥"

[गणिका-कपट उपहास]

हाथि ताली देई हसिउ लोक : "रांडइ लीधा टंका रोक ! ।
अंतरि तेडावी डोकरी, काढी बाहरि बांहि धरी ॥४५४ ॥

१, 'इतनी अति आडली रढील' २. 'सुदय भणइ सुणि ठूंठा मित्र' अः ३. 'ए मुंह' अ. ४. 'भंगि' आ.

पूग-पत्र-फल फूल-सिउं, आणी अमृत आहार।
लीलां लेतउ उलखिउ, जाणी किद्ध जुहार ॥४३९॥

[ठूंठा-जन-कृत सूदा-वन्दन]

सउण भणी [1]ते वंदीयां, लीधां पूगी पान।
'भाई' भणी बोलाविउ, दिइ मनशुद्धिइं मान ॥४४०॥

[ठूंठा जन आत्म-परिचय]

जूठाणइ जूय केतलूं ? [2]केतूं जाण जूआर ? ।
उडइ नइ उडिउं सहइ, ते अम्ह दाखि विचार ॥ ४४१॥

(वस्तु)

मित्र संभलि, मित्र संभलि, मुझह वीतक्क ।
हूँअ स्वामी सींघल-तणउ, कुंअर कोडि कंचण सहित्तउ ।
सइं गय हय सय पंच, लेइ ए पाटण पेखण पहुत्तउ ॥
ते हेलां रसि हारिउं, नाक पाग कर कन्न ।
ईणि जूठाणइ जूअ रमइं, वलीया भड वावन्न ।'४४२॥

(चउपई)

सूध न कांई देखूं स्वामि !, जूउ-दंड पडइ ईणि ठामि।
असिवर एक-मूंठि हारीइ, वीजा काजिइं वाजी सारीइ ॥४४३

[कामसेना गणिका जूठ-प्रसंग]

[3]वे जण पाटण-मज्झि पहुत्त, दीठउं देउलि लोक वहुत्त ।
"कहि भाई ! कोलाहल किसिउ ? ए अण-खाधइ पाणी-रिसउ ४४४

"कामसेना जे नाचिणि नाम, लिइ पंच सइं सोन्ना द्राम ।
सुहणइ सोमदत्त माणिउ, ते इहां ऊहडी नइ आणीउ ॥४४५॥

---

१. 'सहु वंदीउ' आ. २. 'केता रमइं जूआर' आ. ३. 'तं मुणि' आ.

[कामसेना-विह्वलता]

उत्तर ऊजेणी-पति दिट्ठ, वईठउ मत्त वारणइ वलिट्ठ ।
कामसेनि [1] थई काम-विकाम, माणस कोइ न जाणइ माग ॥४६४॥

[2]तेउ चलावी भणी अवास, त्रूटी नाडि, न [3]सनकइ सास ।
नयर-[4]नरेसर बाहर करइ, इसिउं पान अण-खूटइ मरइ ॥४६५॥

[उपचार]

राजवैद जई जोई नाडि, एउ विकार नहीं अम्ह पाडि ।
देस-विदेसी बीजा वहू, राजा-"आयसि आविउं सहू ॥४६६॥

एकि भणइः "ऊतारउ [6]आंच," एकि सेक दिवरावइं पांच ।
एकि भणइः "आलस छांडीइ," एकि [7]भणइः "मंडल मांडीइ" ॥४६७

एकि भणइः "अम्ह हलूउ हाथ," [8]एकि भणइः "दिइ कडूउ कवाथ" ।
आपापणी कला सवि कहइं, [9]गुणीया नइं वईद गहगहइं ॥४६८

[गूर्जर वैद्य-निदान । अनंग-रोग]

गूर्जर वैद्य तिह्वारइ हसिउ, जाणे धरणि-धनंतरि जिसिउ ।
दीठइं रूपि सरूप ओलखइ, वैद अनेरूं रा आगलि झंखइ : ॥४६९॥

"एहनइ अंगि अग्गलउ अनंग, नरवर ! को दीठउ नवरंग ।
महूरति एकि मूर्छा भाजसिइ, मिलिउ लोक देखी लाजसिइ" ॥४७०

तास वचनि कालमुहा थाइ, वलिउं चेत, [10]वैद ऊठ्या जाइ ! ।
बाहरि वरतइ भीडाभीड, प्रमदा पंचबाणनी पीड ! ॥४७१॥

---

१. 'हूइ कामिनी काम' आ. २. 'लेई' आ. ३. 'लाभइ' आ. ४. 'नरेस न' आ. ५. 'इसि ते' अ. ६. 'लांच' अ. ७. 'कहइ' आ. ८. 'एक थाइ छत्रीमु काथ' आ. ९. 'गुणीआ नीकारकि' आ. १०. 'वेगि ऊठी' आ.

इकि छांणिइ, इकि छांटइ छारि, इकि खोजवइं अनेरइ खारि।
एकदंति तव [1]ओपी इसी, राय राजा छवि राणी जिसी ! ॥४५५॥

तेह-तणाइ छोकरि नहीं छेह, डोकरी देखी हरखी तेह।
वादिइं विवहारोइं हंरावी, टंका ठीक रोक लेई घरि आवी ! ४५६

[गणिकाप्रति कुलस्त्रीजन-घृणा]

आपापणा धवलहर धमी, अवला सवे आवी उद्धसी।
"कहउ, किसी-परि जीतउ वाद ?," बोली न सकइ वईठउ साद ॥४५७

जीणइ घणा घासव्या ति घाठी, कला बहुत्तरि-सिउं बुद्धि नाठी।
त्रिणि दिवस जि लांघणइ लांघी, घणे घावू ए कीधी घांघी ॥४५८

परख्या पाखइ पुरुष वीससी, नयर-मांहि नर सघलइ हसी।
"कांई रे छोडी ! पूछइ काज, हारिउ वाद [2]विगूती आज" ॥४५९॥

[सदयवत्स प्रति कामसेना-आकर्षण]

कामसेनि संभलिउं स्वरूप, ते राउत-नूं [3]जोईइ रूप।
तेडिउ सघलउ संपरदाउ चातुरि चतुर जोएवा जाउ ॥४६०॥

पुहती मंडपि [4]मूंधा दीती, वाजिउ [5]गजर सधुडिउं गीत।
वंशकारि सातइ सुर सारि, आलति कोधो आलतिकारि ॥४६१॥

उडीमान उडवीउ तान, [6]झणझुण करइ मृदंग रसाल।
धुरी धूआनी धूरली आदि, रही रेख [7]रविनइ प्रासादि ॥४६२॥

नयण [8]वयण मन मस्तक नास, हावभाव [9]कटि-तणा कलास।
उर कर चरण लगइ वालवइ, इम जूजूआं अंग जालवइ ॥४६३॥

---

१. 'देखी' आ. २. 'विगोई' आ. ३. 'जोयूं' आ. ३. 'जोवा नइ तिहां' आ. ४ 'मधि आदित' आ. ५. 'गुहर सुद्ध सगीत' आ. ६. 'रणझिण' आ. ७. 'देवनइ' आ. ८ 'मयण' आ. ९. 'करइ' आ.

तंबोलीनी थोडो तोग, जिहनउ पान पाननो गोम ।
टींटा देखी टाले द्रेठि, माहूमी जईनउ मनावे मेठि ॥४८०॥

मालो आपइ [1]मुरहा फूल, जे चारु नउ अनि बहुमूल ।
मोटा झोटा अनइ छइ छेक, तेह-नइ दीजइ वहिलु छेक ॥४८१॥

फ़टरसी नइ [2]फरफट कूंच, हाथ किल्हारउं न मेल्हइ मूंछ ।
ते उलगू-नइ म देसि अडाउ, कूडा [3]करगर लाउ नगाउ ॥४८२॥

[धनवान परीक्षण]

नाणावटि नाणूं [4]निरखीड, निम आपणउ पुरुष परखीड ।
[5]जिहां जिहां दीसइ द्रव्य जेतलउ, तिहां आदर कीजइ तेतलउ ॥४८३

[कामसेना-वचन]

कामसेना नइं चडिउ कोप, नायकदे प्रति दीध निरोप ।
"ए वूढो-तणा वोल म विमासि, राउत तेडी आणि आवासि" ॥४८४॥

गई रामा [6]रवि-मंडप भणी, कही व्याधि ते कामिणि तणी ।

[सदयवत्स-प्रति वचन]

"सुणि सावज्जल साची वात, कामसेना तूं-राती रात ॥४८५॥

हूं पाठवी तीणइ तूंअ पासि, [7]पसाउ करी अम्ह आवि आवासि ।
अरथ अनेथि अछइ [8]अम्ह घणउ, ते वनिता [9]विक्रम तूंअ-तणउ।४८६

वार म लाउ, वहिलउ थइ देव !, टाला-तणी [10]टली छइ टेव ।
मरइ अखूटइ मोटूं पात्र, तइं दीठइं दुःख फीटइ गात्र" ॥४८७॥

---

१. 'सरस्यू नेह मन' आ. २. 'फाफट' आ. ३. 'कद घस लाउ' आ. ४. 'परखीइ' आ ५. 'जेहनउ भाव दीसइ' अ. ६. 'रधि' आ.७. 'मया' आ. ८. 'अति' आ. ९. 'विभ्रम' आ. १०. 'ष करिसिउ' आ.

[राजपुत्र-आनयन-उपाय]

नाचिरिण [1]जस नायिकीदे नाम, ते तेडीनइ कहिउं काम ।
"तूं [2]डाही डांखरी म जेडि, रवि-[3]मंदिरि जई राउत तेडि ॥४७२॥

उत्तरि बईठउ ऊंची पाटि, भड जे पाखलि वींटिउ भाटि ।
केकि-कला सिरि झांटि झमाल, आगलि ऊडण अनइ करमाल ॥४७३

[वृद्धा एकदंति विरोध-दर्शन]

एकदंति तीणि वोलिइं बली, [4]रीसिइं पुरुष एक ऊछली ।
"जिणि [5]हलूई कीधी आज, ते टीटउ तेडिइ [6]कुण काज ? ॥४७४॥

राय राणा [7]भूतलि [8]जेतला, विवहारीया कहूँ केतला ? ।
करइं साद कोडिसर केडि, केहा गुण तूं राउत तेडि ? ॥४७५॥

[गणिका-द्रव्यहरण-नैपुण्य]

पारखि-सिउं जउ कीजइ प्रेम, पाडी दिइ पीयारू हेम ।
ओछी वानी तउ घणउ विराम, सारी लीइसूं [9]सारा द्राम ॥४७६॥

दोसी [10]कोर कापडा दियइ, लूगड-मांहि ति बिमणूं लीयइ ।
काज सुरहीउ सारइ घणूं, आपइ सदा सुरहू घूपणू ॥४७७॥

सोनी काजि [11]किह्वारइं [12]वाहि, सूध चउथ लिइं सूना-मांहि ।
पहिलूं घाट घडीनइ हाटि, घरि आवइ घडामण माटि ॥४७८॥

बांभण-सिउं बहु नेह म करइ, मास पक्ष पूठिइं परिहरइ ।
भाट भलउ हुइ दोह बि च्यारि, जां जूवटइ न थालइ हारि ॥४७९॥

---

१. 'जे' आ. २. 'गाढी' आ. ३. 'मडपि' आ. ४. 'दीसइ' आ. ५. 'हूं हालू' अ. ६. 'सूं' आ. ७. 'भूपति' अ. ८. 'जे भला' आ. ९. 'आला' अ. १०. 'कापड वारू' आ. ११. 'जिह्वारइ' आ. १२. 'पाहि' अ.

तउ बीजी बोलावी बाल : "जई नाखवि ठूंठउ चंडाल ।
मानी लांच लोभवि घणूं, कामिणि काज करे आपणूं" ॥४९५

[1]तउ तीणइ खिलकी-नइ लूंट, हुलावी बोलाविउ ठूंठ ।
लांच-तणउ देखाडिउ लोभ, कांइ ए किसी-कारणि थोभ? ॥४९६॥

[ठूंठा ने लांचनुं प्रलोभन]

[2]लांच आंच नवि ठूंठउ सहइ, कांई कथन अपूरव कहइ ।

[ठूंठा-वचन]

"कामसेणि-लहुडी चित्रलेख, तेहू ऊगरि माहरी अभिलेख ॥४९७॥
ते जउ रातिइं मइं-सिउं रमइ, तउ ए गेहि तम्हारइ गमइ ।
बीजू [3]कांइ म बोलि आल, [4]ठूंठइ-सरिस न चालइ चाल ।४९८।
मनि आपणइ आलोचीय साच, वेशा ठूंठइ लीधी वाच ।
चतुरा राउ ऊठाडयउ तेहि, आणिउ गयगामिणि नइं गेहि" ॥४९९॥

[कामसेना आवासे सूदा-गमन]

नाचिणि नर आवंतउ देखि, आपणपूं संवरी सुवेखि ।
कणय-कलस भरि निर्मल नीर, दिइ आचमण विच्छे दिइं वीर ।५००

[सत्कार]

आदर-सिउं अवास मझारि, [6]आणी आवरजइ वर नारि ।
भोजन भगति युगति जूजूई, मिलियां राति सुरंगी हुई ॥५०१॥
वडइ भलकि जागिउ जूआर, दांतण करिवा काजि कुंआर ।
कामसेनि आयस उल्लासि, दांतण लेईनइ आवी दासि ॥५०२॥
"दांतण सारिइं, [7]ऊग्यू सूर, आविउ ठूंठः म करउ असूर ।"
बीहूं आपी बोलइ बोल, "राउत ! रखे करउ [8]विगोल ॥" ५०३॥

१.'हुपाई' अ. २.'वाटे करीनइ खलकी खूट' आ. ३. 'पेशा-वचन' आ. ४. 'वहु आ. ५. 'इस्यु भणिइ ठूंठु चंडाल' आ. ६. ते आवर्जन करइ अपारि' आ. ७. 'समरइ' अ. ८. 'अति काल' अ.

[ठूंठा प्रति सूदा-वचन]

सुद्द भणइ:"सुणि ठूंठा मित्र !, इणि मांडिउं एवडूं चरित्र ।
[1]इम तेडइ [2]तिम कारण कहइ, एहू वात विमासण लहइ" ॥४८८॥

[ठूंठा-वचन]

ठूंठु भणइ : [3]"नवि जाणिउ भेद, खारि गंड-तणइ मनि खेद ।
[4]देहरा-मांहि दूहवी जेअ, डंस वीसरइ न डोकरि तेह ॥४८९॥

इणि वीसासी वाह्या वीर, इणि [5]खाड पाडया धर-धीर ।
[6]इणि वेसाइं विगोया भला, इणि रोल्या राउत केतला ॥४९०

वेमा-तणउ म करि वीसास, वेसा-वयण ते मुहि गली पास ।
[7] मच्छ जेम मांस-नइ धरइ, जीव-तणउ जीवी अपहरइ ॥"४९१

[सूदा-वचन]

सूद भणइ: "हूं अ जाणूं सहू, वेमा-तणो वात छइ वहू ।
जउ भाई ! भय कीजइ एह, छयल्लपणानउ आविउ छेह" ॥४९२

[ठूंठा-बचन]

"एह अनेरउ नहीं उपाउ, एहनइ विषय-तणउ विवसाउ ।
इहनइ मनि माटीनी आस, इहनइ लहइ विदेसी वास" ॥४९३

[परिचारिका निवेदन]

परिचारिकि जे [8]पूठिइं वही, तीणइ घरि जईनइ कारण कही ।
"ते घीरउ आविवउं करइ, पणि ठूंठीउ [9]कूटाइ करइ ॥" ४९४॥

---

१. 'तिम' अ २. 'अति' आ. ३. 'मइं' आ. ४. 'हारिउ वाद विगोइ जेह, न वीसरइ' आ. ५. 'ध्या छइ' अ. ६. 'ईणइ व्यास विगोया घणा' आ. ७. 'माणस जेम मछिनइ' आ. ८. 'वहसी' आ. ९. 'पूछो रही' आ.

[सदयवत्स द्यूतजय]

सदयवच्छ नइ सकतिकुमार, [1]ति जगा हूआ रमइ जूआर ।
बावन वीर बहुत्तरि राग ऊपरि-ल्या भइ भागइ दाग ॥५११

हेला-मांहि हराविउ राउ, [2]जीतु सोव्रन लक्ख गवाउ ।
तीरणइ बीजा ऊपरि उद्रक, रमतां थिउ साम्हउ सूद्रक ॥५१२॥

सूद्रक-सरसी समवडि जाइ, वीरिइ वीर न पाछउ थाइ ।
बिहु जरण जमलूं दीसइ जयत, सूदइ पोढूं पाडिउ पहित ॥५१३॥

काल-पास शिव जोगिरिग जेउ, जागइ [3]जूग्र-तरगा भल भेउ ।
ते नर हारी ऊठ्या ग्राथिः एक भरगइ ! "ठिग ठूंठउ साथि" ।५१४

धन ऊसरडी ढिगलु करइ, खोडउ वईठउ खोनउ भरइ ।
ऊठिउ कुमर ऊतारइ जाइ, धन वेचंतउ कुरिगइं न रहाइ !॥५१५॥

[द्यूत द्रव्य-दान]

ग्ररग-मागंता ग्रोडावइ हाथ, सूदा-जम जारगइ जगनाथ ।
[4]सूदउ सविहूं ग्रापइ जीप, जूग्र रमिवानूं एह जि कीप ॥५१६॥

[सावलिगा ग्रर्थे वस्त्राभरण-विक्रय]

चउपट मल्ल चुहटइ संचरइ, दोसी-हट्ट दीठइ संभरइ ।
[5]सावलिगिनइ सरखां सार, वुहुरइ नानाविध शृंगार ॥५१७॥

कस्तूरी केसर कप्पूर, [6]धूप धूपरगां ग्रनइ सींदूर ।
सार सुगंध वस्त [7]घरग लिद्ध, ते बांधी दोसीनइ दिद्ध ॥५१८॥

१.'ए बि' ग्रा. २.'सूद्दूर' ग्र. ३.'जवटनु' ग्रा. ४.'ग्रापइ सविहूं कारणि जीप, कूडे रमतां ग्रछइ केही कीप ?' ग्रा. . ५ 'पहिरवा पवित्र, नावरि वुहुर्यां वस्त्र विचित्र' ग्र. ६. 'धुति धूपणइ सरिस' ग्र. ७. 'बहु' ग्रा.

कामिणि [1]कपट न विमास्यूं चींति, खेडूं खडग विलायुं भींति।

[द्यूतस्थान-प्रति गमन]

आरति टली ऊतारा-तणी, भड चालिउ जूअ [3]ठाणा भणी ॥५०४

तां जूआर बईठा जूवटइ, जां लगइ अवर [4]कोइ ऊमटइ।
तां लगइ कूडी काढइ मूठि, [5]पडिय-सिउ बोलाव्या ठूंठि ॥५०५॥

तीणइ जाणिउ नवउ जूआर, ठिगि सघले [6]जई कीध जुहार।
पड चांपी बईठउ चउपट्ट, नहीं नर बीजा [7]मानि मरट्ट ॥५०६॥

तीणि थानकि सपराणा सही, एकइ पुरुषि परीक्षा लही।

[सूदा-द्यूतचातुर्य परीक्षा]

आघउं थईनइ बोलउ इसिउं, "सूदा ! [8]सूय पूछीइ किसिउं ?॥५०७॥

राउत! रमतउ म करिसि काणि इणि पडि जीपिसि ओडथा प्राणि।
लाख-लगइ हूं पूरिस हेम, [9]ओडि अरथ मनि आणे एम" ॥५०८॥

[प्रसिद्ध द्यूतकार उपस्थिति]

आविउ सूद्रक सकतिकुमार, आविउ वीरभद्र भेंकार।
आविउ कामसेन नइ कालूउ, आविउ [10]रिणवंत रीसालूउ ॥५०९

आविउ वंकट नइ वाघलु, आविउ रीसट नइ रांघलु।
इम जूटवइ जूआरी मिल्या, वीरइ वीर बईसंता कल्या ॥५१०॥

---

१. 'कथन' अ. २. 'चमकिउ' आ. ३. 'वासा' आ. ४. 'को म' आ. ५. 'पुरुष एकसिउं' अ; 'वइ झूंटि' आ. ६. 'विचि दीधउ ठाहार' अ. ७. 'मुनि' आ. ८. 'सूय' आ. ९. 'तिम ओडे जिम जाणइ तेम' आ. १०. 'रोषु' आ.

पाग राउ ऊभी पालखी, [१]जाणि [illegible] ।
चतुरि चिहुदिसि [illegible] ठेठि, [illegible] ॥५२७

[श्रेष्ठीए [illegible]]

[२]शेठिं सा वीलावी नारि, [३]रंगिं पानी नाग-दुगारि ।
हुउ रतन-जडित कंचूउ, देता नर निरखंताउ हूउ ॥५२८॥

[चोरी मां गयेली [illegible]]

निरखी उलखीयां अहिनाण, [४]नृ हुउ युगति विनाणउ जाण ।
रा-मंदिरि मानीनु पाय, किम एहि-सिउं [५]पजावउ न्याय ? ॥५२९

[महाजन श्रेष्ठी पासे फरियाद]

पांच सात तेडी आवंत, मनि आपणइ विमासिउ संत ।
तुहि एकला जि पुण्य-प्रभाव, [६]मिली महाजनि कीजइ राव ॥५३०॥

[महाजन श्रेष्ठी नाम]

तेडिउ तेजपाल [७]तारसी, तेडिउ [८]धांधउ नइ धारसी ।
पहिलउ थई नइ वीरम तेडि, [९]जेसल नइ करणउ करि केडि ॥५३१
[१०]तेडिउ संतिग [११]सामल सार, आंबड, [१२]वांहड अभयकुआर ।
पाल्हउ [१३]पासनाग जसनाग, माहव मोकल नइ वरणाग ॥५३२॥
[१४]धाईउ धीधु नइ जसराज, पेथु पूनुसाह महिराज ।
[१५]हादु हरपति अनइ हरराज, हांसु जागु नइ मकराज ॥५३३॥

---

१. 'आगइ लि' आ. २. 'जोई वोलइ' आ ३. 'चुहटइ' आ. ४. 'एह' आग ५. 'खरावू' अ. ६. 'मेल्या सामंत' आ. ७. 'तेजसी' अ. ८. 'धाणिग' आ. ९. 'नही कुगति जे कीजइ नेडि' अ. १०. 'सोलउ' अ. ११. 'ना. साहारा' अ. १२. 'भोअउ' अ. १३. 'पासउ आसउ माल माढण केहूउ काइअ साहाल' आ. १४. १५.: 'आ' लीटी 'अ' मां नथी.

कामसेना-घरि जण जेतला, ते जोतां हींडइ तेतला ।
तां अढलक [1]आवइ आफणी, अणतेडिउ ऊतारा भणी ॥५१९॥

हंसगमणि-नइ आपिउं हेम, मांडइ लेखा अधिकू प्रेम ।
तीणइ [2]रंड-मनि फीटी रीस, एकदंति तव दिइ आसीस ॥५२०॥

भोग भगति आवर्जिउ इसिउ, च्यारि राति राउत तिहां वसिउ ।
दिन पंचमइ व्याहाणा वार, हुई हथीआर-तणी [3]मनि सार ॥५२१॥

[म्यान मध्यगत अमूल्य कांचली]

[4]असि ऊतारी जोइ जाम, अबला [5]ओढणी वलगी ताम ।
खेडउ झाटकतां खडखडी, सूकी खोली आगलि पडी ॥५२२॥

खोलि-मांहि अमूलिक जिसिउ, तेह सरीखूं कहीइ किसिउं ? ।
सवा कोडी-[6]तणी कांचली, चंद्रवदनि [7]देखीनइ चली ॥५२३॥

कामसेना [8]प्रभु लागी पागि, "स्वामी ! जि कांइ जाणत मागि" ।
मनि आपणइ सुणी महाराजि, अलविइ आपी अबला काजि ॥५२४

[9]हूउ चतुर बोलिवा सचींत, तव जूय-ठाणइ चमकिउ चींत ।
जां [10]आराधण आरति हुइ, तिहां लगइ जई आविउं तोइ ॥५२५॥

[कामसेना कंचुक परिधान]

कामसेनाइ पहिरी कांचली, रंगिइं राज-भुवनि [11]समवली ।
कीधउ सोहंतउ सिणगार, [12]उपरि एकाउलि मोती-हार ॥५२६॥

---

१. 'ऊतारा भणी, अणतेडयु आविउ आपणी' आ. २. 'द्रामइ' आ. ३.'संभाल' आ.४.'इसि' आ ५.'ओढणि दीधी' आ.६.'केरी' अ.७. 'तीणइ दीठइं' आ. ८. 'जई वलगी'आ. ९. 'हऊउ चतुर चालवा सचंति,तव जू-ठाणइ गिउ मन-भांति'आ.१०.'आरोगण' अ ११.'सांचरी'आ.१२.'उरि'अ.

“नरवर ! नर तीन नाम न [illegible]. [1]कूड-कपट [illegible] ।
[2]तेह-तणइ उर-मंडण मणि, मरम नमोणइ [3][illegible]।।”५४१

[राजा शालिवाहन-वचन]

राइं सा बोलावी रमणि : “कहि, कामनी गमोणी कवणि ? ।
पूछ्या-तणउ [4]उत्तर नाम, तू सुणी गाल्या नहीं पाप ।।”५४२।।

[कामसेना-वचन]

तीणि[5]वचनि चमकी तउ चिति, “स्वामी! साभलि अम्ह परतीति ।
उत्तम मध्यम लांमा भला, साध चोर कहीइं केतला ? ।।५४३।।

आठ पुहुर एकि आवइ जाइ, भोला भूपति ! पूछइ कांइ ? ।
वाट, वृक्ष-फल, नइनूं नीर, नयर-[6]सोहा सिरिण-तणूं शरीर ।।५४४

[7]संतति सुपुरिस-केरी दानि, स्वामी ! सविहूं सरीखा मानि ।”

[अप्रसन्न राजा]

तीणि वचनि रीसाव्यउ राउ, कामसेनाइं कीधउ कुपसाउ ।।५४५।
रूडइ [8]बोलिइं नापइ राउ, मारी कूटी पूछउ माउ ।

[चोरी नु आल]

राज-दूतइ रा-आयस लही, गयगामिणी चोर जिम ग्रही ।।५४६।।

निवड बंधि बाधी-नइ नारि, मारइ महिला विसमे मारि ।

इम विनडी तो न कहइ वात, सूली-तणी पूछमु हुई सात ।।५४७।।

---

१. ‘कूडू कपट’ आ. २. ‘तेहनु उरि जे मंडण अछइ’ आ. ३. ‘ते पछइ’ आ. ४. ‘तू उत्तर’ आ. ५. ‘वातइ सा चमकी चीति’ आ. ६. ‘सालि’ आ. ७. ‘सुपूरिस दाता घणां छइ’ अ. ८. ‘पूछी कहइ’ आ.

[1]राजु भोजु नइ वलीकु जगु, नाइउ नीसल नरपति नगु।
धरणिग धारण ताहरूं काज, ऊठउ महाजन मिलीइ आज ॥५३४

[2]आसड पासड पूनसी सेठि, मिलिउं महाजन वडली-हेठि।
धमकया सवि चुहटानी वाट, हूं हूं [3]करी संकेरइ हाट ॥५३५॥

['हाट-मांहि पाडी हडताल']

[4]हाट-मांहि पाडी हडताल, चाल्या [5]कामसेनाना काल।
माथूं धूणइ वुहरइं [5]माम, [6]गूंगलि करी बीहावइं गाम ॥५३६॥

दंतुसेठि मेलावउ करइ, [7]राउलि जई पोकारव करइ।
[8]रायंगणि जई ऊभा रहइ, [9]नामइं कांध, नवि कारण कहइ ॥५३७

[राजसभा-प्रवेश]

मान देई बोलिउ महाराज : "मिलिउं महाजन केहा काज ?"।

[श्रेष्ठी वचन]

तउ श्रीमुखि बोलाविउ सेठि, "तम्ह ऊपरि कुण[10]जोइ कुद्रेठि?"५३८
"स्वामि ! कुद्रेठि न जोइ कोइ, अम्हे वाणीए न वसिवूं होइ।
जे जोईइ [11]निर्भय नइ काजि, वारी हुइ ते ताहरइ राजि॥"५३९॥

[संदिग्ध वचने आशंकित राजा]

सालिवाहन समस्या लहइ, नंद-लोकनइं निश्चिइं कहइः।
"बीहता कांई म[12]करिसिउ माम, निर्भय[13]थ्या भाखउ नर-नाम"५४०

---

१. 'आ लींटी' अ मां नथी २.आ लीटी 'अ' मां नथी.३.'करइ' अ. ४. 'हाटि सवे' अ. ५. 'सान' आ. ६. 'गूगरि' आ. ७. 'हाहुलि साहुलि तं पोकरइ'अ. ८. 'राउ आगलि' आ.९. 'सिर नामइ' आ. १०' 'करइ' आ. ११. 'वारिनइ काजि, पटइ देव ! ताहरइ' अ. १२. 'बोलु' आ. १३. 'थई हुवइ माखउ नाम' आ.

पहिरूं सूनी घालउं पाय, [illegible] "सू[illegible]ं [illegible] [illegible]।"

[[illegible]]

इस्यूं [2]सुणी तउं [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥५५५

[illegible] चोति, [illegible] : "ए [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।
[illegible] वादि [illegible] [illegible], ऊपरि [illegible] [illegible] [illegible]" ॥५५६

एकदंति बोलइ आकुली, "कां रे [illegible] सूं-[illegible] [illegible] ? ।
रोतां नवि छूटउ छोकरी, जोउ चोर [illegible] चहुटइ फिरी ॥"५५७॥

[चोरनी घोषणा]

चउरासी चुहटा नइ ठाणि, पुर पइठाण-तणाइ अहिठाणि ।
चरि चाचरि चुहटइ चउवटइ, इकि चालो जोवा जूवटइ ॥५५८॥

[द्यूत स्थाने सदयवत्स-मिलाप]

जां जूवटइ बहु रमइ जूआर, पाखन्नि प्रमदा मिली अपार ।
"राउत!ताहरी रामनि बालि !, ए कांचला हुई अम्ह कालि!॥५५९।

चोर-तणी परि बांधी बंधि, कामसेनि आहणिवा कंधि ।
सूली भणी चलावी सही !" सुणी वात न रहिउ सासही ॥५६०॥

[वृतात श्रवणजन्य आघात]

किरि हाकी ऊठिउ हनुमंत, किरि [3]कोपानलि चडिउ कृतंत ।
धडवडि चुहटउ चालिउ ईम, किरि आविउ भारथ-गुरु भीम ॥५६१॥

सूली हेठि [4]दिट्ठ सा नारी, लाजिउ मनि आपणा मझारि ।
धाढया [5]वंध, विछोडी वेस," [6]रे आव्या उत्तर हूं देस" ॥५६२॥

---

१. 'सूंघूं' आ. २. 'भणिइ' आ. ३. 'कोपांजलि' आ.
४. 'दीठी नारी' आ. ५. 'बंधन छोडी' आ. ६. 'आवु सिवहूं' आ.

वाजि [1]काहल लोक घरण मिल्या, एकदंति-नइ कहिवा चल्या।

[एकत्रित गणिका-नाम]

एकदंति ऊठी उल्हसी, मिली [2]मेलि गणिका-नइ किसी ॥५४८॥

हीरू हांमलदे [3]हरखली नारी, सींगालदे सोमलदे सवि वारि।
कांऊ करणू नइ काह्लो, नागलदे नामलदे भली ॥५४६॥

साऊं [4]सहिजू नइ सहिवली, वाछू मीणलदे वरजली।
[5]नागू नायकदे नागिणी, मांजू माह्लणि [6]नइ कमिणी ॥५५०

राजू रतनादे रूपिणी, भाऊ भावलदे रुक्मिणी।
लुहडी वडी [7]विलासिणी घणी, [8]राज-भुवनि आवी रणझणी॥५५१

[गणिका-समुदाय राजसभा-प्रवेश]

[9]रायनइं सवे दिइं आसीस, सुंदरि [10]गाढउ ढांकिउ सीस।
"राज! [11]रांड-परि सिउं रोस?, कामसेनाइ कुण कीधउ दोस?॥५५२
सूली भणी चलावी स्वामि !, ए आचार अछइ तम्ह गामि ।"

[राजा-वचन]

राउ रीसाविउ बोलइ इसिउं, "कां रे [12]रांडु! पूछउ किसिउं?॥५५३॥

सातउ चोर, नइ थाइ साध, अनइ वली पूछउ अपराध ?।
नयर-सेठि-केरी कांचली, घर [13]फाडिउं घरवा रत [14]फली ॥५५४

---

१. 'लागि' आ. २. 'अणि' आ. ३. 'कामलि किसी, खेतू खीमिणी जाल्हणि जिसी' अ. ४. 'सूहवदे' अ. ५. 'नाकू' आ. ६. 'कारेमिणी' आ. ७. 'सुहासणि' आ. ८. 'रंगिइं राज भुवनि मत्रि वली' आ. ९ 'बूटी' आ. १०. 'माफइ माढइ' आ. ११. 'काय किस्यु ए' आ. १२. 'काज कहिवउ' आ. १३. 'भाडूं' आ. १४. 'वली' आ.

[मीन-स्थाने संमिलन]

कोटवाल-नूं कारण भाखिउ, सुणुं नारी सोना मिलिउं ।
निं हु नारि-सिउ पाखिउ सेठि, मूकउ सोहन सूनो सेठि ॥५७१॥

[सरवस्व-उपमिति-तत्पर श्रेष्ठी-वचन]

देखी सूद्र सेठि हलचलिउ, मोल उतार विमासी चलिउ ।
"[1]सुणि साहसिक पुरिस गुणवित्त, [2]ए कुण आल नाखउं मित्त?" ॥५७२
सूद्र भणइ: "ए आल म मानि, मइ कीधूं नर-चरित्र निदानि ।

[पात्र-गुप्तवृत्त-कथन]

"संभलि मित्र ! माहरुं गूझ, थोडउ कहिउं घणुं तूं बूझ ॥५७३॥
हाथि ताली देई जाउं देखता, किम [3]भूलू आ ऊवेखता ? ।
कामसेनि-नूं विणसइ काज, पुण्य अनेरा आवइ लाज ॥५७४॥
[4]चूकइ अवधि दिन पंच प्रभाति, महिला मरइ, नही मनि भ्रांति ।
भाट-गामि छइ मुझ भालवण, कागल जाइ तउ हुइ जाण ॥५७५॥
मुझ अहिनाण-तणइ आलापि, कागल लेई कागलीआ आपि ।
दोसी-तणू [5]निरोपम नाम, जिहां थापिणि मूंक्या छइ द्राम ॥५७६
ते हूं मागीनइ मोकलावि, जे तू चीति [6]चहइ ति चलावि ।
उछउ अधिकउ [7]न बोलइ बोल, नर निरतउ मोकलइ निटोल ॥५७७

[आशंका-ग्रस्त श्रेष्ठी]

सेठि विमासी जोई [8]वात, ए [9]को वारू वीर विख्यात ।
इणइ अम्ह कीधउ उपकार, [10]हिव वलतउ वालूं विवहार ॥५७८॥

---

१. 'सुण सुण साहसीक सुपवित्त' आ. २. 'कुणहिइ आल विलायू' अ. ३. 'रूढ' अ ४. 'हूंकइ' अ. ५. 'निरोपिउ' आ. ६. 'वसइ' आ. ७. 'म' आ. ८. 'ता' आ. ९. 'मू' आ. १०. 'सां' आ.

[तलार-सह सदयवत्स-युद्ध]

तं संभलि [1]तव चडिउ तलार, बोलाव्या ओलगू अपार।
कोटि धरीनइ बहु बाँधिउ वंधि, [2]असि लोह-सिउं आहणु कंधि ।५६३

चिहु दिसि चउरा पायक मिल्या, लउहड लाकड लेई वल्या।
एक-तणी ऊदाली डांग, सूदइ सविहूँ भागां आंग ।।५६४।।

'हणि ! हणि !' भणी, लिद्ध हथीआर, हाकइं ताकइं[3]धाइं अपार।
जे सुभड भला ते पाखलि[4]फिरइं, आघउ[5]थईनइ घाउ न करइं ।५६५

हठिइं चडिउ तलार हाकलइ, जे जीव राखी 'रहज्जो' कलइ।
भ्रूंटि धरी मनाव्यउ झाक, कोटवालनूं वाढ्यूं नाक ।।५६६।।

"जा आपडा ! म बोलिसि बर्व, गाढा सविहूं ऊतारूं गर्व।
आ ओलगू जि विहूँ वलउ लहइ, तिह मारतां किम कर वहइ ? ।।५६७

मोकलि जे गाढा बलवंत, [6]मोकलि जे सूरा सामंत।
मोकलि राउत रणि वाउला, मोकलिजे अंगि ऊतावला" ।।५६८।।

[तलार-विमासण]

थली तलारि विमासिउं इसिउं, "छेदिइं नाकिइं [7]छूटीइ किसिउं ?
जउ नरवर वीनवीइ आम, तउ मूं ठाकुर[8]फेडेसिइं ठाम ।।" ५६९।।

[राजा-प्रति निवेदन]

खण मोकली जणाविउः[9]"स्वामी!, [10]दैत्य कि दाणव आउ संग्रामि।
कामसेना-न्ना वाढ्या वंध, अम्ह-सिउ कीधी आलि[11]अणांध" ।।५७०।।

---

१. 'तुहि' अ. २. 'खडग' आ. ३. 'वीर' आ ४. 'ससइ' आ.
५.'थई कोइ नवि आगमइ'' आ.६. 'अंगि जे आउला' आ.७. 'छीवइ'आ.
८. 'फोडसि' आ. ९. 'राउ' अ. १०. 'दैव' अ. ११. 'अनूंध' अ.

राज-मंदिरि, राज-मंदिरि, सेठि संपत्त ।
ना राउ रोसिइं धगहडइ, कोटवाल कारण पगीछयउं ।
एक चोर [1]नवि संगमइ, सइं हथि सेनाहिव हि हीनछयउ ॥
तीणि अवसरि पय लगि करि, पहु वीनविउ [2]राउ ।
पडीइ चोरि [3]स्त्रीय विनडीइ, एहु देव [4]अन्याउ ॥५८७॥

[सदयवत्स-वचन]

“अधिपति ! चोर एह नवि घटइ, ईणि कंचूउ जीतउ जूवटइ ।
[5]आणी चोर आपउं कालि, तो लगइ ईणउ थानकि मूं झालि” । ५८८

[प्रधान आलोचना]

पहु-परधानि आलोचिउं इसिउं:[6] “मूकयउ चोर आवेसिइ किसिउं ?।
हणइ चोर सिउं आवइ हाथि ?, ए[7]उच्छंखल लीजइ हाथि” ॥५८९॥
“स्वामि ! किम्हारइं न आवइ एह, तउ हूं [8]अवधिअ धारउ छेह ।
पहिलूं सेठि खात्र[9]पुरसिइ, पछइ सवालाख [10]द्रम्म आपसिइ । ५९०
ईणि आव्यइं ऊसंकल थाइं, ईणि आव्यइं ऊठी घरि जाइ ।
करूअ वीनती पहु परधान, ए एतलूं दिउ मुझ मान” ॥ [11]५९१॥

१. 'ना गमई' अ. २. 'निआउ' अ. ३.'स्त्री' अ. ४. 'आइ घाउ' अ. ५. 'जंपि आणी आपूं' आ. ६. 'काढिइ नारी' आ. ७. 'अछांछलु' आ. ८ 'अविषउ' आ. ९. 'पूर्यसि' आ. १०. 'बित्त घोस' आ. ११. आ ट्रंक 'आ' मां नथी.

[अर्थ- सदुपयोग]

जिणि अर्थिइं न भाजइ भीड़, जिणि न टलइ परनी पीड।
मागण-मित्र काजि टालीइ, ते संपति सवली वालीइ !॥५७९॥

अरथिइं सघलां सीझइं काज, अरथि आपणि कीजइ राज।
अरथिइं सर्विहि ढांकीइ अखत्र,[1]देई अरथ विछोडि सुमित्र ॥५८०॥

[वणिक्-सहनशीलता]

मेलइ वाणिया विवसा जोडि, वेलां [2]लाधी वेचइ कोडि।
जीव-तणउं जे जीवीय कहइं, तेहनउ वाढ वाणीउ सहइ ॥५८१॥

बांध्या राउ विछोडइ वंध, पडी कुवेलां ऊडइ कंध।
ठाणि गाढिम नवि सीझइ अर्थ, तिणि वेलाँ वाणिउ समर्थ ॥५८२

[3]मरडी मूंछ सेठि संचरिउ, राउत वली विमासण-[4]भरिउ।
"ईण विछोडया वेसिइं ग्राम,तउ माहरी पणि[5]भागी मांम"॥'५८३॥

[सदयवत्स साहस]

पाछउ तेडिउ भाई भणीः "एक वात संभलि अम्ह-तणी।
मुझ छूटेवा-तणी अछइ आहि,काँइ वित्त वेचावूं तुम्ह पाहिं? ॥५८४॥

[6]माँरु हकारिउं न करइ किह्वार, तउ मोटु मानूं उपगार।
[7]न्याय नीति नरेस संभालि, कामसेनि नइं [8]कंदल टालि ॥५८५॥

साव चोर आवइ इह वारि,चडिइं चोरि[9] कां विनडीइ नारि ?।
ए एतलूं करीनइ काज, कागल कापड मोकलि आज ॥"५८६॥

---

१. 'वेची' प्रा. २. 'आवी' प्रा. ३. 'मोडी' प्रा. ४. 'पडिउ' प्रा. ५. 'जासइ नाम' प्र. ६. 'जु जु वारु कपइ विचार' प्रा. ७. 'न्यायनी वाव' प्रा. ८. 'कद घस' प्र. ९. 'कां नडीइ' प्रा.

[सामलिंगा-प्राणत्याग-निश्चय]

[1]गई समशानि सजाई चयी, भाट-तणइ मनि पईठो [2]ढूरो ।
नीचु ऊंचु चडइ अपार, करइ वेग नइ लाई वार ॥५९८॥

[सामलिंगा अंतीम प्रार्थना]

देखी दिवस-तणी [3]गति खीण, करी सनान दान दिइ दीण ।
करइ साखि त्रिकम नइ तरणि, '[4]जनमि जनमि सूदा-पय-शरणि' ।५९९

(दूहा सोरठो)

सूद ! तम्हारी साथ, थिउ आंतरू [5]अति ऊरतउ ।
हिव जोसि जगनाथ, साहसि सामलिआ-[6]धणी ! ॥६००॥

ऊले अंतरि एहि, तउ पहिलूं पामिउं नही ।
वाहण [7]विहि-वसि होइ, न रहइ नीजामा पखइ ॥६०१॥

नीसरि सूदा साथि, जीव ! मा हारी प्रीय-पखइ ।
ते जाणइ जगनाथ, नाह- विछोडयां माणसां ॥६०२॥

ऊभी आस करेहि, अबला आहेडी-तणी ।
दरि पईठउ वि मरेहि, केसरि नइं ए किम नीसरइ ? ॥६०३॥

नाह ! तम्हारा नेह, किम ओसींकल एक भवि ? ।
जइ दस वार हि देह, ए आपणउ ज होसीइ ! ॥६०४॥

माणिक मूठि [8]भरेही, पडइ तउ प्रापति न पामीइ ।
नाह [9]नावरइ देहि, दरसणि देखेवूं थिउं ॥६०५॥

---

१. 'जइ' भा २. 'भरी' भा. ३. 'दिसि' भा. ४. 'मूं सूदा-सरणि' भा. ५. 'छइ अति घणूं' भा ६. 'भणइ' प्र. ६१० 'प्र' मां टूक नथी. ७. 'विचिविहि लेहि' प्र. ८ 'जलहि प्रायति बिण नइ पामीइ' भा. ९. 'नावरे' प्र.

दीधउं मान सेठिनइ सही, कामसेनि [1]कदर्थ न सवि रहइ।

[सदयवत्स प्रति श्रेष्ठी भावना]

मित्र [2]तणइ मनि पूगउ रंग, साहसि कि ओडविउं अंग ॥५९२॥

"जा जा मित्र म आविसि पछइ, अर्थ[3] अनंतउ अम्ह घरि अछइ ॥"

[वारहट्ट-गृहे सावलिगा-परिस्थिति]

जां नयरि-थिउं [4]नावइ नाह, तां गयगामिणि मांडिउ गाह ॥५९३॥
भाई भणी [5]वोलाव्यु भाट, वडी वार [6]लगी जोई वाट।
[7]टली गोल तव त्रूटी आस, करउं पर-तनउ पीहर वास" ॥५९४॥

[वारहट्ट-वचन]

"बाई! बोल म बोलि इसिउ, पीहर-वासु पर-तनु किसिउ?।
[8]अति ऊतावलि हुइ असूर, एतां सही सुलक्षण सूर ॥ ५९५॥

[शूरजन-प्रशंसा]

सूरउ सूरिज गलीइ राहि, सूरउ अगनि उदकि उल्हाइ।
सूरउ सीह अजाडी पडइ, सूरउ दैवत सूरा-नइ नडइ ॥५९६॥

मरवा-तणा मरम छइ कोडि, [9]इम मरतां तम्ह लागइ खोडि।
जउ चूकिसिउं स्वामी-संवात, [10]तउ हन्यानउ मोडउ हाथ" ॥५९७॥

---

१. 'कटंब' अ. २. 'तणउ जइ पूरिउ' आ. ३. 'अनूषउ' अ. ४. 'आवइ' आ. ५. 'वोलावइ' अ. ६. 'लग' अ. ७. 'टनी गो लतु छाँडी' आ ८. 'करु' आ. ९. 'अम्ह मरतां तम्ह आवइ' आ. १०. 'तुउ तुम्हे मोडउ हत्थ' आ.

दाना अविचल वीर दयाल, ¹मांटीमउ गांठी मच्छराल ।
आवी ऊभउ मूली हेठि, ²राउलि ऊगमवरा कोमउ सेठि ॥ १३॥

[श्रेष्ठी- मत्सरता]

सेठिइं मांडिउ अति अंदोह, ³आविउ छयल नगारी छोह ।
जिम किम जाणत तिम नर वहुत, लोक-मांहि पण-महुना ज रहुत
॥६१४॥

हाकइ हसइ करइ किलकिली, आव्यां मोटां माणस मिली ।
"ए कांचली-तणा कुण मात्र ?, मइं पाड्यां छइ मोटां खात्र" ॥६१५॥

[कंचु-चौर्य]

मानी चोरी हडहड हसिउ, राय-राणा-मनि विस्मय वसिउ ।
एहू वात विमासण जिसी, साचू जूठू जोईइ कसी ॥६१६॥

कामसेनि ⁴तेडावी ताम, ⁵"राय-मुहूतइं पूछी जाम : ।
"कांइ एहनूं छइ अहिनाण, जे पेखी ⁶छोडीइ प्रमाण ?" ॥६१७॥

[करवालांकित सदयवत्स नाम]

कामसेनि आण्यउ करवाल, तं ⁶देखी चमकिउ भूपाल ।
⁷वेगिइं अख्यर जोइ जाम, तां "श्रीसदयवत्स"-नूं नाम ! ॥ १८॥
[शालिवाहन-सदयवत्सपरिचय]

जाण्यउ खडग जमाई-तणू, राइं वयणि ⁸विमासिउं घणूं ।
⁹आपोपइं थाइ असवार, आविउ उपरि करि गजभार ॥६१९॥

---

१. 'मुणस अनइ' पा. २. 'सही ऊसीकल' आ. ३. 'आवी मोटा राडी मिली' आ. ४. 'बोलावी' आ. ५. 'रायमुहइं सिउ मूघइ माम?' आ. ६. 'देसत मांडीइ मंडाण' आ. ७. 'वेगि' आ. ८. 'विणसइ' प्र. ९. 'आपणपइ' आ

आसा-लूधो एक, पीहरि मेल्ही [1]परणी नइ ।
[2]आज [3]ऊचाट अनेकि, तिहनइ थाइ ऊपांपला ॥६०६॥

सूदा ! सउकि सु राख, मनि माहरइ कांई नही ।
सहि समोवड [4]लाख, कीधा आज [5]अणोसरा ॥६०७॥

जिणणी काजि दीह, आँक्या आवेवा तणा ।
तिह लिखी तीं [6]लीह, करी [7]कुडेरू दाखिसिइ' ॥६०८॥

(चउपई)

जां सहस-[8]किरण-नइ करइ प्रणाम, जां 'नारायण' भाखइ नाम ।
तां धसमसतउ [9]धायउ धीर, आगलि दीठउ आविउ [10]वीर ॥६०९॥

[सदयवत्स-आगमन-आनन्द]

हुउ हरिख गहगहीउं गाम, वंदीजन [11]फीटउ वदनाम ।
धातउ हूंतउ आपणि मोस, ते अम्ह देविइं टालिउ दोस ॥६१०॥

राज-वस्त्र नइ[12] रूडां ठाम, आणी अवल समोप्यां ताम ।

[प्रतिज्ञा-पालनार्थं पुनर्गमन]

रहिउ राति निज नारी-ठाहि, चालिउ वली विहाणा-मांहि ॥६११॥

मूंक्यां हाटि अछइ हथीआर, तिहि लेतां [13]तउ लागइ वार ।
लागी वारइं विणसइ काज, ते लेई आवउं छउं आज ॥६१२॥

---

१. 'परहृ नइ' आ. २. 'तिह नइ आज अनेकि ऊचाटइ' प. ३. 'साथ' प. ४. 'साथ' आ. ५. 'अणोसरा' आ. ६. 'लही' आ. ७. 'कुमेरु' आ. ८. 'कर' प. ९. 'आविउ' आ. १०. 'आविउ वीर' आ. ११. 'टलीउ बरदनाम' आ. १२. 'मूंडा' आ. १३. 'लेवां मूं' आ.

[चोर वचन]

घीडउं मागिइं बोलइ चोरः "हाकया ऊभा आंगणि मोर ।
जन्म लगइ जे खाधूं राज, हिव बीटूं लेई करसिइं काज" ।६२७॥

वंभण वाल [1]अनइ स्त्री-पीड, संकटि समइ प्रजानी भीड ।
वीर्डा वाट [2]जोइ तिणि वार, तिहिं मुहिं [3] आगी घालउ छार
॥६२८॥

तीणि बोलिइं दलनायक [4]वलिउ, परिगह अरि ऊभा लेई चलिउ ।

[युद्ध वर्णन]

[5]ढमढम विसमा वाजइ ढोल, उर कमकमइं ति कायर [6]निटोल
॥६२९॥

झब्ब झब्ब झबकइ भालोह, धसमसंत धसमसिया जोह ।
[7]धूसरण-तणां कसण कसकसइं, गाढइ गुणि रीगिणि असत्रसइं
॥६३०॥

[8]सावलोह सिरि तोमर तीर, भाले-[10]सिउं भेदीइ शरीर ।
[11]जे मच्छरि मुहि आवी चडइ, ते पायक पग आगलि पडइ ॥६३१॥

ऊदाली लीधां हथीयार, कोटवालना जीवन सार ।
जे भडनउ [12] गाढउ भडिवाउ, तिहिं टाली नवि [13]घातइ घाउ
॥६३२॥

दल-नायक बल बोली बहू, आघू थिउ आरोली सहू ।
घोडे-स्यूं घोल्या असवार, अश्व पायक नवि लाभइ पार ॥६३३॥

---

१ 'भीयनी' अ. २. 'जि जोइ बार' आ. ३. 'छाणी' आ. ४. 'परथ-सिद्ध ऊसाली वल्यु' आ. ५. 'हमढम ढमक्यां' आ. ६. 'फोल्ह' आ। ७. 'जे दीठइ सहु पामइ मोह' आ. ८. 'आंग' आ. ९. 'सवे' आ. १०. 'नवि' आ. ११. 'आघे आ ठधि जे मुहिं' आ. १२. 'मोटउ' आ १३. 'घालइ' आ.

भाट-पांहि पूछावइ भूपः "कहि, खांडानूं किसिउ सरूप ? ।
मूं-सिउं जूटवइ रमिइ जूआर, खांडउं लेई वाल्यउ भार ॥६२०॥

ऊभाँ [1]करि न डाढ काढीइ, ऊभाँ सिंह [2]न नह वाढीइ ।
ऊभाँ साप न मणि मोडीइ, ऊभाँ सुद्द न खांडूं जोडीइ" ॥६२१॥

[चोर-धारण युक्ति]

पहु [3]पूछइः "सांभलि परधान !, तूं ताँ वडु गुण-बुद्धि-निधान ।
ते प्रपंच ते बुद्धि कराइ, जांणइ ए जीवतउ धराइ" ॥६२२॥

तउ मुहुतइ आठविउ मर्म, जे हाथीया सीखवीआ सर्म ।
[4]ते ते दोई नइ चाँपीइ, [5]सुंडाहलि सरिसउ झाँपीइ ॥६२३॥

तउ मयमत्ता मयगल गुडया, जे [6]भड भला ते उपरि चडया ।
आंकुसि हण्या न आघा थाई, [7]पसूअ-तणी परि नाठा जाई॥६२४॥

सिंगी-[8]नाद तीणइं कीधुं ईम, जिम [9]हाथी छांडो ग्या सीम ।
हाथी-तणी जि हूंती हाम, तेहू [10]पोढी भागी माम ॥६२५॥

दलनायक [11]थ्यु रोसायकी, पाखलि थिउ वोलइ पायकी ।
'स्वामी ! [12]सइं हथि बीडूं आपि, [13]ऊभा-ऊभि लिउं शिर कापि
॥६२६॥

---

१. 'गज' पा. २. 'वाघ नमुहु' पा. ३. 'जपइ' पा. ४. 'ते जोई दोई नइ' पा. ५ 'मुडिइं-स्यु झाली' अ. ६ 'वोइं भला' आ. ७. 'ढोर तणी' पा. ८. 'तणी परि नाडइ' आ. ९. 'मत्ता' पा. १०. 'मोटेरी' पा. ११. 'स' पा. १२. 'सव्हारइ' पा. १३. 'जिम हेलां' पा.

जा सूरु नइ [1]मूछ न जडना, तां पाचइ आवी पगि पडना ।
पायक छतां न भूझइ नाथ, हवि तूं जोइ अम्हारा हाथ ॥६४०॥

आगइ एकनइ धरिवा आहि, [2]अनइ पंच पुहुता पड-मांहि ।
अति ऊंचा नइ अंजन देह, किरि महि-मंडनि आव्या मेह ॥६४१॥

घोर अंधार अंधारूं करइ, दिनकर-[3]तणां किरण आवरइ ।
सेवा लीयउ [4]वरतावइ सीत, वइरी-तणां कंपावइ चीत ॥६४२॥

सूली-भंजण भंजइ अंग, जिणि दीठइं पायक हइ पंग ।
अजउ अमउ वेहूं भड भला, [5]ऊडी तइ सिरि तोलइं शिला ॥६४३॥

इस्या वीर सूदानइं साथि, वावन सरिसा आवइ बाथि ।
अणी धार नवि लागिइं अंगि, वीजूं भूझि न आवइ [6]रंगि
॥६४४॥

ऊभा भड भ्रुंटि लिइं लोह, तीह आगलि कुण जीपइ जोह ? ।
राइं तइं हयवर हाथी वहू, [7]आघउ थिउ आरोली सहू ॥६४५॥

निवड निहाय धरणि धमधमइ, वूंवारव गयणंगणि गमइ ।
खेहा रवि नवि सूझइ सूर, रणि विसर्या वाजइं रण-तूर ॥६४६॥

मयमत्ता दंतूसल मोडि, [8]थानकि-थका ऊपाडया कोडि ।
घोडे-सिउं घोल्या असवार, रथ पायक नवि लाभइ पार ॥६४७॥

---

१. 'साथिइं जडया' आ. २ 'पांचइ 'जण' आ. ३ 'तणु' तेज संहरइ' आ. ४. 'चडावइ' आ. ५. 'ऊपरि-थ्या वे तोलइं' आ ६. 'छंगि' आ. ७.आ ट्रूंक 'आ'मां न थी. ८. 'दीइं घाउ कडयडइं' आ.

हडहड चोर हाकतां हसिउ, धुरि सेलहत सूली-[1]तलि धसिउ ।
[2]थोडइ वादिइं विगूतउ घणउ, केवलउ एक कांचली-तणउ ॥६३४॥

भागी माम भला भड-तणी, राउत सवि कीधा रेवणी ।
ऊलिउ माणस-मांहि तलार, [3]दल विदलिउ नमिउ गजभार ॥६३५॥

[वावन वीर सहु युद्ध]

तां सविहूं नूं ऊतारिउ नीर, [4]हवइ हकारउ वावन वीर ।
आव्या वीर सवे ऊपडी, झलकइं झांटि त्रिपा खीचडी ॥६३६॥

(वस्तु)

तीणि अवसरि, तीणि अवसरि, कलह-पीय तेणि ।
नारदि न्यानि परीछिउं, मृत्य-लोइ को करइ कंदल ।
एक गमइं [5]नर एकलउ, [7]मिलीयति बीजइं गमइं घण दल ॥
पंच वीर [8]पय भरि करीय, वली विलायउ वट्ट ।
केवु [9]तव कंचू-तणइ, संकटि पडिउ सुहृ ॥६३७॥

(चउपई)

नारद-वयण सुणी नर पंच, आपापणा करइ परपंच ।
नर निरतइ नींसरीआ विमर, [10]जिह्नी आलि न सहीइ अमर ॥६३८॥

घर छांडो गयणंगणि गम्या, पुर पहिठाण ऊपरि भम्या ।
सघलूं सेन विमासइ इसिउं, परवति-पाँख नीसरी किसिउं ? ॥६३९॥

---

१. 'सिउ कसइ' आ. २. 'थोडु वाद विगोउ' आ. ३. 'दल वीनम्यु' आ. ४. 'तउ बोलाविया' आ. ५. 'कंतेणि' आ. ६ 'भड' आ. ७. 'बीजइ गमइ दल सहित नरवर' आ. ८. 'वीस लेई वर वल्यू' आ. ९. 'कांचू तह्य-तणउ' आ. १०. 'जेहनां प्राण रूप छइ अमर' आ.

(छंद पद्धडी)

जं वयण पयासइ सदय सार,
तिणि आनि-राय णागिंदकार ।
वोलाविउ सुत सकतिकुमार,
करि वच्छ! [2]सजाउं म लाइ वार ॥६५६॥

[सार्वलिगा-आनयन आदेश]

छइ कुमरी [3]कविजन-तणइ आवासि,
[4]आणू करेवि [5]आणउ आवासि ।
सु तस ततक्खिण कुमरि किद्ध,
पालखी [6]परिग्गह सत्यि लिद्ध ॥६५७॥

[उत्सव]

हुई तलीया तोरण हट्ट वट्ट ।
संपत्ता [7]शकति-रूपिणि भट्ट ।
चउमासि जल-राशि जिम्म ।
किरि कमल नयरि पुहतु तिम्म ॥६५८।
पय लग्गवि वहिनर किउ प्रणाम ।
आसीस अखय भणि दिट्ठु ताम ।
सिंघासणि संथप्पी सुवेस ।
वहु उत्सवि पट्टणि किउ [8]प्रवेस ॥६५९॥

(गाहा)

संपत्तो सदयवच्छो, ससुरालयं सार्वलिगि-संजुत्तो ।
अदिणुण अणागए रवि, [9]चित्ति न चाहिज्ज ए वीरो ॥६६०॥

---

१ 'ता तणइ सुधि' आ. २. 'वेगि लाउ सि वार' आ. ३. 'वंकीजन' प्र, ४. 'आणु करि' आ. ५. 'आणू तम्ह' आ, ६. 'सुखासण' आ. ७, 'परि दुआर, संपत्त भूयण सकतिकुमार' आ. ८. ट्रंक 'आ.' मां नथी. ९. 'वित्त आवधारा मां पच्छितह पूर ए अत्थो' आ.

ऊभा वीर सवे ऊपडी, पहु परधान विमासरण पडी ।
"निश्चिइं नर ए रूपि इसिउं, पांडव-मांहि पुरुषोत्तम जिसिउ ॥६४८॥

प्राण विनाण सहु परिहरउ, [2]माम-माँहि ईणि सिउं सल करउ ।
जिणि गोरूं कीधा [3]गजमार, जिह्नी [4]झड न सहइं झूझार ॥६४९॥

बीजी "[5]बुद्धि न आवइ वंधि, वलीउ चोर तु कीजइ [6]संधि ।"
सुणीवात व्यापारी-तणी, चालिउ चोर-नइ मिलवा भणी ॥६५०॥

पंच [7]जणे-सिउं पालउ थाइ, आयुध [8]मेल्ही आविउ राइ ।
सदयवत्स चालीनइ वीर, साह्मु पुहुतु साहस-धीर ॥६५१॥

सांई लेई लागउ पाइ, तां वांसइ अवली गम राइ ।
ते देखी हरख्युं नरनाह, साचइ सदयवत्स [9]हुइ आह ॥६५२॥

[युद्धे सदयवत्सवीर-परिचय]

जाणी अंग-तणउ आकार, खाँडइ सदयवत्स श्रीकार ।
तां ऊलखिउ उजेणी-स्वामि, तउ नरवरि बोलाविउ नामि ॥६५३॥

सूदु वयणि विमासइ ताम, नरवर बोलाविउ लेई नाम ।
हिव एह-सिउं उलवण रही, सुधि-तणी वात पूछी सही ॥६५४॥

[सावलिंगा पिता-वचन]
"कहइ,कुमरि छइ केणइ ठामि ?,"
"तम्ह वेटी वंदीजणगामि" ।
[सूदा-वचन]
पंथ वीर थानिक पाठवइ, सूउ अवर बुद्धि आठवइ ॥६५५॥

---

१. 'राउ' आ. २. 'साहमा जईनइ सेवा करउ' आ. ३. 'मार' आ. ४.'झट' आ. ५. 'वाह' आ. ६.'कधि' आ. ७. 'वलइ-सिउ' आ. ८.'मूठी' आ. ९. 'जे आ.

कहनि[1] जई [1]लीनउ मांगइ, "कां रे [2]अम्हि गात मांगउ ? ।
तउ आपे बापडा वि लाग, जउ ए कहाँ देखाडइं भाग" ॥६६७॥

[3]सेठि विदाविउ बोलइ वयण: राउ [4]दान गयाँ दे नयण ।
"जउ लहुडा बालक तूं हूं बाप, तउ अम्ह काँई [5]मागिउं आप"
॥६६८॥

"अविक ऊछानी ए कुण वात ?", "[6]एक-नागउ कुमरि दिउं रात ।
जे ए वडउ टालइ ऊचाट, तिहि-सिउं [7]भव मगनगुनी वाट" ॥६६९

[शाकिनी-संतापित विप्र-कन्या]

करी सेठि-सरसी इह वात, चाल्या [8]तिहि ऊचलिवा तात ।
तां पुरोहित-घरि जागर पडइ, कुमरि कूंआरी शाकिनि नडइ
॥६७०॥

वरस दिवस लगइ वाजइं डाक, ऊपरि गुणीया हाको हाक
बापिइं बेटी छांडी आस, टालइ दोस परणावूं तास ॥६७१॥

सदयवच्छि जई जोई द्रेठि, आवो पात्र वईठउ पग हेठि ।
"जास हाथि हरसिद्धि-हयीयार, तिह-सिउ अम्ह केहउ अहंकार?
॥६७२॥

नीरी करी[9]दइसई दीकिरी, साथिईं वि तिह कारणि वरी ।
आव्या सेठि-तणइ अहिठाणि, ता ते मङ्कूं [9]पडयूं झंपाणि ॥६७३॥

---

१. 'लछीर' आ. २. तम्हे 'गाढइ' आ. ३. 'विदोगिई' आ. ४. 'राति रगत थियां नयण' आ. ५ 'तेह नइ' आ. ६ 'भावह' आ. ७ 'च्यारिकुंवर विख्यात' आ. ८ 'घोस' आ. ९ 'जडिउं जंयणि' आ.

[मित्र लाभ]

कीय मित्त मरण-गमंतय, विप्पो वणिक्क इक्क खित्ताउ ।
तिहि [1]परिसत्ता-परिछण, अवलोइ कम्म घण घोरं ॥६६१॥

जूवटइ वत्त विसुणीय, पंथी पासंमि [2]एक्क अप्पुवी ।
नित्त मडू नित वाह, विवहारी तणइ तं सुपुरो ॥६६२॥

[3]निच्छ निच्छ तवइ [4]नवे जणि, जा लिज्जइ चरणि चंपिवि हेइ मज्झंमि ।
ताँ ते पुरिस पहिल्लो, पुहुच्चइ ए मंदिरे [5]मडउ ॥६६३॥

(दूहा)

[6]इम अवगमी अणेइ दिण, थिउ वाणाउ विलक्ख ।
जे परिजालइ [7]पिड इह, तिहि दिउं वित्त लक्ख ॥६६४॥

[शवदाह प्रसंग]

(चउपई)

सुणी वात किलकिलिउ वीर, सदय नरेसर साहस-धीर ।
मित्र-तणउ मेलावउ लेऊ, तीणइ नयरि [8]आव्या तेऊ ॥६६५॥

जाँ आवी ऊतारु किद्ध, राँधिणिनइ घरि [9]राँधण दिद्ध ।
ताँ नयरी डाँगरा-निनाद, साते सेरी तेह जि साद ॥६६६॥

---

१. 'पुहवत्त' अ. २. 'एय' आ. ३. 'नित्त नित्त' आ. ४.'नव जण जालय करइ चरण संपत्ति' आ. ५ मेरू' आ. ६. 'इम इम गमीय अणेगं' आ. ७. 'पंडिअहु' आ. ८. 'आविउ पइ' आ. ९. 'राँधवा' आ.

पायक कज्जि [illegible], प्रेत [illegible] [illegible] ।
दिन्नि सीचउ [illegible] [illegible] चाबीग कुमर [illegible] ।

मुझ स्वामि होमसइ [illegible], [illegible] बीजा [illegible] ।
घसि लिद्ध घगंनउ [illegible], तीणि [illegible] ॥६७८॥

[तृतीय प्रहर कार्य]

त्रतीय त्रीजइ प्रहरि, देव्य नयरी दिसि दिक्खइ ।
वितर [1]वंसइ वांच, पूठि-श्रु परिक्रम्म पेखइ ॥

सत [2]कमाड ऊघाडि, राय-सुति सूती लीधी ।
आणी आपण पासि, युवति जागंती कीधी ॥

"मुझवरि कइ समरि जीरा [3]ऊगिरइ, पिहु त्रीजउ समरु सुभट
[4]पड छाँडि ऊभु [5]असिवर सरिसु, कीय कंकाल विग्गंड घट ॥६७९॥

[चतुर्थ प्रहर कार्य]

चउथइ चतुर चकोर, वर वंसवर जग्गइ ।
तां [6]ऊट्ठवि मढ्ढ मुरेडिउ, जूग्र-जीग्र [7]उट्ठवि मग्गइ ।

सुइ भणइः "तन सार, पट्ट [8]कवडी न कडंतह ।"
तीणि ततखिणि आण्यउ पाट, जिणि राय रमंतह ।

सिर-कमल हराविउ हेलि रसि, प्राण प्रेत-गृह टालिउ ।
त्रिहु मित्र [9]अजग्गिइ, एकलइ [10]तिह ति पिंड प्रजालिउ ॥६८०॥

१. 'वइसइ' आ २. 'कमाड' आ ३. 'ऊगरइ' आ. ४. 'पडछाहि आ. ५. 'सूर जिसिउ' आ. ६. 'सिर मोडवि मढउ' आ. ७. 'उढाग' आ. ८. 'कुडीय' आ. ९. 'अजग्ग' आ. १०. 'तेणि मढ्ढ पर' आ.

काढी कुकई काँवलि वंत्रि, एकइं खोखूं कीधूं कंधि ।
सूकट लेई लाखिउ समसानि, महाजन भणइः "ए विस्मय मानि"
||६७४||

मेठि अणावि अगर नइ आगि, ऊठी काजि आपणइ लागि ।
राति निचींतु निद्रा करे, बोल्या बोल सवे साँभरे ||६७५||

[सूदा वचन]

सूदउ भणइः "सुणउ अम्ह मित्र !, ए दीसइ छइ देव [2]चरित्र ।
इणिइं कोई वसिउ वैताल, [3]आज लगइ इणि मंडिउ आल ||६७६||

[प्रथम प्रहर कार्य]

(छप्पय)

पुहुरि पहिल्लइ विप्प, राउ जागंतु जोइ ।
तां निसि भरि नारी, मसाहणि सूली-तलि रोइ ||
"परिठवि पुठि दया, [4]पर दया मर पत्तउ ।"
कामिणि पूछीय कज्ज, कंधि धरि ऊभउ हुंतउ ||
भोजन दियंत मिसि डाकणी, खाइ माँस मच्छरि चडीय ।
उत्तम तिवार असि वावरो, करिय चूडि त्रुट्टवि पडी ||६७७||

[द्वितीय प्रहर कार्य]

बीजइ पुहरि प्रधान-पुत्र, बलवंत वईट्ठउ ।
तां उल्हाणउ अगनि, तेज दूरिट्ठिय दिट्ठउ ।

---

१. 'खोखट' आ. २. 'दैव' आ ३. 'दाणव देत हसिई विकराल' आ. ४. 'परदई' आ.

[1]लेई आव्या आदीसर पासि, बईसार्या प्रभि आपण पासि ।
तउ वेटा बोलइ "सुणि तात !, ए संकट-नी विसमी वाट ॥६८९॥

[2]कुलदेव तिके कीधी सार, पूंठिइं पाठवीआ पढिआर ।
पाणीवल जउ आवइ पछइ, तउ ते [3]सवि संघार्या अछइ ॥६९०॥

[4]वांसइ वितर [5]करि करवाल, लीधू लाकड झांपी झाल ।
तीणइ भइरवि भडकाव्या भूत, [6]सवि ऊठी आकासि पहूत ॥६९१॥

एक एक-पाहिइं अति भला, अधिपति-तणा कुमर [7]एतला ।
सवि [8]ऊगार्या साहस धीरि, पोलि लगइ पहुचाड्या वीरि ॥६९२॥

तउ त्रीजा-प्रति पूछइ [9]पहू, कारण कहिसिइ कुमरी [10]सहू ।
सात कमाड तणि करि सार, किम ऊघाड्यां विमर [11]द्वार ?
॥६९३॥

तीणि वात वसिउ [12]विखवाद, कुमरी काजि करावइ साद ।
निद्रालूई नराहिव-वच्छि, पिता पासि ते पुहुती [13]लच्छि ॥६९४॥

[कुमारी-स्वानुभव कथन]

[वस्तु]

"तात ! संभलि, तात ! संभलि, वात ति जि वीत !
हरी निशाचरि निशि समइ, निद्द-भरि निज सयणि सुतीय ।

---

१. 'आव्या आधीसर आवासि, बइसारइ प्रभ' आ. २. 'कांई कुल देवी' आ. ३. 'सघला' आ. ४. 'वाह्या' आ. ५. 'सवि' आ. ६. 'तिम ऊड्या जिम एक महंता' आ. ७. 'केतला' आ ८. 'ऊवाह्या' आ. ९. 'एहु' आ. १०. 'वहु' आ. ११ 'विचार' आ. १२ 'रा विखवाद' आ. १३ 'अच्छि' आ.

(चौपई)

जाग्या मित्र पेखइ परोहडूं, तां तीणि वलइं वालिउ मडू ।
च्यारि पुहर सेविउ समसान, ऊठी कीधूं सविहूं सनान ॥६८१॥

[श्रेष्ठी-प्रति प्रतिज्ञा-पालन-कथन]

करी सनान बोलाविउ साह, "[1]आपि वित्त, नइ करि विवाह ।"
सेठि भणइ: "तम्हि कूडूं किद्ध, अम्ह देखतां दाव नवि दिद्ध" ॥६८२॥

मिल्या रोस-भरि राउलि गिया, राइं रूडी परि पूछिया ।
विण संकेत न मानइ सेठि, "कांई [2]उदाहरण दाखु द्रेठि" ॥६८३॥

[शवदहन-प्रमाण निदर्शन]

पहिलइ पुहरि जि जागिउ तांह, तीणिइ आणी आखी वांह ।
वाढी [3]चोरि जि चूडा काजि, ते कूडूं मानिउ महाराजि ॥६८४॥

"ए राणी-नउ हुइ हाथ", सुणि वात सोधइ नरनाथ ।
दीसइ नही निशाचरि भमी, फिरि आकासि भणी ऊपमी ॥६८५॥

बीजे त्रउ बोलिउ तिणि वार, कां रहीहि राजकुमार ? ।
सहवुं काजि सोधावइ सामि !, [4]देव न दीसइ कीणइ ठामि ॥६८६॥

नयर-नराहिव सोधइ कुमर, पर प्रासाद अनइ वर विमर ।
एकइ तीं वीनविउ अवीस, [5]पउढ्या पोलि [6]वाहरि वावीस ॥६८७॥

सुणी वात स पुहुत्त दूत, सूतउ [7]ऊपाडिउ प्रपूत ।
जाणइ वितर विलग्यु वली, ऊठ्या कुमर सवे खलभली ! ॥६८८॥

---

१. 'मागि वित्त अनइ' आ. २ 'दारुण दीठु' आ. ३. 'दोरी चूडीनइ' आ, ४. टूंक ६८५ 'अ'मां नथी ५. 'पडया' आ. ६. 'वीर' आ. ७. 'ऊगम्यु सूत' आ

ताला-नउ हर [illegible] नही, पागा पाट [illegible] किसी ? ।
अति आदर-सिउं पूछइ राउ, "कहउ देव ! [illegible] कवण उपाउ ?" ॥७०२॥

63अ-58

[1]सूदइं प्रेत-पराक्रम [2]कहिउ, तीणि राजा [3]रोमांचिउ रहिउ ।
एहनू रीति नही समानि, एक-एक-नइ [4]अधिका मानि ॥७०३॥

(वस्तु)

तीणइं अवसरि, तीणइं अवसरि, "[5]कहइ कर जोडि ।
[6]विनयमगल विवहारीउ, महाराज प्रति मान मागइ ।
"ऊतारउ अम्ह घरि घटइ", रायवच्छ पय-कमलि लागइ ॥

तिह पुरिसत्तण पेखि करि, मणि [7]आणंदिउ साह ।
लिउ देव ! सविसेस करि, वित्त अनइ वीवाह ॥७०४॥

[विवाह]

(चउपई)

विप्पि कीधउ कन्या-दान, सेठि-तणइ परणिउ परधान ।
राउत-नइ [8]राइं दीधी पुत्रि, हरखिउ सूद, भंडारणइ मित्रि ॥७०५॥

जे जे खांखर [9]अनइ खंखाल, अठ पुहर जे [10]सधाइ आल ।
इस्या भूछ भडि पूरा कीध, ग्रास वास [11]मुहि माग्या दीध ॥७०६॥

[12]लीधां [13]हयवर नइ हथीआर, कीधा सुभट-तणा शणगार ।
कणय-कप्पड उलगू अनंत, लेई चालिउ लीलावई-कंथ ॥७०७॥

---

१. 'सूदउ' आ. २. 'कहूइ' आ. ३. 'रोमांच्यु रहइ' आ. ४. 'एकनी आधिकी मानि' आ. ५. 'कहईअ करजे' आ. ६ 'विनय लगइ' आ. ७. 'साणंदिउ' आ. ८. 'अधि पति नी' आ. ९. 'धज' आ. १०. 'सीधइ काल' आ ११. 'तुहि' आ. १२. 'कीधा' आ. १३. 'हवइ वरनइ' आ.

कांमिइं वरि कांई को समरि, [1]लेई विवरि खित्तिय ।

पडछाहि ऊभउ सुभट, ते मइं समरिउ स्वामि ! ।
तीणि ततखिणि दैत [2]दलि, एणइ पुहचाडी ठामि ॥६६५॥

[चउपई]

हणिउ दैत्य जोवा [3]जण घणा, अधिपति पाठविया अति घणा ।
विवर-मांहि ते पडिउ प्रचंड, दीठउ दाणव-देह विखंड ॥६६६॥

जस भुइं पुहरि पोलि दीजती, जस भुइं कोडि जतन कीजति ।
ते भय भव सुधि टालणहार, ए अ कुमरी करि अंगीकार ॥६६७॥

सदयवच्छ वईठउ ते सूर, जउ बोलइ तउ भावइ [4]भूर ।
श्रीजउ पुत्री जउ [5]जण लेउ, [6]सुणीय हुई मनि हरखिउ तेउ ॥६६८॥

चउथइ ठामि जि जागइ सुभट, ते नरवरि बोलाविउ निकट ।
"तम्हे तम्हारूं कारण कहउ, आणइ राजि धणी-थिया रहउ"
॥६६९॥

तउ सूदइं [7]मोकलावि मित्र, [8]अति डाहउ अधिकारी-पुत्र ।
कही अहिनाण अणाविउ पाट, सोनानउ श्रीकारिउ घाट ॥७००॥

पासा पाट सोगठां सार, देखी नरवर वसिउ विचार ।
"लिउं भंडार-तणी सुधि सहू, पछइ पूछउं कारण कहू ॥७०१॥

---

१. 'लिउ' आ. २. 'हणिउ तेण' आ. ३. 'रणझिण्या राइ' आ. ४. 'भूर' आ. ५. 'जल' आ. ६. 'भणी हुउ' आ. ७. 'मोकलिउ' आ. ८. 'उत्तम ठामि' आ.

[उभय पुत्र-जन्म]

वीर विभाउ जि सामलि-तणउ, वरवीर लीलावई-तणउ ।
[1]बे डाहा बे लक्षणवंत, राशि चडया आगइ अरि-अंत ॥७१५॥

[पुत्र शिक्षण]

[2]भणइं गुणइं [3]नवि विद्या सार, [4]वडइ वधावइ नडया कुमार ।
भणइं [5]दंडायुध नउ मर्म, बेउ [6]भाग्नि उदयगंतु कर्म ॥७१६॥

सभाँ [7]बईठा सदय उछंगि, राजकुमर बोलावइ रंगि ।
विहुं कुंअरनूं करइ वखाण, आवइ भाट कहइं 'कल्याण' ॥७१७॥

[उज्जयिनी भाट-आगमन]

करइ [8]वखाण पहवच्छह-तणूं, [9]दान मान दीधूं अति घणूं ।
मुद्द भणइः "तुम्हि किहां निवास?" ते भणइः "अह्म ऊजेणीवास" ॥७१८

भाट प्रतिइं इम बोलइ भूप; "[10]कहि कांई ऊजेणि-सरूप ?"
"ऊजेणी अरि-कटकि आवरी, तउ अम्हि आव्या [11]आंहां नीसरी" ७१९

[शत्रु-आक्रांत उज्जयिनी-वृतात । सदयवत्स प्रतिज्ञा-ग्रहण]

तं [12]जाणी राउ कोपिइं चडिउ, [13]जाणे अगनि-माँहि घृत ढलिउ ।
"बीजी वार तउ भोजन करू, वइरी-तणु सेन संहरूं ! ॥" ७२०॥

---

१. 'बेय छोटा नयू' आ. २. 'पढइं' अ. ३. 'सूत' आ. ४. 'चडइ चवड.वइ वर्षी कूंआर' अ. ५. 'डंड युद्ध' आ. ६. 'भाई' आ. ७. 'बइठो सूदा उछंगि, तू राजा पूछइ मन रगि' ८. 'कल्याण' आ. ९. 'राजादान दिवारइ घणूं' अ १०. 'कहु ऊजेणी किसू स्वरूप' आ. ११ 'ईहं' पा. १२. 'संभलि' आ. १३. 'विश्वानरह जिम धड़हड़िउ' अ.

करी कटक संचरिउ सूर, वाज्यां रण-काहल [1]रण-तूर।
जिहां श्री [2]नर-इंद निवास, तिहां समहूरतइ मांडिउ वास ॥७०८॥
[3]वीरकोट [4]तिहां नगरी नाम, दीधूं देखी उत्तम ठाम।
नई नीझरण अनइ आराम, [5]वारू लोक तणा विश्राम ॥७०९॥
लोभ दिखाडी वास्या लोक, आपइं [6]सांथ समाहण रोक।
पुण्य-श्लोक प्रजा-प्रतिपाल, भू-मंडण भूसण भूपाल ॥७१०॥
आणी वास्या [7]वन्न अढार, तिणि पुरि उच्छव [8]जयकार।
कर्म आपणउ सहूको करइ, राम-तणी परि राज [9]उद्धरइ ॥७११॥

[पुण्य महिमा]

[वस्तु]

पुण्य रूसइ, पुण्य रूसइ, सकति सूर सिद्ध ।
पुण्यइ प्राणि वनिता वरइ, पुण्यइ पवर पयरहण लब्भइ।
ठाण-भट्ठ निद्धंत नर अडवडंत, सुउण पुणि धुज्झइ ॥
पुव्वह भव-तणा पखइ, न सुख शरीरि ।
पुण्यइ एउ पामी सहू, संपति सूदइं [10]वीरि ॥७१२॥

[सार्वलिंगी लीलावती आनयन]

[चउपई]

सार्वलिंगि [11]लीला जिहां ठवी, ते [12]लेवा प्रधान पाठवी।
हुंती सुसरालइ जे वेउ, आणउ करी अणावी तेउ ॥७१३॥
राणी व्रिहुं [13]प्रति दीइ बहु मान, रंगि रमंतां [14]हूआं आधान।
क्रमि क्रमि जउ पुहता दस मास, [15]पुत्त-जनमि तउ पूगी आस ॥७१४॥

---

१. 'नइ' आ. २. 'नंद राय' अ. ३. 'वीर कोटि' आ. ४. 'तस' अ. ५. 'चारू' अ. ६. 'साघ' अ. ७. 'वर्ण' आ. ८. 'जय जय कार' अ ९. 'हरइ' अ. १०. टूंक 'आ' मां नथी. ११. 'लीला वइ' आ. १२. 'तिहां' आ. १३. 'प्रतिइं अति' अ. १४. 'हवूं' अ. १५. 'पुत्ति-जन्मि' आ.

[वस्तु]

[1]राउ हरखिउ, राउ हरखिउ, [2]सुतह संगम ।

तव नयरी आणंद हूय, पंचशब्द वाजित्र वज्जइ ।
माय ताय [3]जुहार कीय, गरुय वीर गंभीर गज्जइ ॥

अवसरि पय प्रणमीय, सदयवच्छ तिणि वार ।
माडी [4]आसीसह दिइ, राउ सिरि समोप्यु भार ॥७२८॥

[स्वजन मिलन]

[चउपई]

कुंअर सवे आवीनइ मिल्या, मान-सहित गाढा जलहल्या ।
राज करइ राय-सिउं सवे, भणइ गुणइ उच्छव तिह घरे[5] ॥७२९॥

[वस्तु]

पुण्य तूसइ, पुण्य तूसइ, शातिगर शच्छि ।

पुण्यइ प्राणि वनिता वरी, पुण्य-पवर पवर पयरहण ।
लब्भइ ठाण निद्धंतर नर, पुण्य-घोसि चडवडंत पण ॥

पुण्य जि पुव्वह भवतणां, परखइ न सुख शरीर ।
पुण्यहिं ए सहू पामीयइं, संपत सुद्द वरवीर ॥७३०॥

इति श्री कविभीमविरचित श्री सदयवत्सवीर प्रवंधः
सम्पूर्णः ।

---

१. 'राय' आ. २. 'युत' आ. ३. 'जोहार कीछ' आ. ४. 'करइउ घरिणां राय समोप्यइ भार' आ. ५. टूंक ७२९ 'अ' मां नथी ।

[सदयवत्स-कुमार युद्धोद्योग]

धीर विभाउ अनइ वरवीर, बोलइ कुंअर वि साहस-धीरः ।
"सभामांहि बीडूं लिइ वच्छ!, अम्हे ऊवेलउ रा पहुवच्छ" ॥७२१॥

[1]हयदल पयदल आपी सार, [2]बोलाव्या वारू झूझार ।
जि रहि जीण जीवरखीय लेउ, वारी [3]कटक संचरिया वेउ॥७२२॥

छडे पीयाणे य्या ऊजेणि, ढोल नीसांण वजाव्यां तेणि ।
जे वईठा गढ पाखलि फिरी, ते [4]ऊडथा जिम ऊडइ खुरी ॥७२३॥

[राय प्रभुवत्स-चिंता]

राउ पहुवच्छ विमासण करइ, "गढ [5]पाखलि हय गय तरवरइ ।
जे दलि भागुं इह भडिवाइ,[6]सही [7]समरथ को मोटउ राइ॥"७२४॥

राय पहुवच्छि [8]मोकलिउ भाट, पेखइ [9]पयदल घोडां [10]घाट ।
[11]तेडी भाट भणइः "कुण तम्हे ?"

[सदयवत्स-कुमार उत्तर]

"सदयवच्छना नंदन अम्हे" ॥७२५॥

बंदीजण तउ करइ वखाण., [12]आपइ हेम करह केकाण ।
आयस मागी य्या गढ़-मांहि,सदयवच्छ आविउ [13]तिणि ठाहि॥।२६॥

[सदयवत्स-आगमन]

भाट भणइ : "तम्ह किरणा उली,''तिणि वयणि राउ हरखिउ वली।
प्रमदा-सिउं पुहुतउ सदयवच्छ. सूत-सिउं [14]प्रणम्यु रांउ पहु-
वच्छ ॥७२७॥

---

१. 'गज' आ. २ 'बलाविया जिकि' वि. अ. ३. 'विकट संख्याया छेउ' आ. ४. 'सवि ऊडीग्या जिमछरो' आ. ५. 'पाखलिइं असरिण.' घ. ६. 'ए' अ. ७. 'ए कोइ मोटेरो राय आ ८. 'मोकलीय' आ. ९.'गयदल' आ. १०. 'भाट' अ. ११. 'भेटी' आ. १२. 'आय्या' पा. १३. 'तिउहं' मा. १४. 'सुत-सूं पय प्रणमइ सुदयवच्छ' ।

अंतिम पृष्ठ : सदयवत्स वीरप्रबन्ध : लिपि संवत १४८८ [पोथी अनमग] (देखिए ग्रंथ पृष्ठ १०५)

अंतिम पृष्ठ । सदयवत्स वीरप्रबन्ध । लिपि संवत १५९० (देखिये ग्रंथ पृष्ठ १०५)

परिशिष्ट १

सदयवत्स सावलिंगी पाणिग्रहण चुपई

॥ दूहा ॥

सरसति सामिणि पाय नमी । मागुं एक पसाय ।
सदयवच्छ-गुण गायतां । सुभ मति देयो माय ॥१॥

मात मया मभनइ करे । आपे अविरल वाणि ।
तुझ प्रसादि गुण वर्णवुं । मूरग हुं अणजाण ॥२॥

जउ तुं माता मुखि वसइ । तु हूँ करूं कवित्त ।
सदयवच्छ नरपति-तणउ । भविय ! सुणु इक चित्ति॥३॥

कवण नगरि ? ते किहां हूउ ? । किम तिणइ पामिउं राज ? ।
लघु वेसिइं ते किम फिरिउ ? । किम कीआं तिणि काज ? ॥४॥

॥ चुपई ॥

ऊजेणी नगरी सुविशाल । गढमढमंदिर पोलि पयार ।
वाडी वन अति रुलीआमणां । वावि सरोवर तिहां छइ घणां ॥४॥

नवतेरी नगरी विस्तारि । वास-तणउ नवि लाभइ पार ।
गूख जालीआ मन्दिर घणां । पार न पामुं देउल-तणां ॥५॥

चुरासी चुहुटां अति चग । नगरी जोतां अति आणंद ।
कलहट कोलाहल हुइ घणा । पूहुचइ कोड सहूको तणा ॥७॥

घरि घरि दान दीइ अति घणां । दालिद छेदइ दुखीआ-तणां ।
ब्राह्मण वेद करइ उच्चार । सहू राखइ आपणा आचार ॥८॥

'अ' प्रति की पुष्पिका।

इति श्री सदयवत्स वीरचरित्रं समाप्तं।

संवत १४८८ वर्षे फाल्गुन...... भौमे श्री ...पत्तने लिखितं विद्वज्जन मनः प्रमेमोऽयं विनोदमात्रम्। [प्राच्य विद्यामंदिर। नं० ४२६२]

'आ' प्रति की पुष्पिका।

इति श्री सदयवच्छ चुपइप्रबंध समाप्त। शुभम् भवतु।
श्री सं. १५६० वर्षे मागशर वदि ५ रवौ (पं. श्रीचंद लिखितं) (जैन साहित्य भंडार, पालीताणा)

'इ' प्रति की पुष्पिका।

इति श्री सदयवच्छ कथा समाप्ता। श्रीशं भवतु। कल्याणमस्तु। संवत १६६१वर्षे आसु सुदि १ दिने धनकनाम संवत्सरे। महाराजाधिराज महाराजा श्री रायसिंघजी विजयराज्ये, श्री खरतरगच्छे भट्टारक, श्री जिनचंद्रसूरि गणि पं. श्री २ श्री चारित्रमेरुगणि तत् शिष्य पं. श्री १ सीहा तत् शिष्य चेला हीरा लिखितं। श्री फलवधीमध्ये।

[फलोधी जैन भंडार]

...ष्ठ । सदयवत्स सावलिगा पाणिग्रहण चउपई । [लिपि...

आदि पृष्ठ । सदयवत्स सावलिंगा पाणिग्रहण चउपई । [लिपिसंवत नहीं है] देखिये ग्रंथ पृष्ठ १०६ । प्राच्य विद्या मंदिर बडोदा ।

राजामंत्री करइ विचार । "यौवन वेगि हुउ कुमार ।
ए सरखी तुम्हें कन्या जूउ । एना विवाह तुम्हें नवि काहिउ ॥२१॥

सदयवच्छ मनि मानइ जेह । राजकुमरि निरखु तिवि तेह ।
देशविदेसि जोई मंत्रीस । पूरु कुंअर-तणा जगीस" ॥२२॥

राय-आदेसि मंत्रि सज्ज थयु । सदयवच्छ ते साथिइ लीउ ।
मंत्रीसर नइ राजकुमार । चाल्या रायनइ करी जुहार ॥२३॥

अनुक्रमि मेदपाटि ते गया । आहडि नगरि पुहुता थया ।
विहू डाहा विहू गुणवंत । ईश्वर-देहरइ जाई पुहुत ॥२४॥

शिव प्रणामीं तइं वइठा बारि । शिवपूजण आवइ नरनारि ।
सदयवच्छ निरखइ एक-चित्ति । कोइ न मानी आपणइ चित्ति ॥२५॥

जितशत्रु रायतणी कुंअरी । रूप अनोपम जिसी अपछरी ।
शिव पूजनि ते आवी नारि । साथि सखी-तणइ परिवारि ॥२६॥

बसंतसिरि नामि कुंअरी । शिव पूजी पाछी संचरी ।
कहइ मंत्री, "मनि मानइ एह ?। गुणलक्षण नवि लाभइ छेह" ॥२७॥

सदयवच्छि मुख मोडिउं ताम । "मंत्रीसर ! मूं कु ए ठाम" ।
तिहांथिकी मारुआडिइं गया । जेसलमेरि पुहुता थया ॥२८॥

देहरइ जई तइ वइठा तेह । तिहां नारी वेहु निरखेह ।
महीपाल पुत्री गुणमाल । सखी सहित तिहां आवी बाल ॥२९॥

सदयवच्छ तस निरखइ रूप । ते देखी मुख मोडइ भूप ।
'मंत्रीसर ! मेहलु एह ठाण' । गूजर देसि गया गुण-भाण ॥३०॥

अंबावतीइ पुहूता छेह । देहरइ जई तइ वइठा तेह ।
बसंतसेन तिणि नयरि राय । मनमोहनी कुंअरी तस ठाय ॥३१॥

पूजा विष्णु-तणी ते करइ । दासी पांचसात-सिउं फिरइ ।
सदयवच्छ-नइ मंत्री कहइ । 'एहवी नारि अवर नहीं लहइ' ॥३२॥

बावन सईं भइरव तिहां वसइ । चउसठि योगिणि हड हड हसइ ।
सूली-भंजन नामी त्रोड । चोर खापरु संकल-मोड ॥९॥

पहुवच्छराय करइ तिहां राज । सकल लोकनां सारइ काज ।
न्याय रीति ते पालइ खरी । तस कीरति दहदिसि विस्तरी॥ १०॥

तास घरणि सुमंगला नारि । रूपिइं रंभा-नइ अवतारि ।
सतीशिरोमणि नारी तेह । राजा-सरिसु धरइ सनेह ॥११॥

तास उअरि हूउं आधान । मुक्ताफल जिम सीप समान ।
पूरे मासे सुत जनमीउ । सदयवच्छ तस नाम ज दीयु ॥१२॥

बीअ-तणउ जिम वाधइ चंद । सविकहिंनि मनि अति आनंद ।
वाधइ दिनि दिनि तस घरि बाल । रूपवंत नइ अति मयाल ॥१३॥

राय तणइ घरि छइ परधान । पुष्पदंत नामि गुणग्यान ।
मदनसिंह नाम सुत ज तणु । रूपगुणे ते रुलीआमणु ॥१४॥

राजकुमरनी सेवा करइ । मित्राचार सदा परिवरइ ।
वेश्या मदनसेना तिहां वसइ । पुष्पदंत वित्त तिहा उल्लसइ॥१५॥

दिवस राति गणिका-सिउं रहइ । सदयवच्छ ते भेद नवि लहइ ।
एक वार ते गूखिइं चडी । राजकुमरनी दृष्टिइं पडी ॥१६॥

ते देखी कामातुर थयु । सदयवच्छ तस मंदिरि गयु ।
राजकुमर देखी हरख धरइ । मदनसेना बहू आदर करइ ॥१७॥

सदयवच्छ रयणी तिहा रहइ । पुष्पदंत हीयइ दुख वहइ ।
अहि ऊगमि निअ मंदिरि गयु । मंत्रिपुत्र हीयडइ दुख थयु ॥१८॥

पुष्पदंत देखी नवि सहइ । कूडकपट ते हीयडइ वहइ ।
'एहवु कांई करूं उपाय । ए कुंअर छंडावुं ठाय' ॥१९॥

राजकुंयर यौवन-वय हूउ । राजा पासि जुहारीणे गयु ।
कुंअर देखी हरखिउ भूपाल । यौवन-वेसि हुउ ए बाल ॥२०॥

मदनसिंघ नइं कहि कुमार । 'मात-वचन मानइ जिम मान' ।
सकल मरम मित्र प्रति कहइ । मदनसिंघ [illegible] [illegible] ॥४४॥

तेहनु कांई करुं उपाय । [illegible] जिम ठावी थाइ ।
मंत्री बुद्धि विमासण करइ । हवि ए कान किणी परि सरि ? ॥४५॥

॥ दूहा ॥

हीग्रा मनोरथ तं करइ । जे करवा असमत्थ ।
तरुअर स्वर्गिइं मुहुरीया । तिहां पसारइ हत्थ ! ॥४६॥

॥ चुपई ॥

शत्रूकार मंडाविउ राय । वाटघाट वनी विसामइ ठाइ ।
देरासरना योगी यती । बांभण भाट अनइ बहुगती ॥४७॥

देइ अन्न नृप पूछइ भेद । इणी परिइ एहनु लहु विच्छेद ।
ततक्षण कुंअर सजाई करइ । अन्नपान सहूइ परवरइ ॥४८॥

दिवस केतला इणि जाइ । ब्राह्मण एक पुहुतु तिणि ठाइ ।
'कहु जोसी किणि थानकि रहु? । सकल वात अम्ह आगलि कहु' ॥४९॥

तेह कहइ हवि पूछइ भेद । वलतु उत्तर दिइ विच्छेद ।
'सुणु वात, मंत्री नृप तुम्हे । सघलउ उत्तर देसिउ अम्हे ॥५०॥

दक्षिण देस विचक्षण नारि । तेहना गुण नवि लहीइ पार ।
श्रुंगीआपुर-पाटण पहिठाण । शालिवाहन राजा अहिठाण ॥५१॥

देवलोकनी उपम लहइ । देखी सुर नर मन गहगहइ ।
वास-तणु नवि लहीइ पार । नवतेरी नगरी विस्तार ॥५२॥

लीलावई राणी गुणवंत । सील शिरोमणि सहज रूंत ।
तास कूखि जूअल अवतार । पुत्री पुत्र सकोमल सार ॥५३॥

शकतिकुमार बेटानुं नाम । शालामती बेटी अभिराम ।
रूपवंत नइ रुलीयामणी । विद्या सर्वकला अति घणी ॥५४॥

सदयवच्छ मनि मानइ नहीं । तिहांथिकी वली चाल्या सही ।
कुंकणदेसि पुहुता तेह । श्रीपुर नयर तणउ नही छेह ॥३३॥

कामसेन तिणि नयरि राय । निरखइ देहरइ वइठा जाइ ।
तिलकसुंदरी राजकुंअरी । देहरइ आवी सखी परवरी ॥३४॥

देवभवनि ते पूजा भणी । मलपती आवी गजगामिनी ।
निरखी सदयवच्छ तव रहइ । पुष्पदंत तइ वलतुं कहइ ॥३५॥

॥ दूहा ॥

"देशविदेशि वहू फिरिया । निरखी नारि अनेकि ।
अति सुन्दर गुणि आगली । जे लहइ सकल विवेक ॥३६॥

तुझ मनि एकइ नवि वसइ । तु किम सीझइ काज ?" ।
पुष्पदंत इम वीनवइ । 'चलउ अवंती-राजि' ॥ ३७ ॥

नगरि अवंती आवीआ । नरवर कीउ जुहार ।
पूछइ नरवर मंत्रि तइं । "कहु सुत-तणउ विचार" ॥३८॥

तव मंत्री वलतुं भणइ । "वात सुणउ, तुम्हे राय ।
कहुं चरित्र कुंअर तणउं । सुणतां अचरिज थाइ ॥३९॥

च्यारि खंड प्रथवी फिरचा । नारि-रूप नही पार ।
अति सुंदर गुणि आगली । कला - तणउ भंडार ॥४०॥

मोटा नरपति जे अछइ । तेहनी निरखी वाल ।
कुंअर-मन मानइ नही । किम किजइ भूपाल ?" ॥४१॥

इस्यां वचन नरपति सुणी । वोलइ वचन विरुद्ध ।
'कुंअर सुरकन्या वरइ । सावलिंगि वर सुद्ध' ॥४२॥

॥ चुपई ॥

तात-वचनि कुंअर चमकीउ । सावलिंगि ऊपरि चित धरिउ ।
'हवि हूं कामिनि एह जि वरुं । कइ प्रवेस अगनि मांहि करुं !'॥४३॥

सुणी शबद मंत्री पूछेय । "ए उच्छव हुई कुण गेह ? ।
खउघडीआनी वेला नही" । सवे वात गणिकाइ कही ॥६७॥

"सार्वलिंगि नृपपुत्री-तणउ । लगन लीउ पंथी ! तुम्हे सुणउ ।
कामविणाय गच्छइ ठउ एह"। सुणी वयण कुंअर पामिउ देह ।.६८॥

पूछइ मंत्रीः"कवणह ठाम?" । कामसेना गणिका कहइ नाम ।
"रयणायरपुर नगर विसेसि । रत्नसारराजा तिणि देसि ॥६९॥

रत्नसेखर कुंअर तस तणउ"। हुमि वर, पंथी ! तुम्हे सुणउ ।
पन्नर दिनि होसिइ वीवाह । मंत्रीसर मनि पडीउ दाह ॥७०॥

मंत्रीसर तव चिंतइ इसिउं । "दैव ! सूत्र ए हूऊं किसिउं ? ।
मि मूरखि ए कीधुं किसिउं ?। घरि जई मुह किम दाखसिउं ?॥७१॥

नरपति-काज कांई नवि सरिउं । एता दिवस रही सिउं करिउं ? ।
हविऊं कांई करुं उपाय । जउ किम्हइ काज सिद्धइ थाइ ॥७२॥

चीठी तीम लखी मंत्रीस । नरपति ब्राह्मण नइ मंत्रीस ।
तेणइ नगरि ते चीठो लेय । तव परोहित-घरि आविउ तेय ॥७३॥

करी प्रणाम बइठउ परधान । तव परोहित्त दीइ बहुमान ।
"कहु कुंअर,किम आव्या इहां ? । कुणथानकि?क,मंदिर किहां"॥७४

मदनसिंह बलतुं इम भणइ । एक चित्त थई परोहित सुणइ ।
"मालवदेस नयर ऊजेणि । पाय न छीपइ नासि तेणि ॥ ५॥

पहुवच्छ राजा पालइ राज । लोक सवेना सारइ काज ।
सुमंगला पटराणी तास । सदयवच्छ सुत लीलविलास ॥७६॥

यौवनवइं कुंअर देखीउ । राइ मंत्री बोलावीउ ।
कहइ, कुंअर-नइ गमती जेह । मंत्रीसर परणावुं तेह ॥७७॥

तु मंत्रीसर साथिइ लेय । मही सघली कन्या निरखेय ।
कुंअर मनि एकइ नवि गमइ । ऊजेणी वली आव्या तिमइ ॥७८॥

यौवनमइ ते कुंअरी हुई। तात पासि जई ऊभी रही।
पुत्री देखि पिता गहगहइ। वर-चिंता ते मनमांहि वहइ ॥५५॥

ए सरिखु वर अम्ह-नइ मिलइ। मनह मनोरथ सघलु फलइ।
कही वात ब्राह्मण संचरइ। मन्त्रीसर ते मनमांहि धरइ ॥५६॥

एह वात मनमांहि राखीइ। हुआ विना ते नवि भाखीइ।
काज सरइ अथवा नवि सरइ। लोकमांहि हासा विस्तरइ ॥५७॥

कुंअर कहइ, "मंत्री! तुम्ह सुणु। सारउ काज तुम्हे अम्ह तणउ।
तुम्हविण किम्हइ न सीझइ काज"। सदयवच्छ कहि छांडी लाज॥५८

सीघ्र थई तइ पुहुतु तिहां। मुगीपुरपाटण छइ जिहां।
पाणीपंथा घोडा लेय। पवनवेगि चालइ छइ जेय ॥५९॥

सवा कोटि दीधु वरवीर। जोईइतु वली लेयो धीर।
दाइं उपाइ करयो काम। वहिलु वलण करयो ग्राम ॥६०॥

मदनसिंह चालिउ तिणि वारि। सदयवच्छ नइ करी जुहार।
"हेज म छंडु कुंअर! तुम्हे। निश्चिइ काज करवुं अम्हे" ॥६१॥

इम कही चालिउ मंत्रीस। वाटिइ वहइ राति नइ दीस।
अनुक्रमि पुहुतु पुर पहिठाणि। शालिवाहन राजा अहिठाण ॥६२

देखी नगर-मंत्री गहिगहिउ। मदनसिंह हीअडइ हरखीउ।
नगरी जोतां दृष्टि पडी। कामसेना गणिका गुखि चडी॥६३॥

मोहिउ रूप देखी अपछरी। कुंअर वात सवे वीसरी।
तिणि मंदिरि ते पुहुतु जाम। वेशा आदर दीइ ताम ॥६४॥

मदनसिंह गणिका-सिउं रहई। घणा दिवस इणिपरि निरवहइ।
सकल द्रव्य वेशा नइ दीउ। कुमर-तणउ काज नवि कीउ ॥६५॥

एक दिवस कुमरी-घर वारि। कामिनि गाइ मंगल च्यारि।
वाजइ पंच शबद वाजित्र। नाटिक नाचइ नव नव पात्र ॥६६॥

ए कुमरी [illegible] । [illegible] ।
तुहि [illegible] कुंअर [illegible] । [illegible] ॥९०॥
ए कुंअर आवी [illegible] । [illegible] ।
देवी कुंअर [illegible] । [illegible] ॥९१॥
“[illegible] । [illegible] ।
[illegible] ॥९२॥
[illegible] मंत्रीसर [illegible] । [illegible] ।
“विणग काम नइ [illegible] । [illegible] काम [illegible] [illegible]” ॥९३॥
मदनसिंह तइ कही तव वात । “[illegible] ।
सालिवाहन-कुंअरी [illegible] । [illegible] अगनि-प्रवेश जि करं” ॥९४॥
कुमरी वचन नयणां जल भरइ । “एहवा वचन कांइ उच्चरइ ?
जिहां तुम्ह जीव अम्हारा तिहां । एह बोल अम्हारा इहां” ॥९५॥
करी मंत्रणु दोइ सज्ज थया । अश्व रत्न साथि दोइ लीया ।
देवतणी गति चाल्या जाइ । सांझि पुहुता तेणइ ठाइ ॥९६॥
मुंगीआपुर पाटण छइ जिहां । शालिवाहन राजा छइ तिहां ।
नगर-मध्य जई ऊभा रह्या । देखी नगर हीअडइ गहगहिया ॥९७॥
देखी लोक सहू करइ विचार । “किहांथी ए आव्या असवार ?
अमररूप ए आव्या इहां त्रिभुवन-मांहि नथी एहवा किहां ॥९८॥
अश्वरत्न ए नही संसारि । भूपति सयल तणइ घरि वारि ।
मनुष्य रूप एहवां नवि होइ । नरनारी जंपइ सहू कोइ ॥९९॥
पूछीइ लोक “ऊतारु किहां ?” । “जे परदेसी आवइ इहां ।
चांदू मालिणि तइ घरि हेव । तुम्ह ऊतारा थानक देव !” ॥१००॥
चांदू मालिणि तइ घरि गया । दोइ कुंअर जई ऊभा रह्या ।
चांदू-नइ तव कहइ दासि । “ऊभा कुंअर दोइ आवासि” ॥१०१॥

सुणी पिता रोस मनि धरइ। कहइ कुंअर देवकन्या वरइ।
सार्वालिगि वरसिइ सही वारि । रंभ तिलोत्तम नइ अवतारि"॥७९॥

तात वचन श्रवणे सांभली । सार्वलिगि नामि मनि रुली ।
ते विण अवर न परणुं नारि । एह विण हुँ न रहुं संसारि"॥८०॥

तिणि कारणि अम्हे आव्या इहां । कहु पुरोहित ! ते कन्या किहां ? ।
अम्ह परोहिति तुम्ह घरि मोकल्या । चीठी लेई तुम्ह भणी चल्या ॥८१

पुरोहित चीठी दिं परधान । वांची लेख लहिउ अनुमान ।
"तिम करयो जिम सीझइ काज । घणुं किसिउं ? तुम्ह-नइ
छइ लाज" ॥८२॥

पुरोहित कहइ, "तुम्हे सांभलु वात । हवइ किसिउं न चालइ रात ।
मास दोइ पहिला आवता । मेलापक जोई थापता" ॥८३॥

पुरोहित कुंअर मंत्रि-घरि गया । करि प्रणाम तिहां ऊभा रहिया ।
"बुद्धिसागर मंत्री ! तुम्हे सुणु । एह लेख वाचउ तुम्ह-तणु" ॥८४॥

वांची लेख लहिउ सवि मरम । तव मंत्रीसर भाजइ भरम ।
जिणि कारणि तुम्हे आव्या हेव । एह काज तुम्ह नु हुइ देव ॥८५॥

अवर कहु तुम्हे जे वाल । रूपवंत कला गुणमाल ।
छल वल करी देवारुं अम्हे । काज करीनइ जाउ तुम्हे" ॥८६॥

मंत्री नृप मंदिरि लेई जाइ । राज-सभा जिहां बइठउ राय ।
चीठी दीधी करी प्रणाम । नरपति लेख वंचावइ ताम ॥८७॥

सुणी लेख नृप हरखिउ घणु । वलतु लेख लखिउ आपणु ।
"जिणि कारणि पाठवीआ तुम्हे । सकल वात जाणी नृप अम्हे॥८८॥

कनकसेन राजानु पूत । जेहनी आण वहइ रजपूत ।
सार्वालिगि-कुंअरी नेणइ वरी । एह वात तुम्हे मानउ खरी" ॥८९॥

कुंअर हाथि अक्षर मुंद्रडी । नवा कोडिनी हीरे जडी ।
मांडुनइ वली दीधी तेह । "कहइ, तुम्हशां हुइ काम ज एह?"॥१२४

मुद्रा देखि होइ गहगही । "एह काम हवि होसि सही ।
तु तुं माहरु लेजे नाम । तावलि गाणउ [illegible] ठामि"॥१२५॥

ततक्षण मालिणि करी सिणगार । जाई पुहुती राजदूआरि ।
घरभीतरि + + + + + + + + + ॥
+ + + + + + + + +
+ + + + + + + + +ण जिमण करीसि दही ॥१५४॥

अरहटि बइठउ गाइ गीत । तिणि राणीनु मोहिउ चीत ।
राणी तणउ चित्त तव चलिउ । मनमथ सैन्य अति खलभलिउ ॥१५५

तु दीनवचन ते आगलि चवइ । वली वली राणी वीनवइ ।
तीणइ वचनि ते पुरुष ज हसिउ । एक वार तइ कारण किसिउ॥१५६

निरास्वाद पापिइ छूटीइ । थोडइ नेहवइ सत न छांटीइ ।
जे माणस नवि लाभइ छेह । तिह सिउं किमइ न कीजइ नेह॥१५७

पलतु राणी बोलइ इसिउ । जेहनुं मन जे साथि वसिउ ।
तेह तणउ नवि अ्रूटइ नेह । जाँ लगइ जीव हुइ इणि देह ॥१५८॥

कहिउ अम्हारु तुम्हे करु । माहरइ साथि पंथि अणुसरु ।
मारुं राजि एणइ काजि । पछइ होसिइ आपणुं राज ॥१५९॥

द्रव्य आपणइ छइ अति घणउ । मनोरथ सारउ तुम्ह तणउ ।
इसी वात ते सरसीं करी । जोज्यो हेज स्त्रीनु चित धरी ॥१६०॥

इम करतां राजा आवीउ । भोजन समुद सव ल्यावीउ ।
राणी कहइ "सुणउ महाराज । वात एक मनि आवी आज ॥१६१॥

---

* प्रतिमां, एक पत्रनी त्रुटि होवाथी कडी, १२६ थी १५३-५४ अंक सुधी खंडित छे. —सम्पादक.

सुणी वचन आवी घर बारि । तेतलइ कुंअरइ करिउं जुहार ।
"अम्ह ऊतारा थानक कहु"। मालणि कहइ "इणि मंदिरि रहु" ॥१०२

कुंअर कंठि मुगताफल हार । ते मालणि नइ दीयु ऊतारि ।
"सुणु वहिनि, अम्हे ताहरा वीर । परदेशी पहिरावु चीर" ॥१०३॥

मालणि हीअडइ हरख न माइ । पलिंग तलाई दिइ समुदाय ।
पुष्पमाल आपइ तिणि वारि । जिमण सजाई करइ अधिकारि॥१०४

सत्तर भक्ष भोजन ते करइ । राजकुंअर जिमवा संचरइ ।
सोवन थाल कचोलां सार । वेहू कुंअर विठा तिणि वारि॥१०५॥

चांदू मालिणि प्रीसइ हाथि । वे कुंअर वइठा इक साथि ।
निज करि करी पवन ते करइ । कुंअर-नइ मनि आनंद धरइ॥१०६

आरोगावी आप्यां पान । इणी परिइं दीइ सनमान ।
चूआ चंदन अगर कपूर । कस्तूरी परिमलगुण भूर ॥१०७॥

सुख-सज्जाइं पुहुढ्या जाम । चांदू मालणि पुहुती ताम ।
चांदू पूछइ मननी वात । "एणइ नगरि किम आव्या भ्रात?' ॥१०८॥

सवि संखेपि ऊत्तर देय । कारण-तणु कहिउ सवि भेय ।
सार्वलिंगि कुंअरी ए वरइ । कइ निश्चि अणखूटइ मरइ ॥१०९॥

सुणी वयण मालणि मुरकाइ । "निरास्वाद आव्या इणि ठाइ ।
जिणि कारणि आव्या मझ वीर । सार्वलिंगि दीधी वडवीर॥११०॥

नेमु लगन लीउ तस तणु । [चांदू कहइ] कुंअर ! तुम्हे सुणु"।
मदनसिंह मालणि प्रति कहइ । "करु उपाय कुंअर जीवतु रहइ१११

एक अम्हारुं करु तुम्हे काज । सार्वलिंगि देखाडु आज" ।
तिणि वयणे रीसिइ धडहडी । कुंअर-नइ कहि कोपिइ चडी॥११२॥

"तुम्ह कारणि मझ मरि ठाइ । अम्ह मंदिर वली लूसइ राइ ।
एह वात अम्हि नवि थाइ। तुम्ह वाति मझ जीव ज जाइ !"॥११३॥

[वस्तु]

तेणि अवस तेणि अवसरि मंभमसाणि ।
नारीरुदन ते हिं सांभलिउ । करइ आक्रंद बहु परि ।
ते निगुणउ ऊभउ रहिउ । सुणी साद नीतवइ निरा परि ।
साहस धरी तिहा आवीउ । रुदन करइ जिहां नारि ।
इणि वेलां रोइ इहां । ते मझ कहइ विचार ॥७२॥

[दूहा]

वलतुं नारी इम भणइ । "सांभलि साहसधीर ।
कहुं वीतक जे माहरुं । तुं सांभलि धरधीर ॥७३॥

एणइ नगरि एक नर वसइ । तेह तणी हुं नारि ।
पतिवरता पालुं सदा । आण वहू निरधार ॥७४॥

ते विण भोजन नवि करुं । न पीउं वारि लगार ।
त्रिण काल पग पूज करि । नाम जपुं भरतार ॥७५॥

चोरी-आल ज तेहनइ । सूली दीधु कंत ।
दिवस त्रिण इणिपरि हूआ । किम्ह न जाइ जंत ॥७६॥

अन्नपान मि आणीउं । जाणिउ दिउं आहार ।
मुखि एहनइ पुहुचउ नही । किम करि दिउं आहार ? ॥७७॥

तिणि कारणि हुं टलवलुं । साँभलि साहस धीर" ।
वचन सुणी नारीतणाँ । दया ऊपनी वीर ॥७८॥

कंधि चडावी आपणइ । कहइ करि निश्चल चित्त ।
"भगति करे भरतारनी । किसी म राखसि भ्रंति" ॥७९॥

तुम्ह देही सुकोमल जाण । थया एकला करम विनाणि ।
काम काज तुम्हे ढीलइ करु । माहरइ जीवनइ होइ छइ मरु ॥६२॥

नफर एक राखीजइ भलु । जि हुइ चीत सदा निरमलु ।
राजा कहि, "सुणि राणी वयण । एहवु पुरुष राखीजइ कवण ? ॥६३॥

आपणनइ तेहवु न मिलइ कोइ । माणस मेहली साधि होइ ।
निराधार एहवु कुण मिलि । राति दिवस जे साथि पलइ ?" ॥६४॥

राणी कहइ, "राजा सांभलु । आ पुरुष विदेसी छइ एकलु ।
मि सघली एहनइ पूछी वात । एहनइ कोइ नथी संघात ॥६५॥

वीतक सुणीआं एहनां घणां । जिम वीतक हूआं आपणां ।
आपणी वात एणि सवि कहि । ते सांभली अचंभइ रही ॥६६॥

खिओ एक अवंती वास । अछइ घरणी गंगा तास ।
गंगा-मात अवंती वसइ । आणु करवा आवी अछइ ॥६७॥

आणु नही करावुं अम्हे । पाछा घरे पधारु तुम्हे ।
लोक कहइ आवी छइ माइ । ए किम ठाली पाछी जाइ ? ॥६८॥

गंगा-मात पीहरि संचरइ । केता दिवस तिहां निस्तरइ ।
तव कायथ नामि कल्याण । आणु करवा करइ प्रयाण ॥६९॥

वाटिइ वहितां हुई राति । तेह तणी हवि सुणयो वात ।
नगर अवंती उत्तम ठाण । चुसठि योगिणीनुं अहिठाण ॥७०॥

बावन सइं भइरव कलकलइ । ठामि ठामि तिहां दीवा वलइ ।
सिद्ध-वडइ आविउ एकलु । रोती नारि शबद सांभलिउ ॥७१॥

बेटा बेटी तेहथी जोइ । जमाई चालतु नवि होइ ।
तिणि कारणि ए मीठउ घणु । कहइ बेटी माता तुम्हे सुणु ।।१९१।।

बेटी नइ तव माता कहइ । "तुम्ह आनजि ते केवन नहइ ? ।
आपण वेहू जइई तिहां । ऊगाडी नइ आणीइ इहां ।।१९२।।

जउ प्रभात किमिइ थाइसि । आपणा हाथ सिरी जाइसि" ।
इस्यां वचन श्रवणे सांभली । तव तिहां-थउ नाहउ मनभली ।।१९३।।

थयु प्रभात तइ घरि आवीउ । सर्व रिद्धि ने मांगण दीउ ।
मन वइराग धरी चालीउ । फिरतु फिरतु इहां आवीउ ।।१९४।।

वइरागिउ दिन रयणी रहइ । तिणि कारणि हरिना गुण गहइ ।
माया मोह सवि छांडी कर्म । हवि ए चालइ तपसी धर्म ।।१९५।।

तेह-भणी साथिइ लिउ एह । जिम सुख हुइ आपणइ देह ।
तु तिहांथी अणइ चालीआं । मधुरांइं अनुक्रमि आवीआं ।।१९६।।

यमुना नदी वहइ असराल । धरम तणी जिहां वरतइ चाल ।
नारीय भणइ "सामी सुणु । आदितवार अछइ अति भलु ।।१९७।।

ए तीरथ छइ निरमल नीर । पापरहित कीजइ शरीर ।
राय तणु चित निरमल जाण । पहिरी पोत नइ करइ सनान ।।१९८।।

राणीइं ठेली नाखिउ तिसि । पूरमाँहि तव चालिउ तिसिइं ।
रायनइ छइ तरवा अभ्यास । चालिउ जाइ न सेहलइ साहास ।।१९९

वहितु गयु घणी भुंइ राइ । नगर तणइ परसरि तव जाइ ।
चिंतइ नारी जोज्यो काज । जेह-नइ अरथि चूकु राज ।।२००।।

दुख धरतु नगरी-माँहि गयु । राजसभा जई ऊभु रहिउ ।
तिहाँ ते आदर पामिउ घणु । हवि राणीनी वात ज सुणु ।।२०१।।
पाप तणउ फल तेहनइ भयु । रूप हतुं ते कोढी थयु ।
पीप तणा ते रेला वहइ । तेहनी गंधि कोई नवि सहइ ।।२०२।।

[चउपई]

पुरुप कंधि नारी तव चडी। काती लेई मडां-नइ अडी।
माँस भखई तइ हउहउ हसइ। पुरुष तणइ मनि कुतिग वसइ ॥८०॥

आमिष खंड विछूटउ तिसिइ। पुरुप पुंठि त्ते लागु इसिइं।
तव ते ऊंचु जोइ जाम। आधुं मडुं भखी रही ताम ॥८१॥

नारी तिहा अचोडी करी। नाह तउ जाइ ऊजेणी पुरी।
तव केडिइ ते नारी धसइ। नगर-पोलि देवराणी तिसइ ॥८२॥

पोलि तणी जे बारी अछइ। ते उघाडी दीठी पछइ।
एक पग तव भीतरि दीउ। वीजउ बाहिरि तिणि स्त्रीइ लीउ ॥८३॥

पग-विहूणउ आडु पडइ। तिणि वेदनि ते अति आरडइ।
पुन्य माटि लिउं प्रगटिउं इसिइं। खेडीदेवति आवी तिसिइं ॥८४॥

"अहो पुरुष तुझ कुण दुख दहइ ?। संसतु धाई, मझनइ कहइ।
किणी परि खाधउ तुझ पाय। किणि परि नगरि पुहुतु आय ॥८५॥

कथा पाछिली सघली कहइ। देवि कहइ तु उभु रहइ"।
ततखिणि देवति वाचा हुई। नवपल्लव पग आविउ सही ॥८६॥

हरखिउ हीइ विमासइ इसिउं। नारी प्रणुं पुन्य इहाँ बसिउ।
करम- उदय आविउं माहरूं। नारी पुन्यि थयुं वर हुउ ॥८७॥

इम चींतवतु घर-अंगणि गयु। जाई बारणइ कान ज दीयु।
ऊभउ कुतिग जोइ जिसिं। संभलजो तिहां वात ज तिसिइ ॥८८॥

घरमांहि दीवु परजलइ। आमिष खंड करी करी गलइ।
बेटा प्रतिइ कहइ तव मात। ए आमिपनी कहइ मझ वात ॥८९॥

वरस साठि मझ हूआ इहां। अेहवु स्वाद न दीठउ किहाँ।
साँभलि माता वात एह तणी। ए तु जांघ जमाई तणी ॥९०॥

सदयवच्छ तव बोलइ हमी। "एह वात तुम्हे कीधी किसी ?।
सुपुरिस वाचा-लोप नवि करइ। सकल रिद्धि जन तेह परवरइ॥१५॥

सावलिंगि ! निसुणउ तुम्हे वाणि। तुम्ह कारणी आव्या इणि ठाणि।
तात वचनि घर छांडो दूरि। तिम आविउ जिम-जल निधि पूरि॥१६॥

तुम्हविण किम जईइ तिणि ठाणि?। लोक हासारथ अनइ बहू हाणि।
मान तिजी जीवई नरनारि। निफल जनम तह संसारि" ! ॥१७॥

सावलिंगि कहइ, "मासी सुणु। ए उपाय सघलु अम्ह तणउ।
इणि वातिं अम्ह आवइ लाज। पिता-तणउ सवि विणसइ काज १८

वर वरीउ किम थाई दूरि ? । ए दुख मोटू जलनइ पूरि।
इहाँ साप इहाँ मृगराज। ते परि सकल थई अम्ह आज॥१९॥

पिता-वचन किम परहुं करुं ?। किणीपरिं हत्या आदरुं ?।
दया मया करी दीधी वाच। सदयवच्छ प्रति बोली साच ॥२०॥

लगन तणइ दिनि जायो तिहाँ। बंकदूआर अछइ अम्ह जिहाँ।
सांझ समइ तुम्ह थई असवार। ऊभा जइ रहियो तिणि बारि॥२१॥

तिणि वारि हुं आविसु सही। एह वातनु सांसु नही"।
वाचा देई कुंअरिं घरि जाइ। सदयवच्छ मनि हरख न माइ॥२२॥

सावलिंगि-फूलहर्कां फिरइ। सदयवच्छ जोवा संचरइ।
नयणि नयण मेलावु होइ। नेह-मरम नवि जाणइ कोइ॥२३॥

लगन-तणइ दिनि आवी जान। तेहनइ दीजइ झाझाँ मान।
घणइ महोच्छवि कीउ प्रवेस। ऊतारा आपइ सविसेस॥२४॥

जिमण तणी सजाई करइ। ततक्षिण जिमवा तेडां फिरइ।
सवि राउत कीजइ एक ठामि। रहिउ वीसरिउ सो धावइ तामि २५

कर उमाहि वईसारइ धरी। रूई तणां पुहुल ते करी।
देस देसाउर इणिपरि फिरइ। करंड लेई नइ माथइ धरई ॥३॥

गाइ गीत राग आलवई। तेणइ जननां मन रंजवई।
लोक सहू इम बोलइ वाणि। सती नही ए समवडि जाणि ॥४॥

देश विदेसि फिरतां रहइ। दान मान ते गीतथी लहइ।
इम करतां तिणि नयरि जाइ। आगिल-थी आवी जिहां राइ ॥५॥

राजसभामांहि लेई जाइ। सरलइ सादि आलवी गाइ।
तेणइ राजा-मन रंजीउ। घणउ गरथ अरथ तस दीउ ॥६॥

स्त्री-नइ राजा पूछइ वात। कहउ तुम्ह हुउ किम संघात ?।
रूप-तणु तुज नही छेह। एहवी किम तुझ स्यामी-देह ?" ॥७॥

"सात वरसनी हुई जाम। मावापि दीधी एहनइ ताम।
रूपि मदन समाणउ जोइ। करम-वसि हवि कुष्ठी होय ! ॥८॥

ओषध तणउ न लाभइ छेह। एहनु तुहिइ न वलिउ देह।
तीरथ-करवा-नइ नीसरी। भली एह राजनि चिति धरी" ॥९॥

वलतु अजितसेन ऊचरइ। "कहु बात जउ सहू चित धरइ।
एहना सील-तणउ नही पार। यमुना-मांहि नाखिउ भरतार ॥१०॥

बात कही सघली आपणी। तव लज्जा गई नारी तणी।
जोउ सतीतणु सनेह। अरध आयु जिणइ आपिउ देह ॥११॥

जेहनइ मनि अस्त्री वीसास। जाते दीहे सही निरास।
अस्त्री कूडकपट-की भली। अस्त्री नुहइ कहिनइ भली" ॥१२॥

वात सुणंता तव लडथडी। मूरछा आवी धरती पडी।
नारी प्राण गया तिहां सही। सुणी सभा सहु अचिरज हुई ॥१३॥

ते नर मूरख हुइ समान। अस्त्री कारणि तजइ पराण।
सार्वलिगि ए वातज कही। राजा सरिखु मूरख सही ॥१४॥

सुमंगला पट्टराणी सुजाउ । सदयवच्छ कुंअर तस नामउ ।
बार वरसनु कुंअर थयु । तव ते नारी जोवा गयु ॥६१॥

जोतां कोइ चिति नवि वसइ । राइ कुमार बोलाविउ तिमि ।
“जो को नारी चित नवि धरइ । तु निश्चि इंद्राणी वरइ ॥६२॥

सावलिंग कइ परणइ सही” । इसी वात मुनि नरवइ कही ।
पिता-वचन मन-माँहि राखीउ । तव कुंअर उदासउ थयु ॥६३॥

तु तिहां सहू मनि दुख धरइ । घरि घरि शोक निरंतर करइ ।
नगर माँहि सवि उच्छव रह्या । ते जोई अम्हे आव्या अरह्या” ॥६४॥

एवडी वात कही जेतलइ । बीजउ आवी कहइ तेतलइ ।
“पूरव दिसि छइ उत्तम ठाम । चद्रावती नगरीनुं नाम ॥६५॥

जितशत्रु राय राज तिहाँ करइ । सैन्य सहित आहेडु करइ ।
बार वरसना वालो वेस । बत्रीस लक्षण अवधू-वेसि ॥६६॥

रायतणी ते नजरि पडया । कंदर्प-रूप अभिनवा घडया ।
हठ करी राजा पूछइ तिहाँ । “अवधू-वेसिइ जाउ किहाँ ?” ॥६७॥

सदयवच्छ बलतु इम कहइ । “सावलिंगि अम्ह हीअडइ दहइ ।
मझ-सरसी वाचा तिणि दीध । ते अस्त्री नइ कुणइ लीध ॥६८॥

जउ ने कामिनि हुं नवि लहु । तु शिर ऊपरि करवत वहुं” ।
“अरे कुंअर तुं खरु अयाण । अस्त्री कारणि तिजइ पराण ! ॥६९॥

पुष्फावती कुंअरी अम्हतणी । ते कन्या करु तुम्ह तणी ।
तुम्ह-नइ सुंपुं सघलु राज । घरे अम्हारइ आवु आज” ॥७०॥

सदयवच्छ वलतु इम भणइ । “राजतणी खप नहीं अम्ह तणइ ।
सावलिंग ते वन-माँहि फिरइ । माय ताय तइ सुख परहरइ ॥७१॥

सोइ कारणि दुख देखइ सही । सुख भोगवुं हुँ किम रही ? ।
समुद्र मर्जादा लोपइ किमइ । तुहि सत्य न चूकुं अम्हइ !” ॥७२॥

(दूहा)

सदयवच्छ तिरिण अवसरि । अश्वि थयु असवार ।
मंत्री-सुत साथि करी । ऊभउ बंक दूआरि ॥२६॥

प्रच्छन्नगति जाई रह्या । कोई न जाणइ मर्म ।
अन्तराय फल भोगव्यां । विना न छूटइ कर्म ॥२७॥

(चउपई)

तिरिण थानकि-जई ऊभा रहइ । तेहनु भरम कोइ नवि लहइ ।
भोजन-सार करइ नरराय । कोइ सुभट रखे वीसरी जाइ ॥२८॥

आदर देई आणउ इणि ठामि । अम्ह-सरसा आरोगइ ताम ।
गुंडु नापित तिहाँ फरइ । कुंवर देखि बहू आदर करइ ॥२९॥

सीघ्र थई पुहुचु धरि धीर । भोजन करवा तेडइ वीर ।
तुम्ह तणी सहू जोइ वाट । जु आवउ तु वइसइ ठाठ ॥३०॥

ऊतर करी बुलाविउ तेह । किम आवउ अम्हे नरपति-गेहि ? ।
अम्ह असबाब न राखइ कोइ । नापित रिदय विचारी जोइ ॥३१॥

नरपति-सिउं जई नापित कहइ । "दोइ सुभट एक ठामि रहइ ।
माहरा तेडया नावइ राय । तु नरपति आवइ तिणि ठाइ" ॥३२॥

नरवर वचन न लोपिउ जोइ । सदयवच्छ आविउ तिणि ठाइ ।
नापित हाथि अस्त्र तिणि दीया । अवर ज वस्तु समोपी गया ॥३३॥

नापित जाति हुइ सत-हीण । सकल सनाह पहिरिउ तंखीण ।
एक अश्व ऊपरि जई चढइ । बीजउ दोरी हाथिइ धरइ ॥३४॥

तिणि अवसरि आथमीउ सूर । जोवा मिलीउं माणसपूर ।
लगन तणी सामग्री करइ । सावलिंगि वाचा चिति धरइ ॥३५॥

लही अवसर चाली तिवार । आवी ऊभी बंक दूआरि ।
नापित-तणउ न जाणइ मरम । गुंडुं तिहाँ न भाजइ भरम ॥३६॥

लेई विप्टा शंखपुरी जाइ । सीह-कुमारि पुहती माइ ।
तिणि अवसरि ढंढेरु फिरइ । नारलिगि कोई आणुसरइ ॥८५॥

छबी ढंढेरु चाली नारि । जग लेई गाया राजकुमारि ।
नरपति-नइ जई करइ प्रणाम । तव आदर दीइ बहु नाम ॥८६॥ ?

"वैद्यराय ! किणि थानकि रहु ? । आज अम्हे धनवंतरि लहिउ ।
तुम्ह आवि अम्ह-सरीग्रा काज । पूरव पुन्यि प्रगटया आज ॥८७॥

एह व्याधि जिणि थाइ दूरि । ते उपचार करु जे गुर ।
पछइ कहण न पावइ कोइ । तेह भणी गहू निगुणउ लोर ॥८८॥

सकल लोक कुमरी-प्रति कहइ । एह व्याधि तुम्हथी नही रहइ ।
जे जाणउ ते औषध करु । व्याधि एह तुम्हे दूरि हरु' ॥८९॥

आण्यउ मनि तव हरख अपार । जे जाणउ ते करु उपचार" ।
नरपति अंगि लेप तव करइ । खिणि खिणि रायतणउं दुख हरइ ।९०।

तिणि औपधि तव गई व्याधि । राजा-सयरि हूई समाधि ।
मंत्रीसर कर जोडी कहइ । "अति घणउ नयणां अम्हनइ दहइ ॥९१॥

मिं उपचार करया अतिघणा । निःफल हूआ सविकहइ-तणा ।
पूरव पुन्यि मिल्या तुम्हे आज । निश्चिइ सरसि अम्हारूं काज" ॥९२

"तु उष्णोदक-सिउं अंजन करइ । तिमिर नयण तणां दुख हरइ" ।
दिवस सात-मइं नाठा व्याधि । नरपति मंत्री हुई समाधि ॥९३॥

वैद्यराय प्रति आदर करइ । सार वस्तु ते आगलि धरइ ।
धनवंतरी परतखि आवीउ । नृप मंत्री दुख दूरि कीउ ॥९४॥

विनय कर नरपति इम भणइ । "पुत्री एक अछइ अम्ह-तणइ ।
वनमाला नामिं गुणवंत । सील शिरोमणि सहिजि संत ॥९५॥

कृपा करु अम्ह ऊपरि आज । ते कुंअरी परणउ गुणराज ।
तु अम्ह वाचा निश्चि पलइ । दुख-दालिद्र सवि दूरि टलइ ॥९६॥

इसिउं कही कुअर चालिउ । [कहइ पंखी] हुँ इहाँ आविउ ।"
कामिनि वात सवे साँभली । चुथु पंखी बोलइ बली ॥७३॥

"कुंकरण देश शंखपुर गामि । नरसिंग राज करइ तिरिण ठामि ।
मतिसागर मंत्री तस तरगु । वात तेहनी तुम्हे सुरगु ॥७४॥

आँखि नवि देखइ परधान । कुष्ठी-राजा रूप निधान ।
अहनिसि अरति छइ अति घरगी । मंत्रीसर नइ राजा तरगी ॥७५॥

जे डाहा वेदन-ना जारग । ति सवि तेडाव्या तिरिण ठारिग ।
मंत्र तंत्र औषध उपचार । परिग ते कहिथी नही उपगार ॥७६॥

तव नरपति दीधउ आदेस। ढंढेरु फेरु कहु वसेस ।
'नृप मंत्रीनुं जे दुख हरइ । अरधराज्य नइ कन्या वरइ' ॥७७॥

वली मंत्रीस्वर कन्या देय । वित सारु उपगार करेय ।
ते निसुरगी हुँ आविउ इहाँ । राजा मंत्री दुखी तिहाँ ॥७८॥

आप तात जाराउ उंपचार । अम्ह आगलि तुम्हे कुहु विचार" ।
पंखराय वलतुं इम भराइ । [सार्वलिंग चित देई सुराइ] ॥७९॥

"अम्ह विष्टानु संग्रह थाइ । जे लेई तिरिण नयरिं जाइ ।
सीतोदक-सिउं खरडइ देह । जाइ कुष्ट नही संदेह ॥८०॥

उष्णोदक-सिउं अंजन करइ । ततखिरग दृष्टि चिहु दिसि फिरइ ।
दीहिं तारा देखइ सही । एह वातनुं संसय नही" ॥८१॥

त्रीजइ पुहुनु पूछइ वात । अम्ह आगइ तुम्हे भाखु तात ।
सदयवच्छ सामलि तु कहु । मलवा वात सवे तुम्हे लहु" ॥८२॥

पंखराय वलतुं इम कहइ । सार्वलिंगि सवे संग्रहइ ।
शंखपुरी मिलसि सहू कोइ । सूदु सामलितु वर जाइ ॥८३॥

ए सविनु मिलिस्यइ संयोग । मानव भव सुर लहसि भोग ।
तिरिण अवसरि ऊगिउ ते सूर । नाठाँ तिमिर जिम जलहल पूर ॥८४॥

दाण-मांडवी आगलि जाइ । अवधू-वेसि आणिउ तिणि ठाइ ।
नव-यौवन देखी सुकमाल । पूछइ, "किम मेहलिउ जंजाल ?" ॥९॥

निज मन तणी वात ते कहइ । "सावलिंगि कुमरी चिति वहइ ।
तिणि विरहि लीधु ए वेस । हींडुं तणा देस परदेस ॥१०॥

लहीअ मरम तव नेपुं करइ । घरभीतरि ते लेई धरइ ।
सुखि समाधि रहइ तिणि ठाइ । जे जोईइ ते देई पठाइ ॥११॥

सदयवच्छ आघु नीसरिउ । दाण-मांडवीआ तेणे धरिउ ।
"कहु योगी, चाल्या कुण देसि ? । किम तुम्हे छांडउ सयल कलेस ?" ॥१२॥

सदयवच्छ वलतु इम भणइ । "कामिनी-विरहु छइ अम्ह तणइ" ।
संखेपि करी ऊत्तर देय । जाणी मरम चलाविउ तेय ॥१३॥

सार्वलिंगि आगलि लेई जाइ । देखी कंत हीइ चमकाय ।
सार्वलिंगि पूछइ तव भेद । "अवधू ! ऊत्तर दिउ विछेद ॥१४॥

सालिवाहन नृप-कुंवरी जेह । सार्वलिंगि नामि छइ तेह ।
आलणि मंदिरि वाचा करी । ते सुंदरि कहनइ घरि हरी ! ॥१५॥

तिणि कारणि अम्हे लीधु योग । छांडिया विषय तणा सवि भोग ।
तिणि कारणि अम्हे लीधु नीम । न मिलइ कामिनि ता छइ सीम" ॥१६

सार्वलिंगि कुमरी इम कहइ । "नारी काजि कवण दुख सहइ ? ।
सवि मूरख-मांहि तुझ रेह । विण-हरणि दुख दाखइ देह" ॥१७॥

सदयवच्छ तव बोलइ वाणि । "ए संसार असारि ज जाणि ।
वाचा सार एणइ संसारि । ते वाचा दीधी तेणीइं नारि ॥१८॥

सार्वलिंगि जउ जीवइ नारि । वाचा-लोप नही करइ संसारि ।
ति विण अवर नारि नवि वरूं । जइ गंगा करवत अणुसरूं ॥१९॥

जीभ खंडि करि तजुं पराण । इणि वाति सांसु म म जाणि ।
'जनमि-जनमि मझ नारि तेह' । इम करवत वाहिसु देह" ॥२०॥

मंत्रीसर निज कन्या देय । मदन-मंजरी, नामि जेह ।
मया करी अम्ह मोटा करु । अम्ह कुंअरी तुम्हे निश्चि वरु ।।९७।।

उच्छव लगन लीउ तिणि वारि । नगरी वरतिउ जय-जय-कार ।
वंद्यराय दोइ कुमरी वरइ । मुखि नरपति मंत्री उच्चरइ ।।९८।।

गाई कामिनि मंगल च्यारि । नृपमंत्री मनि हरख अपार ।
अरधराज आपइ नरपाल । मंत्रीपद दोई सुविशाल ।।९९।।

हय गय रथ पायक परिवार । रिद्धि तणउ नवि लहीइ पार ।
सोवन थाल कचोलां जेह । पलिग तलाई आपइ तेह ।।२००।।

एक मंदिर दीइ नरराय । दंपति कारणि रहिवा ठाय ।
वर परणी चालिउ निज गेहि । निज मंदिरि जई पुहुता तेह ।।२०१।।

अष्ट भोग कुमरी परिहरइ । तजी सेजि संथारु करइ ।
तेहनु मरम न जाणइ कोइ । इणि परि दिन ते नीगमइ सोइ ।।२।।

तव कामिनि मनि विसमय थाय । अहनिस शोक वहइ ए कांइ ? ।
सकल भोग ते दूरि करइ । तपसीनी परि ते रहइ ।।३।।

एक वार ते पूछइ मरम । सावलिंगि ते भाजइ भरम ।
"भोग तणउ मि कीधु नीम । मित्र न पामु तां मझ सीम ।।४।।

दाण-मांडवी अछइ जिहां । निज सेवक मोकलीआ तिहां ।
कुमरी सीख दीइ अति घणी । सदयवच्छ मेलापक तणी ।।५।।

जे जडीआ योगी अवधूत । तपसी लिंगायती नइ भूत ।
रूपे परावृत फेरी फरइ । एहवा वाटिइ जे संचरइ ।।६।।

विण समझि मेहलउ कोइ । एहवइ वेसि जे जे होइ ।
छलबल करी करी आणीयो इहां । रखे कोइ चाली जाइ किहां ।।७।।

केता दिवस इणीपरि जाइ । वरिउ कंत आविउ तिणि ठाइ ।
अवधू-रूपि दीठउ तेह । विरहि करीनइ सोसिउ देह ।।८।।

कीधां करण न [illegible] कोट । राजा [illegible] निसार्यां जोड ।
अम्ह सरिख नवि लाभइ पार । कुमर [illegible] माय सुगीत विचार ॥३३॥

लगन जोई कीजइ वीवाह । तू [illegible], [illegible] भाजइ दाह ।
तु हवि माइ मनोरथ फलइ । पृथ्वीपति [illegible] [illegible]" ॥३४॥
सालिवाहन नृप मांडिउ जंग । नरपति थापिउ [illegible] बहुरंग ।
दान मान दीजइ अतिघणां । [illegible] वीवाह तणा ॥३५॥
घर घोडइ हुउ [illegible] । गावइ कामिनि मंगल-च्यारि ।
लूण ऊतारइ वर कामिनी । वधावइ [illegible] भामिनी ॥३६॥
नर नारी तिहां बोलइ घणा । जोयो फल [illegible]-पुन्यह-तणां ।
सदयवच्छ नइ सामलि नारि । सरिखु योग मिलिउ संसारि ॥३७
वर-राजा तोरणि आविउ । इंद्र सरीखु सोहाबीउ ।
वर पूंखो आणिउ मांहारइ । सिंहासनि जई आसन करइ ॥३८॥
विप्र समय वरतावइ जामि । कर-मेलापक हूउ ताम ।
सोवन-चउरी करइ नरेस । तिणि थानक कीवउ परवेस ॥३९॥
वर-कामिनि तिहां फेरा फरइ । ब्राह्मण वईठा वेद ऊचरइ ।
करे भाट तिहा जय-जय-कार । विनइ करी दिइ दान अपार ॥४०॥
कर-मेहलामणि, नृप दिइ दान । हय गय रथ परघु बहूमान ।
पाय लागी नृप दि आसीस । "दंपती जीवयो-कोडि वरीस !" ॥४१॥
वर लाडी-परणी घरि जाइ । हीअडइ अति आनंद न माइ ।
सदयवच्छ सामलि वर नारि । विलसइ सुरक न लाभइ पार ॥४२॥
सालिवाहन लीलावई तणी । मननी इच्छा पुहुती घणी ।
सदयवच्छ सामलि-सिउ रहइ । राति दिवस अंतर नवि लहइ ॥४३॥
केता दिवस इणि परि जाय । सदयवच्छ चिंतइ मन-मांहि ।
मात पिता दुख होसि घणउ । करता होसि अंदोह अम्ह-तणु ॥४४॥

सुणी वयण तव सामलि हसी । कनक-तणी परि जोयु कसी ।
कंत-तणउ नवि लाधु छेह । मझ कारणि दुख दाखइ देह ॥२१॥

"अरे कुंअर ! तुं म करि अकाज । सार्वलिंगि तुझ मेलिसु आज ।"
तिणि वयणि हीअडइ हरखीयु । ऊतारा थानक तव दीयु ॥२२॥

प्रथम कंत बोलावइ तेह । 'तजो शोक तुम्हे जाउ गेहि ।
सार्वलिंगि तुम्हनि नही मिलइ' । सुणी वयण हीअडइ दव बलइ॥२३॥

तेहथी रूपि अधिक आगली । राजकुमरि परणावुं बली ।
गुणमाला-नरपति कुंअरी । परणावी मोकलीउ पुरी ॥२४॥

हरख वदन तव नयरीइ जाइं । मात पिता नइं लागु पाय ।
अति आनंद हूउ तस घरी । सयल कुटुंबनइ सारी पुरी ॥२५॥

मदनमंजरी मंत्रि-कुंआरि । मदनसिंह परणाविउ नारि ।
तिहां सहूनइ हरख ज करिउ । सार्वलिंगि सदयवच्छ वरिउ ॥२६॥

सदयवच्छ नइ सामलि कहइ । "इणि थानकि रहिवुं नवि लहइ ।
जउ नरपति ए लहसि मरम । सकल वातनु भागइ भरम" ॥२७॥

सकल सैन्य-सिउं चाल्यो राय । सालिवाहन नृप-केरइ ठाइ ।
मात पिता मनि दुख अति घणु । करतां होसि मुं बेटी-तणुं ॥२८॥

नारि-वचनि चालिउ वरवीर । सदयवच्छ मनि साहस धीर ।
नयरिं पासि जव पुहुता जाण । वागां जांगी ढोल नीसाण ॥२९॥

निसुणिउं दूत-वचनि तिहां राय । तव बेटी-नइ साहमुं जाइ ।
पहुवच्छराय-तणउ सुत जेह । सार्वलिंगि वर परणिउ तेह" ॥३०॥

इसिउं सुणी मनि हरख न माइ । सार्वलिंगि तइ मिलवा जाइ ।
सालिवाहन नृप पालु पलइ । सदयवच्छ साहमु आवी मिलइ ॥३१॥

सार्वलिंगि तव प्रणमइ पाय । मात पिता मनि हरख न माइ ।
"कहु कुंअरी! तुम्ह-तणउं चरित्र । तु अम्ह काया हुइ पवित्र ॥३२॥

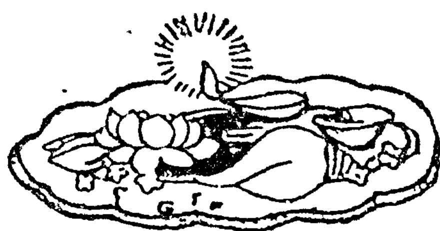
नयरि ऊजेणी पुहुतु वीर। सदयवच्छ नृप साहस धीर।
मात-पिता-ना प्रणमी पाय। आलिंगन दिइ आधु थाइ ॥५६॥

सावलिंगि सासू-पाए पडइ। आलिंगन देती आडवडइ।
सविकहिंनि मनि हूउ आणंद। जिम चकोर राग देखी चंद ॥५७॥

निज कुटंब-मेलापक हूयु। ए अधिकार हूउ छइ जूयु।
सुमंगला मनि पुहुती आस। सुख भोगवइ तिहां लील विलास ॥५८॥

मनगमता पाम्या संयोग। पांच प्रकारिइं विलसइ भोग।
ए पहिलुं हूउ अधिकार। कवि कहि जोई चरित्र आधार ॥३५॥

॥ इति श्री सदयवच्छ सावलिंगि पाणिग्रहण चुपई ॥
॥ समाप्तमिति भद्रम् ॥



सावलिगि नइ कहइ वात । "दुख धरतु होसि मझ तात ।
विरहि करी निज छंडइ प्राण । तु हवि जईइ पुर पहिठाणि ॥४५॥

इहां रहिवा-नु युगतु नही । मुदा रहीइ विचारु सही ।
सासरडइ रहितां हुइ लाज । पिता-पक्षनु विणसइ काज ॥४६॥

[दूहा]

स्त्री पीहरि नर सासरइ । संयमीआं सहि वास ।
मांन-रहित निश्चिइ हुइ । जु मांडइ थिर वास ॥४७॥

जं जं घोवत मिठडुं । सज्जन तांह विदेश ।
अंब घरंगणि मुहुरीउ । करूअत्तण पामेसि ॥४८॥

[चउपई]

इम चिंती चालिउ तिणि बारि । ससरानइ जई करिउ जुहार ।
"कृपा करु, अम्ह दिउ आदेस । नयरि ऊजेणी करुं प्रवेस ॥४९॥

पिता अम्हारु वहू दुख धरइ । अहनिसि माता शोक ज करइ ।
सवि सुख छांडयां तेणे दूरि । ते दुख-सागरि पडीआं भूरि ॥५०॥

तुम्ह प्रसादि अम्ह पुहुती आस । परणिउ कुमरी लीलविलास ।
आज अम्हारी वाचा पली । मन-वंछित कामिनि अम्ह मिली" ॥५१॥

वलनु राजा एहवु कहइ । "तु रूडुं जउ इहां रहइ ।
पुण्य-प्रभावि अम्हनइ मिलिउ । कलप-वृक्ष अम्ह अंगणि फलिउ ॥५२॥

इम कांइ तुम्हे दावु छेह ? । खिण एक-मांहि छांडु नेह" ।
कर जोडी नइ करइ प्रणाम । देई आलिंगन चालिउ ताम ॥५३॥

सावलिंगि मोकलावा जाइ । माता पिता-ना प्रणमइ पाइ ।
सीख लेई-नइ चाली साथि । सदयवच्छ स्वामी नरनाथ ॥५४॥

सालिवाहन वुलावा भणी । आवि तेतलइ सीम आपणी ।
करी जुहार नइ पाछउ वलइ । पुत्री-विरहि मीन जिम मिलइ ॥५५॥

१महीपाल पालइ तिहां राज । राज करइ जाग कि गुरुराज ।
ख्यात त्याग निकलंक २नरेश । सोहग भाग विनाग ३विशेष ॥९॥

तस कुल-मंडण साहस धीर । निरमल गुण गंगा नुं नीर ।
सदयवच्छ तस सुत सुविचार । जांणिक हरिकुन मदनकुमार ॥१०॥

[दूहा]

गुण-रागी त्यागी सुघरि, सोभागी सकलाप ।
सदयवच्छ सोभानिलो, ४पल पल चढ़त प्रताप ॥११॥

तन-सुख मन-सुख नयण-सुख, सुख वयणे ही सार ।
सुख ५कमि-कमि महाराज-सुत, सहु जण-नइ सुखकार ॥१२॥

बीजोही बालक सदा, दीठो जावइ दाइ ।
राजकुंमर रलियांमणों, कहो किणने न सुहाइ ? ॥१३॥

[चौपई]

तो राजा नइ बुद्धि-भंडार । सोम नाम मंत्री सुविचार ।
सावलिंगा नांमइ तस जांणि । पुत्री जीव-पराण-समान ॥१४॥

[दूहा]

मधुर चालि लोचन मधुर, मधुर रूप मति मांण ।
मधुर बोल बोलइ मधुर, रींझइ रांणो रांण ॥१५॥

हिव इक दिन प्रह सम हुवइ, सुंदर सदयकुमार ।
पिता-पाइं प्रणमइ जई, जुडियो जिहां दरबार ॥१६॥

[चौपई]

देखी नयणे सुत दिदार । महाराज मनि थयो विचार ।
पुत्र भणावी करूं सुजांण । विद्या विण नर पशू-समांण ॥१७॥

१. 'शालिवाहन करइ तिहां राज' २. 'निसंक' ३. 'सम्रक'
४. 'दिनदिन' ५. 'भणइ'

परिशिष्ट २

मुनि केशव (कीर्तिवर्धन) रचित

सदयवच्छ सावळिंगा चउपई

[दूहा]

स्वस्ति श्री सोहग सुजस, वंछित लील विलास ।
दायक जिण-नायक नमुं, पूरण आस उल्हास ॥१॥

[1]सरस वचन द्यो सरसती, सकल कला दातार ।
सुप्रसन्न प्रणमुं सदा, वरदाई सुविचार ॥२॥

जे क्युं जगि दीसइ अछइ, आसति मति गुण ग्यान ।
सो प्रसाद सदगुरु तणो, धुरि धरूं तस ध्यान ॥३॥

रस नव ही अति सरस हुई, अपणी अपणी ठांमि ।
उतपति सवि शृंगार की, सहु जन-कूं अभिरांम ॥४॥

रसियां विण शृंगार रस, शोभ न पामइ [2]युद्ध ।
कामिणी विण कामी पुरुष, दीसइ वृद्ध [3]विरुद्ध ॥५॥

तिण रस को कारण [4]त्रिया, वली नायक सु प्रधांन ।
कवियण तिणि कारणि कहइ, रसिक-हेतु धार ग्यांन ॥६॥

रस वंछइ जिको रसिक, सज्जण सगुण सुहाउ ।
सदयवच्छ की वारता, सुणु रसिक सिरराउ ॥६॥

[चुपई—राग मारु]

पूरव दिसि सोहग सु प्रकास । कूंकण विजयपुर विविध विलास ।
मनरमणी पदमणी गुणवंत । योगीजण जिहां सुख विलसंत ॥८॥

१. 'सरस वचन कपिगुण सुमति' २. 'सुद्ध' ३. 'विशुद्ध' ४. 'त्रिया'

कुमरी मनि पणि अलगो थयो, सदयकुमर-नइ देखण लगो ।
गुरुजी-नइ पूछइ सा इसइ, "कुमर यहु नावइ इहाँ किमइ ? ॥४५॥

ओझो कहइः "सांभलि कुंवरी, कोढी कुंवर देही अति बूरी ।
कुंवरी न देखइ कोढी मुख, बाहरि तम राखुं तहु दुःख" ॥४६॥

हिव इक दिन ओझो मतिसार, जाबा लागो नयर मझारि ।
जातइ आल्यो सूदा भणी, सहुनइ दई पाटी आपणी ॥४७॥

पणि मत खोलउ ए ओरडी, आंबो-नइ रहिवा दीज्यो ऊंडी ।
तह त्ति कुंमर ओझा-नइ भणइ, पुरि पुहुतो ओझो तिणि खिणइ ।

(दूहा)

तिणि अवसरि सूदा तिहाँ, सावलिगा-रो साद ।
सुणि भणतां, बोल्यो सदय, अधिक धरि उनमाद ॥४८॥

"हे अंधी ! खोटउं भणइ, खरउं न भाखइ कांइ ? ।
फूटी चखि तुझ बारीली, तिम ही ज गहीजे मांहि" ॥५०॥

कहइ कुमरीः "सुणि कोढीया !, खोटउं न भणुं क्युंहि ! ।
पाटी-मइं लिखीउं अछइ, वाचूं छूं हूं त्युंहि" ॥५१॥

सुणि सूदो सँकित थयो, [2] "आखइ वात स्युं एह ? ।
अंधी कहु, किम वाचसी, [3]लिखीउं छइ जे लेह ?" ॥५२॥
[4]इम चितवि आकुल अधिक, करि करि ऊंचो वास ।
दीठाँ निज चखि कुंवरनाँ, काँति वयण सुविलास ॥५३॥

---

१. 'खरो भणावो कोढ़िया, लिख्यो छइ जिममाहि' २. 'आखइ' ३- अक्षर लखिया गेह'
४- "इम चितवी खोली ओरडी, देखी कुयरी रूप ।
कुमरी देखइ कुमर नइ, अन्यो अन्य देखे स्वरूप ॥"

(श्लोक)

[1] प्रथमे वयसि नाधीतं, द्वितीये नार्जितं धनं ।
तृतीये नार्जितो धर्मः, चतुर्थे किं करिष्यति ? ॥१८॥

(दूहा)

सूरवीर अति साहसी, रूपवंत दातार ।
विद्या विण विलखइ वदन, जिम प्रिय [2]मन विण नारि ॥१९॥

सहु सज्जण सहु श्रापणा, सगलइ ही सनमान ।
[3]एकणि विद्या-तणइ वसि, धरम धरा धन ध्यांन ॥२०॥

(उक्तं च)

[4]विद्या घेणूं जिहा नरां, किस्यो अणूरो त्यांह ? ।
[5]खिण दूझइ खिण दूझपी, विमूकसी मूश्रांह ॥२१॥

(चोपई)

इम जांणि महाराज ति वार, श्रोझो तेडाव्यो मतिसार ।
भणिवा घाल्यो तिण लेसाल, सीखइ कला सकल सुकमाल ॥२२॥

हिव इक दिन मंत्रीसर सोम, देखि सुना उल्लहसीयो रोम ।
ए गति मति रूप तोहि ज सार, जो जांणइ कमु सास्त्र विचार ॥२३॥

रूपवंत नइ गावइ गीत, इक वल्लभ नइ हुवइ सुविनीत ।
इक विद्यानइ न करइ मांन, चतुर अनइ मांनइ राजांन ॥२४॥

---

१ माना शत्रु पिता वैरी येन बालो न पाठितः ।
सभा मध्ये न शोभिन्ते हंस मध्ये वको यथा ॥

२. 'ज्यूं त्रिय विग भरतार' ३. 'अकेण विद्या वाहिरा' 'नरश्री से जिय स्वान ।'

४. 'विद्याहीणा' ५. 'मुकहीन विसूकसि; जो दीसइ अबरांह'

ओपइ भाल विशाल अनूप, नभ-दीपक टीनी शशि रूप ।
भ्रूहिं पुहुप नु करि सुभवास, मधुकर आइ करइ आवास ॥६३॥

शंकित चकित थकित मृगबाल, लोचन परि लोचन सुविशाल ।
निरमल नीकी जस नासिका, जाँणि अखंडित दीपक शिखा ॥६४॥

माखण मुखमल परि सुकमाल, कंचण दरपण सरीसा गाल ।
गुरु प्रिय वयण वयण सुमार, अमृत पूरण करण उदार ॥६५॥

चिहुं दिसि चलकइ कुंडल नूर, जाणि कि [1]सेवइ ससि नइ सूर ।
मधुर अधर वर चंग सुरंग, हिंगलू नइ परवाली रंग ॥६६॥

दंत-पंति दीपइ ऊजली, कइ मोती कइ दाडिम कली ।
नह केसरि आँगुलि पाँखुरी, कर वे नालि सु [2]बाहाँ खरी ॥६७॥

उरवर जोवन राजइ आप, पूरण परिघल तेज प्रताप ।
कुच दुंदभि जोडि वाँजंति, कंचुकी दल-वादल छाजंति ॥६८॥

केसरि-लंक नितंब विशाल, केलि-गरभ जघा सूकमाल ।
रकत कमल पल्लव परि पाइ, अति कोमल सुचि रंग सुहाइ ॥६९॥

[3]मयमत्ती उनमत गज गेलि, चालि हरावइ हंसाँ ढेलि ।
ठमकि ठमकि रिमझिम पय ठवइ, वेखी तस वसि कुंण नवि हवइ ?७०

(दूहा)

मानिनी मोहन-वेलडी, मुखि मलकइ महकार ।
दंतश्रेणी दीपइ तिमइ, चपला-को चमकार ॥७१॥

गिरुआ गुण-गण तिणि निपुण, संकेतइ संचारि ।
चतुराई धरि चूंपस्यूं, कीधी ए किरतार ॥७२॥

(दूहा-सोरठीया)

रमणी सा संसारि, जस त्रिहुं भुवन ओपम नहीं ।
अवला अवरि विचारि, कहीयइ निच्चइ कवीयण ॥७३॥

---

१. 'वमइ' २. 'करकज' ३. 'मयमती हाथिणीनी चालि, हालि'

[1]हा हा रूप सुख, चखि हसइ, विकसित सुगति विलास ।
सदयकुमर संसय पडयउ, ईषत अधिक उल्हास ॥५४॥

[2]जे नर रूपइं आगला, ते नर निगुण न होई ।
केसर केरी पंखडी, सहि सुरंगी जोई ॥५५॥

(चोपई)

दीठी अपछर नइं अणुहार, सदयवच्छ कुंमरि तिणिवार ।
चित्र-लिखी जाँणइ पूतली, रंग चंग चंपक-नी कली ॥५६॥

कइ रंभा इन्द्राणी जाँणि, [3]कइ गोरी आई धरि माँणि ।
कइ रतिपति-रामा रति रूप, चिंतइ मनि ए किस्यूं सरूप? ॥५७॥

(दूहा)

सर वीणा, पद-तल कमल, वयण अभी विस्तार ।
चरितालां लोचन चतुर, नयण न खंडइ धार ॥५८॥

तनु सरली, पूरण रली, सकल रूप सुकमाल ।
कलप-वेलि कहीयइ तिको, एहि ज रूप रसाल ॥५९॥

इण सम संसारि त्रिया, कीनी नवि करतार ।
विगताला वयणइ वदइ, अमीय वयण सुविचार ॥६०॥

(चोपई)

अति सुंदर सोहइ आकार, अद्‌भुत तनु सुकुमाल उदार ।
सकुलीणी वाली सुविचार, कामवेलि कवली अणुहार ॥६१॥

फूल तूल मखतूल अमूल, कोमल स्याँमल केस ससूल ।
चिहुर-[4]मूल वंध्यो चाँदलो, सेस सीस मणिमय विंदलो ॥६२॥

१-'हा हा रूप मुखचंद्र हंमे,विकसित युगत रिलास । आहा रूप अवों अक्कइ'
२- केटलीक प्रति मा० नथी । ३. 'कइ गोरी अरधंम वखाणि' ४: (दल)

सयण ठगारे ठगी गई, दे गइ चोट अचूक :
वहोत भाँति ओखद कीए, मिले न दोउ टूक ॥८४॥

नयन नयन पैं जात है, नयन नयन-की हेत ।
नयन नयन की बात है, नयन नयन कह देत ॥८५॥

नैनाँ कह्यो नेनाँ सुएयों, उत्तर दीयो नेन ।
नयन नयन सूं मिल गए, कहे कोसूं वयण ? ॥८६॥

ऊतावला न अलूझीइ, सनैः सनैः सव होय ।
सदेव वाडी-रूखडाँ, सफल फलंताँ जोय ॥८७॥

नयणाँ केरी प्रीतडी, वूझे वीरला कोई ।
जे सुख नयणे पाईंइ, ते सुख सेज न होई ॥८८॥

सज्जन दुर्जन सज्जन करणं, प्रथम उपजावण प्रीति ।
सुखकारण संसार सहू, नयणाँ केरी • नीति ॥८९॥

नयण मिलंताँ मन मिले, मन मिले वयण मेलत ।
वयण मिलंताँ कर मिले, इम काया-गढ भेलंत ॥९०॥

जोर रखवाला पंच जण, समर्दा जेहा सयण ।
कायागढ़ तोहि मिले, जो भेदे समये नयण ॥९१॥

नयण समो वेरी नीको, प्रत्यक्ष लागे घ्याय ।
आग पराइआँ तणी, आप अंग लगाय ॥९२॥

नयण बाण जिणकुं लगे, ओखद-मूल न ताँह ।
ससक ससक मरी मरी जीवे, उद्धत कराह कराह ॥९३॥

नयण-बाण जिणकुं लगे, कीधो ओखद ताँह ।
कुच टको पर पेटी भुज, अधर-पान पग बाँह ॥९४॥

(चौपई)

अद्‌भुत रूप अनुपम गात, इणिस्युं सुख बोलइ दिन राति ।
देखिदखि तस रूप विलास, कुंमरो पणि फिर देखइ तास ॥७४॥

(दूहा)

नयण-बाँण नारी तणे, सदयवच्छ सुकुमाल ।
वीध्यो अति व्याकुल अधिक, तेह थयो असराल ॥७५॥

गाहा-रस कवियण वयण, मधुर बाल संलाव ।
हाब भाव हरिणाँखीयाँ, क्युं न हरइ मन-भाव ? ॥७६॥

उर लागा अति आकरा, नयण बाँण अणीयाल ।
नयण निमेख लीये नहीं, मगन थयो महिपाल ॥७७॥

ताँ लज्जा ताँ सूरपण, ताँ विद्या ताँ माम ।
नयण-बाण नारी तणां, हीयइ न लग्गां जाम ॥७८॥

सज्जण दुज्जण सुविकरण, प्रथम उपावण प्रीत ।
सुखकारण संसार सहु, नयण-ह केरी रीति ॥७९॥

(दूहा-गाहा)

अण जांणीयाण संगो, नयण कुव्वति धरंति वहु पिम्मो ।
लग्गा कह विन फुहइ, अलख गई परम सा भणीया ॥८०॥

पुव्वि करेइ पिम्मं, पच्छा पुण गिन्ह ।ए मणो तस्स ।
सज्जण जण सुहजणाणं, चक्ख परम वसीगरणं ॥८१॥

(दूहा)

नयण पदारथ नयन रस, नयणे नयण मिलंत ।
अणजाण्याँ-स्यूं प्रीतडी, पहिलाँ नयण करंत ॥८२॥

नयणाँ सोइ सराहीये, जिण नयण-में लाज ।
बड़े भये अरु विख भरे, कहो सजन, किण काज ? ॥८३॥

वयण नयण सयणह तणो, इंगित नइ आकारि ।
कुंमरी ज्यांण्यउ कुंवरनउ, चित थयु सुविकारो ॥१०५॥

(चोपई)

वार-वार मन कुंवर विचार, कुमरी जांण्यो एस विकार ।
कुमर चित्त आवइ जेतलइ, सांम्हो तन कुमरी मोकलइ ॥१०६॥

(दूहा)

'आउ' नहीं आदर नहीं, नेह-हीण निरखंत ।
तिण दिसि कदे न जाईये, जो कंचण वरखंत ॥१०७॥

आउ कहे आदर दीये, आसण वेसण सार ।
उठि मिले मन मेलिनइं, तिहां जाईये सो वार ॥१०८॥

नयण नयण मिलिया नि हसि, पूछे मन परधाँन ।
नयण नयण मन मिल्याँ, सयण थया सुविहाँण ॥१०९॥

(चोपई)

निरख्यो कुंअर कुंअरी नयण, मोहाणा मनि जाग्यो मयण ।
पल पल देखइ नयन पसारि, खिण विहसइ खिण विलखी नारि ॥११०॥

आलस मोडइ भाँजइ अंग, मरट धरइ लेवा मन द्रंग ।
खिण नीसास करे ऊससे, काँमदेव जागत कसमसे ॥१११॥

वाँम चरण अंगूठा नखे, खिणि नीचो जोइ भूमि लिखे ।
कुमर-नि जरि साम्हो ते देखि, संभालइ निज चीर विशेषि ॥११२॥

प्रेम प्रकास करइ मनि रली, कुमरी तस विरहइ आकुली ।
कुमरइ दीठो तस आकारि, धनि धनि ए नारी संसारि ॥११३॥

आतुर हुवइ बोलइ अकुलाइ, कुंअर-वतइ खिणि नवि रहिवाइ ।
प्रीति नीति मन धरि आपणी, गाहा रस बोलइ ते गुणी ॥११४॥

नयण मिलंतइ मन मिलइ, मन मिलि वयण मिलंति ।
वयण मिलयइ सहु सांपजइ, कारिज सिद्ध चढ़ंति ॥९५॥

(चोपई)

कुंमर कहइ : "इम धरीय उमेद, इतरा दिन नवि लाधो भेद ।
जीवन विण योवन सुविलास, आज सफल मुझ थया सु प्रकाश ॥९६॥

(दूहा)

आरा दिन ओझो मुझइ, भोलयो भोलइ भाव ।
हिव में तुझ बोलण तणी, ढील पलक न खमाय ॥९७॥

धन माणस तेही ज धरा, सहुकवि दइन सु-साखि ।
चाहि करइ तिण-सुं चतुर, हिसि बोलइ हित दाखि ॥९८॥

हास राम भासा सुपरि, सयणाँ-तणो सभाव ।
बोलण हसण थुन छज्जही, जाँणे मूरिख राव ॥९९॥

तन-विलसण मन-उलहसण, वयण सयण सम वाणि ।
चख-निरखण धन विद्रवण, मानव-भव सुप्रमाँणि ॥१००॥

सयण सरूप सोहामणो, मेला विण किणि ज्ञान ? ।
काथइ विण भेलइ कियइ, जाँणे चोली पाँन ॥१०१॥

हास भाम नही जास मुखि, गया जंम्मारो त्याँह ।
जाँण कि महकी मालती, सूना जंगल-माँहि ! ॥१०२॥

विरस-स्यूं नही जस विरस, चाहक-स्यूं नही चाहि ।
गहिला योवन-नी परि, गयो जम्मारा त्याँह ॥१०३॥

पालइ नितु अति प्रेम रस, आंखि वयण अदीण ।
अवसरि मेलो अप्पही, ते साचा सुकुलीण" ॥१०४॥

(चौपई)

सदयवच्छ व्याकुल अति घणूं, द्विज वरग फिरीयउ गुरु तणाउ ।
तिण अवसरि ओभइ मतिसार, दीठा कुमर तणा आकार ॥१२३॥

ओभे ते दीठी कुंअरी, सदयवच्छ विरह करि भरी ।
घास भास दीठो तस चेत, ओभइ जांण्यउ विगुठो वेत ॥१२४॥

यतः

आकारैरिंगितैर्गत्या, चेष्टया भाषणेन च ।
नेत्र वक्त्र-विकारेण, ज्ञायतेऽन्तर्गतं मनः ॥१२५॥

(दोहा)

ओभइ सगलो अटकल्यो, मनमां विहुं-रो मेल ।
मुहि क्युं ही भाख्यो नहीं, एह विधाता खेल ॥१२६॥

गिरुआ सहजइ गुण करइ, जो अवगुण लख होइ ।
खाँगो वाँको ही लखइ, मरम न छेदइ तोहि ॥१२७॥

(चोपई)

ओभे मरम विहुनो लह्यो, तो पणि मुखि क्युं ही नवि कह्यो ।
सावलिग नो थयो वियोग, सदयवच्छ¹ मन हूवइ शोग ॥१२८॥

आसण वेसण पाँन फूलेल, मूवयाँ काम-कतूहल केलि ।
न करइ क्युंही वीजूं काँम, जप-माला फेरइ तस नाम ॥१२९॥

(दूहा)

खाताँ पीतां खेलतां, क्युं ही तृपति न थाइ ।
सदयवच्छ सावलिगा-तणो, खिण विरहो न खमाइ ॥१३०॥

१. 'मक्या सवि भोग'

(गाहा)

विण दीहे ग्रह भणायं, विण महुरे होइ ग्रमीय सारिच्छं ।
रे कव्व-रेण-सहियं, ग्रह चुंबुं मो सही देहि ॥११५॥

[सावलिंगा वाक्यं] (दूहा)

ग्रमीय-निवासो ग्रहरि सुणि, गुण ग्रास्सव सम जास ।
चख-मिभल मन विहलपण, तिण जगि हुवइ परगास ॥११६॥

[सदयवच्छ वाक्यं]

पत्थर विणाण घसीयं, विण गंधेण[1] सीतलं होइ ।
कान्हा मात्र सहितं, सखो मो चंदनं देहि ॥११७॥

[सावलिंगा वाक्यं]

चंदन चतुर विचारि लइ, चतुरंगां चतुरंग ।
चंदा विण चंदण दीयुं, पडहो वजाडइ ढंग ॥११८॥

(चोपई)

इस बोलइ खोलइ मन वात, हसि धसि रसि जव बोलइ गात ।
ग्रालिगन चुंबन जब करइ, ग्रोझो ग्रावइ तिणि ग्रवसरइ ॥११९॥

कुंवरइ गुरू दीठो ग्रावंत, मत जांणइ ग्रांणइ मन भ्रांति ।
हलफल करि ग्रावइ घर-बार, मूंकत मनवि लहइ लगार ॥१२०॥

(दूहा)

भाणा-खडहड खग्ग-झड, वाल्हां-तणा विछोह ।
एतां वानां जे सहइ, तिण-रा हियडा लोह ॥१२१॥

रेहा नेहा मन-तणा, प्रिय तिय नयण सुहाउ ।
ए छूटंतां दोहिला, जइ सिरि जाइ तो जाउ ॥१२२॥

(चोपई)

मन दृढ़ करि पुहुतो मतिमंत. तिण वनि तिहाँ सुणिज्यो विरतंत ।
तिणिखिणि तिहाँ जाइ ऊभो रहइ, तिणिखिणि वयणसयण सर दहइ ॥१३९॥

(दूहा)

कइ कोइल कुहका करइ, कइ वंशी वीणानाद ।
सुणि सूदो संकित थयो, अनि चित-माँ उन्माद ॥१४०॥

(चोपई)

चतुर चूंप पेखइ चिहु ओर, चातक जिम पेखइ घनघोर ।
तिहाँ-थी ते आघो साँचरइ, सा दीठी चंपक-आँतरइ ॥१४१॥

(दूहा)

न्याँनी नयनाँ सारिखो, नहीं कोई संसारि ।
विकसइ प्रिय-जन देखिनइ, सो वरसे ही सार ॥१४२॥

विह आँणइ विह मेलवइ, विह मंडइ उपचार ।
अलगो ही नैंडो करइ, ए विधि-तणउ विचार ॥१४३॥

तन मन जीवन दिन सफल, आज कीया करतार ।
वीछडीया साजण मिल्या, पुंहुतइ पुन्य प्रकार ॥१४४॥

(चोपई)

कुंमरी पिण चिंता थी घणी, हुँती निज प्रिया मिलिवा तणी ।
ते आँणी मेल्यो जगदीस, गई आरति, पूगी सुजगीस ॥१४५॥

भणण गुणण भोजन भगति, हास भास हित हॉम ।
सदयवच्छ नवि संभरइ, इक निस-दिन तस नांम ॥१३१॥

सोंक तणो संगम सुणी, नींद पुरातन नारि ।
निमख लगइ ही निस भरइ, भींटइ नहीं भरतार ॥१३२॥

यतः

एक द्रव्याभिभाषित्वं, परमं वैरि-कारणं ।
विशेषेण सपत्नीनाँ, भाषायां सरलता कुतः ? ॥१३३॥

(चोपई)

चटा जिके भणाता चट शालि, एकेकणि रखवाली शालि ।
ओझइ कुमरी-नइ दीयो आदेस, राखण तिण वनि कीयो प्रवेश १३४

ओझो भाखई सूदा भणी, "कुमर ! आज वारी तुम्ह-तणी" ।
माँन्यो कुंमरइ वचन ज तेह, अंतरगति थयो अंदेह ॥१३५॥

(दूहा)

आज किहिनइ स्युं हतो, रखवाला नो हेत ।
करताँ एम विचारताँ, काँइ धरइ नहीं चेत ॥१३६॥

हूँ उणिरों उवाँ माहरो, साद सुणंता सार ।
ईतरो हो सुख अम्ह-तणो, साँख्या नहीं करतार ॥१३७॥

नयण रहो, मन ही रहो, रहो सुवयण विचारि ।
सयण रहइ जिण दिसि तिका, काँइ खोस्यइ करतार ? ॥१३८॥

कुंमरइ तव तिणि कुंमरी तणो, कर पकड्यो मनि ऊलट घणो।
दीण मधुर वाला दानवइ, मुग्धि सोहग अमृत रस लवइ ॥१५३॥

मन आकर्पि कीयो वसि आप, थयो अंगि उनमाद अमाप।
स्परशालिगन चुंबन सार, वंहि-रति सात करइ तिणवार ॥१५४॥

(दूहा)

"सावलिंगा !" सूदो कहइ, "एह वयण अवधारि।
ए अवसर आराम ए, सफल करो सुविचार ॥१५५॥

(गाहा)

जच्छ विजलं न छाया; छाया जलं न सीतलं होई।
छाया जल-संजुता, ए संजोगा दुल्लहा होई" ॥१५६॥

[सावलिंगा वाक्यं]

नयण चमक्कयो वयण रस, सगुणां एम सुहाइ।
'नाउं अज्जाणाँ-ह-स्यूं, चम्मो चम्म घसाँइ ॥१५७॥

[सदयवच्छ वाक्यं]

अंब पक्के बहु भाँति, कि टूक इक्क खाइये।
वाडी वन-फल होइ, तो तोडि चखाइये।
सागर पाँणी होइ, तो पंथी पाईये।
परिहां, रख्या कहि कहो होइ, मरेई जाईये ॥१५८॥

१: 'मूरख-हंदि प्रीतडी चाम्यो चाम घसाइ'

प्रिय दिट्ठो भर प्रेम प्रकास, अंगि अंगि वाध्यो उल्हास ।
रुंकट कंचु अति उल्हसइ, प्रिय संगति हुई तिण हसइ ॥१४६॥

(गाहा)

पुर पट्टणे निवासं, पंडिय पासं च निश्चला रिद्धि ।
तरुणी नयण विलासं, पामिज्जइ पुन्न-रेहांइ ॥१४७॥

(दूहा)

जोरावरि लीधो हुंतो, विरह मदन निवास ।
फिर मदनइ पते पुरलीयो, ए विधि-नो सुविलास ॥१४८॥

वेउ मन मिलिया वहसि, साँई आई दीध ।
घण दिवसो विरहो हुंतो, नयणे तृपति न कीध ॥१४९॥

(चोपई)

अति सुंदर मंदिर आराम, निपुण नाह वामा अभिराम ।
देखि देखि एकंतइ ठाम, कहु किणनो नवि जागइ काम ? ॥१५०॥

यतः

दृढ़-कच्छा कर-वरसणा, बोलंता मूंह मिट्ठ ।
रण-सूरा जग्गि वल्लहा, ते मइं विरला दिट्ठ ! ॥१५१॥

(चोपई)

विरह-चिंत हुंती ते गई, कामिनी पणि काँम-वसि थई ।
वंक नयण मुखि वंका नयण, इणिअहिनाँणि [1]जाँणि मयण ॥१५२॥

१, 'जागे'

(चौपई)

स सनेही आया लटसाल । ओनो चित संकयो ततकाल ।
पूछइ ओभो कुमरी प्रतइ । ऊरी मइं आगुण-रे मनइ ॥१६६॥

(श्लोक)

पद्म-पत्री विसालाक्षी, कर्णे सोभंति कुंडला ।
येन कार्ये वने गता, सकांम सफलं कृतं ? ॥१७०॥

[सावलिंगा वाक्यं]

"अजेस कुंमर अयांणो, फर ग्रहि लीडंति छंडिया सांमा ।
त्रिया एह सभायो, ना ना करतां वाधए प्रेमो ॥१७१॥

(चौपई)

सांझ समइ आया निज गेह । विहुआं विरह त्रियाकुल देह ।
सावलिंगा भोजाई पासि । बईठी अवर सखी सुखी वास ॥१७२॥

निज भत्रीजो लेई उछंग । खेलावइ अधिकइ मनरंगि ।
खिणमइं लावइ अधर पियास । भिडइ कांम जणावइ तास ॥१७३॥

आंचल मुखि आपइ उल्हसइ । मुख-स्यूं मुख मेलीनइ हसइ ।
नणंद प्रति भोजाई कहइ । "लाज सहु तुम्ह अलगी रहइ ॥१७४॥

(गाहा)

बाला मुख म लाइस वालं, अपजस वज्जसी नयर मझालं ।
बालो लहसी अवर सवांद, ते बालो तजसी खीर-सवादं ॥१७५॥

(चौपई)

"किस्यूं करो ? रहो सांसतां, दूरि करो बालक-मुख हूंतां ।
पूरण लख्यण थयां तुम्ह-तणां, वयण कहइ कुमरी आंपणां ॥१७६॥

सो जौवन सु-पसाउलो, सो तन धन गुण-ग्राम ।
पर-काजे पूरा करे, प्रीन तणो तस नाँम" ॥१५६॥

[कुमरी वाक्यं]

"लूखो सूखो खाई-नइ, आवी काढइ ऊख ।
काची कली न तोडीयइ, जो लागइ लख भूख" ॥१६०॥

तिणि खिणि वायु-तणइ वसइ, ऊड़्यो कुमरी-चीर ।
सूदओ तस तन देखिनइ, आतुर थयो अधीर ॥१६१॥

वाये ऊडइ पंगुरण, कुंमर चलीयो चित्त ।
प्रथम राति वाचा तिणंइ, सदयवच्छ-स्यूं दत्त ॥१६२॥

(चौपई)

शीतल जल चंपक-सुवास । छाया सेज कुसुम सुविलास ।
पोढ़्या वेउं प्रेम पियास । उर मेली अधिको उल्हास ॥१६३

ओझे चटडा मेल्हया चारि । लेवा तिहां वेऊंनी सार ।
जोई तिहां खिण इक नवि रहइ । पाछा आइ ओझा-नइं कहइ ॥१६४

(लेसालीया वाक्यं)

"गुरुजी ! उइ सूओ उवा सूई । कुसुम सेज पाथरे सूइ ।
प्रहरे प्रहर बिलंबीया । सागरे खालि खनि सूईय ॥१६५॥

(दूहा)

सांझ समइ जाग्या सही, अंतरगति एकलास ।
वीछडतां बोलइ वयण, सावलिंग सु-विलास ॥१६६॥

'सूदा !' [सावलिंगा कहइ], 'एह' ज अधिक सनेह ।
राखो भाखो मत किहां, दाखो कदहि न छेह ॥१६७॥

ए चंपक आराम ए, वलि मन-मेलो एह ।
जिहां तिहां चीत धारिनइ, धरिज्यो अधिक सनेह ।१६८॥

मन वंको मन बावनो, नंचल चपल नुसार ।
केसव मन जिहां रय करइ, ते गति अलख अपार ।।१८६।।

सो घर सो पुर नगर सो, जाणूं नयणा चार ।
जिण-सूं मन लागो रहइ, सो कोइक संसारि ।।१८७।।

सारीखो राचइ सदा, नारीसि सद भाई ।
सारीसा संगम विना, फल कच्चइ मन जाई ।।१८८।।

महीयल जरा बहुला गिनइ, अद्भुत रूप उदार ।
मनगमता मांणस विना, सूनो सहु संसार ।।१८९।।

आवइ दिन-प्रति सदय नृप, लुवध थको लेसाल ।
विण कुमरी व्यापइ विषम, विरहानल असराल ।।१९०

जिम चातक जलहर सदा, चाहइ चंद्र चकोर ।
कुंवर सुकुमरि न देखतो, ईपइ च्यारों ओर ।।१९१।।

ना घरि, नां पुर नारिस्युं, नवि नेसालइ नेह ।
विण तिणि खिर वेवइ नहीं, सूदो सुख-ची रेह ।।१९२।।

दीठो सुदय दयामणो, इक दिन ओझइ आप ।
मिसि करि सुदय दयामणो, एहवो करइ अलाप ।।१९३।।

[ओझा वचन]

"आज कालि नावइ इहां, सावलिगा पढ़वाह ।
सात दिवसमां तेहनो, मंडाणो वीवाह ।।१९४।।

(चोपाई)

सुणि सूदो इम वयण विचार । आतुर मिलिवा थयो अपार ।
तिहां थी आयो वेस्या तणइ । धन आपि मांनइ अति घणइ ।।१९५।।

राजपुत्र आयो इम जांणि । आपइ आदर करइ प्रमोण ।
सवि शृंगार बिछावइ सेज । हाव भाव-सूं मंडइ हेज ।।१९६।।

(चौपई)

[सावलिगा वाक्यं]

(दूहा)

धण जोवण भींग्रल छिले, विरह अंगि न समाइ।
सखी सलज्जी गोठडी, कहतां किणहि न जाइ ॥१७७॥

सखी सलल्जी गोठडी, नीलज नयण निहीर।
तुम्ह ज्यूं अम्ह पयोहरां, कदे वहेसी खीर ?" ॥१७८॥

(चौपई)

तिण अवसर तस बंधव सार। सिंह आवइ तिण महल मझारि।
सावलिगा जाइ अलगी रहइ। तव भाभी सहु वारता कहइ ॥१७९॥

"सुणि पीतम ! बाई तुम्ह तणी। कामवंती मनि इच्छा घणी।
जोवन विरहइ अे व्याकुली। परणावो पूरो मन रली" ॥१८०॥

सिंह सुणि मनि थयो विचार। ब्राह्मण इक तेड्यो तिण वार।
सात दिने साहो थापीयो। पुहुपावती पुरि कागल दीयो ॥१८१॥

सावलिगा परणावण काजि। सिंहइ सगला कीया समाज।
उच्छव मंड्या अधिक ऊछाह। निस दिन कुमर निहालइ राह ॥१८२

खातां पीतां भोग विलास। रलीयाली तरुणी रंग रासि।
हय गय रथ सोहग परिवार। राय न करइ सूदो तिण वार ॥१८३॥

(दूहा)

रजवट घट हय गय तणा, नव परणी वर-नारि।
सूदो सावलिगा विना, क्युं नवि मांनइ सार ॥१८४॥

सगलइ गज लाभइ सदा, खांन पान सनमांन।
पिण रेवा तिण हेवा नहीं, तिम तसु कुमर निदांन ॥१८५॥

(गाहा)

पिय-विरागी गुण-रागी, [illegible], [illegible] ।
सरसव-[illegible] मुंके, [illegible] ॥२०६॥

(चौपई)

मुह माथी देख्या नर निराट । [illegible] निरखि निग्गह ।
फिरतो बोल्यो मदनकुमार । दूरगि निरखि सनेही नारि ॥२०७॥

[सदयवच्छ वार्ता]

(गाहा)

नव सत्ता सज्जीवगणी । हार आहार वाहणा नयणी ।
जलचर मग्गा गमणी । सा सुंदरि कत्थ पामेसि ? ॥२०८॥

(दूहा)

जाण्यो ए तो वल्लहो, जिणि-सूं कीधो बोल ।
निरखि मुख कि कहइ मानिनी, एक ज वयण अमोल ॥२०९॥

नगर मज्झे सालूरं, सगति रूप पाडिया बिंबं ।
[....... ....] ॥२१०॥

[सावलिगावचन]

(दूहा)

"देहरू नगरी-मंही अछइ, जस सालूम्ह नांम ।
सगति-रूप देवी जिहां, तिहां पामिसि ते ठाम" ॥२११॥

सुणि वांणी हरखित थयो, करि संकेत सुकत्थ ।
वेस देई वेस्या तणो, आयो निज घरि जत्थ ॥२१२॥

मोरां जिस मेहां तणी, ईषइ वाट ऊछाह ।
राह तिमइ जोवत रहइ, कदि आवइ दिन ताह ॥२१३॥

ततखिण बोलइ सुदय नरेस । "काम नही रतिनो, सुणि वेस ! ।
अवर काजि आया अम्ह आजि" । कहइ वेस्याः "फुरमावो राजि"।१९७

अरथ किस्यू आवेस्यइ पछइ, वात जणावो पुण ते अछइं ।
राजि तणि नवि आवइ कांमि, जलि जावो गुण ते सुणि सांमि ॥१९८

(दूहा)

ओ वाल्हो निय सयणो, ओ. वंधव अभिरांम ।
लाखीणो अवसर लहइ, आवइ आपुण कांम ॥१९९॥

यतः

अपसर चुक्कइ रस गयइ, आदर करइ अयांण ।
जे रिण गुण-विण वाहीयां, ते किम लग्गइ बांण ॥२००॥

(चौपई)

"तेह तणो मंड्यो वीवाह । हुँ जाई न सकूं तिण राह ।
जनम जीव मुझ तो परमांण ।देखूं जो ए कुमरि सुजांण" ॥२०१॥

वेस्या कहइ हीयडो उलहस्यो । "एह बातनो दोहिलो किस्यो ? ।
[ति कहइ] वयण हीयइ निज धरो" । कुंमर कहइ, "ढील
सी करो ?" ॥२०२॥

"कुंमर ! वेश करो स्त्री-तणो । आवइ तसू ऊलट घणो ।
वेस्या वे सावलिंगा पासि । आवे बोलइ वचन विलास ॥२०३॥

(गाहा)

पावस रूद्रा रयणी, पिय परदेस विम्महा पंथी ।
पर पुरुषाँणइ नेहं, पामिज्जइ पुन्न-रेहाइं ॥२०४॥

(चोपई)

सावलिंगा सुणीयो तस वयण । फिरि बोली वंकी करि नयण ।
मनि भावइ पणि नवि जाणवइ । तेहवो वयण कहइ ते हवइ ॥२०५॥

मुझ वाचो साची कहुं, संगति सहकार ।"
इम चीतवि प्रीतम प्रतइ, वोलइ वचन विचार ॥२२३॥

(चंद्रायणा)

"अंब पका बहु भांति, सकुंणी खाजीयां ।
मेरे हीयडे हाम न भाजि, कि सुंणी भाजीयां ।
गहिला मूढ अबूझ, अनागा कि नाचना ।
परिहां, हुं मालणि रखवाल, कि आंबा रावला ! ॥२२४॥

सुणि बोल्यो सारथ कुनन, एहो वयण म आखि ।
अम्ह अमोलिक अंब ए, लीधा जाणइ लाख" ॥२२५॥

(चंद्रायणा)

रहु मूढ ! अयाण, वात न अखीये ।
एणि समइ रस-रीति, कि प्रीति सु रक्खीये ।
वात न अखइ कोइ, किसा खासहू जणा ? ॥
परिहां, कुण रावल रखवाल, कि आंबो अम्ह तणा ?" ॥२२६॥

कहइ सावलिगा कांमिणी, "आई युंही ज इण हीय ।
में आप्यो तिण वचननो, मुणि परमारथ प्रीय ॥२२७॥

(चोपई)

बालांपणे हुं रमती बाल । सगति-पूज करती प्रहकाल ।
देवी तूठी प्रेम प्रकार । "सुंदर वर पांमिसि सुविचार ॥२२८॥

सुणि कुंमरी ! तूं रति-अवसरइ । पहिली जात्र अम्हारी करे ।
जात्र विना जो करसि संभोग । पति मरिस्यइ पडिस्यइ घर सोग २२९

आखूं हूँ तिणि एहवी वात । सगति-तणी मुझ करिवी जात्त ।
सेवक महइः "वेगा हुवइ । रंगरली रयणी बालिवइ" ॥२३०॥

(चोपई)

दिन जाणी आणी उल्हास । आज हुस्यइ कुमरी मुझ पासि ।
आवइ ठाँमि इक चूंप घणी । करइ सझाइ अमलां तणी ॥२१४॥

(दूहा)

आफ़ विजयादिक अमल, चूरण करि चखचोल ।
सदयकुमर वैठो जई, देवल अधिकइ लोल ॥२१५॥

(चोपई)

लगन दिवस आइ तस जोन । सावलिगा परणी सुभ वांन ।
सयण भुवण ति नारी नइ नाह । आया अंगि अधिक उछाह ॥२१६॥

चूवा चंदन मृगमद घनसार । सूंघा पहिरया तन सुखकार ।
सखरो सीसा अधिक सुचंग । परिमल कुसुम सुवास पलिग ॥२१७॥

तिण उपरि वैठो जई आप । मदनराय फेरी सिर छाप ।
जाग्यो मयण दीठी त्रिय नयण । कहइ, "अरहां इम आवो इथ अण" २१८

(दूहा)

नाहइ तिण नारी-तणइ, कर करीयो उरसार ।
सावलिगा तिण अवसरइं, संकी चित्त मझारि ॥२१९॥

[सावलिगा स्वगत वचन]

"वालपणइ वोल्यो हुतो, वयण सुदयन्नूं सार ।
ते जो निर्वहूं नहीं, तो मुझ नइ धिक्कार ! ॥२२०॥

सुंदर निपुण सरूप सुभ, नितु नव नेह निधांन ।
निज वाचा पालइ नहीं, ते मांणस केहइ ग्यांन ॥२२१॥

जावो धन धरणी धरम, गुण गाढिम मति प्रेम ।
सति आ सति जावो सहू, पिण वाच म जाज्यो तेम ॥२२२॥

([illegible])

सोवन-नेउर निज पगतणा । [illegible] तइ मांहि घणी ।
देवहरउ आई निरधार । दीठो नीठो गुणनकुमार ॥२४१॥

पासि जाई ऊभी निरभमणी । बोलइ नही, थई वेना घणी ।
कुमरी कर लीधो तस हाथि । तो पिण कुंमर न मानइ बाथ ॥२४२॥

(दूहा)

नवि बोलइ चालइ नही, न धरइ तिलभरि नेह ।
'सुणि साहिब ! [कुमरी कहइ], अजी किसूं अंदेह ? २४३॥

भीन भुयंग भेदीयो, छलीयो किणहि छलाव ।
घम टेरैं घूमइ घणूं, ज्यूं तरवर वरि वाव ॥२४४॥

अहि खील्यो गारुड अधिक, नवि वाहइ विरा भाट ।
हाथ खाचि रहीयो हिवइ, सूदो केही माट ? ॥ २४५॥

"सूदा ! [सावलिगा कहइ], हिवइ पूरो हांम ।
हूँ आई हेजा लवी, किसी रीस विण कांम ? ॥२४६॥

"सूदा ! [सावलिगा कहइ], समरइ केही रीसी ? ।
चूक पडयो वगसो चतुर, विलसो सुख मुजगीस ॥२४७॥

तजि निज मंदिर नाहलो, सखर तुलाई सेज ।
तुझ कारणि आई त्रिया, जोवइ हिवइ सीजे ज ॥२४८॥

तुझ मुझ वेउ मंन तणी, अधिकी हुंती आस ।
अवसर मूंकी आजनो, नाह ! कांइ हुवइ निरास ? ॥२४९॥

आज लगइ तुझ मुझ अछइ, परघल प्रीति अपार ।
एक रूखो आदर भणी, आज जिस्यो अधिकार" ॥२५०॥

मेल किस्यो मूक्यो कह्यो, भाँमिणि सेती भाउ ।
बोलायो बोलइ नही, झखि झखि सहुँ जरा -जाउ ॥२५१॥

;मगी कहइः "हिव डाँस्यो कांम। प्रह जाई करिस्यूं प्रणाँम।
नां हिवणाँ जावो" कहइ नाह। सावलिंगा ओठि लीधउ राह॥२३१

(दूहा)

निज मंदिर सुंदर निपुण, नाह व्याह उच्छाह।
तजि तृण जिम ए सहु सुरत, पाली बोल प्रवाह॥२३२॥

आसा करि यूं ही रहइ, वहसि न पालइ बोल।
पुहवी ते पापी प्रथम, माँणस कवड्डी-मोल॥२३३॥

बोलइ थोडा बोल, विहचइ निरवाहइ घणा।
ते माँणस-रो मोल, लाखेही लाभइ नही॥२३४॥

(चोपई)

ऊमगि मगि चालइ मयमंत्ति। राति अंधारी अतिभय भ्रंति।
चोर खापरो नइ कोडीयो। देखि कुंमर साह मनि कीयो॥२३५॥

बोली तिण अवसरि सा वाल। करि करि ऊंचा सगति विसाल।
हाकाँ करि मुखि बोलइ हसइ, धूंकल करि कूदइ धसमसइ॥२३६॥

'माँगि, माँगि तूठी हूँ माय।' तिण खिण वे प्रणमइ तस पाय।
"जो माँग्यो तूं आपइ दान। जीमण आपि मलीदो दांन॥२३७॥

(दूहा)

नक-मोती दीधो नवो, देवी रूपइ दाखि।
भोजन करिज्यो भगतिसूं, मोल इयँ-रो लाख॥२३८॥

अरधो कज्जल सावलो, अरधो कुंकुंम-वन्न।
चोरे ले पाछो दीयो, ए चिरमी नर-तन्न॥२३९॥

हाहा जोज्यो गुण निपुण, चढीयो निगुणाँ हत्थ।
मोती ही घण मोलनो, मिल्यो गुंजाहल सत्थ॥२४०॥

उर भीजइ सुंदरि कहइ, [illegible] निरास ।
सूदो [illegible] नीगी, नारी थई निराश ॥२६३॥

बोलावी बोलइ नहीं, नयणे नीर निवाह ।
जाती ए गाहा लिखी, कुमरि [illegible] ॥२६४॥

“सूडा ! [सावलिंगा कहइ], मानो प्रीत संसार ।
देखइ देव जिनालयो, पुहपा-नगर-मझारि !” ॥२६५॥

सुण नीमाला सुंदरी, नयणे नीर प्रवाह ।
गाहा लिखी पाछी वली, सुं की मन उच्छाह ॥२६६॥

(चोपई)

आई सावलिंगा आवास । फीकि मनि थई अधिक उदास ।
प्रीय कहइ, “करि आया जात ? । विलखा किम दीसो ?
कहो वात” ॥२६७॥

कुमरि कहइ, “पाली मइं वाच । तोही सगति न मानी साच ,
मूल नगर तुम्ह पुहपादत्तो । देवि कहइ मुझ तिथि तिहां हतो ॥२६८

देवल नवो करावो तिहां । मूरति करो सरीखी इहाँ ।
तिहां मानिसि यात्रा तुम्ह तणी । तव लगि मत भेटे तूं धणी ॥२६९

विलखी हूं तिणि सुणि वालंभ ! । दिन एहवा जायइं किम अंत ? ।
हिवइ हालो नगरी आंपणी । यात्र करां जिम देवो तणो” ॥२७०॥

भोजन भाते जीमी जाँन । उपरि दीधां फोफल पान ।
भगति जुगति भल भूषण भेद । ले चाल्यो निज नगर उमेद ॥२७१॥

हिव चाल्यो ते सदयकुमार । अमल ऊनार हूओ तिणवार ।
नीद गई विकसी दुइ नेत । आलस मोडि थयो सावचेत ॥२७२॥

विकस्या कमल सुपरिमल वास । पीली दिसि पूरव सुप्रकास ।
तिणि खिणि मति विकसि पणि तास ।
‘हा’ मुझ मूक्यो तिणइ निरास ! ॥२७३॥

(दूहा)

म जाणसि वीसरीयं, तुह मुह-कमलं विदेस गमणंम्भि ।
सूनो भमइ करंको, जत्थ तुमं जीवियं तत्थ ॥२५२॥

जम्मंतरे न विहडइ, उत्तम महिलाण जं कियं पिम्मं ।
कालदी कण्ह-विरहे, अज्जवि कालं जलं वहइ ॥२५३॥

(दूहा)

नेह सुकुल नारी तणो, नवि विहडइ प्रिय दिट्ठ ।
त्युं सूदा-सावलिगा-तणो, जाँणे रंग मजीठ ॥२५४॥

म जाँणे प्रिय मेहणो, दूरि विदेस गयाँह ।
विमणो वाधइ साजणाँ, ओछो होइ खलांह ॥२५५॥

जोगीसर जोगासणइ, मंत्री जिम आलोच ।
तिण परि सूदा ! ताहरी, आज पड्यो सो सोच ॥२५६॥

आज निहोरा अति घणा, नवि लायह सूदो नाम ।
वात न मंडइ कावली, करि लिखीयो चित्राँम ! ॥२५७॥

उंचो लेईनइ जोईयो, सूदा सुदय नरेस ।
जिणि उरि दोइ नारिंग फल, सो तूं कत्थ लहेसि ? ॥२५८॥

"सूदा ! [सावलिगा कहइ], हवइ एवडो स्यो हठ ? ।
मोडी आई माँनिनी, तिण धरयो मन मठ ! ॥२५९॥

"सूदा ! [सावलिगा कहइ], कुमर न जाँणो कत्थ ।
जिणि कारणि मइं लाईया, छाती चंदन हत्थ ॥२६०॥

नींद्रइ कवण न छेतरया ?, जोवन कुण न विगुत्त ? ।
जो प्रिय भीडूं उरह-स्यूं, तोही सुवइ नचित ! ॥२६१॥

जिम सालूरां सरवरां, जिम धरती अरू मेह ।
चंपावरणा वल्लहां, इम पालीज्जइ नेह" ॥२६२॥

मुखि कहइ 'तूं मुझ यार', अरु नहु प्यार हइ ।
जांणइ मुगधा लोग, कियूं सहु सार हइ ।
मन तन अवर, अनेरां सूं करइ ? ।
परिहाँ, नारी तणो सनेह, न को जन मन धरइ ॥२८३॥

मांडइ प्रीति अखंड, कि जांणइ साच हइ ।
आउंगी तुझ पासि विलास, कि मेरी वाच हइ ।
मेल्ही तास निरास, कि और स्यूं भोगवइ ।
परिहाँ, एकणि वार अपार, चरित्त त्रीय केलवइ ॥२८४॥

एक समि मइं आस, आस की पूरवइ ।
ताकूं दाखि सराप, कि आप सती हुवइ ।
खिणिक दोस, खिणि रोस, खिणिकि इकमां वहइ ।
परिहाँ, काती कुत्ती जेम, फिरत्ती तिम रहइ ॥२८५॥

(दूहा)

जीहा मुखि जाती रहइ, नेह न धारइ चित्त ।
तल काठइ गल लेइ नइ, एहवउं नारी-चित्त ॥२८६॥

अणमिलताँ आवी मिलइ, मिलताँ धरइ जु मांन ।
ए गति नारी नी अछइ, सुणिज्यो चतुर सुजांण ॥२८७॥

तिय वेसास मत को करो, तियाँ किसकी-नाँहि ।
मुझ मूक्यो इहाँ विलवतो, रंग रली रस-माँहि ॥२८८॥

धिग तेहनइ धिग मुझनइ, धिग मन जनम धिक्कार ।
वाचा करि आइ नहीं, नीलज नारि निक्कार ॥२८९॥

रोस भरी नइ उठीयो, जंपइ सदयकुमार ।
...................., तिसो त्रियनो पियार ॥२९०॥

आयो तिहाँ ऊठिनइ, सदयकुमर निज गेह ।
पग लडथड भड घूमतो, नारी-स्यूं निस नेह ॥२९१॥

(दूहा)

पीपल पाँन जु रुराण्या, निसि ग्रांधरी लोई ।
रहि रे हीयडा ! मुट्ठि करि, इहां न ग्रावइ कोई ! ॥२७४॥

किहाँ नाठो ? तूं किथि गयो ?, रहि हीया, म म झूरि ।
पीड न जाराइ तांहरीं, सहू निज कारिज सूर ॥२७५॥

करियल करियल उर ग्राफरथो, वलि रस्याथनो त्रेह ।
तिसो नेह नारी-तणो, झटकि दिखाडइं छेह ॥२७६॥

निज प्रिय मारइ हत्थसूं, ग्रनाचार ग्राचार ।
नि-सनेही नारी-समो, सुणीयो नहीं संसार ॥२७७॥

नीची गति मति निरति रति, नीचह-सोती नेह ।
ऊंच तणो ग्रादर नहीं, ग्रचरिज त्रियनो एह ! ॥२७८

(यतः)

सीयां तीयाँ पांणीयाँ, इयाँ त्रिहुं एक सभाव ।
ऊंचा ऊंचा परिहरइ, नीचाँ उपरि भाव ॥२७९॥

(दूहा)

रवि-चरीयं गह-चरीयं, तारा-चरीयं च राहु-चरीयं च ।
जाणंति बुद्धिमंता, महिला-चरियं न जाणंति २८०॥

जल-मझे मच्छ पयं, ग्राकासे पंखीयाँ पय-पंती ।
महिलाण पहिथ मग्गं, तिन्नवि लोए न दीसंति ॥२८१॥

(चंद्रायणा)

जाँणकि रंग पतंग, को दिन दुइ च्यार हइ ।
पावस मास सु पूरन, वलहाँ ठारहइ ।
पूरव प्रेम प्रवाह, कि वहताँ ही वहइ ।
परिहाँ, निश्चल नारी नेह, कदेही नाँ रहइ ! ॥२८२॥

नागरवेलि कीय निपन्न, चन्दन कीय भामिनी ।
परिहाँ, राँका दीध रतन्न, विधाता बावली ! ॥१९८॥

(दूहा)

कर झारी पांणी भरी, अम्ह दांतण नइ हत्थ ।
दासी लेइ आंणी दीयइ, कुंअर-ह-केरइ हत्थ ॥१९९॥

कर बेवे भेला कीया, चलू करेवा चाह ।
तेणि समइ नारी तणा, अख्यर दीठ उछाह ॥२००॥

चख लगी तिण चाह-सूं, न लीयइ निमख-मेख ।
"सूरति मूरति आगलि सही, जिम भाविक मुदिसेप ॥२०१॥

सावलिगा आई सही, पाली पूरी प्रीति ।
निरभागी जाग्यो नहीं, तिण ए अख्यर नीति ! ॥२०२॥

फाटि फाटि रे तूं फाटि तूं, हीया ! हिवइ मर हेसि ।
उ देवलउ वा कांमिनी, वलि कत्थ लहेसि ? ॥२०३॥

हीयडा ! फूटि पसाव करि, केता दुख सहेसि ? ।
सावलिगा विरहि सगुण, जीवी काइ करेसि ? ॥२०४॥

(गाहा)

रे हीय वंकि न लज्जसि, नहु जाणी जेण आगया सामा ।
अनह कि न कहिज्जइ, सो भूलो चंप लोवि तुम्ह ॥२०५॥

रे हीया ! वज्रह घडीयं, अहवा घडीयं खिवज्ज सारित्थं ।
वल्लह-वियोग काले, कि न हुयं खंड खंडेण ? ॥२०६॥

रे नयणां ! तुम्ह धिग्ग हूअ, नवि लखी आई नारि ।
पेम उपायो पहिल थी, किण कारण विण कारि ? ३०७॥

गलइ हार लागी रह्यो, नयणइ रंग तंबोल ।
कज्ज़ल अहरे देखिनइ, बोलइ निज त्रीय बोल ॥२६२॥

"त्रिण लग्गइ गलि हार, कि कंत किहाँ पावया ? ।
नयणे भख्या तंबोल, मुखि नहु भाविया ।
कज्जल काली रेह, कि दीसइ अहर-तले ॥
परिहाँ, जइ खाई जइ पर मांस, कि मूंढ म बाँधी गले ! ॥२६३॥

(दूहा)

सुणि सूदो मनि संकीयो, ईषि सहुव आकार ।
अंत-रंग आलोचिनइ, वाचइ वचन विचारि ॥२६४॥

'रहु रहु' 'मूंच' अयांण, कि हासा जि न करो ।
आपण ज़ांघ उघार, लाजां नाँ मरो ।
बालक पट्टा चीर, कि पत्थर किम ताडीयइ ?
परिहां, गायइ गिल्यां रतन्न, उदर क्युं फाडीयइ ? ॥२६५॥

[पुनः स्त्री वाक्यं]

"हमस्यूं छाँडि कि प्रीति, अनेरा-स्यूं करइ ।
हम हइं तुम्हचे दास, और जि न मनि धरइ ।
उहां हइ नेह अछेह, इहां नहु लेखीयइ ।
परिहां, रोटी मोटी कोर, पराई देखियइ" ॥२६६॥

(दूहा)

सुणि वाणी नारी तणी, बोल्यो सदयकुमार ।
दुख मन ए भूली गये, ठाँमि ठाँमि करतार ॥२६७॥

(चंद्रायणा)

सारंग नेत सुचंग, काँम नहु भावीया ।
सोवन गयो निगंध, वास नह पावीया ।

(गाहा)

किज्जइ अकज्ज करणं, छंडीज्जइ घार गब्भाम'''' ।
धरि धरि भीख भमिज्जइ, कि पुण महु तुज्जए नेहो ॥३१९॥

(चोपई)

लंघइ वाट घाट वन वाग, लंघइ विण सायर विण नाग ।
निसि चालइ वाटइ वहइ, पलक एक लगि किहीं नवि रहइ । ३२०॥

वाट वहत आव्यउ तिणवार, कामावतीपुर सदयकुमार ।
तिहां छइ जोगी-नो विश्राम, कुमर आय पूछइ निज नाम ॥३२१॥

'जोग' 'जोग' करतो जागीयो, आलस मोडि मुखि वोलीयो ।
सुणि बाला बाला विरहाल, गोरख जागइ दीन दयाल ॥३२२॥

(दूहा)

पंथी चालि, न बिलंब करि, रहसि न राति दीहेण ।
सावलिगा सालइ होयइ, श्री गोरख जागेण ॥३२३॥

(चौपई)

आयस वचन सुणी हरखीयो, कुमर तणो दुख सवि गयो ।
ठाँमि ठामि गोरख-नो नांम, जंपइ सदयकुमर पणि ताँम ॥३२४॥

मारग श्रम तृस व्यापी घणी, ईच्छा मनि थई पांणी तणी ।
सर दीठो भरीयो जलसार, नव तरूणी जिहां रहइ पणिहार ।३२५।

जल निरखी हरख्यो निज चित्त, जाँण्यो पाँणी एह प्रवित्त ।
आखर गहलण बीहइ करी, मुख स्यूं नीर पीयइ सुख धरी ॥३२६॥

(दूहा)

करवतडा करतार, जो सिर दीजइ ताहरइ ।
तो तूं जांगइ सार, वेदन वीछडीयां-तणी ॥३१०॥

हसत वदन हे जालवी, हरखवंत हितकार ।
नवरंगी नारी सुणी, किहाँ पाँमिस करतार ॥३११॥

चंदा-वयणी मृग-नयणि, वे पख-वंस-विशुद्ध ।
हंसि हंसि नेह ज दाखवइ, मेलि विधाता मुद्ध ॥३१२॥

वहु गुणवंती शसि-मुखी, रंगि रमे रस-लुद्ध ।
चंपक-वरणी अति चतुर, मेलि विधाता ! मुद्ध ॥३१३॥

दीन हुवइ कर देखि, वेदन अंगि न खमाइ ।
नीकालइ नीसास-मिसि, पिणि नवि आघी जाइ ॥३१४॥

एक दुखीआं वेरागीयां, जो नीसास न हुंति ।
हीयडो रत्न-तलाब ज्यूं, फुट्ट वि दहदिसि जंति ॥३१५॥

(चौपई)

नारो मालमु लोक परिवार, हय गय रथ पायक विण पार ।
चंदन चीर पटंवर वास, सूंधा वास सुवास विचार ॥३१६॥

माय ताय निज राज भूं काज, वंधव मित्र कुटंवह लाज ।
सहू मूक्या वोर तेवइ वाग, कंचुक जिणि परि मूकइ नाग ॥३१७

नीकलीयो मूंकी नरदेव, सार्वलिगा-री करिवा सेव ।
कर धरि एक करवाल सहाय, प्रिया-नेह वीजो संगि थाइ ॥३१८॥

(चोपई)

इम कहिनइ आघु संचरइ, पुहपावती चाल दीठो नगर ।
पुर बाहरि सरवरनी पालि, सूतो देवल पसीय निराल ॥३३७॥
.... , पंखीजा देवल सरण ॥३३८॥

(दूहा)

"कहा मुझ मंदिर मालीया, हय गयह रस हजार ।
आ हुं ज सूतो एकलो, जोज्यो नेह विचार ॥३३९॥

सूरवीर साहस सकज, जस जस रस जग-मझि ।
नर ते पणि नेहइ निपट, विकल हुवइ विण-बुज्झि ॥३४०॥

गति मति छति सत महत गुण, दीपति सुन्दर देह ।
खिण खिण सगला खूटनइ, नारी—केरो नेह" ॥३४१॥

नीसासा मूकइ सबल, निसा विहावइ निट्ट ।
वर धण देखुं नाह विण, धण विण नाह न दिट्ठ ॥३४२॥

बिरहानल वेध्यो विहल, साल्यो कुंमर साल ।
विलवइ सूतो मूध विण, सदय थया विहवाल ॥३४३॥

सो कोवि नत्थी सयणो, जस्स कहिज्जंति हियय दुखकांइ ।
आवंति जंति कंठ, पुणो वितथेव तत्थेव ॥३४४॥

(दूहा)

केलि देलि मिलि करण, सगुणी अति ससनेह ।
रस-लूधी रमती रमणि, देहि विधाता तेहु ॥३४५॥

सिरज्या किमि संसार-मइ, विण त्रिय-रसइ छयल्ल ।
रूप कला गुणनइ अनइ, कां नचि कीया वयल्ल ? ॥३४६॥

(दूहा)

गोडा दुइ नीचा करी, धर टेके दुइ हत्थ ।
नीर पीयइ मुख-स्यूं कुमर, जाँणि वयल्लां नत्थ ॥३२७॥

तिणि सरि पाँणी भरण नूं, वहइ पणिहार अनंत ।
माहो-माँहि निरखी कहइ, ए केहो विरतंत? ॥३२८॥

चंगो माढू हे सखी, पंथी किसी अवत्थ? ।
पसूआं जिम पाँणी पीयइ, नीर न मेलइ हत्थ ॥३२९॥

रातो थों परनारि-स्यूं, चलण कहह्यो थो सत्थ ।
ऊ वारू नी इण लूहीयो, कज्जल-लग्गो हत्थ ॥३३०॥

चंगो माढू हे सखी, कांइक ऊलू अंगि ।
कर राखइ कर भींजवइ, पांणी पीयइ कुढंगि ॥३३१॥

पसुआं पांणी नां पीयइ, मृग जिम पीयइ मृगेण ।
कइ कर कुंकुम गह लीया, कइ गाहा लिखी रसेण ॥३३२॥

चंगो माढू हे सखी, सुंदर तन सुकमाल ।
पसुआँ जिम पाँणी पीयइ, पांणा सरवर-पालि ॥३३३॥

रातो थो परनारि-सूं, आवण कह्यो थो रत्त ।
इवा आई उ न जाग्गीयो, तिण अक्खर लिखीया हत्थ ॥३३४॥

(चौपई)

शीतल छाया तिह सुरसाल, पणहट विट पण,हारी वाल ।
खिण इक लगि तिहाँ, सारी कुमरी व्याकुल थियाँ ॥३३५॥

(दूहा)

"पंथी चालि,नवि लंवि करि,...................................॥३३६॥

चोल करी निज [illegible] [illegible] [illegible] नगरी [illegible] ।
चीतवतां ईं [illegible], [illegible] मिल्या [illegible] ॥३७६॥
हीरा नेह हय थट घटे, [illegible] नही को ग्यान ।
सुत वांसइ मूक्यो पिता, [illegible] मिल्यो परधांन ॥३७७॥

पुन्य प्रकार पोते प्रबल, हुई [illegible] पूगी हाम ।
आइ मिलइ चित चाहतां, मनवंछित सहु कांम ॥३७८॥

पूछइ निज परधान तूं, लिखियो कुंवर लेख ।
पुरे भोजराजा दिसे, वांचइ विगति विशेष ॥३७९॥

दूत जिकूं अम्ह दाखवउ, सो जांणे सहु साच ।
नही तो ऊडंतो लगे, नगर-मुहे नाराच ॥३८०॥

प्रभु-कागल ले दूत सों, आयो पुरि अधिकार ।
सामि कांमि आखइ करी, आप तणउ आचार ॥३८१॥

"मुझ राजा सुणि राजवी!, इम आखइ अम्ह साथि ।
कुमरी तुझ वांधी करो, आपे एणइ साथ ॥३८२॥

खुसांय वे-खुसीये करी, जो न कीयउ ए काम ।
तो तूं जांणे तो भणी, रूठो सही जमराज!" ॥३८३॥

सुणि राजा अति कोपीयो, सहीयो वयण न तास ।
सीह कदेई नां सहइ पाखर अनइ पर-आस ॥३८४॥

यतः

तेजी न खमइ ताजणो,........ ॥३८५॥
जा जा रे चर जाह तूं, तोस्यूं केही रीस ? ।
आयो जांणइ सदय नं, पूरण भोज जगीस ॥३८६॥

केता सूणि विह कुकूआ, सांमी करू पुकार ।
मेलि केलि करती मुझनइ, नवल सुरंगी नारि ॥३४७॥

(चौपई)

इम अनेक तिहाँ करती विलाप, पुण्यवंत लागा किरि पाप ।
कसमस करि ऊगायो भांण, गई राति फूल्यो सुविहाण ॥३४८॥

ऊठ्यो सदयकुमार दुख घणउ, उमाहो पणि देखण-तणउ ।
करि दाँतण कुरला ससि सार, तिहाँ थी आयो नगर-मझारि ।३४६।

गाँम नाँम सगलो पूछीयो, कुंभकार घरि डेरो लीयो ।
ततखिण गृह सावलिगा तणइ, चुणीयइ अंग रहण आपणइ ।३५०

लागइ तिहाँ सिलावट घणी, वनि जे अरथी रोजी तणी ।
सावलिगा नइ तस भरतार, चोपड खेलइ मेड़लइ मझारि ॥३५१॥

फिरयो पुर-मांहि कुमर प्रभाति, देखण तणी न पूजइ घाति ।
कुमरी देखण अलजोयो घणो, कीध्यो वेस मजूराँ-तणो ॥३५२॥

तेवे जिहाँ खेलइ नर नारि, लागइ जण जिण महल अपार ।
पूछि मजूरी लागो तेह, खेलत ओय दीठी ससनेह ॥३५३॥

(दूहा)

खेलंती दीठी खरी, सावलिगा ससनेह ।
हरखित बोल्यो हेजस्यूं, जाणा विण निज देह ॥३५४॥

"सावलिगा !" सूदो कहइ, ओ चंपलो चितारि ।
नयणां तणा पसाव करि, भइ वइदानो गारि ॥३५५॥

महल सहल मइं मुकुले, खेलत पासा रारि ।
तुरित ओया सुणि बचन, ते संकी चित-मझारि ॥३५६॥

(चोपई)

असि कृपांण तोमर शर कुंत, तीर वहइ किरि गगन राकुंत ।
सुभट-सुभट गज-गज अस-आस, वहइ ग्यान रगता मिप रास ३९५

वहइ वेपू डी दस वार, सदय कटक सकस तिणवार ।
भाजे कटक गयो तव भागि, छूटो भोज सुदय पगि लागि ॥३९६॥

आण्यो सदय भोजइ निज पुरो, परणाई सा निज कुंअरी ।
कर-मूंकावण करंकांण, अइ पण कुंअर न करइ प्रमांण ।३९७

कुंवर कहइ एहने घरवार, जे छइ नर नारी परिवार ।
पील्हो सहु घाणी महिं घाति, मत्त राखो एहनी तिल जाति ॥३९८॥

सदय कहइ द्यो मुझ ससनेह, वांधी धनदत्त सेव सगेह ।
वात गैर कीधी तव तास," सेठि वांधि आण्यो नृप पासि ॥३९९॥

सेठ कहइ "ल्यो धन भण्डार, खून विना ए वडी मारि ।
भोजराज परवानि फिरइ," इसी वात साहिब किम करइ ॥४००॥

आखइ कुमर सुणो नृप वात, सावलिगा नारी विख्यात ।
जो द्यतेइह तो छूटो एह, आपू धन नइ सूंपूं गेह ॥४०१॥

भोजराज धनदत्त-नइं कह्यो, सेठइ पणि ते सहुं सर दह्यो ।
समझाया सुत वंधव याति, सगले ही मांनइ ए वात ॥४०२॥

(श्लोक)

त्यजेदेकं कुलस्यार्थे ग्रामार्थे च कुलं त्यजेत् ।
ग्रामं जनपदस्यार्थे आत्मार्थे सकलं त्यजेत् ॥४०३॥

(चोपई)

भोजराज रण-झूंझण काज, कीधो सगलो ही तव साज ।
गिर समवडि गड हुंति, मदोन्मत्त बहु मधुप भ्रमंति ॥३८७॥

काठी अति ऊंचा कूदणा, ते तेजी देखीता भला ।
चंचल चपल चलत चतुरंग, खग तुरंग कि गंग तरंग ॥३८८॥

पयदल सबल विमल चलवंत, चढीयो नृप दल मेलि अनंत ।
सदयकुमार चढियो इणि वार, सिंधूडइ वाजंतइ सार ॥३८९॥

कंचुक कवच कसइ कसमसइ, धरे धीर पणि अंग धसइ ।
साँमल वरण धरण मद धीर, सुभट घटा घन घट गंभीर ॥३९०॥

(दूहा)

अनए रावण सम समुद, मदवारण मातग ।
चढीयो तिण गज सदय नृप, सिर सिंदूर सुरंग ॥३९१॥

बेऊं दल मिलिया बहसि, मिलिया बे रणभूमि ।
परसिरि खुरसांणे चढे, हूअ हथियार सधूम ॥३९२॥

पगति इंद्र सुरगण सकल, सूरिज थयो सकस्स ।
धर कंपइ गिर थरहरह, इसीयाँ सूराँ रस ॥३९३॥

धर धूजइ दल धूंकलइ, कायर चित्त कंपाइ ।
सूर पतंगा रंग-स्यूं, झुकि झुकि मांझि झंपाइ ॥३८३॥

धड कूदइ सिर ऊछलइ, गूथी हर वरमाल ।
सगति रगत पाँमी करी, धाइ तिण धकचाल ॥३९४॥

(दूहा)

"सूदा ! [सावलिंगा कहइ"] घन गुयासर आज ।
प्रीतम मिलिय घृति हुई, कज्जां सहु सरीयां ज ॥४११॥
पूनिम-चंद मयंक जिम, दिसि च्यारे फलीयाँह ।

(चोपई)

ले रमणी उच्छक अति घणइ, चाल्यो कुमर नगर आपणइ ।
चढि साथि सेना अति घणा, सुणि लीयइ ततखिण सांवली ॥४१२।

मादल संख दमा मा वीण, मंगल गीत अनइ जुग मीन ।
पुत्र सहित युवती स्त्री गाई, विप्र तिलक मुखि वेद सुहाई ॥४१३॥

हाथी, पूरण घट कन्यका, दधि फल पुष्फ दीप वन्हिका ।
वेस्या सूहव स्त्री सुकमाल, पुलकित नयणी वयण रसाल ॥४१४॥

हरित द्रोब अक्षत ऊजला, सपलांण तेजी अति भला ।
भद्र पीठ चामर नइ छत्र, गोरोचन घृत मइ सितपत्र ॥४१५॥

इम अनेक तमु नगर मझार, सकुन थया अति घण सुखकार ।
दखिण-थी वामी दिसि जाई, मंगल तो कारिज सिध थाई ॥४१६।

(दूहा)

अंगत घूणह मंडलह, जउ निग्गमण करंति ।
जे धण-नाह विवज्जीया, घरि कदही नावंति ॥४१७॥

जउ मंडल दाहिण सरइ, नयर-प्रवेस धरांह ।
तिहां जयमंगल सिर विजय, रिद्धि वृद्धि नरांह ॥४१८॥

[धनदत्तश्रेष्ठ वचन]

(दूहा)

"पायो सुख इणथी नहीं, करे नवि धरीयो तिण नेह।
व्रतग्राही परि बोलव्या, इणि दिन अपणइ गेह" ॥४०४॥

(चौपई)

इम आलोचि दोधी सा बाल, नर नारी मिलिया सु-रसाल।
परहत्थ चढी ए कीधी मोल, जोज्यो इहां विधाता-खेल ॥४०५॥

(दूहा)

किण-रो ही किणनइ दीयइ, आंणइ वलि तसु पासि।
जन कोई न विलखि सकइ, जे विधि तणउ बिलास ॥४०६॥

(गाहा)

राउ करेई रंको, रंको पुण करइ राउ सारिस्सो।
जंन धरिज्जइ हीयए, विहिणा तं किज्जए सव्व ॥४०७॥

कह मंती कह राया, कह उझायस्स तहय अझयणं।
कह पुप्फावई मिलणं, पिच्छिव्वह विहिए रि सासंती ॥४०८॥

नियडं करेइ दूरे, दूरत्थं चेव आणए नियडं।
जह सो वाय नरिंदो, मिलीयो विहि विलसीया तत्थ ॥४०९॥

जं चांदणम्मि अहिणो, संझा समयम्मि मायरंवत्था।
मिलियो वह दिवसाउ, तहेव कुमरो रमारम्भं ॥४१०॥

कवहू हय फेरइ हरखि, कवहूं गज रमणीक ।
सांमी ना वइसी करी, वूझइ प्रेम त्रिभोक ॥४४७॥

(यतः)

पीयरस तीय-रस सप्रसन्न रस, हूय-रस हीयइ न जास ।
संकल-वंधा सुणह-ज्यूं, गयो जंमारो तास ॥४४८॥

उवा रजवटि उह रसिकता, दोउं मनज विलास ।
सावलिगा उर थकी भए, पुत्र च्यारि सुप्रकाश ॥४४६॥

रीति नीति राजा रमइ, पासइ च्यारे पुत्र ।
मानूं हेमाचल मिने, दिग्गज च्यारि पउत्त ॥४५०॥

सदयवच्छ राजा सुपरि, भांमणि-स्यूं वहु भाव ।
प्रतप्पइ च्यारि पुत्र-स्यूं, दिन दिन दोढइ दाव ॥४५१॥

(चोपई)

श्रीखरतर गच्छ गगन दिणंद, प्रतपइ श्रीजिनहर्ष सुरिंद ।
शिष्य तास वहु विवुध विचार, दीपक दयारत्न दिनकार ॥४५२॥

मुनि कीरति-वरधन शिष्य तासु, बंधव जे राखण रंग राशि ।
गुरू अनुमति निज मति उल्हास, एह कीयउ मइं प्रथम अभ्यास ४५३

पामइ नर पदमिणि सुविलास, पदमणि पामइ नर सुख वास ।
भणतां लाभइ बंछित भोग, सुणतां प्रीतम-तणउ संयोग ॥४५४॥

वालम प्रेम तणी विरहणी, जेहना बलि परदेसइ धणी ।
रति-वंच्छक जा निसुणइ सदा, पांमइ पदि पदि सुख संपदा ॥४५५॥

ग्राँम प्रवेसि त्रिया-कजि, भय करइ नीसारि ।
दाहिण सुण होए रसां, लीजइ सार विसार ॥४१९॥

वायस जिमरणा ऊतरइ, हुवइ सावडू ज स्वाँन ।
सावलिगा "[सूदो कहइ], पगि पगि पूरिस प्रधाँन ॥४२०॥

एको वेढी लूकडी, अर सावडू सियाल ।
सावलिगा [सूदो कहइ], फलइ मनोरथ माल ॥४२१॥

डावो राजा जीमरणी जइ भैरख किल लाइ ।
सावलिगा [सूदो कहइ] अफल्या वृक्ष फलाँइ ॥४२२॥

वानर नकुल रू चीबरी, वले दाहिणो चास ।
सावलिगा ! [सूदो कहइ], फलइ मनां-री आस ॥४२३॥

सड वह सार सखर तुरी, डावा लाली हुँति ।
सावलिगा [सूदो कहइ], अफल्याँ वृक्ष फलंति ॥४२४॥

स्याल सूरण काली चडी, वायस राजा तेम ।
ए सुंदरि वामा सदा, दीयइ अचिंत्यउ प्रेम ॥४२५॥

(दूहा)

जंवू हास मयूरे, भैरदा हेत्त वे हेव नोन लेय ।
दसरण मेव पसिद्धं, दाहिणे सत्र वास वर्स नीपती ॥४२६॥

खर खमावि सहर जीमणो, डावा लाली हुंति ।
कंत मलेज्यो संबलो, संवल तेह दीयंति ॥४२७॥

कूभ करे वो चीवरी, हणमंत नइ हिरणाँह ।
एता लेई जीमणा, वीजा सहु वामाह ॥४२८॥

(दूहा)

९ ७ ६ १

संवत निधि मुनि रस ससी (१६७९), विजयदसम ससिवार।
चर चाहि चोपई रची, मुनि केसव सुविचार ॥४५६॥
वेधक जो वाचइ सुणइ हुई तस वंछित हांम।
ज्यूं सार्वलिगा सुख लह्यो, सदय मिल्यो सुभ धांम ॥४५७॥
तव मइ यह रचना रची, कविजन परम कृपाल।
मुणि कि सीखहु रसिक जन. कीज्यो दया दयाल ॥४५८॥

इति श्री सदयवत्ससार्वलिगा चउपई सम्पूर्ण।



लिखिचित्रामि-(सं.) चित्र+कर्म (प्रा.) चित-अम्म, चित्राम।

३१ धाइ-'धाइ' वांचिये। (सं. धावति)। किरि-उत्प्रेक्षाके सूचक पद।

३२ संकल- (सं.) शृङ्खला। झार-अणी।

३३ पगर-(सं.) प्रकार-समूह।

३४ रेवणो-(सं.) रेव् धातुसे।

लाख-इनाखइ। 'न' का 'ल'।

३५ दोसी-(प्रा. दोसिस, सं. दूष्य-वस्त्र, दूष्येन व्यवहारति स. दौष्यिकः) कप्पड के व्यापारी।

परिखि-परीक्षकः। सुना चांदी के।

फडीआ-(फा.) अन्न विक्रेता। फोफलीआ-(सं.) पूग फल (प्रा.) पोफल (जू.-गू.) फोफल, उनके व्यापारी। सार-(सं.) सहकार, (प्रा.) सहआर, सार, साहाय्य, रक्षा।

३६ हालकलोल-(प्रा. हल्लकल्लोल)

पोतां-(सं. पोतानि) वस्त्र। किरियाणां-(सं. क्रयाणकानि)

३७ पाधरि-(सं.) प्राध्वरे। सरल मार्ग में। लूसइ-लूटे।

सीकिइं-थ्यां-(सं.) शिकद।

३८ गयद-(सं.) गजेन्द्र। सुर-हट-सुरा के हाट।

३९ पचायण-(सं.) पंचानन, सिंह। पाखरिउ-स्वारी किया हुआ।

४० सुंडाहल-(सं.) शुंडाफिल, दन्तूशल।

४२ पसाउ-(सं.) प्रसाद, भेट-रूपी पदार्थ।

४४ नवबारहि-(सं.) द्वार। देखिये, गीता। "नवद्वारे पुरे देही"।

आधरणि-(सं.) अग्रगर्भिणी, पहली बार गर्भ धारण करनेवाली कुलस्त्री।

धवल-धूणि-धवल, मंगल गीत के ध्वनि (धूणि)

वेअ-वेद।

४६ सइंहथिइं-(सं.) सीमन्त केशों का ग्रथन। देखिये कड़ी ६४।

टिप्पणी

मंगलाचरण में क्रमानुसार ओंकार, ब्रह्माणी, सरस्वती, गौरीनंदन गणेश और, 'पूर्व सूरि' कहने योग्य कवियोंको प्रबंधकारने वंदन किया है।

कड़ी १ - **महामाई**-महामातृका।

६ **खित्तीय**-क्षत्रिय। **पहु**-प्रभु।

७ **पत्थतई**-प्रार्थयताम्। प्रार्थना करने वालों का अभिलाप (अर्थ) पूर्ण करता हैं।

८ **चउवेई**-चतुर्वेदी-चौवे।

९ **निदण**-निर्धन। **कणवित्तिया जीवो**-कण वृतिआजीवी। देखिये कड़ी २४, कुलवित्ति।

घरणि-गृहिणी। **नराहिव** -नराधिप।

पच्चूसे-प्रत्यूषे। प्रभात में।

१० **पयासियं**-प्रकाशितं।

११ **सुविज्जउ**-सुविद्यः।

१२ **प्रच्छइ**-पृच्छति। **जंपइ**-कथयति। कथ् धातुका प्राकृत आदेश।

दिट्ठि-दृष्टि।

१६ **वरलिउ**-उक्तवान्। तुम जो बके हो।

२० **विह-पाहिइं**-तीन पेर वालेसे (अधिक)।

२२ **सरिस** सदृश। देखिये, 'सुपुरिस-सरिसी' कडी १३।

२३ **भुंहिरइ** (सं.) भूमिगृहम्-भूमिहरं (गु.) भोंयरूं।

२४ **अलीअ** (सं. अलीक)-मिथ्या। (गु.) अेले, आले,-आलें। देखिये 'आलि,' कड़ी ९८।

२५ **तिलय नइ ठामि**-तिलकनइ ठामि-ललाटे।

२७ **मुणइ**-संज्ञा धातुका आदेश। **गज-पाखलि**-गजके पक्षमें आसपास

२९ **सलसलो सकइ**-हाली चाली सकइ।

७१ पवाडउ-(सं.) प्रवाद प्रगटित ।

७१ पसाइं-प्रसादेन । कृपा से । पहीस-(सं.) पृथ्वीश ।

७३ चाचरि-(सं.) चत्वर, अगन मे । लहुड (लहुअ) पणा (सं.) लघुकत्वेन, छोटेपण । श्रंगी-करइ अंगीकरै । देखिए कडी ८७ ।

७९ सूजीय वन्नर वालि-(सं. वन्दनमाला) देखिये । नंददासकृत मानमंजरी । "धुजावलि जनु मदनगृह,बाधा बंदनमाल" । छोटी धजा और तोरण ।

अगालि (सं:) अकाले ।

८० वद्धावी (सं.)वर्धापन, (प्रा) वद्धावणी बधावा निमित्त ।

पडसद्दे-(सं) प्रतिशब्द, पडधा ।

८१ कइवार-सत्कार ।

८३ कणय-(सं.) कनक, सुवर्ण । कच्छाहि केकाण-कच्छ देश के प्रसिद्ध अश्व ।

८५ मुत्ताहल-(सं.) मुक्ताफल, मोती ।

८६ मुहुत्ता-(स.) महामात्र, अथवा महत्तर से संबधित मुख्यमंत्री । महूतक, महेत्ता, मुथा आदि अपभ्रंश रूप प्राप्त है।

भूप जमलउ (सं.) यमल, बराबरीके, एक जोड़ीके, ऐक सरीखे ।

९१ रूसइ-(सं.) रुष धातु रोष करे ।

९२ मतिपयहपणूं-(स.) मंत्री पद । इधर षष्ठीके द्विर्भाव प्रयुक्त है । 'ह' (स्य) ओर 'पणू' (सं त्वन, पण) ।

९३ पाली-एक नाप जिसमें सात सेर कच्चा रहता है ।

अरक-(सं.) अर्क-सूर्य ।

९५ कालमूहुअ-(स. कालमुख:)श्याम वर्ण: ।

९६ ताग- अंत ।

१०० अहिठाणि-'आ' प्रतिका पाठ 'अप्पाणि' विशेष युक्त है । सं. अधिष्ठान । उलग-सेवा ।

१०३ सुरक-सु रक सु-शत पढ़िये । सुतरां रंक: अत्यंत रंक, ऐसा अर्थ

पस पूरइ-(सं.) प्रसृति+मंगल श्रीफल और अन्य द्रव्यों से हस्ततल का पूरना।

४७ घाट-रेशम का वस्त्र।

४८ असुण-(सं.) शकुन, (प्रा. सउण) अपशकुन। देखिये कड़ी ८१।

४० गजर-(सं.) गर्जना। सगू सणोजू-सं. स्वकम्, सगू। सं. स्नेहजं-सनेह,सणोहजं। देखिये कड़ी ९०।

४१ राउत-सं. राजपुत्र, प्रा. रा+उत्त।

वसह विशुद्ध- (सं. वंशस्य) विशुद्ध वंश के।

४३ आहदि अहंग-युद्ध अभंग।

५४ जूवटइ-(सं. द्यूत+वर्त्म, प्रा. जूयवट्ट) द्यूत मार्ग, द्यूतस्थान। पहुवच्छ-जाइ-प्रभुवत्स जातः, प्रभुवत्स का जाया, सदयवत्स। दूहवइ-(स.) दुःखयति। डारिउ-डर बताया।

५५ वाहर-साहाय्य।

५७ जम-मुहि-यममुखे।

५९ असिमर-'असिवर' चाहिये। असिओंमें श्रेष्ठ। देखो कड़ी १४६

६० करिमालि-(सं.) कारवालेन।

६२ मेगल-(सं.) मदकल, मदसे कल मनोहर हस्ति। और 'मदगल,' जिसके गंडस्थल से मद गलता है।

पवरिस पार-(सं.) प्रवर्षका पार।

६४ पुहव्व-(सं.) पृथिवी, प्रा, पुहवी, पृथ्वी।

६५ समोपी-(सं. समर्प) सौंप दी। जुहार-(सं. जयकार) प्रणाम। विमणउ-(सं.) द्विगुण, (प्रा.) विउणउ, दुपट्ट।

६८ लज्जरयउ-पढ़िये। लज्जित हुआ। देखिये कड़ी ६९।

तीसरी पंक्ति-सुधार के पढ़िये। गजगजण। लज्ज जइ (लज्जिक्रिमइ।'

चतुर्थ पंक्ति-सुधारके पढ़िये। 'किम कि जय-सद्द सुसमर तिमइ

७० राणिमनइ-'राणिम नइ' पढ़िये, राजत्व, राणाका पद 'राणिम'।

१२४ बंधेवा- (सं. बन्धुम् प्राकृतमें तुमुका, एवं गच्चा) हेत्वर्थ कृदंत । बन्धन करने के लिये। देखिये कड़ी १३४, 'आणेवा भणी', और कड़ी २६४।

केत्थउं-(सं. कुत्र, प्रा. कत्थ) किहां ।

१३६ (राज अन्यार्थ) जिसां सहइ-जि, सांसहइ, जे को सहन करे । देखिये कड़ी १३८, 'किम सांसहइ' ।

१२८ पयड-(सं. प्रकट) स्पष्ट रूप में ।

१३० राजा-पाहिइं-(सं. पार्श्व; प्रा. पास पाह-पाहि, पइं, पें) एवं अनेक रूप में प्रयोग मिलते है ।

१३६ सहि हत्थिइ-'सहि हत्थिइ' पढ़िये । (सं. स्वहस्तेन) अपने हाथमें

१३९ मइलउ-(सं. मलीन) अपवित्र, दोषयुक्त ।

१४० सदव-'सप्प' पढ़िये (सं. सर्प) ।

१४१ पहिली पंक्ति सुधारके पढ़िये । 'नह मास मेय जणणो, दो मुहलो हहि खंडण समत्था ।'

१४३ मंड-गेहु की मिष्ट रोटी । गुजराती में मुहवरा है: 'मनने गम्या ते मांडा, ने लोक कहे ते गांडा ।'

१४३ सउणभणी-(सं. शकुन प्रा. सउण) शुभ शकुन मानुनेके लिए देखिये कड़ी २४६ ।

१४४ सद्द-(सं. शब्द) आवाज़ । धवलहर-धवलगृह ।

अंतरि-(सं. अंतःपुर, प्रा. अन्तेउर) अन्तेउरि पढ़िये । स्त्रियों का निवास स्थान ।

१४६ असिमर-'असिवर' पढ़िये । श्रेष्ठ तलवार ।

१४९ सूर-'सुर' पढ़िये ।

१५३ माइ-मोई । पीहर-(सं. पितृ गृह, प्रा. पीइहर) पीहर ।

१५४ पूठि-'पुट्टि' पढ़िये ।

१५९ जंघजूअल-जंघ जुअल (सं. जंघा युगल) ।

१६० निलवट-(सं. ललाट पट्ट) ललाट में ।

भी हो सकता है।

चिंतारयण-चिंतारत्न, चिंतामणि। जो चिंतवन करे सो प्राप्त कराने वाला अमूल मणि। **कित्तउ**-(सं. कियत्), कितना भी। **बीय मयक**(सं.) द्वितीया (बीज बीय) का मयंक (सं. मृगांक), चन्द्र। शुक्ल द्वितीया की चंत्रलेखा घड़ी भर के लिए दृश्यमान होती है।

१०६ **धमी धमाविउ**-धमीधमाविउ (एक शब्द), धमधमाया।

सदस्यवत्स-'सदयवत्स' पढ़िये।

१०७ **ऊलग**- सेवा।

जुहार- जयकार, जयहार, जउहार, जुहार, प्रणाम।

१०८ **रउद्द**- रौद्र, रुद्र स्वरूप, भयंकर।

हास।मिसिइ-(सं. हास्यमिषेण) हास्य का निमित्त बताकर।

१०९ **नीच**-नीचु। दृष्टांत अलंकार। **निठाडइ**-निद्धाडइ। तिरस्कार करके निकाल देना।

११० **जीहां**-(सं. जिह्वा) 'जीहा' पढ़िये।

१११ **भमहि**-भ्रू, भृकुटि।

अचरिज-(सं. आश्चर्य, प्रा. अच्छरियं)।

११३ **ऊहटइ**-(सं.) अवघटयति।

११४ **ताजणउ**-(सं. तर्जनकम्) चाबूक।

११७ **राउल**-(सं. राजकुल) राजका निवास-स्थान।

रान-(सं.) अरण्य; (प्रा. रण्ण, जू. गू. रान) जंगल।

११८ दूसरी पंक्ति सुभाषित के रूप में प्रसिद्ध है।

संबल-(सं. शम्बल) भाथुं; (सं. भक्तोदेनम्)। भत्था।

११९ **प्रणीमूं**-प्रणामूं पढ़िये।

१२२ **मइंमारिउ**- मइं मारिउ। पढ़िये।

छरइ-धरइ पढ़िये। **सयल**-सकल।

१२३ **आयस**-(सं. आदेश) आज्ञा।

'केसू-कली अति बांकुली, आंकुसी मगन जी भांति।
विरही नां इणि काति, कालिज्य मादे नाति ॥'

तिवास निवास पढ़िये ।

२१६ **कवक** 'वक्क' पाठ होना चाहिये ।

२१९ **धजवड** (सं. ध्वजपट)। **पडिआर**-(सं. प्रतिहार) ... प्रतिहार के रूप मे स्थित ।

२२३ **सूंदा पाहि**-'सूदा पाहि' पढ़िये ।

१३२ **आलवइ**-(सं. आलपति) आलाप करती है।

२३३ **पांगति** (सं. पंक्ति) ।

२३६ **सांइ**-(सं. स्यामी) स्वांमीने सार्वतिगी की भांति ...

२४२ **जुहार**-(सं. जयकार) जय बोलने के बाद प्रणाम ।

२४३ **पुहर पंथ**-एक प्रहरमें पहुंच सके इतना दूर । अति दूर नहि ।

२४४ **धूआ**-(सं. दुहिता का ये प्राकृत रूप है) पुत्री।

वछूं-'वंछू' पढिये ।

२४६ **अवद्धडी**- (सं. अवधि)।

२४९ **साउलउ**-(सं. मातृकुल प्रसिद्धः)।

२५४ **परतु**-(सं. प्रतीत) सच्चाई का अनुभव ।

२५९ **गुज्झ**-(सं, गुह्य) छुपाने लायक कोई वात ।

२६० **सउकि**-(सं. सपत्नी)।

२६६ **लीलीं-गई**-'लीलागई' पढ़िये ।

२७३ **सपराणी**-(सं: सप्राणा) चेतनवती, उत्तम श्रेष्ठ ।

२७८ **जमहर**-(सं. यमगृह, प्रा. जमहर) राजपूत इतिहास में शत्रु का विजय देख के राजकुल की महिलाये 'झमोर' करतीं थी। ये अग्निकुंड में भस्मीभूत होती थीं। यमगृह प्रवेश अथवा आत्मघात का अर्थ में **प्रयुक्त** है।

२८६ **सीदाता**-(सं. सीद् धातु) दुखित होना, दुख पाते हुए ।

२८७ **गांगेय**-भीष्म । **माणि** अभिमान रखने में । कविका महाभारत

ताडीक-'ताडक' पढ़िये।

१६१ मयरकेत-(सं. मकरकेतु) कामदेव।

१६२ खड-'खंड' पढ़िये।

१६६ 'उदउ' भणइ- उदय हुआ, ऐसी आशीष, भणती जोगिणी दाहिनी जाती है।

१६९ डाउ-'डावउ' (वाम वाजु) पढ़िये।

१७५ देवा-देवी।

१७६ सविहूंगमइ-सविहूं गमई।

१७६ सुर-(सं. सूर्य) 'सूर' पढ़िये।

१८८ पलीथ-'पलीय' पढ़िये।

१८९ बिलकिलिउ-व्याकुलीउ व्याकुल हुआ।

१९१ नस मास-'नस मास' पढिये।

१९४ अहिठाण-अधिष्ठान। पहिठाण-प्रतिष्ठानपुर।

१९५ पवरिस-पौरुष।

१९७ कउडी-(सं. कपर्दिका प्रा.) कवड्डिया कउडा। कौडी। द्यूत खेलन में इसका उपयोग होता है।

१९८ भव भगति-सारा आयुष्य भरकी की हुई भक्ति।
हेला-रमत मात्र में।

२०१ पचार-उपचार अर्थ में समझना चाहिए।

२०३ उलगि-'उलगि सु' पढिये। उलगि स्यू सेवा करूंगी।

२०५ ऊखाणउ (सं. आभणिकम, प्रा. आहाणउ), उपाख्यान, लोकोक्ति। देखिये कड़ी ३४८।

२०६ रणा-(सं. अरण्य)। देखिये 'रान' कड़ी ११७।

२०९ सुरहि-सुरहि (सं. सुरभि) सुगंधी।

२१२ वुलंव-'फुलंव' पढ़िये। नीयवेलि-नागवेलि।

२१४ वकडीयाकुलीय पयडीय पलास-समान भाव के लिये देखो 'वसन्त विलास', लिपिसंवत १५०८ का दूहा।

३२५ अहिणवउ (स. अभिनवः) नवीन ।
खोबि भरन्ती-कुमार के दोनों हाथों में सम्बन्धी जन मांगलिक पदार्थ भरते हैं।

३३३ पहु-जाउ-(प्रभुवत्स-जातः) प्रभुवत्स का पुत्र ।

३३६ कईवार-(सं.) कवित्व उच्चार ।

३४० वोलाविउ वहनेवी-(सं. भगिनीपति, प्रा. वहिणी+वइ) वहनोई ।

३४० छःदरशन-जीव जगत और ईश्वर सम्बन्धी चिंतनका छः प्रमुख मार्ग को 'दर्शन' कहते है ।
सांख्य, योग, वैशेषिक, न्याय, पूर्वमीमांसा अथवा धर्ममीमांसा, और उत्तरमीमांसा अथवा ब्रह्ममीमांसा याने वेदान्त । दूसरी-गिनती में बौद्ध दर्शन और जैन दर्शन को भी शामिल किया है और लोग चार्वाकमत को भी शामिल करते है ।

३५४ देसाउर-(सं. अपर देशः) परदेश ।

३५९ सुपुरुष और नृसिंह-(नरसिंह) नामसे सयर (स्वैरे) स्वतंत्र है ।

३६३ धसाद्दस-धसाधस पढ़िये ।

३६५ साविज-(सं. श्वापद, हिंसक पशु: पक्षी के अर्थ में) । इसका प्रयोग देशी भाषाओं में उपलब्ध होता है । सं. स+वाज (पांख ?) से व्युत्पन्न होना सम्भव है । देखिये, भालणकृत 'कादम्बरी', पूर्व भाग 'शुक सारिका साविज मांहि, वोलि पटु प्रकाश ।'

३७३ पडसाँहि-(सं. द्यूतपट) चौपट की बाजी ।

३८७ धावलहर-'धवलहर' पढ़िये । (सं: धवलगृह; प्रा. धवल हर) सुधाधवलित गृह ।

३९१ लच्छि-(सं. लक्ष्मी); देखिये गुजराती गौरीगत में लक्ष्मीवंत के पुत्र का उल्लेख 'ओ लाछाकुंवर' । देखिये कड़ी ४०२ ।

३९७ आवर्जन-अनुकूल करने के लिए उपचार ।

के पात्रों का अच्छा परिचय इस प्रशस्ति से प्रतीत होता हैं।

२१ **वड वाहृमि**-वड़े (संदेश) वाहक ने वर्द्धापनिका दी।

वद्धामणी (सं. वर्धापनिका) अभिनन्दन।

२३ **सींकिइ**-'सींमिइ' (सीमाडें में) पाठ ठीक रहेगा।

९९ **पाधरउ**-(सं. प्राध्वरक.) रास्ते में पाउं से चलने वाला मामूली आदमी।

१०० **बारहट्ठ**-(सं. द्वारभट्ट, प्रा. में वारहट्ट) जो लोकभाषा में 'बारोट' नामसे प्रसिद्ध है।

२०१ **मेलउ**- 'मेलउ' पढ़िये। मिलाप कराया। **हर हेत** हर (ईश) के कारण से।

२०६ **पंगुरण**-(स. प्रावरण) उत्तरीय वस्त्र।

२०८ **मउडद्धय**- (सं. मुकुटवद्धकः, प्रा. मउड गू मांड)। मुकुट को धारण करने वाले। 'मुडुवा' शब्द इससे आया हुआ मालूम होता है।

२०९ **सेणाहिव**-(सं. सेनाधिप)।

२१० **वेयभूणि**-(सं. ध्वनि; प्रा. झूणि) वेद का घोष।

२१२ उपान्त्य पंक्ति को सुधार के पढ़िये -'आगइ कामुकीय कामिनी, अनइ वसंतनिसि-ऊजली।'

२१४ **रलीयाइति**-('रली' आनन्द के अर्थ में) आनन्दित।

२१८ **खेवि**-(सं. क्षेप) वेग में जो चडते हैं। **सालिहुंत**-(सं. शालिहोत्र) अश्वशास्त्री। लक्षणा से सर्व शुभ लक्षणोपेत अश्व का बोध होता है।

२१९ **पात्र**-नर्तकी। इस शब्द अपभ्रंश के रूपमें पातर अर्थात् सामान्य गणिका का अर्थ में होजाता है। नृत्य शास्त्र का संपूर्ण अभ्यास के बाद नर्तकी को 'पात्र' पद प्राप्त होता है। देखिये 'समस्ताभ्यास-संयुक्ता, नर्तकी पात्र मुच्यते'। सुधाकलशविरचित 'संगीत सारोद्धार' में।

तृण-पइं ते हलूउ थाइ।'

४७९ समान विचार का अनुसंधान के लिए देखिये 'माधवानल काम-कंदला प्रबंध।' अंग ६, दूहा ५८-१०४।

४८१ सुरहां-(सं. सुरभिताणि; प्रा. सुरहिआ) सुगंधी सुवासयुक्त।

४८६ अनोंथ-(स. अन्यत्र, प्रा. अन्नत्थ)।

४९१ वेश्या-निंदा के लिए देखिए 'माधवानल कामकन्दला प्रबंध' अङ्ग ७, दूहा २४३-२४६।

४९५ लांच-(सं. लचा) अनधिकृत द्रव्य की लालच।

५०० आपणपूं-(सं. आत्मीय, आत्मान अपना।

५०१ आवरजइ देखिए-कड़ी ३९७। अनुकूल बनाती है।
जूजई-(प्रा. जुंयं जुय) भिन्न, पृथक।

५०२ आयस-(स. आदेश) आज्ञा।

५०३ असूर-(सं. उत्सूर्यम्' सूर्य को अस्तमान होने के बाद। विलंब न करो।

५०७ सपराणा-देखिए कड़ी ४३२।

५१४ आथि-(सं अर्थ) अर्थ से, द्रव्य से हार कर रूठ गया।

५१९ आफणी-(प्रा. अप्पणीयम्) स्वयं, खुद ही।

५२४ अलविइ-(सं अल्पेन आयासेन) सहज।

५२९ अहिनाण-(सं. अभिज्ञान, प्रा. अहिनाण) निशानी, एधाणी परिचय।
खात्र-(सं. खन् धातुसे शब्द बनता है)।
दिवार मे खुदने से प्रवेश होकर चौर्य कार्य होता है।

५३५ संभेरइ-(सं. संहरण) माल का संकलन करता है।

५३६ हडताल-(सं. हट्ट+ताल) हाट पर ताला लगाकर बन्द कर देना।

५४० नन्दलोकनइ-वणिकों को 'नंद' शर्म दिया जाता हैं। इससे नंद शब्द से वैश्य का बोध होता है। गुजराती में मुहावरा है

४०२ **दोसी**-(सं. दौश्यिकः) कापड के व्यापारी।
४०३ **माम**-ममत्व (प्रतिष्ठा) का अभिमान।
४०४ **नातरू**-(सं. नात्रकम् ? ज्ञांतेयं ?) स्नेह-सम्बन्ध ।
४१२ **दव**-'देव' पढ़िये।
४१३ **कलास**-'कैलास' पढ़िये ।
४१८ **ढोणां ढोईइ**-(सं. ढौकनानि) 'भेटणां'-उपहार अर्पण कीजिये
४२० **मुडधा**-(सं, मुकुटधारी; प्रा. मउडधा मुड्डधा) देखिये 'कान्हडदे प्रबंध' में खंड २ कड़ी ६९ ।
४२६ **मुन पकखेसि**-'मु न पकखेसि' पढ़िये। मुझे नहि देखेगा।
४३२ **सपराणी**-(सं. प्राण) प्राणवान अत्यंतका अर्थ में 'सविहु सपराणी' वाक्य खंड में 'श्रेष्ठ' ऐसा अर्थ ध्वंजित होता है।
४३६ **पढम**-(सं. प्रथमम्; अपभ्रंश, पढम) पहिला।
सरडु-(सं. सरटः) काकीडा।
४३७ **असुउणि**-(सं.अशकुन,अपशकुन) अपशकुनकी वेला में।
४३३ **ऊहडीनइ**-(सं. उद्धृत्य)।
४४६ **रढिल**-अति आग्रही। **डोह**-दोहन।
४४७-४८ **छोह**-क्षोभ। **वाउ**-वात।
४५२ **आरीसउ**-(सं. आदर्श; प्रा. आयरिसउ) दर्पण।
एकदन्ती-एक दन्त अवशिष्ट रहा है ऐसी परमवृद्धा गणिकाकी माता।
४६० **संपरदाउ**-संप्रदाय।
मत्तवारणउ-अरूखा में। **मूंधा**-मुग्धा। **दीति**-देदिप्यमान ।
४६१ **सधुडिउगीत**-ध्रुवा सहित गीतम्।
४६५ **पात्र**-देखिये कड़ी ३१९।
४६९ गुर्जर वैद्य का उल्लेख कवि-परिचयका सूचक हो सकता हैं।
४७४ **हलूई**-(सं. लघुक; प्रा. लहुआ) हलकी, मानभंग।
देखिये 'सुदामासार' काव्य में। "याचंता जे निर्मुख जाइ,

६१४ पण-महत्त-पण, प्रतिज्ञा का महत्व।
६१६ कसो-(सं. कष् धातु) कस, कसौटी करके।
६१८ तलवार की उपर नाम-मुद्रा अंकित करने की रूढ़ि प्रतीत
होती है।
६१९-आपोपइं-स्वयमेव।
६२१ अर्थांतर न्यास। सुभाषित।
६२३ सुंडाहलि-(स. शुंडाफलक)।
६२६ सइंहथि-(स्वयं हस्तेन) खुद अपने हाथ से।
६२८ सौजन्य-सूचक सुभाषित।
६३२ भडिवाउ-(सं. भटवाद) अपने को शूर मानने का अभिमान'
६३४ सेलहत-(सं. शेल्ल हस्ते यस्य,प्रा. सल्लहत्थ) गुजरातके खेडावाल
ब्राह्मणों में 'शेलत' की अवटंक प्रसिद्ध है।
६३५ कीधारेवणी-(सं. रेव् धातु) पलायन कर दिया।
६४० सांध-'संधि' पढ़िये।
६५४ उलवण-(सं. उल्लपन) आलाप संलाप।
६५७ आणूं-(सं. आनयनम्)।
परिग्रह-(सं: परिग्रह, प्रा. परिग्गह) परिवार।
६८३ उदाहरण-दृष्टांत। पुरावा। गवाहि।
६८५ सोधइ-'सोचइ' पढ़िये।
आदीसर-(आदीश्वर) जैनों के प्रथम तीर्थङ्कर, आदिनाथ
ऋषभदेव।
७०४ पुरिसत्तण-(सं. पुरुषत्व) पौरुष, पराक्रम।
७०६ ग्रास-भूमि का जो खंड दान में दिया जाता है। 'ग्रास' पाने
वाला 'ग्रासिया' कहलाता हैं।
७१० साथ समाहरण-साधन सामग्री।
७११ वन्न अठार-चार प्रमुख वर्ण ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य, और शूद्र
'नव नारु', और 'पंच कारु' कारीगर वर्ग, समेत अठ्ठारह वर्ण
कहलाती है।

"नन्दना फंद गोविंद जाणे ।"

५४३ **लांभा**-कनिष्ठ ।

५४७ **पूछम**– ? । **विनडी**-विडम्बित की । **सात**-सुख ।

५५० **कमिणी**- 'कामिणी' पढ़िये । अर्थ स्पष्ट नहीं है ।

५५४ **सातो**-साचो । सच्चा, पक्का, चोर ।

५५६ **केत**-(सं. केतु) केतु प्रतिकूल ग्रहका नाम प्रसिद्ध है ।

५६३ **तलार** (सं. तलारक्ष) नगर-तलकी रक्षा करने वाला । भाषा में 'तलाटी' शब्द से बोला जाता है ।

ओलगु-सेवक

५६८ **मोकलि जे**-'मोकलिजे' पढ़िये ।

५६९ **फेडेसिइ**-त्याग करायेगा ।

५७९ अर्थांतर न्यास । सुभाषित रूप में ।

५८१–५८३–वणिक-श्लाघा ।

ऊडइ–(सं. उद्वहति) ।

५८५ **कंदल**-कलह ।

५८७ **परीछयउ**-(सं. पृष्ठम्) पूछताछ की ।

५९४-९५ **परतंनउ**-परकीय परका । पीहर का वास पर घर का वास कैसे कहा जा सकता है ?।

५९९ **तरणि**-सूर्य । **त्रिकम**–(सं. त्रिक्रम) तीन डग मे स्वर्ग मृत्यु पाताल में व्याप्त होनेवाला विष्णु ।

६०१ **वाहण**-वहाण यान-पात्र । **नोजामा**-(सं. निर्यामक, प्रा. निज्जामय) कर्णधार, केवटिया ।

६०६ **उपांपला**-व्याकुलता ।

६०७ **अणोसरा**-(सं. अनाश्रया) आश्रय रहित की ।

६१० **थापणि**-न्यास । **मोस**-मृषा, मिथ्या ।

६१३ **मांटी**-पुरुष, शूर पराक्रमशील मनुष्य ।

उसरावण कीधउ (सं. उत्सर्जन) मुक्त किया ।

पूर्ति-प्रस्तावना पृष्ठ 'औ'

'पद्मावत' में सदयवत्स कथा का उल्लेख

जब जौ सूर गगन नहिं आवहु ।
राहु होहु तौ ससि कहं पावहु ॥
विक्रम धँसा पेम के बारा ।
सपनावती कहं गएउ पतारा ॥
सदैवच्छ मुगुधावति लागी ।
कंचनपुर होइगा बैरागी ॥
राजकुंवर कंचनपुर गएऊ ।
मिरगावति कहं जोगी भएऊ
माधाकुंवर मनोहर जोगू ।
मधुमालति कहं कीन्ह वियोगू ॥
प्रभावति कहं सरसुर साधा ।
उखा आगि अनिरुधवा बांधा ॥
ही रानी पदुमावति, सात सरग पर वास ।
हाथ चढ़ी सो तेहिके, प्रथम जो आपुहि आस ॥

—पदमावती, दो० २३३-१७

समाप्त

७२० **बजा वार तउ भाजन करु**–इस प्रकार का प्रतिज्ञा ग्रहण 'कान्हडदे प्रबन्ध' में पाया जाता है। देखिये खड १, कड़ी १८०

७२३ **पीयाणो**-(सं. प्रयाण)।

७२६ **करह**–(सं. करभ) ऊंट।



पृष्ठ १०४ पंक्ति ४। **'प्रमेमोऽय'**-'प्रमोदाय' पढ़िये।

१०५ कडी ७। **चग**-'चंग' पढ़िये।

१०६ कडी १३। **मयाल**-(सं. मृदु, प्रा. मउ) मायालु।

कडी १६। **पुष्पदंस**.'पुष्पदंत' पढ़िये।

११० कडी ४७। **शत्रुकार**-(सं. सत्रागार) सत्रकार पढ़िये।

१११ कडी ५६। **घाडा**-'घोड़ा' पढ़िये।

११८ कडी ७२। **तेणि अवस**-'तेणि अवसरि' पढ़िये।

खेडी देवति-'क्षेत्र देवता।'

१३५ कडी ६। **धार**.'धरि' पढ़िये।

१३७ कडी २३। **सुना**-'सुता' पढ़िये।

१८५ कड़ी संख्या ४५५, ४५८, ४५९, को अंक सुधार के पढ़िये।

